समर्पण

पुण्य प्रताप पुंज से जिनके,
मैंने ज्योतिष शास्त्र पढ़ा ॥
जिनके उत्साहित करने से,
इसमें मेरा ज्ञान बढ़ा ॥१॥
परम पूज्य वर पिता आप की,
पुण्य स्मृति ये सञ्चित है ॥
सेवा में लघु सेवक की यह,
सादर भेंट समर्पित है ॥२॥

प्राक्कथन

वैदिक काल से भारतीय विज्ञानो में ज्योतिष शास्त्र का एक प्रमुख स्थान रहा है। विना दूर्वीन के गणित और फलित ज्योतिष दोनों ही में, प्राचीन काल में जितना विशद विवेचन ज्योतिष के सम्बन्ध में भारतवर्ष मे हुआ है, शायद ही किसी अन्य राष्ट्र मे हुआ हो। जव से हिन्दी भारत को राष्ट्र-भाषा घोषित की गई है, तव से आधुनिक भौतिक विज्ञान के अनेकानेक ग्रन्थ हिन्दी मे लिखे जा रहे हैं। इस कार्य मे अनेक कठिनाइयाँ सम्मुख आती हैं। पारिभाषिक शब्द ही हजारो की सख्या में गढना पडते हैं। परन्तु यह दु ख की वात है कि जहाँ पारिभाषिक शब्दो का कोई सवाल नही, जो विद्याएँ हमारी पैतृक सम्पत्ति है, उनकी भी सरल सुन्दर और विस्तृत व्याख्याएँ हिन्दी में आज भी दुष्प्राप्य हैं।

हर्ष का विषय है कि ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी इस कमी को पूरा करने में 'सिंहसदन' नरसिंहपुर के श्री वी० एल० ठाकुर सलग्न हैं। उन्होने अपने "सचित्र ज्योतिष शास्त्र" का प्रथम भाग पूर्ण कर लिया है। इस शास्त्र मे स्वयं मुझे रुचि है।

यह सुन्दर ग्रन्थ पढ कर मुझे संतोष हुआ। पुस्तक मे यथास्थान अनेक चित्र दिये हैं और यद्यपि ठाकुर साहव ने अनेक भागो को काफी विस्तार से समझाया है, भाषा सरल है और ठाकुर साहव ने इस वात को सदा ध्यान मे रक्खा है कि पुस्तक उनके लिये लिखी जा रही है जिन्होने पहिले कभी भारतीय ज्योतिष शास्त्र मे कोई शिक्षा प्राप्त नही की।

आशा है, ठाकुर साहव का यह स्तुत्य प्रयत्न सफल होगा और हिन्दी संसार उनके ज्योतिष शास्त्र को पूर्णतया अपनावेगा।

नागपुर
दिनाक २२ फरवरी १९५४ } कुंजीलाल दुवे
उपकुलपति
नागपुर विश्वविद्यालय

लेफ्ट० कर्नल पंडित के० एल० दुवे
वी० ए०, एल-एल० वी०, एम० एल० ए०
वाइस चान्सलर नागपुर यूनिवरसिटी
व स्पीकर मध्य प्रदेश लेजिसलेटिव असेम्वली
नागपुर म० प्र०

उद्देश्य

बहुत से ज्योतिष ग्रन्थो के होने पर भी इस पुस्तक के लिखने की क्यो आवश्यकता हुई यहाँ संक्षेप में यह बता देना अनुचित न होगा।

आज कल पाश्चात्य देशो मे भी फलित मे विश्वास बढने लगा है। कई पुरुष स्वयं भी अनुभव कर फलित पर विश्वास करने लगे है, इस कारण इस शास्त्र के अध्ययन की ओर लोगो की रुचि बढ रही है, परन्तु ज्योतिष के अधिकतर ग्रन्थ संस्कृत मे ही है और वे ग्रन्थ विद्वानो के समझने योग्य ही लिखे गये है, अर्थात् वे ही उनको समझ सकते है जो उस विषय में कुछ जानते हो। परन्तु जो उस विषय में कुछ भी न जानते हो उनके समझने मे वे पुस्तकें भाषा टीका में होने पर भी समझ में नही आ सकती। कारण कि नवीन विद्यार्थी को उन पुस्तको के समझने मे बडी कठिनाई होती है। संस्कृत की भी उतनी योग्यता प्राप्त करने का समय या साधन का अभाव भी बहुत खटकता है।

इस कारण राष्ट्रभाषा हिन्दी में एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता है कि जिससे कोई विद्यार्थी यदि ज्योतिष का एक अक्षर भी न जानता हो तो बिना किसी दूसरी पुस्तक के सहारा लिये घर बैठे स्वयं ज्योतिष का अध्ययन कर सके।

मैंने भी ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन में बहुत वर्ष व्यतीत किये है और कई पण्डितो से मिल कर इसका अध्ययन करते समय आवश्यक संक्षिप्त नोट भी तैयार करता गया जिससे उस विषय की विस्मृति न हो।

कई मित्रो ने जिनको इस विषय के अध्ययन को तीव्र इच्छा हुई, ये नोट देख कर प्रसन्न हुए और जन साधारण के लाभार्थ प्रकाशित करा देने की सम्मति दी। इस कारण इस पुस्तक के प्रकाशित करने की आवश्यकता हुई।

यह पुस्तक इस बात को ध्यान में रखकर लिखी गई है कि पाठक इस विषय के अनभिज्ञ है, इसी कारण किसी विषय को समझाते समय नवीन विद्यार्थी के अध्ययन करते समय कठिनाई न हो, कही कही एक बात की पुनरुक्ति भी करनी पडी है और इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि कोई कठिन शब्द न आवे जिससे भावार्थ समझने में कठिनाई जान पडे। जहाँ आवश्यक हुआ है वहाँ कठिन शब्दो को समझा दिया गया है। पारिभाषिक शब्द तो सर्वत्र ही समझा दिये गये है। इसमें स्थान स्थान पर विशेष शब्दो के अंग्रेजी में भी अर्थ दे दिये गये है जिससे अंग्रेजी जानने वालो को

इसके अतिरिक्त भी इतर अंग्रेजी के ज्योतिष ग्रंथो को भी समझने की योग्यता प्राप्त हो जायगी। तात्पर्य यह है कि शास्त्ररूपी सागर को पार करने के लिये पाठक इस पुस्तक को नौका रूप में पायेंगे।

केवल इस ज्ञान खण्ड के ही पढ लेने से कोई पूरा ज्योतिषी नही बन सकता, किन्तु यह खण्ड ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान की वृद्धि में सहायक होगा, एवम् ज्योतिष शास्त्र में प्रवेश करने के लिये सच्चे मार्ग दर्शक का काम देगा।

नवीन विद्यार्थी को क्रमानुसार इसके सम्पूर्ण खण्डो का अध्ययन करना होगा। ज्ञान खण्ड अध्ययन कर लेने से ज्योतिष सम्बन्धी बहुत सी महत्वपूर्ण मुख्य मुख्य बातें समझ में आने लगेंगी। इसमे ज्योतिषियो के लाभार्थ बहुत से उपयोगी चुटकुले भी दिये है। जैसे किसी का जन्म सम्वत मास पक्ष दिन समय आदि न ज्ञात हो तो केवल कुडली चक्र को देख कर ही ये सब बातें किस प्रकार बताई जा सकती है या बिना पचाग के तिथि नक्षत्र करण वार सूर्य चन्द्र स्पष्ट आदि किस प्रकार बताये जा सकते है समझाया है। इनके अतिरिक्त तारीख से तिथि आदि कैसे जानना भी बताया है और अनन्त वर्षों की जन्त्री देकर जन्त्री बनाने की युक्ति भी बताई गई है। इस ज्ञान खण्ड के अध्ययन करने के उपरान्त आगे अध्ययन करना चाहिए। इस ज्ञान खण्ड के अध्ययन कर लेने से किसी की टिप्पणी (सक्षिप्त जन्मपत्रिका) बना लेना आ जाता है। अन्त मे फलित सम्बन्धी मुख्य मख्य बातें संक्षेप मे बताई गई हैं जिनको जानना आवश्यक है और जिनके जान लेने पर फलित समझने की योग्यता बढेगी। इसके उपरान्त ज्यो ज्यो आप आगे के और भी खण्ड अध्ययन करते जायेंगे योग्यता बढती जायगी और पूर्ण अध्ययन कर लेने पर आप ज्योतिष के अच्छे जानकार अवश्य बन जायेंगे।

गणित खण्ड के अध्ययन से आप किसी की भी पूरी जन्मपत्री बना सकेंगे, और जन्मपत्र बनाने के सम्बन्ध की सम्पूर्ण बातें आप को आ जावेंगी। इसमें समय ज्ञान, इष्ट साधन, ग्रह साधन, लग्न साधन, द्वादश भाव साधन, वर्ग साधन, अष्टक वर्ग साधन, ग्रह षडबल साधन, भाव षडबल साधन, आयु साधन, दशा साधन, अहर्गण साधन, अहर्गण से ग्रह साधन आदि अनेक प्रकार का गणित उदाहरण देकर सरलता पूर्वक समझाया है, जिससे नवीन विद्यार्थी को समझने मे अड़चन न हो। इसके उत्तरार्द्ध मे प्रत्येक गणित की क्रिया करने की रीति भी समझाई गई है।

फलित खण्ड—फलित सम्बन्धी शेष सब बातें रहेंगी और महान् पुरुषो की कुंडली से उदाहरण देकर अभ्यास कराया जायेगा जिससे फल कथन करने की योग्यता आ जायगी। यह योग्य विद्वानो की अध्यक्षता मे तैयार होगा जिनका सारा जीवन इसे अध्ययन कर व इसमें अनुभव प्राप्त कर फलादेश कथन में कीर्ति प्राप्त की है।

वर्षफल खण्ड—वर्षफल बनाने का पूरा गणित उदाहरण देकर समझाया

जायेगा और वर्ष भर का सम्पूर्ण फल रहेगा जिससे आप अपना या किसी का भी वर्षफल बना सकेंगे।

प्रश्न खण्ड—प्रश्न ज्योतिष सम्बन्धी सम्पूर्ण बातें रहेंगी और किसी प्रश्न का उत्तर देने का अभ्यास उदाहरण देकर कराया जायेगा।

मुहूर्त खण्ड—मुहूर्त सम्बन्धी सम्पूर्ण बातें इसमे रहेगी।

संहिता खण्ड—ज्योतिष की शेष बातें मेदनीसहिता आदि सम्बन्धी बातें इसमे रहेगी। इसमे वर्षा का विचार देश के फल का विचार वस्तु की महगाई आदि का विचार इत्यादि बातें रहेगी।

यह पुस्तक ज्योतिष के नवीन विद्यार्थी को लाभ पहुँचाने की दृष्टि से लिखी गई है। इस कारण यदि इसके प्रकाशन से जनता का कुछ भी लाभ हुआ तो मैं अपना उद्देश्य सफल समझूंगा।

पाठक यदि इस ज्ञान खण्ड को अपना कर यदि मेरा उत्साह बढायेंगे तो इसके इतर खण्डो के प्रकाशन में शीघ्रता होगी।

अंत में विशेष प्रार्थना है कि भूल होना मानुषीय है, यदि किसी विषय को समझाने में कोई त्रुटि हुई हो तो या अन्य प्रकार की कोई भूल हुई हो तो सज्जनो से आशा है कि क्षमा प्रदान कर भूल की सूचना देंगे या अपनी कठिनाई सूचित करेंगे तो मैं अति अनुगृहीत होऊँगा और भविष्य में भूल सुधार दी जायेगी और कठिनाई दूर कर आवश्यक बातो का समावेश कर दिया जायगा।

इस खण्ड के लिखने में श्री उमाप्रसाद जी पोतदार हस्तरेखा शास्त्री और ज्योतिषाचार्य और मेरे भाई नर्मदा प्रसाद ठाकुर (जो हस्तरेखा और ज्योतिष शास्त्र में दक्ष है) उचित परामर्श देकर बहुत सहायता की है। इसलिये उनको धन्यवाद है।

भवदीय

बी० एल० ठाकुर ज्योतिषाचार्य

सिंह सदन

नरसिहपुर म० प्र०

नरसिहपुर

दिनाक १८-७-१९४५

ज्योतिष शिक्षा

(ज्ञान खण्ड)

के अध्याय की सूची

चित्रों की सूची

ॐ

ज्योतिष-शिक्षा

[प्रारंभिक ज्ञानखण्ड]

बुद्धि विनायक विघ्न हर, बिनवौं बारम्बार ॥
विनय करूं वागीश की, विमल बुद्धि दातार ॥ १ ॥

जय महेश जिन तन लसै, वर नक्षत्र की माल ॥
जाकी आज्ञा से भ्रमत, ग्रह आदिक अरु काल ॥ २ ॥

ग्रह प्रभाव से प्रगट हो, पूर्व जन्म का कर्म ॥
कष्ट कटैं प्रभु ध्यान से, अरु प्रगटैं शुभ धर्म ॥ ३ ॥

धरूं ध्यान कल्यान हित, किरपा करहु कृपाल ॥
शीघ्र पूर्ण हो ग्रन्थ यह, दो शक्ती तत्काल ॥ ४ ॥

अध्याय १

ज्योतिष शास्त्र के भेद

ज्योतिप शास्त्र का अध्ययन करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि ज्योतिप शास्त्र के कितने भेद हैं। इसके मुख्य २ भेद हैं—

(१) गणित ज्योतिष Astra Nomy (एस्ट्रा नमी)=जिससे पचाङ्ग आदि बनाये जाते हैं।

(२) फलित ज्योतिष Astra logy (एस्ट्रा लजी)=जिससे ग्रहो के फल का विचार होता है।

इनके भी कई भेद हो गये हैं जो नीचे समझाये जाते हैं :—

१ गणित ज्योतिष—इससे ग्रहो का स्वरूप अवस्था गति आदि निश्चय किया जाता है। इसके ३ भेद हैं—

(१) सिद्धान्त—जिसमे कल्प (सृष्टि के आदि) से ग्रह आदि स्पष्ट करने के लिये गणित करने की रीति दी है।

(२) तन्त्र—जिसमे युग (वर्तमान कलियुग) से गणित करने की रीति दी है।

(३) करण—जिसमे इष्ट शाका से गणित करने की रीति दी है।

गणित ज्योतिष के अन्तर्गत वह गणित भी है जिसमें जोडना घटाना गुणा भाग वर्गमूल आदि निकालना तथा भूमि आकाश आदि के नापने की विधि बतलाई गई है। इसी गणित द्वारा ग्रहो की स्थिति आदि निकाली जाती है।

२ फलित ज्योतिष (नजूम)—ग्रहो की स्थिति पर से शुभाशुभ फलो का विचार इससे होता है। इसके भेद इस प्रकार हैं—

(१) होरा अर्थात जातक—आधान कुडली से दु ख सुख का विचार।

(२) मूहूर्त–कार्य आरम्भ करने मे ग्रह तिथि नक्षत्र वार आदि के प्रमाण से शुभाशुभ फल का विचार।

(३) ताजिक—वर्ष प्रवेश, मास प्रवेश, दिन प्रवेश आदि बनाकर वर्ष भर के शुभाशुभ फल का विचार।

(४) प्रश्न ज्योतिष—किसी भी समय इष्टकाल पर से किसी भी प्रश्न का तत्सम्बन्धी दु ख सुख आदि के परिणाम का विचार।

(५) मेदनीय किंवा राष्ट्र ज्योतिष—किसी देश या राष्ट्र की उन्नति अवनति दु ख सुख आदि का विचार।

(६) संहिता खण्ड—किसी सम्वत का शुभाशुभ, भूकम्प, इन्द्र धनुष, केतु उदय आदि का फल, शुभाशुभ शकुन, शरीर चिह्न द्वारा मरण होने का ज्ञान, स्वरोदय, पल्लीपतन, सामुद्रिक, अङ्ग स्फुरण आदि का विचार।

अध्याय २

ज्योतिष शास्त्र में विश्वास

इस ग्रन्थ में फलित ज्योतिष का अध्ययन करने के लिये ही प्रारम्भिक बाते बताई गई हैं। फलित ज्योतिष में कई मनुष्य विश्वास करते है कई नही करते और कहते है कि ग्रह इतने दूर होते हुए पृथ्वी पर किस प्रकार प्रभाव पहुँचा सकते हैं। इस कारण प्रारम्भ मे ही सक्षेप मे ग्रहो के प्रभाव के विषय मे थोडा बता देना अनावश्यक न होगा।

यह निर्विवाद सिद्ध है कि सूर्य के आस-पास पृथ्वी आदि कई ग्रह परिक्रमा करते हैं और समस्त ग्रह आदि एव सूर्य अनन्त विश्व के अन्तरिक्ष में निराधार लटके हुए निरन्तर नियमित रूप से गति करते रहते हैं। सूर्य के आस पास चन्द्र सहित पृथ्वी

एवं बुध शुक्र मंगल गुरु शनि आदि ग्रह घूम रहे है। इन सबो के समुदाय को सौर जगत् या सूर्य का परिवार कहते है।

ये सब ग्रह सूर्य की आकर्पण शक्ति के वशीभूत होकर विशेप नियम के अनुसार सूर्य के आस पास घूम रहे है। इनमे प्रत्येक ग्रहो की भी पृथक्-पृथक आकर्पण शक्ति है। जैसे पृथ्वी का उपग्रह चन्द्रमा, पृथ्वी की आकर्पण शक्ति के प्रभाव से खिचा हुआ पृथ्वी के आस पास घूम रहा है और सूर्य की आकर्पण शक्ति से खिचे हुए चन्द्र और पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा कर रहे है। इसी प्रकार शनि आदि ग्रहो के भी उपग्रह है जो उन ग्रहो के आकर्पण के प्रभाव से उन ग्रहो की परिक्रमा करते हुए सूर्य के आकर्पण से प्रभावित होकर सूर्य की भी परिक्रमा कर रहे है।

पृथ्वी से ९३८ लाख मील दूर होते हुए भी जब समस्त पृथ्वी पर सूर्य की आकर्पण शक्ति का प्रभाव पडता है तो पृथ्वी में रहने वाले जड एव चैतन्य पशु-पक्षी मनुष्य आदि भी सूर्य के प्रभाव से प्रभावित होने मे कैसे बच सकते है।

प्रत्यक्ष देखने में आता है कि जब सूर्य विशेप राशियो मे आता है तो किस प्रकार जाडा गर्मी बरसात आदि ऋतुओ मे परिवर्तन होता है जिसका प्राणी मात्र पर प्रभाव पडता है। सूर्य के ही कारण प्रकाश, उष्णता, ग्रह गति होती है। सूर्य न हो तो प्राणी मात्र का जीना असम्भव हो जाय। आज कल सूर्य की किरणो से चिकित्सा भी होने लगी है।

प्रात काल सूर्य की किरणें तिरछी पडती है। मध्याह्न मे सीधी पडती है और रात्रि मे किरणो का अभाव रहता है। इस प्रकार जैसे समय में जिस बालक का जन्म हो उस समय का प्रभाव उसके स्वभाव मे परिणत हो जाता है। अर्थात् समय के अनुसार ही स्वभाव पड जाता है। ग्रीष्म मे (वृप और मिथुन के सूर्य मे) सूर्य की किरणें सीधी पडती है। हेमत ऋतु (वृश्चिक-धन के सूर्य) में तिरछी पडती है। इस लिये इन सूर्य की राशियो मे जिस बालक का जन्म होगा उसी के अनुसार शरीर में प्रभाव बढेगा।

सूर्य का प्रभाव पौधो और वृक्षो पर भी पडता है। वर्पा ऋतु में इल्लियाँ अधिक उत्पन्न होती है और कृपि को हानि पहुँचाती है। बुखार का प्रकोप भी समयानुसार बढता है। इस प्रकार समस्त जड चैतन्य पर सूर्य का प्रभाव पडता है। सब ग्रहो में सूर्य बडा बलवान् है इसी कारण सूर्य को मनुष्य की आत्मा कहा है।

जहाँ जो जिस परिस्थिति में उत्पन्न हुआ है वही उसका प्राकृतिक स्वभाव बन जाता है। इसी प्रकार विशेप ग्रहस्थिति और समय में उत्पन्न बालक का विशेष स्वभाव बन जाता है। जैसे ठडी प्रकृति में उत्पन्न हुए वृक्ष को यदि उष्ण प्रकृति के स्थान में

लगाओ तो नही होगा, यदि हुआ भी तो शक्ति हीन, रोगी होगा। कारण कि ठडे वातावरण में उत्पन्न होने से उसका जीवन भी जन्म समय के वातावरण से प्रवाहित होकर वही की प्रकृति का स्वभाव ग्रहण करता है। इसी कारण भिन्न भिन्न स्थिति में उत्पन्न हुए बालको की प्रकृति भी भिन्न-भिन्न हो जाती है, जिससे किसी विशेष ग्रह का प्रभाव भिन्न-भिन्न मनुष्यो पर भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है।

Dr Maurice Faure (डाक्टर मारिस फाउर) ने सन् १९२७ में फ्रेंच एकेदेमी के समक्ष डाक्टरी और ज्योतिष सम्वन्धी रिकार्ड उपस्थित कर वताया था कि सूर्य के धव्वे भी सूर्य के आस पास एक ही दिशा मे परिक्रमा करते हैं। २५½ दिन मे उनकी एक परिक्रमा होती है। जव धव्वे दिखाई देते है तो उस समय साधारण मृत्यु सख्या से दुगनी मृत्यु सख्या हो जाती है। इसका पूरा प्रमाण भी उपस्थित किया गया था।

चन्द्र का प्रभाव सूर्य से दूसरे नम्वर का है। इसका महत्तम पृथ्वी से अतर २५२९४८ मील है। यह पृथ्वी के सव ग्रहो से समीप होने के कारण अधिक प्रभाव करता है। चन्द्र की भी आकर्पण शक्ति समूची पृथ्वी पर पडती है, जिससे जड चैतन्य सभी प्रभावित हो रहे हैं। प्रत्यक्ष मे देखा जाता है कि चन्द्र की घटावढी के कारण समुद्र की लहरो पर प्रभाव पडता है। पूर्णिमा को ज्वारभाटे का पूर्ण प्रभाव देखने में आता है। जव समुद्र सरीखे जड पदार्थ पर भी इतना प्रभाव पडता है कि जल राशि को अपनी ओर आर्कषित कर वडी-वडी लहरो का उत्पादक होता है तो यह इतर प्राणियो पर क्यो न प्रभाव करेगा?

मनुष्य के चित्त पर इसका वडा प्रभाव पडता है, इसी कारण चन्द्रमा को मनुष्य का मन कहते है। वहुधा देखा जाता है कि चन्द्र के घटाव वढाव का प्रभाव पागल पर अधिक पडता है इसी कारण पागलपन को चन्द्र के नाम से अग्रेजी मे ल्यूनेसी Lunecy कहते है। सर इसाक न्यूटन Isaac Neutan ने सिद्ध कर वताया है कि पागलपन चन्द्र से सम्वन्धित है और मानसिक दशा पर चन्द्र का वहुत प्रभाव पडता है।

केवल जीवो पर ही नही वनस्पतियो आदि पर भी इसका पूरा प्रभाव पडता है। जगल मे जो वास आदि उजेले पक्ष मे काटे जाते है, वे शीघ्र घुन जाते है क्यो कि शुक्ल पक्ष का अधिक प्रभाव वृक्ष आदि को उत्पादक शक्ति पर पडता है इससे उसमे कीडे शीघ्र उत्पन्न हो जाते है।

अभी व्रिटिश कालोनियल (उपनिवेश) आफिस के विशेपज्ञ ने खोजकर प्रगट किया है कि मछलियो पर चन्द्र का विशेप प्रभाव पडता है। पूर्णमासी के समय मछलियाँ अधिक पकड़ी जाती है, कृष्ण-पक्ष में इस सम्वन्ध से लाभजनक स्थिति नही रहती।

खोज से यह भी पता लगा है कि अपनी मध्याह्न रेखा के अनुसार चन्द्र की विशेष तिथियो को ही ओस्टर और मुसेल (घोघा मछलियो की जाति) अपने घोंघे खोलते और अपना पालन करते है।

इसी प्रकार इतर ग्रहो की भी आकर्पण शक्ति सूर्य की आकर्षण शक्ति से प्रभावित होकर पृथ्वी आदि समस्त ग्रहो पर प्रभाव उत्पन्न करती है और वे ग्रह भी अपने डील-डौल के अनुसार सम्पूर्ण सूर्य सम्प्रदाय पर प्रभाव डालते है तो फिर जीव जन्तु वनस्पति आदि प्रभावित होने से कैसे वच सकते है ?

ग्रह के प्रभाव से हीरा आदि अमूल्य रत्न भी अपना विचित्र प्रभाव धारण करते है।

अभी हाल में एक होप (आसा) नाम के प्रसिद्ध हीरा के विचित्र प्रभाव की कथा प्रकाशित हुई थी। यह हीरा जिसके-जिसके पास गया उसका नाश हुआ। यह हीरा भारतवर्प के किसी मन्दिर की मूर्ति की आँख मे लगा था। वह किसी प्रकार वेलजियम के निवासी के हाथ लगा। उसने फ्रास के वादशाह लुइस १४ को वेचा। पश्चात् मेरी एन्टोनिटी ने उसे पहिना, उसकी अपघात से मृत्यु हुई। अमस्टर डाम के विलियम फल्स ने उस हीरे को काटा उसका सर्वनाश हुआ। फ्रासिस विऊलिऊ ने उसे प्राप्त किया उसकी मृत्यु क्षुधा पीडा से हुई। सन् १९०१ में इशाक कोलोट ने उसे मोल लिया उप-घात से उसकी मृत्यु हुई। उपरान्त वह हीरा रूस के राजकुमार कन्टोस्की के पास पहुँचा जिसने अभिनय के समय एक सुन्दर नर्तकी को पहिरने को दिया था वह अभिनय करते समय गोली से मारी गई। उपरान्त राजकुमार भी शस्त्राघात से मारा गया। इसके वाद वह हीरा किसी यूनान निवासी के पास पहुँचा उसकी अपनी स्त्री और वच्चो सहित फिसलने से मृत्यु हुई। पूर्व सुलतान अव्दुल हमीद ने वह हीरा कान्स्टेन्ट नोपल मे अपनी प्रेमिका को पहिनने को दिया वह गोली से मारी गई। वाद में हवीव नाम के अरमेनियन के पास पहुँचा। वह सिगापुर मे डूव कर मर गया। सन् १९११ में एव-लिन मेकलीन ने उसे मोल लिया उसका लडका विन्सेन्ट मोटर से दव कर मर गया स्त्री मिमेस एवलिन मेकनील रेनोल्ड ने उसे पहिना तो उसकी अचानक मृत्यु हुई।

इन्ही सव सिद्धान्तो पर पश्चात्य देशो मे भी ग्रहो के प्रभाव को मान कर फलित ज्योतिप पर विश्वास करने लगे है। यहाँ तक कि भविष्य कथन करते हैं। उनके सम्वन्ध की वातें भी प्रमाणित की जाती है कि कहाँ तक भविष्य कथन सत्य निकला जिन पर विचार करने से भविष्य कथन की सत्यता पर लोगो का विश्वास होने लगा है।

प्राय यह भी देखा जाता है कि कई लोगो की भविष्यवाणी असत्य भी निकल जाती है। इसका मुख्य कारण कल्पना शक्ति है। क्योकि यह तो कल्पना और तर्क शास्त्र है, जिसमें कल्पना और तर्क करने के सिद्धान्त दिये है, उनमें वे प्रभाव घटित होने का सकेत मिलता है। यदि कल्पना में भूल हुई तो भविष्य कथन में अवश्य अन्तर

पडेगा। डाक्टर जो कई वर्षो तक अग्रेजी पढ कर डाक्टरी विद्या अध्ययन कर पद प्राप्त करता है, जब डाक्टर होकर किसी रोग का निदान करता है तो उस रोग के विषय मे भिन्न-भिन्न डाक्टरो की भिन्न-भिन्न राय हो जाती है। जब असली रोग की जड पा जाते है तो निदान पक्का हो जाता है।

इस विषय मे श्री स्टेन ली लीफ इगलेन्ड के प्रमुख प्राकृतिक चिकित्सक एव "हैल्थ फार आल" मासिक पत्रिका के सम्पादक ने लिखा है सर डेविड्ड मड ने ग्लासगो की रायल फेकल्टी आफ सर्जन के सभापति की हैसियत से अपने भाषण मे कहा था कि "शव परीक्षा से यह बात भलीभाँति प्रमाणित हो चुकी है कि औसत दर्जे के चिकित्सको का निदान ८० प्रतिशत गलत हुआ करता है"।

बोस्टन के सुप्रसिद्ध चिकित्सक और निदान शास्त्री डाक्टर रिचर्ड केवट ने, जिन्होने निदान पर एक शास्त्रीय पुस्तक लिखी और हार्वर्ड विश्वविद्यालय मे सम्मानित अध्यापक है, अमेरिकन मेडिकल असोशियेशन के वार्षिक अधिवेशन मे अपने विस्तृत अनुभव के आधार पर लिखित एक निबन्ध प्रस्तुत किया था। जिसमे उन्होने एक हजार रोगियो का विवरण देकर विश्लेषण कर यह परिणाम निकाला था कि सब मिलाकर ५० प्रतिशत निदान सही और ५० प्रतिशत बिलकुल गलत थे।

हृदय रोग के सुप्रसिद्ध चिकित्सक सर जेम्स मैकेंजी ने अपनी मृत्यु के कुछ समय पूर्व एक भाषण मे यह धारणा व्यक्त की थी कि जीवन पर्यन्त अनुसधान और शव-परीक्षण करने के उपरात मै इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि चिकित्सक लोग साधारण रोगो मे ७० प्रतिशत गलत निदान करते है। असाधारण रोगो मे यह सख्या और अधिक होगी। जब उन्नति के शिखर पर पहुँची डाक्टरी विद्या का यह हाल है तो फिर ज्योतिष शास्त्र क्यो बदनाम किया जाता है।

इसी प्रकार बडे-बडे जज जो अनेक वर्षो तक विद्या अध्ययन कर कानूनी पुस्तको का पूरा ज्ञान प्राप्त कर चुकते है किसी अभियोग का निर्णय कर अपराधी को प्राण दण्ड की सजा देते है। परन्तु अपील करने पर ऊँची अदालत उस जज के निर्णय को पलट कर अपराधी को उन्ही साक्षियो के आधार पर निर्दोष पाकर छोड देती है। इसी को कहते है विचार शक्तियो मे अन्तर। विचार करने मे असावधानी या कोई विशेष बात की सूझ का अभाव या समझ की भूल वहाँ पर होने के कारण फल कथन मे अन्तर पड सकता है।

इस कारण बडी सावधानी से ज्योतिष के एक-एक विषय को क्रम पूर्वक अध्ययन और मनन करने की आवश्यकता है। अनुभव होने पर उसका परिणाम प्रत्यक्ष गोचर होने लगेगा।

अध्याय ३

सौर जगत् और ग्रह Solar System and Planets

उस सर्वव्यापी जगन्निर्माता परमेश्वर की लीला कितनी विचित्र है। आप आकाश की ओर ध्यान दें तो विदित होगा कि आकाश में अनेक तारागण अधर मे लटके हुए हैं। आकाश में करोडो तारागण हैं जो साधारण दृष्टि से गोचर नही होते उनमे कई तारागण केवल वडी-वडी दूरवीनो के सहारे ही देखे जा सकते है।

अन्य तारागणो के मध्य एक तारागणो का मडल है जिसे सौर जगत् या सौर परिवार या सूर्य सम्प्रदाय कहते है। उनके मध्य मे अपना एक ही सूर्य है जिसके आस पास अपनी पृथ्वी और इतर ग्रह बुध शुक्र गुरु आदि परिक्रमा करते है, जिन सबका सूर्य से सम्बन्ध है और जो सब, सूर्य की आकर्षण शक्ति के प्रभाव से सूर्य को छोड कर कही दूसरी जगह भटक कर नही जा सकते। इसी कारण इन सब ग्रहो के समुदाय को और उन तारागणो को जो इन ग्रहो की परिक्रमा के मार्ग के आस पास पडते है, सौर जगत् कहते हैं।

आकाश में कई प्रकाशवान् तारागण दिखते है। उनमें कई तो अपने सूर्य से भी कई गुने बडे है। बहुत दूरी के कारण यहाँ से छोटे दिखते हैं। उसी प्रकार जो ग्रह शुक्र गुरु आदि देखने मे छोटे दिखते है वडे भीमकाय ग्रह है, जो अधर मे लटके हुए हैं। इन सबके आकार आदि का वर्णन आगे होगा।

एक विचित्र तारा का पता लगा है जो सूर्य से १६० गुना वडा है। १० हजार वर्ष में उसका प्रकाश पृथ्वी पर पहुँचता है और वह पृथ्वी से ५२५६० लाख मील की दूरी पर है। ऐसे कई तारे है जो करोड गुना सूर्य से तेजस्वी है। इस प्रकार आकाश मे अनेक सूर्य है उनमें से अपना सूर्य एक है और इस अपने सूर्य का परिवार अलग है और इस परिवार के ग्रह इसी सूर्य की परिक्रमा करते है।

खोज से पता लगा है कि अपना सौर जगत् किसी और शक्तिशाली सूर्य के आस पास अपने परिवार सहित घूम रहा है। कृतिका नक्षत्र को केन्द्र मान कर अपना सौर जगत् घूम रहा है। अमेरिकन साइन्टिस्ट असोशियेशन ने कई वर्षो की जाँच के उपरान्त वताया है कि अपना सूर्य एक सेकण्ड मे १३० मील के हिसाव से Draco ड्रेको (अजगर) नक्षत्र की ओर अपने परिवार सहित घूम रहा है। यह नक्षत्र उत्तर ध्रुव के पास है।

यहाँ के ज्योतिष शास्त्र का सम्बन्ध केवल अपने सौर जगत् से है। महर्षियो ने सूर्यादि सब ग्रहो की गति प्रभाव आदि का पूर्ण अध्ययन कर और अनुभव कर जिस शास्त्र का निर्माण किया है उसे ज्योतिष शास्त्र कहते है।

ग्रह Planats

अपने सौर जगत् में सूर्य सब ग्रहो का प्रधान और केन्द्र है। उसके आस पास सब ग्रह घूमते है। चित्र सख्या १ और २ से, सूर्य से ग्रहो की दूरी का और ग्रहो की परिक्रमा का क्रम समझ पडेगा।
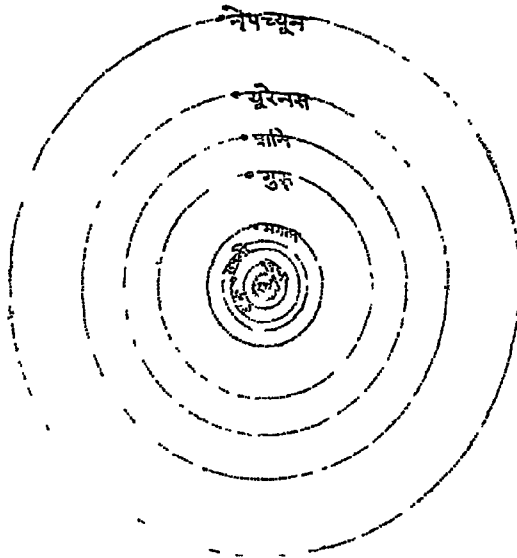
चित्र सख्या १—सूर्य के आसपास ग्रह इस प्रकार घूमते है।
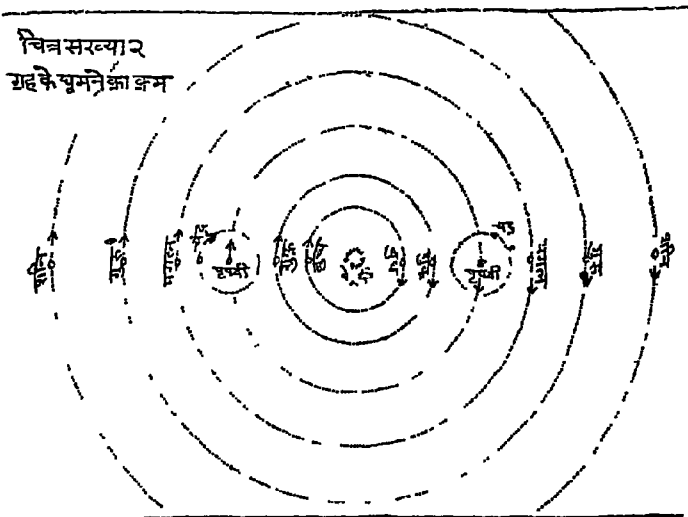
सूर्य की परिक्रमा करने वाले ग्रहो में पृथ्वी को छोडकर शेष ग्रहो के नाम नीचे दिये है।

क्रम	ग्रह	अग्रेजो नाम		फारसी नाम	अग्रेजी चिह्न	हिन्दी चिह्न
१	सूर्य	Sun	सन	आफताव	☉	र. या, सू.
२	चद्रमा	Moon	मून	माहताव (कमर)	☾	च.
३	मंगल	Mars	मार्स	मिर्रीख	♂	मं.
४	बुध	Mercury	मरकरी	उतारुद	☿	बु
५	गुरु (बृहस्पति)	Jupiter	जुपीटर	मुश्तरी	♃	गु
६	शुक्र	Venus	वेनस	जुहरा	♀	शु
७	शनि	Seturn	सेटर्न	जुहल	♄	श
८	राहु	Caput या Dragon's Head या Ascending Node	केपुट ड्रेगून्स हैड असेन्डिग नोड	रास	☊	रा
९	केतु	Cauda या Dragon's Tail या Decending Node	कअडा ड्रेगून्स टेल डिमेन्डिग नोड	जनव	☋	के
१०	वरुण	Naptune	नेपच्यून		♆ या ♆	व
११	प्रजापति	Herschel या Uranus	हरसल		♅	प्र

ग्रह और तारा में अन्तर

किसी निर्मल रात्रि को आकाश की ओर देखो तो अनेक तारागण दृष्टि गोचर होगें, उनमे मुख्य दो प्रकार के तारागण हैं। एक साधारण तारा और दूसरा ग्रह।

इनमें से ग्रह और तारा इस प्रकार पहिचाने जा सकते हैं—

(१) तारा Star=आकाश में कई तारे ऐसे हैं जो स्वय प्रकाशवान् हैं। ऐसे तारागण रात्रि को दीपक की लव सदृश जुग जुगाते दिखाई देते हैं अर्थात् उनके प्रकाश की लव या किरणें छोटी बडी होते दिखती है। इन्हे तारागण कहते हैं।

(२) ग्रह Planet=दूसरे प्रकार के ऐसे तारे दिखेंगे जिनका प्रकाश एक-सा रहता है अर्थात् जुग जुगाते नही दिखते। ऐसे दिखते हैं जैसे विना लव की अगार हो जिनका एक सरीखा प्रकाश दिखता है। ये ग्रह सूर्य के प्रकाश पडने से प्रकाशित होते हैं। वे स्वत प्रकाशवान् नही हैं। ये ही ग्रह कहलाते हैं।

शुक्र ग्रह जो सूर्य के उदय होने के बहुत पहिले जब कभी आकाश मे देखा जाता है और जिसे लोग "भुन सरिया" तारा कहते हैं उसे अधिकतर लोग पहिचानते हैं। इसको ध्यान से देखो तो समझ पडेगा कि यह तारा है या ग्रह। कभी यह शुक्र ग्रह सूर्यास्त के बाद दिखता है तब इसे पहिचान सकते हैं।

प्रतिदिन शुक्र गुरु आदि ग्रहो और इतर तारागणों को अवलोकन करते रहने से ग्रह और तारागण मे अन्तर समझ पडेगा।

अग्रेजी के ज्योतिष ग्रन्थो मे ग्रहो के स्थान मे उपरोक्त चिह्नो का उपयोग हुआ है उस कारण उन चिह्नो को ध्यान मे रखना चाहिये। इनमें से केवल ९ मुख्य ग्रह हैं। हर्शल और नेपच्यून ग्रह नवीन खोज किये हुए हैं और पाश्चात्य पद्धति मे उनका भी
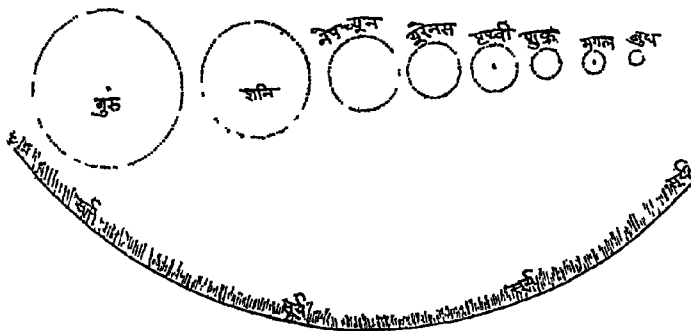
चित्र सख्या ३—ग्रहो के आकार का अनुपातिक मिलान

वर्णन रहता है इस कारण उनको भी बता दिया है, जिनको मिलकर ११ ग्रह हो जाते हैं। इस प्रकार हर्शल और नेपच्यून के निकालने से बचे हुए ९ ग्रहो मे से ७ ग्रह आकाश मे दिखते हैं। दो ग्रह राहु और केतु अदृश्य ग्रह हैं।

राहु-केतु

यद्यपि राहु और केतु की गणना ग्रहो मे की गई है परन्तु वास्तव मे ये ग्रह नही हैं इनको अप्रकाश ग्रह Showdy Planets कहते हैं। अर्थात् आकाश मे ये ग्रह नही दिखते और न इनका कोई आकार ही है। पृथ्वी के आस-पास चन्द्रमा परिक्रमा करता है और चन्द्रमा सहित पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। इस प्रकार पृथ्वी की परिक्रमा

की परिधि को चन्द्र अपनी परिक्रमा में २ जगह काटता है। अर्थात् पृथ्वी और चन्द्र की परिक्रमा की परिधि एक दूसरे को २ जगह काटती है, उनमे से एक विन्दु को राहु कहते है जो नीचे से ऊपर की ओर जाने वाला विन्दु है। और दूसरे विन्दु को जो उसके ठीक विरुद्ध है, केतु कहते है। यह ऊपर से नीचे आने वाला विन्दु है इसीसे राहु को Asending Node (असेडिंग नोड) और केतु को Decending Node (डिसेन्डिग नोड) भी कहते है।

ये दोनो ग्रह विन्दु मात्र है। एक दूसरे से सदा ६ राशि के अन्तर पर रहते हैं और सदा दूसरे ग्रहो की दिशा से विरुद्ध क्रम से चलते है। जव चन्द्रमा पूर्णमासी के समय या सूर्य अमावस्या के समय इन्ही पातो के पास पहुँचता है तो चन्द्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण होता है। इस कारण राहु और केतु को भी गह माना गया है।

जिस प्रकार चन्द्र और सूर्य ग्रहण के समय ससार के वातावरण मे विचित्र प्रभाव
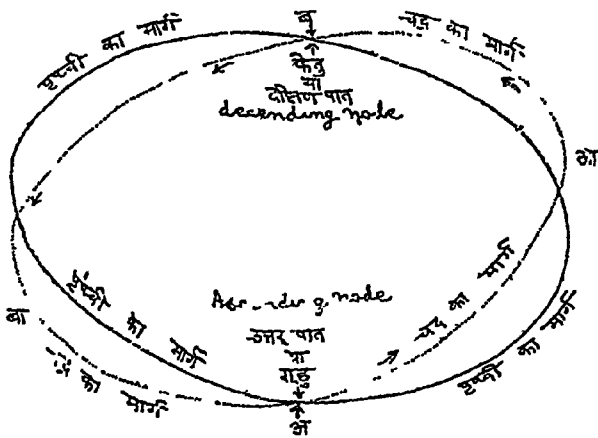
चित्र सख्या ४—राहु केतु की स्थिति

होता है इसी प्रकार राहु केतु की स्थिति के कारण भी मनुष्य पर प्रभाव पडता है। चित्र सख्या ४ से राहु-केतु की स्थिति समझ मे आवेगी।

पृथ्वी का भ्रमण-मार्ग ही सूर्य का भ्रमण-मार्ग कहा जाता है जिसे ही क्रान्ति वृत्त कहते हैं। इसी प्रकार चन्द्र पृथ्वी की परिक्रमा करते समय क्रान्ति वृत्त को २ स्थानो में काटता है जो चित्र संख्या ४ में तीर की नोक से वताये गये है इन्ही स्थानो को चन्द्र के पात भी कहते है।

देखो चित्र संख्या ४। चन्द्रमा अ विन्दु मे पहुँचकर आ होते हुए व विन्दु पर जाता है इसलिये इस चढाव के विन्दु अ को उत्तर पात या राहु कहते हैं। चन्द्रमा व विन्दु

से वा होते हुए उतरते हुए अ विन्दु पर आता है इससे व विन्दु को दक्षिण पात या केतु कहते हैं।

चन्द्रमा जिस मार्ग मे परिक्रमा करता है उसे चन्द्रकक्षा कहते हैं। चन्द्रकक्षा क्रान्ति वृत्त को लगभग ५ अक कोण वनाते हुए काटती है। अर्थात् जहाँ चन्द्र का मार्ग पृथ्वी के मार्ग को काटता है वहाँ लगभग ५ अश का कोण वनता है इसी कोण को चन्द्र का विक्षेप कहते हैं। विक्षेप=शर=Celestial Latitue।

सूर्य स्थिर है

सूर्य आकाश में पूर्व दिशा मे उदय होता है और पश्चिम मे अस्त होते दिखता है, परन्तु वास्तव में सूर्य स्थिर है। पृथ्वी इतर ग्रहो के सदृश पश्चिम से पूर्व की ओर
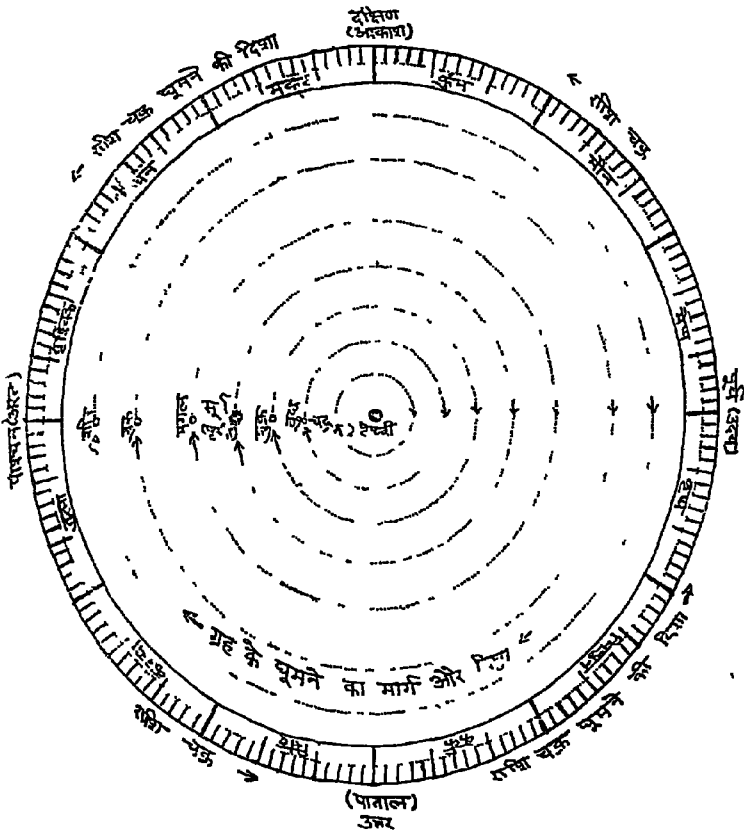
चित्र संख्या ५

राशिचक्र और ग्रहो के घूमने की दिशा सूचक चित्र, इसमे पृथ्वी के आस-पास ग्रह घूमते हुए वताये हैं।

घूमती है इस कारण पृथ्वी लोक के रहने वालो को सूर्य भ्रमण करता हुआ दिखता है। परन्तु ज्योतिष शास्त्र में गणित की सुविधा के लिये पृथ्वी को स्थिर मान कर सूर्य को चलित माना है। चाहे सूर्य को या पृथ्वी को स्थिर मानो परन्तु उनकी स्थिति में कोई अन्तर नही पडता। सूर्य को चलित मान लेने में गणित मे वहुत सरलता प्रतीत होती है। इसी कारण सूर्य को चलित माना है परन्तु वास्तव मे सूर्य स्थिर है इसका ध्यान रहे।

पृथ्वी ग्रह के स्थान मे सूर्य ग्रह मानकर जो सूर्य का गणित किया जाता है वह पृथ्वी का ही गणित है। आगे चित्र क्रम संख्या ५ मे पृथ्वी को केन्द्र मानकर सूर्य आदि ग्रह पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए वताये गये है।

राशि-चक्र पूर्व से पश्चिम की ओर घूमता है जिससे पहिले मेष फिर वृष इत्यादि क्रमानुसार राशियाँ आकाश मे उदय होते दिखाई देती है। परन्तु ग्रह पश्चिम से पूर्व की ओर घूमते है जैसा चित्र संख्या ५ में तीर द्वारा समझाया गया है।

इस राशि-चक्र मे प्रत्येक राशियो के अंश भी वताये गये है जिसमे २ अश का एक छोटा घर है। सव नक्षत्र और राशियाँ पूर्व (लग्न=उदय स्थान) से शिरोविन्दु (आकाश=दशम स्थान) की ओर जाते दिखते है। और शिरोविन्दु से पूर्व (लग्न) की ओर चलते है।

अध्याय ४

राशिचक्र Zodic

आकाश में सूर्य जिस मार्ग से भ्रमण करते हुए दिखता है उसे क्रांतिवृत्त Ecliptic कहते है। इसे आपामडल या क्रातिमडल भी कहते है। देखो चित्र सख्या ६। सव ही ग्रह इसी मार्ग से या इसके समीप होकर सूर्य की परिक्रमा करते है। इसे रवि का मार्ग भी कहते है क्यो कि सूर्य एक वर्ष में १२ राशियो में प्राय इसी मार्ग मे एक वार परिक्रमा कर लेता है। क्रान्तिवृत्त वास्तव में पृथ्वी के परिक्रमा करने का मार्ग है और पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा एक वर्ष मे प्राय १२ राशियो में कर लेती

है। परन्तु साधारण प्रकार से यही कहा जाता है कि सूर्य क्रातिवृत्त की १२ राशियो
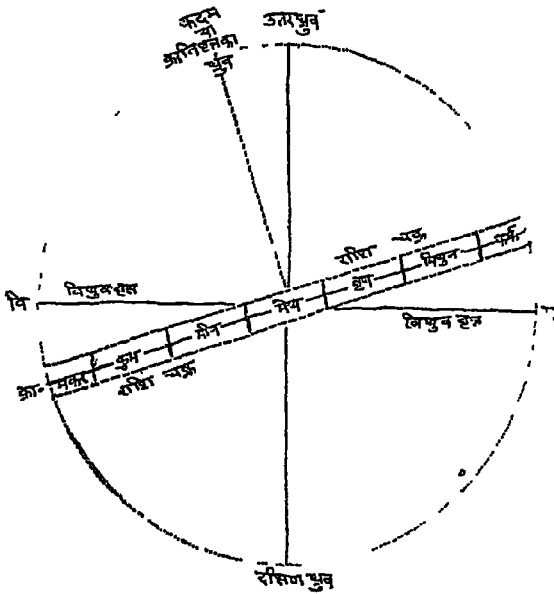
चित्र सख्या ६—विषुववृत्त क्रान्तिवृत्त राशिचक्र और ध्रुव

में एक वर्ष मे परिक्रमा कर लेता है, इस बात का ध्यान रहे। यह क्रातिवृत्त अंडाकार है। देखो चित्र सख्या ७
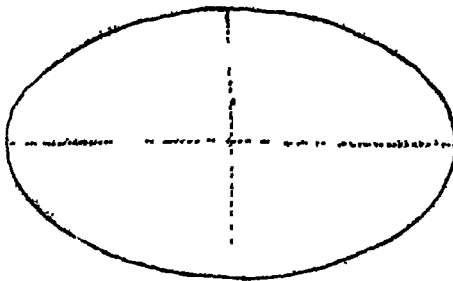
चित्र संख्या ७—पृथ्वी की कक्षा (परिक्रमा का मार्ग) Orbit of the earth

भचक्र या राशिचक्र यह क्रातिवृत्त के उत्तर दक्षिण ९-९ अश की चौडाई का एक कल्पित पट्टा माना जाता है उसे भचक्र या राशिचक्र कहते है, क्यो कि सब ही ग्रह इस कल्पित पट्टे के भीतर क्रांतिवृत्त पर या उसके उत्तर या दक्षिण होकर घूमा

करते है देखो चित्र सख्या ६ । क्राति=क्रातिवृत्त है जिसके उत्तर और दक्षिण मे ९-९ अश का चौडा पट्टा है । इस पूरे चौडे पट्टे को राशि चक्र कहते है ।

वि पु=विपुववृत्त है=यह आकाशीय विपुववृत्त, पृथ्वी के विपुववृत्त के सीध में आकाश में एक कल्पित रेखा है । आकाशीय विपुववृत्त=Celcstial eqwaltar इस विपुववृत्त पर क्रातिवृत्त २३°-२८′ का कोण वनाते हुए एक दूसरे को काटते है ।

इस राशिचक्र का आदि अन्त नही है किन्तु नापने के लिये विन्दु स्थान नियत किया गया है वह मेष राशि का आदि स्थान है । यह राशिचक्र दिन मे एक वार पूर्व से पश्चिम को घूमते दिखता है जैसे चित्र ५ मे वताया है ।

इसे पट्टे (राशिचक्र) के समान १२ विभाग करने से १२ राशियाँ वनी है और इसी के २७ समान विभाग किये जायँ तो २७ नक्षत्र होते है । अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ होने वाले और रेवती नक्षत्र के अन्त मे पूरे २७ नक्षत्र होने वाले इसी चक्र को भगण भी कहते है ।

जिस प्रकार भारत वर्ष में अनेक ग्राम है । परन्तु किसी विशेष ग्राम को जाने में चाहे पक्की सडक या रेल से जाओ जितने ग्राम उस मार्ग में या उसके आस पास समीप ही मिलते है, मार्ग के ग्रामो मे केवल उन्ही ग्रामो की गणना होती है, यद्यपि अन्य ग्राम समुदाय अनेक है । इसी प्रकार कोटचनुकोटि तारागणो मे से केवल २७ ही नक्षत्रो की गणना की है । राशि चक्र के पट्टे के भीतर अर्थात् जिस मार्ग से सब ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते है, केवल उसी मार्ग मे जो-जो तारागणो का समुदाय है, उनमे से २७ तारागणो के समुदाय को ही चुन लिया गया है, जिनके समीप से ग्रह भ्रमण करते है । मान लो कि ये ही मार्ग के २७ ग्राम है । इस कारण केवल उन्ही तारागणो के समुदाय की गणना ज्योतिष शास्त्र मे नक्षत्रो में की गई है, जिससे ग्रहो के स्थान आदि प्रकट करने में सुविधा हो कि अमुक ग्रह अमुक समय पर अमुक स्थान पर है । इन नक्षत्रो के नाम और परिचय आगे दिये है ।

राशियाँ Sign वुर्ज

राशिचक्र के १२ समान विभाग करने से १२ राशियाँ वनती है उनके नाम ये है । फारसी में इन्हें वुर्ज कहते है ।

क्रम	राशि	अंग्रेजी नाम		फारसी नाम	अंग्रेजी चिह्न	हिन्दी चिह्न
१	मेष	Aries	एरीज	हामल	♈	मे०
२	वृष	Taurus	टयूरस	सूर	♉	वृ०
३	मिथुन	Gemini	जेमिनी	जोझा	♊	मि०
४	कर्क	Cancer	केन्सर	सर्तान	♋	क०
५	सिंह	Leo	लियो	असद	♌	सिं०
६	कन्या	Virgo	भरगो	सुबला	♍	क०
७	तुला	Libra	लिब्रा	मीझान	♎	तु०
८	वृश्चिक	Scorpio	स्कारपियो	अक्रब	♏	वृ०
९	धन	Sagittarus	सगीट्टारस	कौस	♐	ध०
१०	मकर	Capricorn	केप्रीकार्न	जुदी	♑	म०
११	कुंभ	Aquarius	अक्वारियस	दलु	♒	कु०
१२	मीन	Pisces	पिसेस	हूत	♓	मी०

राशिचक्र विभाग

प्रत्येक चक्र Circle मे ३६० अश होते है। इनके १२ विभाग करने से ३६०–१२=३० अश की प्रत्येक राशि होती है।

इसी प्रकार ३६० अश के २७ विभाग किये=३६० ÷ २७=१३'-२०° तो प्रत्येक विभाग १३ अंश २० कला का हुआ अर्थात् राशिचक्र को २७ नक्षत्रो मे बाँटने से प्रत्येक नक्षत्र १३°-२०' का हुआ। अर्थात् एक राशि मे २¼ नक्षत्र हुए।

प्रत्येक नक्षत्र के ४ विभाग विभाग किये तो प्रत्येक विभाग को चरण कहते है। इस कारण ११ राशि=३०°=२¼ नक्षत्र=९ चरण। १ चरण=३'-२०"

१ चक्र=३६० अश degree (डिगरी)
१ राशि=३०° (अश)
१ अश ६०' (कला) minute (मिनट)
१ कला=६०" (विकला) Second (सेकण्ड)

} ये कोणात्मक अंशादि है। इनके चिन्ह अंश° कला' विकला"

ये चिह्न अश कलादि के अको की इकाई वाली संख्या के ऊपर दाहिनी ओर कुछ तिरछे लगाये जाते है जैसा ऊपर बताया गया है। जहाँ अंश कला आदि लिखना हो वहाँ केवल ये चिह्न लगा देते है जिसे समझ लेना चाहिये।

कोणात्मक अंश Angular distance

ऊपर कोणात्मक अशादि बताये गये है इनके विषय मे अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिये, क्योकि उनका अधिक काम पडता है।

कोणात्मक अश को कुछ उदाहरण देकर समझाते है।

कोण Angle

जब दो रेखाएँ किसी एक बिन्दु पर परस्पर मिलती हैं तो बीच में एक कोण बन जाता है। देखें चित्र संख्या ८। यहाँ अ ब एक लकीर, दूसरी लकीर अ, स से अ बिन्दु पर मिली है जिससे ब अ स कोण बन गया है। वह कोण चित्र मे तीर और बिन्दुओं से बताया गया है। इसी कोण का नाप अंश कला विकला में होता है।
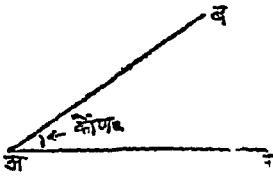
चित्र संख्या ८ कोण Angle
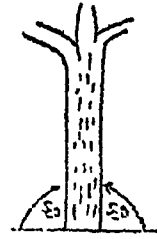
चित्र संख्या ९ समकोण

अब चित्र संख्या ९ को देखें। एक वृक्ष भूमि पर बिलकुल सीधा खड़ा है इसके कारण वृक्ष और भूमि के बीच मे दोनो ओर यहाँ एक-एक समकोण बन गया है। वृक्ष सीधा होने के कारण ९० अंश का समकोण दोनो ओर बनाता है। किसी भी समकोण Right Angle में ९० अंश होते हैं। उसके दूसरी ओर भी ९० अंश का दूसरा समकोण बनता है। दोनो समकोणो का योग ९० + ९० = १८०° होता है।

वृक्ष की तरह किसी भूमि या रेखा पर जो सीधी खड़ी रेखा होती है उसे लम्ब Parpendiculr Line कहते हैं। इस प्रकार किसी आधार (भूमि आदि) पर लम्ब खड़ा करने से दोनो ओर एक-एक समकोण ९०°-९०° होते हैं। पूरे चक्र में ३६०° होते है। पूरे चक्र में ४ समकोण होते है। अर्द्ध चक्र में २ समकोण और चौथाई चक्र में १ समकोण होता है। जैसा चित्र संख्या १० में बताया गया है। इसी प्रकार एक
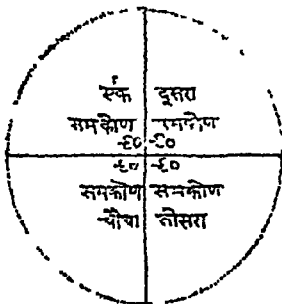
चित्र संख्या १०
एक चक्र के ४ समकोण
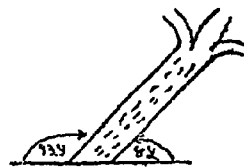
चित्र संख्या ११
उर्द्ध रेखा के दोनो ओर के कोण

राशि चक्र में ३६० अंश होते हैं और इन अंशो को १२ राशिओ मे विभक्त करने से प्रत्येक राशि ३६० ÷ १२ = ३०° की हुई।

यदि कोई एक वृक्ष एक ओर सीधा झुक जाता है तो उसी मान से झुकाव की ओर के कोण का अंश कम हो जाता है परन्तु दूसरी ओर उसी प्रमाण से कोण बढ जाता है, परन्तु दोनो कोणो का योग १८०° ही होता है। क्योकि दो समकोण का योग १८०° ही होता है। चित्र संख्या ११ देखें। वृक्ष के झुकाव के कारण जहाँ अधिक झुका है उस ओर ४५° का कोण है तो दूसरी ओर (१८०°−४५°) १३५° का कोण अवश्य होगा। अर्थात् १८०° मे से एक ओर का कोण घटाने से दूसरी ओर के कोण का अश प्रकट हो जाता है।

कोण और कोणात्मक दूरी का नाप

किसी नाप का कोण वनाने के लिए एक पैमाने की आवश्यकता पडती है जैसा चित्र सख्या १२ मे बताया है।
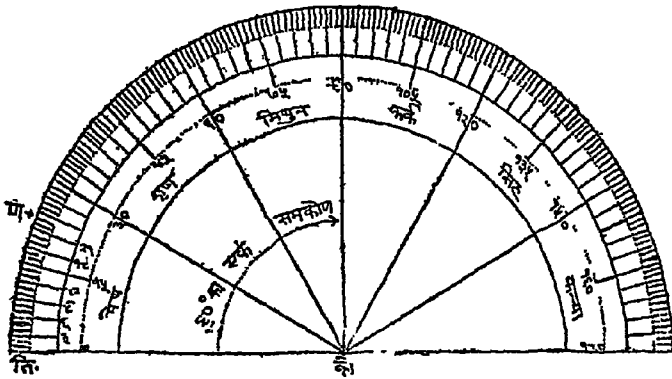
चित्र सख्या १२—कोण नापने का चक्र

एक अर्द्धवृत्त Semi circle वनाओ (इसमें २ समकोण और १८०° होते हैं क्योकि प्रत्येक समकोण मे ९०° होते है।) अव इस १८०° के अर्द्धवृत्त में एक एक अश का चिह्न यहाँ चित्र में वताये अनुसार वनाकर विभाग कर लो तो यह कोण नापने का चक्र या पैमाना वन जायगा। इससे किसी भी नाप का कोण वना सकते है।

मान लो २३° का कोण वनाना है तो १५° के आगे ८° और लो। जहाँ चित्र में तीर का निशान वनाया है २३° हो जाते है। फिर जिस कागज में कोण बनाना है एक सीधी लकीर खीच कर उसमें किसी एक विन्दु पर (को) स्थान मान कर चिह्न लगा दो। फिर उस सीधी लकीर पर इस पैमाने को इस प्रकार जमा दो जिससे पैमाना

के नीचे की लकीर कागजकी लकीर के ठीक ऊपर रहे और उसका (को) चिह्न पैमाना के (को) विन्दु के ठीक नीचे रहे। फिर पैमाना में जहाँ २३° पूरे हुए थे (ण) स्थान के ठीक नीचे एक विन्दु का चिह्न कागज में वनाकर उस (ण) स्थान के विन्दु मे और (को) विन्दु मे मिलती हुई रेखा खीचो तो (ति को ण) से जो कोण वनेगा वह २३° का होगा।

इसी प्रकार किसी भी इच्छित अंश का कोण वना सकते है और किसी भी कोण को नापकर जान सकते है कि वह कितने अंश का है। कोण नापने का पैमाना धातु आदि का वना हुआ वाजार मे ड्राइंग का सामान वेचने वाले के यहाँ मिल सकता है।

अंश के विभाग

जिस प्रकार घटी में १२ वजे तक के सब अंक अंकित रहते है और प्रत्येक खण्ड १ घण्टे का होता है। एक घण्टे के ६० विभाग करने से प्रत्येक विभाग १ मिनट का और १ मिनट के ६० विभाग करने से प्रत्येक विभाग एक सेकन्ड का माना जाता है, इसी प्रकार राशि-चक्र के भी विभाग है। जहाँ राशि अंश आदि का उपयोग हुआ है।

जिस प्रकार सूर्य के अनुसार घडी का समय होता है और कोई पूछता है कि क्या वजा है तो घडी देखकर ठीक वतला सकते है कि ४ वजकर ४१ मिनट १० सेकन्ड हुआ है अर्थात् सूर्य आकाश में इतना चढा है। इसी प्रकार ज्योतिष गणना मे प्रत्येक ग्रह की स्थिति वताई जाती है। जैसे सूर्य की स्थिति २ राशि ४ अंश ४१ कला १० विकला पर है। उसको लिखने में इस प्रकार लिखेंगे सूर्य स्पष्ट २–४°–४१′–१०″।

आकाश में अंशों का अनुमान करना

किसी मैदान में खडे होकर देखें तो चारो ओर पृथ्वी से आकाश लगा हुआ दिखेगा और चारो ओर आकाश की गोलाई दृष्टि गोचर होगी। जहाँ आकाश पृथ्वी से मिला हुआ दिखता है उसे क्षितिज Horizon कहते है।

जिस स्थान पर खडे है वह उस स्थान का केन्द्र हुआ। उससे ठीक सिर के ऊपर जो आकाश का विन्दु है उसे ख स्वस्तिक या शिरोविन्दु Zanith कहते है। इसी का नाम "ख" भी है।

क्षितिज से शिरोविन्दु तक एक गोलाई (वृत्त) का चतुर्थांश हुआ, जिसमे ९०° होते है। इस कारण यदि क्षितिज से अंश गिनना आरम्भ करें तो शिर पर ९०° होते है।

शिरोविन्दु को सदा दशम स्थान समझें। जैसा चित्र संख्या १३ में वताया है। क्षितिज मे पूर्व की ओर लग्न का स्थान होता है उसके विषय मे और भी अधिक वातें भाव के वर्णन क्रम में मिलेंगी।

लग्न (क्षितिज) और दशम (शिरोविन्दु) के बीच के स्थान के ३ भाग करें ९०÷३=३०° हुए। यही एक-एक भाग की १-१ राशि हुई। प्रत्येक राशि ३०° की
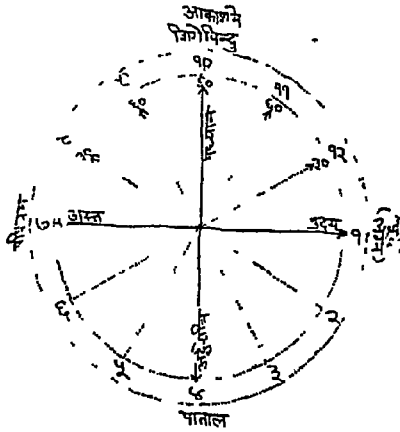
चित्र सख्या १३—आकाश मे अशो का अनुमान

होगी। प्रत्येक विभाग (१ राशि) ३०° का होगा। देखे चित्र सख्या १३। इसका अभ्यास आकाश की ओर देखकर प्रत्येक दिशा मे करें।

उत्तर की ओर ध्रुव तारा को देखें। वह जितने अश ऊँचा है वही ऊँचाई उस स्थान का अक्षाश होगा। इसी प्रकार सब दिशाओ मे आकाश के विभाग कर १ राशि=३०° कितना होगा, अनुमान करें तो १° कितना होगा इसका भी अनुमान हो जायगा।

अध्याय ५

नक्षत्र Constallations या Asterisms

पहिले बता चुके है कि राशि-चक्र के २७ सम विभाग करने से २७ नक्षत्र होते है। प्रत्येक नक्षत्र १३°–२०′ का होता है और १ राशि मे सवा दो नक्षत्र होते है। नक्षत्र का प्रत्येक चरण (चतुर्थ भाग) ३°–२०′ का होता है।

नक्षत्रो के नाम ये हैं—

क्रम	नक्षत्र	अग्रेजी नाम		फारसी नाम	हिन्दी चिह्न
१	अश्विनी	Beta Arietis	बीटा अरायटिस	शरती	अ.
२	भरणी	41 Arietis	४१ अरायटिस	वर्तान	भ.
३	कृतिका	Eta Tauri	ईटा टाउरी	सुरैया	कृ.
४	रोहिणी	Aldebaran	अल्डे बरान	दवरा	रो.
५	मृगशिर	Lambda Orionis	लामडा ओरयोनिस	हकुआ	मृ
६	आर्द्रा	Gamma Geminorum	गामा जेमिनोरम	हनआ	आ
७	पुनर्वसु	Pollux	पोल्लाक्स	झिरा	पुन.
८	पुष्य	Delta cancri	डेल्टा ककरी	नसरा	पु.
९	आश्लेषा	Zeta Hydrae	झीटा हायड्राई	तुर्फा	श्ले.
१०	मघा	Regulus	रेगुलस	जवहा	म.
११	पूर्वाफाल्गुनी	Theta leonis	थीटा लियोनिस	झाहेरा	पूफा.
१२	उत्तराफाल्गुनी	Denebola	डेनेबोला	सफा	उफा.
१३	हस्त	Delta Corvi	डेल्टा कोरवी	अवा	ह
१४	चित्रा	Spica	स्पीका	समाक	चि.
१५	स्वाती	Arcturus	आर्कटयूरस	गफरा	स्वा.
१६	विशाखा	Alpha Librae	अल्फा लिब्राई	झवा	वि
१७	अनुराधा	Delta Scorpii	डेल्टा स्कारपी	अकली	अनु
१८	ज्येष्ठा	Antares	अटारेश	कल्ब	ज्ये
१९	मूल	Lambada Scorpii	लामडा स्कार्पी	मोला	मू
२०	पूर्वाषाढा	Delta Sagittarii	डेल्टा सागिट्टारी	नआ	पूषा.
२१	उत्तराषाढा	Phi Sagittari	फी सागिट्टारी	बलदा	उषा.
२१अ	अभिजित्	Vega	व्हेगा	झावे	अभि
२२	श्रवण	Altair	आल्टायर	वला	श्र
२३	धनिष्ठा	Alpha Delphini	अल्फा डेल्फिनी	सोऊद	ध
२४	शतभिषक्	Lambada Aquarii	लामडा अक्वेरी	अखवा	श.
२५	पूर्वाभाद्रपद	Markab	मर्काब	मुकइ	पूभा
२६	उत्तराभाद्रपद	Algenib	अलगेनिब	मुअख	उभा
२७	रेवती	Zeta Piscium	झीटा पीशियम	रिशा	रे

२७ नक्षत्रों में अभिजित् नक्षत्र (२१ अ) की गणना नही होती। क्योकि यह नक्षत्र

क्रान्ति प्रदेश के वाहर है। इसका उपयोग मुहूर्त विषय मे होता है। यह नक्षत्र आकाश में उत्तरापाढा और श्रवण के वीच मे कुछ हट कर है।

उत्तराषाढा नक्षत्र का चतुर्थ चरण अर्थात् अन्तिम चतुर्थ भाग और श्रवण नक्षत्र के आदि का एक भाग जो ४ घडी का है अर्थात् श्रवण नक्षत्र के आदि का पन्द्रहवा भाग इतना सब मिलाकर अभिजित् नक्षत्र का भोग माना जाता है। अर्थात् इतना अभिजित् नक्षत्र होता है।

प्रत्येक राशि मे २$\frac{१}{४}$ नक्षत्र=९ चरण होते है। प्रत्येक राशि मे किस नक्षत्र का कौन-कौन चरण आता है नीचे चक्र से समझ में आ जायेगा—

क्रम	राशि	नक्षत्र	चरण
१	मेप	(१) अश्विनी	IIII
		(२) भरणी	IIII
		(३) कृतिका	I०००
२	वृष	(३) कृतिका	०III
		(४) रोहिणी	IIII
		(५) मृगशिर	II००
३	मिथुन	(५) मृगशिर	००II
		(६) आर्द्रा	IIII
		(७) पुनर्वसु	III०
४	कर्क	(७) पुनर्वसु	०००I
		(८) पुष्य	IIII
		(९) आश्लेपा	IIII
५	सिंह	(१०) मघा	IIII
		(११) पू फा	IIII
		(१२) उ फा	I०००
६	कन्या	(१२) उ फा	०III
		(१३) हस्त	IIII
		(१४) चित्रा	II००
७	तुला	(१४) चित्रा	००II
		(१५) स्वाती	IIII
		(१६) विशाखा	III०
८	वृश्चिक	(१६) विशाखा	०००I
		(१७) अनुराधा	IIII
		(१८) ज्येष्ठा	IIII
९	धन	(१९) मूल	IIII
		(२०) पू पा	IIII
		(२१) उ पा	I०००
१०	मकर	(२१) उ पा	०III
		(२२) श्रवण	IIII
		(२३) धनिष्ठा	II००
११	कुम्भ	(२३) धनिष्ठा	००II
		(२४) शतभि०	IIII
		(२५) पू भा	III०
१२	मीन	(२५) पू भा	०००I
		(२६) उ भा	IIII
		(२७) रेवती	IIII

प्रत्येक नक्षत्र के ४ चरण होते है। इन चरणो में से जो चरण लिये गये है उनके लिये खडी लकीर और जो नही लिये गये उनके लिये ० वताया गया है। एक खडी लकीर को १ चरण समझना चाहिये।

ऊपर वताये १ चरण का चिन्ह ।	जैसे अश्विनी के ४ चरण, भरणी के
२ ,, ,, ,, ॥	४ चरण और कृतिका का आदि का
३ ,, ,, ,, ॥।	१ चरण मिल कर मेष राशि वनी है।
४ ,, ,, ,, ॥॥	अव कृतिका के अन्तिम ३ चरण वचे।

ये कृतिका के अन्तिम ३ चरण, रोहिणी के ४ चरण और मृगशिर के आदि के २ चरण मिल कर वृष राशि वनती है। मृगशिर के अन्तिम २ चरण मिथुन राशि में चले जाते है। इसी प्रकार चक्र देखकर समझ लेना चाहिये। प्रत्येक राशि मे इस प्रकार ९ चरण होते है। ये ९ चरण मिलकर २$\frac{1}{4}$ नक्षत्र पूरे हो जाते हैं।

प्रत्येक चरण के लिये एक अक्षर होता है। जिस चरण मे किसी वालक का जन्म होता है उसी चरण के अक्षर पर से वालक का नाम रखा जाता है। चरण के अनुसार अक्षर वताने वाले चक्र को होडाचक्र कहते है। प्रत्येक पचाग में यह चक्र दिया रहता है। यह विषय आगे समझाया जायेगा।

अध्याय ६

ध्रुव की पहिचान

आकाश मे नक्षत्रो को पहिचानने के पहिले ध्रुव को पहिचान लेना आवश्यक है। क्योकि सव ग्रह आदिक एव नक्षत्र-समुदाय ध्रुव के आस पास घूमते हुए प्रतीत होते है। ध्रुव की पहिचान हो जाने पर नक्षत्रो का उदय अस्त और क्रान्तिवृत्त की गोलाई आदि समझ मे आ जायेगी।

जिस प्रकार पृथ्वी का उत्तर और दक्षिण ध्रुव है और जिस प्रकार पृथ्वी का झुकाव ध्रुव की ओर जमीन की धरातल से २३°-१७′ पर है उसी प्रकार आकाशीय उत्तर ध्रुव भी नीचे के धरातल से ऊपर उठा हुआ दिखता है। धरातल से यह ध्रुव का झुकाव वहाँ के स्थानिक अक्षाश के अनुसार ही होता है। इस विषय का वर्णन आगे होगा।

ध्रुव तारा Polar star के आस पास सप्तऋषि Great Bear के ७ तारे है। वे ध्रुव की परिक्रमा करते रहते हैं जिससे ध्रुव तारे की पहिचान सरलता से हो सकती है। इस लिये इन सप्तऋषि तारो को पहिचानना आवश्यक है। सप्तऋषियो के पास ही लघुऋक्ष little Bear के तारे भी है जिन्हे लघु सप्तऋषि भी कहते है। कभी-कभी सप्तऋषि तारागण नीचे की ओर रहने से नही दिखते उस समय

उसके विरुद्ध दिशा में और सीध मे एक तारागणो का समुदाय दिखता है, जो अग्रेजी के "एम" के आकार M के और है जिन्हे महर्षि या कश्यप मडल Cassiopea कहते है।
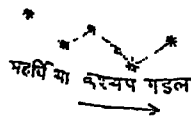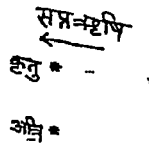
चित्र सख्या १४—सप्तऋषि लघुऋक्ष ध्रुव और महर्षि

इनसे भी ध्रुव तारे की पहिचान हो सकती है। चित्र सख्या १४ देखने से ये तारागण और ध्रुव पहिचाने जा सकते है।

सप्तऋषि

यह ७ तारो का झुण्ड है जो उत्तर मे ध्रुव की परिक्रमा सदा करते रहते है। ये ७ तारे ७ ऋषि माने गये है। इनमे से ४ तारे खाट के पाये सदृश है जिनसे कुछ लम्बाई लिये एक चौकोन बनता है। इनके नीचे की ओर से एक तिरछी, छोर में कुछ उठी हुई पूँछ सरीखी गई है जिसमें ३ तारे है। इस चौखटे के सबसे आगे के दो पाये एक ऊपर एक नीचे हैं जिनको क्रतु और अत्रि कहते है। इन दोनो की सीध में यदि एक लकीर आगे उसी सीध की ओर बढती हुई खीची जावे तो उसी सीध में

एक तारा साधारण प्रकाश का दिखेगा। उसी तारे की ओर प्रतिदिन ध्यान दें तो वह कभी चलता नही दिखेगा और उसी तारे के आस पास सप्तऋषि घूमते दिखेंगे। दो चार वार ध्यान पूर्वक उत्तर की ओर देखने से यह ध्रुव तारा पहिचान में आ जायेगा।

कश्यप मण्डल में वाईं ओर ऊपर जो तारा है उससे एक लम्वी रेखा लम्व स्वरूप खीची जावे तो वह भी ध्रुव में आकर मिलेगी। चित्र सख्या १४ के देखने से यह समझ में आ जायेगा। सप्तऋषि और महर्पि के वीचो वीच यह ध्रुव तारा है। इस ध्रव के आस पास सप्तऋषि आदि पूर्व से पश्चिम को घूमते दिखते है।

अध्याय ७

नक्षत्रों की पहिचान

क्रान्ति प्रदेश में २७ तारागणो का समुदाय या नक्षत्र है और अभिजित् नक्षत्र क्रान्ति मण्डल के वाहर है इन सवको पहिचान लेना चाहिये। इन सव नक्षत्रो को पहिचान लेने से ज्योतिप की कई वातें शीघ्र समझ में आने लगेंगी। इस कारण इन सवकी पहिचान यहाँ देते है। आगे इनके नकशे भी दिये है, जिनके सहारे आकाश में नक्षत्रो को पहिचानने का प्रयत्न करते रहना चाहिये। देखें चित्र सख्या ३९-४०-४१ (तीन चित्र पट आकाश के)। इनके अतिरिक्त पृथक-पृथक् नक्षत्रो को पहिचानने के लिये अलग चित्र दिये है। उनकी पहिचान यहाँ वताई जाती है।

१ अश्विनी—के ३ तारे है परन्तु उनकी पहिचान के लिये एक और आगे का तारा मिला देने से शीघ्र पहिचाने जा सकते हैं। २ तारे वीच में पास-पास कुछ तिरछे एक मे दूसरा कुछ नीचा परन्तु वरावरी मे है और ऊपर छोड पर १ तारा और नीचे १ तारा है। ये दोनो तारे चमकदार है परन्तु उत्तर का तारा अधिक चमकदार है और तीसरा तारा जो पूर्व में है वह सव से तेजस्वी है। इसके पश्चिम मे भी एक तारा है। देखें चित्र संख्या १५। यह नक्षत्र कुँआर के महीने में ८-९ वजे रात को पूर्व विन्दु से कुछ उत्तर की ओर हट कर उदय होने के ६½ घण्टा के उपरान्त सिरपर आता है और ६½ घण्टा के उपरान्त पश्चिम विन्दु से कुछ उत्तर की ओर अस्त होता है।

यह नक्षत्र जनवरी के आरम्भ मे व्यालू के समय सिर पर आता है और शिरोविन्दु मे कुछ उत्तर की ओर दिखता है। इसके ३ तारो का आकार घोडे के मुख सदृश होने मे इसे अश्विनी कहते है। कुँआर की पूर्णिमा के लगभग चन्द्रमा इस नक्षत्र पर रहता है।

२ भरणी—इसके ३ छोटे-छोटे तारे हैं जिनसे छोटा सा त्रिकोण बनता हैं। अश्विनी और भरणी के बीच मे रेखा खीचने पर उस रेखा के उत्तर में यह त्रिकोण पडता है। यह अश्विनी के आगे पूर्व की ओर हैं इसका आकार योनि सरीखा बताया है परन्तु यह त्रिकोणाकार है। देखें चित्र संख्या १६।

३ कृतिका—यह तारागणो का गुच्छा सा दिखता है किसान लोग इसे अच्छी तरह पहिचानते है। वे लोग इसे धोबी का मोगरा कहते हैं। कार्तिक के महीने मे व्यालू के समय यह पूर्व मे दिखता है और इसी को देखकर कार्तिक स्नान करने वाले समय
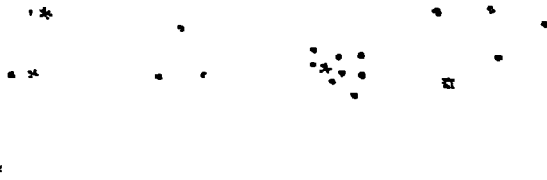
चित्र सख्या १५ चित्र सख्या १६ चित्र सख्या १७ चित्र सख्या १८
१ अश्विनी २ भरणी ३ कृतिका ४ रोहिणी

का अनुमान करते है। इसके ६ तारे माने जाते है और इसका आकार छुरा सदृश कहा हैं। फरवरी मे यह व्यालू के समय सिर पर आता है। कार्तिक की पूर्णिमा के लगभग चन्द्र इस नक्षत्र पर रहता है। देखें चित्र सख्या १७।

४ रोहिणी—इसमे ५ तारे माने जाते हैं और आकार गाडी सदृश बताया गया हैं। परन्तु देखने मे यह एक कोण सा दिखता हं। यह कृतिका के कुछ बाजू से नीचे की ओर दिखता है। इसमे नीचे का तारा अधिक प्रकाशवान् हं। ये तारे कृतिका से कुछ दक्षिण की ओर हैं। फरवरी मे व्यालू के समय ये सिर पर आते हैं और कुछ दक्षिण की ओर रहते है। इनका आकार चित्र सख्या १८ देखने से समझ पडेगा।

कहते है शनि और मगल जब इस शकट (गाडी) को भेदन करते हैं (इस त्रिकोण मे से होकर जाते है) तब प्रलय होता हैं। इसलिये ये ग्रह शकट भेदन नही करते। केवल चन्द्र ही यहाँ से जाता है इसी कारण रोहिणी को चन्द्र की स्त्री कहा है।

५ मृगशिर या मृगशिरा—इसे बहुधा सर्व किसान पहिचानते है। इसे वे हिरनी या खटोला कहते हैं। इसके चारो ओर चौकोन बनाते हुए ४ प्रकाशवान् तारे हैं। इनके बीच मे ३ तारे एक दूसरे की सीध मे है। इसे व्यार्ध का तीर कहते है। व्याध का तारा बहुत नीचे हटकर अतिप्रकाशवान् हैं और शीघ्र पहिचाना जा सकता है। मृगशिर के अन्त मे ३ तारे पास-पास एक सीध मे हैं उसे हिरन की पूँछ कहते हैं और सामने की

ओर ३ तारो का एक छोटा त्रिकोण है उसे हिरन का मुख कहते है। अगहन के महीने मे व्यालू के समय यह पूर्व मे दिखता है अगहन की पूर्णिमा के लगभग चन्द्र इस नक्षत्र पर रहता है। इन तारो में मृगशिर के ३ ही तारे माने जाते है। और आकार हिरन सदृश माना जाता है। ये तारे आकाश गगा के किनारे है और जब सिर पर आते है तब ठीक सिर पर दिखते है। ये रोहिणी से कुछ दूर हट कर दक्षिण की ओर है। मार्च के महीने मे व्यालू के समय ये सिर पर आते है। उदय होने के ६ घण्टा बाद सिर पर आते है। देखें चित्र सख्या १९।
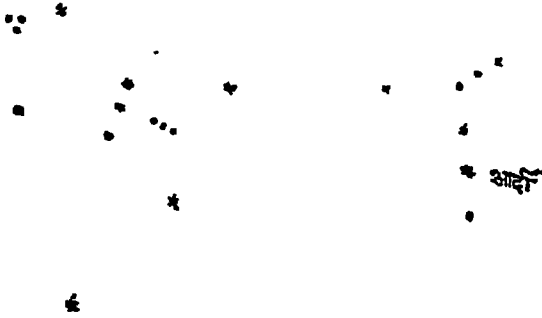
चित्र संख्या १९
५ मृगशिर

चित्र सख्या २०
६ आर्द्रा

६ आर्द्रा—इसका एक तारा है। यह प्राय भरणी के सीध मे है और मृगशिर तथा पुनर्वसु के बीच मे दिखता है। मार्च के महीने मे लगभग व्यालू के समय सिर पर आता है और सिर से कुछ दक्षिण की ओर दिखता है। इसका आकार मणि सदृश माना है। इसका प्रकार साधारण है। यह भी आकाश गगा के बाहरी किनारे पर है। इसकी पहिचान के लिये और तारो को पहिचान कर इसे खोजें। देखें चित्र सख्या २०।

७ पुनर्वसु—इसके ४ तारे है। घर सदृश इसका आकार बताया है। २ तारे इसके पहिली श्रेणी के (अधिक प्रकाशवान्) और तीसरा तारा भी पहिली श्रेणी का है। इस प्रकार उत्तर की ओर २ तारे है और दक्षिण की ओर २ तारे है। उत्तर की ओर के २ तारे सबसे पहिले उगते है। देखें चित्र सख्या २१। तारे कितनी श्रेणियो के है उनकी श्रेणी का क्रम चित्रपट ३९–४०–४१ देखने से प्रकट होगा।

८ पुष्य—इसके ३ तारे लिये जाते है और बाण सदृश इसका आकार माना जाता है। देखें चित्र सख्या २२। ये बारीक-बारीक तारे है जिनका छोटा त्रिकोण बनता है। जो देखने मे एक ही तारा सदृश दिखता है। अप्रेल के महीने मे व्यालू के समय

यह सिर पर आता है। पूष के महीने में पूर्णिमा के लगभग चन्द्रमा इस नक्षत्र पर रहता है।

चित्र सख्या २१ चित्र सख्या २२ चित्र सख्या २३
७ पुनर्वसु ८ पुष्य ९ आश्लेषा

९ आश्लेषा या अश्लेषा—इसके ५ तारे और चक्र सरीखा आकार बताया है। यह पुष्य के दक्षिण में है और उसीकी बराबरी से सिर पर आता है। चन्द्र पुष्य से आश्लेषा पर शीघ्र आ जाता है। इसके बारीक तारे हैं जिनमे एक प्रकाशवान् तारा है। देखें चित्र सख्या २३।

१० मघा—इसके ६ तारे माने जाते है और आकार भवन सदृश बताया गया है। परन्तु इन ६ तारो पर विचार करने से हसिया सरीखा आकार दिखाई देता है। ध्यान मे आते ही यह शीघ्र पहिचाना जा सकता है। इसके ४ बडे तारे है इनका आकार एक समानान्तर भुज चौकोन सा बनता है, जिस प्रकार दियासलाई की डिब्बी के ऊपर के ढक्कन को दबा देने से कुछ तिरछा चौकोन बनता है। इसके पश्चिम की ओर दक्षिण कोण का तारा तेजस्वी है और पहिली श्रेणी का है। इसके दक्षिण मे एक बारीक तारा है जो पाँचवाँ तारा है। पूर्व बाजू से दोनो दक्षिण के तारे अधिक तेजस्वी है। मई महीने के आरम्भ मे ब्यालू के समय यह सिर पर कुछ दक्षिण की ओर हटा हुआ दिखता है। माघ की पूर्णिमा को चन्द्रमा इसके समीप रहता है। कोई इसके ५ तारे मानते है। देखे चित्र सख्या २४।

११ पूर्वा फलगुनी
१२ उत्तरा फालगुनी } मघा के पूर्व में कुछ उत्तर को दोनो फालगुनी के ४ तारे है जो चौकोन सरीखे दिखते है। उसके पूर्व-पश्चिम बाजू का उत्तर-दक्षिण बाजू से अन्तर दुगने से कुछ कम है। पश्चिम की ओर के २ तारे पूर्वा फाल्गुनी है। इसके उत्तर की ओर का अधिक तेजस्वी है। पूर्व बाजू के दोनो तारो को उत्तरा फालगुनी कहते है। इसके नीचे दक्षिण का तारा अधिक तेजस्वी है। उत्तर का

बारीक है। फाल्गुन मे इस नक्षत्र पर पूर्णिमा को चन्द्र आता है। फाल्गुन मे ये २ नक्षत्र व्यालू के समय पूर्व मे दिखते हैं। मई जून मे व्यालू समय सिर पर दिखते है। और ठीक सिर पर आते है। देखे चित्र सख्या २५।
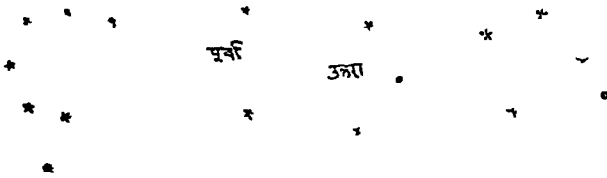
चित्र सख्या २४ — १० मघा

चित्र सख्या २५ — ११ पूर्वा फाल्गुनी, १२ उत्तरा फाल्गुनी

चित्र सख्या २६ — १३ हस्त

१३ हस्त—इसके ५ तारे है। आकार हाथ सदृश है। यह मघा के दक्षिण ओर है। शीघ्र पहिचाना जा सकता है। हाथ की अगुलियो की ५ नोक सदृश ये पाँचो तारे दिखते है। जून के महीने मे ये व्यालू समय सिर पर दिखते है और शिरोबिन्दु से ३०-४० अश दक्षिण की ओर रहते है। देखें चित्र सख्या २६।

१४ चित्रा—हस्त के बाजू पूर्व को कुछ उत्तर की ओर यह एक ही तारा है जो बडा प्रकाशवान् है। आकार इसका मोती सदृश बताया है। जून के अन्तिम भाग मे यह व्यालू के समय सिर पर आता है। चैत्र की पूर्णिमा को चन्द्र इस पर आता है। यह तारा प्राय क्रातिवृत्त पर है। देखें चित्र सख्या २७।

१५ स्वाती—यह अकेला और बहुत बडा तारा है। सरलता से पहिचाना जा सकता है। चित्रा से बहुत उत्तर को इसका तारा चमकता हुआ दिखता है। यह तारा चित्रा से भी अधिक प्रकाशवान् है। चित्रा के प्राय ५० मिनट बाद यह शिरोबिन्दु पर आता है और उसके १॥ घटा बाद डूबता है। यह चित्रा से प्राय ३०° दक्षिण को है। इसका एक ही तारा है और आकार मूँगा सदृश बताया है। यह कुछ लाल रग का है। देखें चित्र सख्या २८।

१६ विशाखा—इसके २ तारे है। चित्रा के सामने ही नीचे की ओर २ तारे चमकते हुए दिखते है, परन्तु चित्रा से उनका तेज कम है। फरवरी मे ५ बजे प्रात के लगभग ये सिर पर दिखते है। पहिले तारे के उपरान्त दूसरा तारा २६ मिनट के अन्तर से उगता है। उसके बराबरी से २ और छोटे तारे है जिनको मिला कर देखने से एक चौकोन सा बन जाता है। इसके ४ तारे और आकार तोरण सदृश मानते है। वैशाख मे चन्द्रमा पूर्णिमा को इस नक्षत्र पर आता है। मई महीने मे

ब्यालू समय यह उदय होता हैं और उदय होने के समय पूर्व और आग्नेयकोण के बीच दिखता है। दोनो बडा तारो मे एक चित्र के तारा के सामने नीचे को ओर दिखता हैं और दूसरा उसके बाईं ओर दिखता है। दोनो तारे एक से तेजस्वी
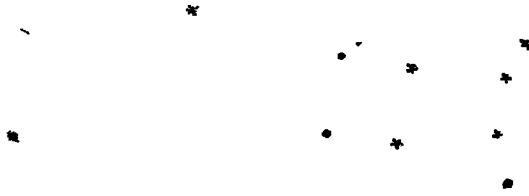
चित्र सख्या २७ चित्र सख्या २८ चित्र सख्या २९ चित्र सख्या ३०
१४ चित्रा १५ स्वाती १६ विशाखा १७ अनुराधा

है, परन्तु चित्रा से तेज कम हैं। कभी चन्द्र दोनो बडे तारो के बीच से होकर जाता है। देखें चित्र सख्या २९।

१७ अनुराधा—इसके ४ तारे हैं, जो प्राय एक सीध मे उत्तर दक्षिण को हैं और विशाखा के नीचे पूर्व को है। विशाखा के बडे तारो से एक सीधी रेखा अनुराधा के तारो की सरल रेखा के छोरो से मिलाई जावे तो उत्तर की अपेक्षा दक्षिण का अन्तर अधिक प्रगट होगा। इन तारो का आकार भात की वलि (पिंड) सदृश वताया हैं अर्थात् किसी ने भात की वलि के ४ कौर उठाकर ४ जगह में एक रेखा मे एक के नीचे एक रख दिया हो। देखें चित्र संख्या ३०।

१८ ज्येष्ठा—इसके ३ तारे प्राय एक सीध में पूर्व पश्चिम को है। अनुराधा के सीधी रेखा मे बीच से पूर्व को एक लम्ब खीचा जावे तो उसकी सीध में ३ अनुराधा के तारे खडे एक के नीचे एक है तो ज्येष्ठा के तारे आडे एक के बाद एक हैं। ज्येष्ठा के बीच का एक तारा पहिली श्रेणी का है। ज्येष्ठ मास मे पूर्णमासी को चन्द्र इस नक्षत्र पर रहता है। इसका आकार कुण्डली सरीखा वताया है। देखें चित्र सख्या ३१।

चित्र सख्या ३१ चित्र सख्या ३२ चित्र सख्या ३३
१८ ज्येष्ठा १९ मूल २० पूर्वाषाढा, २१ उत्तराषाढा

१९ मूल—ज्येष्ठा के पूर्व में ११ तारे है, जो सिंह की पूछ सरीखा या बिच्छू के डक सरीखा आकार गोलाई लिये बनाते है। यह शीघ्र पहिचाना जा सकता है। आकाश

गगा में यह क्रातिवृत्त के दक्षिण को है। देखें चित्र सख्या ३२। इसका आकार सिह पुन्छ सरीखा माना है। यह जून के उत्तरार्द्ध मे व्यालू के समय उदय होता है। सितम्बर मे ५ वजे सध्या को और अप्रैल मे प्रात के समीप सिर पर दिखता है। अनुराधा आदि के तारो को मिला कर देखने मे आकाश मे एक बडा विच्छू सरीखा आकार सिर से ५०-६० अश दक्षिण की ओर लटकता हुआ दिखता है।

२० पूर्वापाढ़ा
२१ उत्तरापाढ़ा } इनमे प्रत्येक के २-२ तारे हैं। इनके २-२ तारे मिल कर एक समकोण सरीखा वन जाता है। २ तारा पूर्वापाढा के आकाश गगा के वाहर है। उत्तरापाढा के उत्तर दक्षिण लम्वाई से पूर्व पश्चिम लम्वाई का प्रमाण प्राय दुगुना है। अप्रैल के प्रात के लगभग यह चौकोन सिर पर आता है। देखें चित्र सख्या ३३। पूर्वापाढा का आकार हाथी दात और उत्तरापाढा का आकार मच (मचैया) सरीखा माना है।

२१ अभिजित्—दोनो आपाढा के वाद अभिजित् का तारा लिया जाता है। परन्तु यह क्रातिवृत्त प्रदेश से दूर और वाहर है इस कारण इसे नक्षत्र की गणना करते समय छोड देते है। यह तारा उत्तर की ओर आकाश गगा के किनारे है और वडा प्रकाशवान् है। इसके पास दो छोटे २ तारे है जिनसे एक त्रिकोण सरीखा दिखता है। इस नक्षत्र को मिलाने से २८ नक्षत्र हो जाते है परन्तु इसे छोटकर केवल क्राति प्रदेश के ही २७ नक्षत्र लिये जाते हैं। यह प्राय प्रथम श्रेणी का है। देखें चित्र सख्या ३४।

२२ श्रवण—इसके ३ तारे है जिसमें बीच का तारा पहिली श्रेणी का और बहुत चमकीला है। ये तारे आकाश गगा मे उत्तरापाढा से बहुत उत्तर को कुछ पूर्व कोने में है। श्रावण मास की पूर्णमासी को चद्र इस नक्षत्र के समीप आता है। ये तारे शीघ्र

चित्र सख्या ३३ चित्र सख्या ३५ चित्र सख्या ३६
२१ अभिजित् २२ श्रवण २३ धनिष्ठा

पहिचाने जा सकते है। एक सीध मे ये तीनो तारे है और प्राय उत्तर दक्षिण कुछ तिरछे है। इन तीन तारो का आकार वामन औतार के चरण सदृश माना जाता है परन्तु देखने में ये वाण सरीखे दिखते है। देखें चित्र सख्या ३५।

२३ धनिष्ठा—इसके ५ तारे है जो पास-पास है। श्रवण के पूर्व कुछ उत्तर बाजू इसका झुमका दिखता है। इसका आकार मृदग सरीखा कहा गया है। नीचे का छोटा तारा छोड कर ४ तारो को देखें तो चपटा चौकोन सरीखा दिखता है। यह आकाश गगा के बाहर है। ये ४ तारे पास पास और मद ज्योति के है। देखें चित्र सख्या ३६।

२४ शतभिषक् या शतभिषा—इसे शततारक भी कहते है। कहा जाता है कि इसमें १०० तारो का झुण्ड है। इसका आकार वृत्त Circle सरीखा बताया गया है परन्तु कोई इसमे से १० तारा कोई १ ही तारा को ही शतभिषक् मानते है। यह नवम्बर मे व्यालू के समय सिर पर आता है और प्राय २८ अश सिर से दक्षिण की ओर दिखता है। इसीके सीध मे बहुत नीचे दक्षिण मे १ बहुत ही प्रकाशवान् तारा है जिसे ·याममत्स्य कहते है। दोनो का अन्तर ८ अश का है। १०० तारे होने से इसका नाम शततार पडा है। वहाँ बहुत से तारेगण पास-पास है।

२५ पूर्व भाद्रपद
२६ उत्तर भाद्रपद } याममत्स्य और शतभिषक् के प्रकाशवान् तारा को १ सरल रेखा से मिलाओ और इस रेखा को उत्तर की ओर बढाते जाओ तो इस रेखा के कुछ पश्चिम की ओर पूर्व भाद्रपद के २ तारे आते है। याम-मत्स्य से जितने अश पर उत्तर मे शतभिषक् है उतने ही अन्तर पर शतभिषक् से उत्तर मे पूर्व भाद्रपद का १ तारा है और उसके बाजू ठीक उत्तर में १३° पर पूर्व भाद्रपद का दूसरा तारा है। ये दोनो तारे एक से तेजस्वी है। नवम्बर मे व्यालू के समय सिर पर आते है उस समय शिरो बिन्दु के दक्षिण ५-६ अश पर रहते है और दूसरा उतने ही उत्तर को रहता है। इन दोनो तारो के बीच जितना अन्तर है उससे भी अधिक अन्तर पर प्रत्येक के पूर्व मे एक-एक तारा है इस प्रकार २ तारे है। इन दोनो को उत्तर भाद्रपद कहते है। इन दोनो मे उत्तर का अधिक तेजस्वी है यह दूसरी श्रेणी का तारा है।

पूर्व भाद्रपद के २ तारे और उत्तर भाद्रपद के २ तारे मिलकर एक चौकोन सरीखा बनता है। देखें चित्र सख्या ३७। भाद्रपद मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा इस नक्षत्र के

पूर्वा उत्तरा
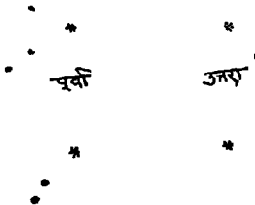
चित्र सख्या ३७
२५ पूर्वा भाद्रपद, २६ उत्तरा भाद्रपद

चित्र सख्या ३८
२७ रेवती

समीप आता है। पूर्व भाद्रपद का आकार मञ्च सरीखा और उत्तर भाद्रपद का आकार यमल (जोडा) सरीखा बताया है।

२७ रेवती—इसमे ३२ तारे है। आकार मृदङ्ग सरीखा है और वैसा ही दिखता है। ये छोटे-छोटे तारे है। उत्तर भाद्रपद के दोनो तारो मे से दक्षिण के तारे के आग्नेय कोण के लगभग १०-१० अश पर तारो की १ कतार है जो पूर्व-पश्चिम गई है। इनमे ६-७ तारे तेजस्वी है और प्राय एक दूसरे के समानान्तर पर है। इनके दक्षिण मे अश्विनी है। देखें चित्र सख्या ३८।

इन नक्षत्रो के अतिरिक्त आकाश गगा, याममत्स्य आदि चित्र मे दिये है जिनको देखकर आकाश मे पहिचानने का प्रयत्न करें।

आकाश गगा Milk way

यह आकाश मे उत्तर से दक्षिण की ओर तिरछी गई है। इसमे बहुत से तारो का घना समुदाय होता है, जिसके कारण आकाश का वह भाग श्वेत सरीखा दिखता है जैसे बादल के टुकडे छाये हो।

क्रान्ति प्रदेश का वर्णन आगे मिलेगा।

अश्विनी से १२ नक्षत्र तक सब तारे विषुवत्वृत्त के उत्तर में है और स्वाती अभिजित श्रवण धनिष्ठा पूर्वभाद्रपद उत्तरभाद्रपद रेवती इनके तारे भी विषुवत वृत्त के उत्तर में है। शेष तारे दक्षिण मे है।

चन्द्र का भ्रमण मार्ग—चन्द्रमा इस प्रकार नक्षत्रो में से होकर जाता है।

१—इन १० नक्षत्रो के दक्षिण की ओर से चन्द्रमा जाता है। नक्षत्रो के नाम के आगे उनकी क्रम सख्या दी है।

(१) अश्विनी १, (२) भरणी २, (३) पुनर्वसु ७, (४) पू० फा० ११, (५) उ० फा० १२, (६) स्वाती १५, (७) श्रवण २२, (८) धनिष्ठा २३, (९) पू० भा० २५, (१०) उ० भा० २६।

२—इन ५ नक्षत्रो के उत्तर से चन्द्रमा जाता है।

(१) मृग० ५, (२) आर्द्रा ६, (३) आश्लेषा ९, (४) हस्त १३, (५) मूल १९।

३—शेष १२ नक्षत्रो के दोनो ओर से, कभी पास से कभी उन को ढाकते हुए, चन्द्रमा जाता है।

(१) कृतिका ३, (२) रोहिणी ४, (३) पुष्य ८, (४) मघा १०, (५) चित्रा १४, (६) विशाखा १६, (७) अनुराधा १७, (८) ज्येष्ठा १८, (९) शतभिषक् २४, (१०) पू० षा० २०, (११) उ० षा० २१, (१२) रेवती २७।

आकाश के नकशे को देखने की रीति

नकशे मे जो दिशाएँ दी है उनके सम्बन्ध में कुछ भ्रम हो सकता है। कारण यह है कि उत्तर के उपरान्त बाईं ओर पूर्व फिर दक्षिण फिर पश्चिम दिया है। पूर्व के स्थान मे पश्चिम होने का कारण नीचे समझाया गया है।

नकशे को आकाश से मिलान करने के लिये खुले मैदान मे बैठें जहाँ से आकाश अच्छी तरह दिखे। मुँह ऊपर की ओर कर आकाश को देखें फिर नकशे को लौटाकर सिर के ऊपर रखें जिससे नकशे की पीठ आकाश की ओर रहे और नकशा पढने मे आ सके। नकशे मे उत्तर दिया है, वह उत्तर ध्रुव की ओर करें और नकशे के पूर्व को पूर्व की ओर रखें तो नकशे की शेष दिशाएँ ठीक स्थिति पर आ जायेंगी। इसके उपरान्त तारा देखने का जो समय बताया है उन्ही महीनो की उन्ही तारीखो को जैसा आगे बताया है उस नकशे के अनुसार ताराओ को खोजें तो अवश्य मिलेंगे।

इसी प्रकार आकाश मे देखते-देखते और पहिचानने का प्रयत्न करते रहने से मुख्य-मुख्य नक्षत्रो की अवश्य पहिचान होने लगेगी। जब आकाश खुला रहे और अँधेरी रात हो, तारा गणो का अवलोकन कर नक्षत्र पहिचानने का प्रयत्न करते है।

जब नक्षत्रो की पहिचान हो जावे तो ग्रहो की भी खोज करें। किसी पञ्चाग से प्रगट हो सकता है कि अमुक ग्रह अमुक नक्षत्र या राशि पर है। इनको समझ लेने से ज्योतिष शास्त्र की और बातें शीघ्र समझ में आने लगेंगी।

आकाश का नकशा देखने का समय

तारागण प्रतिदिन पश्चिम को १° पीछे हटते है। जो तारा आज सध्या को ७ बजे सिर पर है वह कल ७ बजने को ४ मिनट शेष रहेंगे तब सिर पर आवेगा। अर्थात् ४ मिनट पहिले दिखेगा।

वृत्त मे ३६०° होते हैं और २४ घण्टे में एक वृत्त का चक्कर पूरा होता है। अर्थात् एक दिन रात मे सूर्य या नक्षत्र का पूरा एक चक्कर हो जाता है। इस प्रकार से १ घण्टे मे १५° या ४ मिनट मे १° नक्षत्र चलते हैं। इसी हिसाब से प्रति दिन नक्षत्रो की चाल में १° का अन्तर पड जाता है। अन्तर=१ दिन मे=४ मिनट। १५ दिन=१ घण्टा। १ मास=२ घण्टा। ३ मास=६ घण्टा।

कारण यह है कि सावन मास से नक्षत्र दिन का मान २३ घण्टा ५६ मि० ४०९०६ से० का है अर्थात् सावन दिन से नक्षत्र दिन लगभग ४ मिनट छोटा है। नक्षत्र उदय होने मे अस्त होकर फिर दूसरे दिन उदय होने तक १ नक्षत्र दिन होता है। वह सूर्य के समय से ४ मिनट छोटा है अर्थात् सूर्य का विषुवाश प्रतिदिन ४ मिनट बढता है।
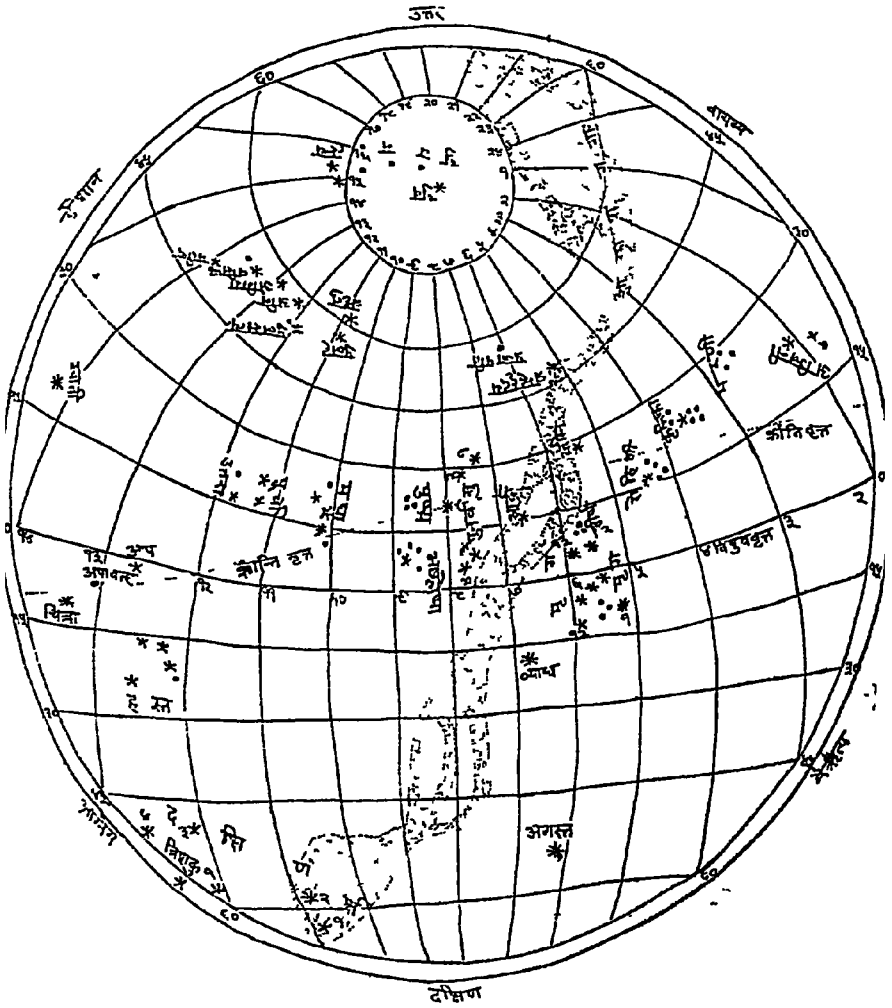
चित्र सख्या ३९—फागुन मास का आकाश का चित्र पट

चित्र संख्या ४०—भाद्रपद मास का आकाश का चित्र पट

तारा की श्रेणी

पहिली दूसरी तीसरी चौथी पांचवी छटवी

* * ˄ o • •
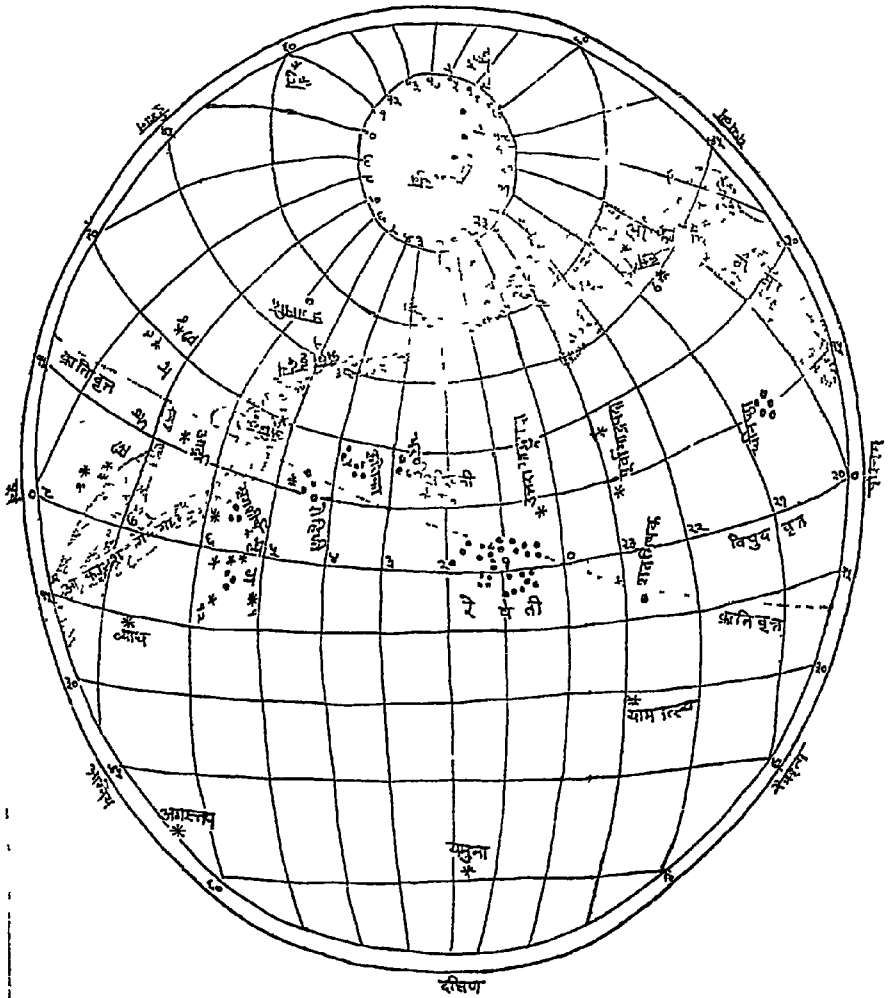
चित्र सख्या ४१—मार्गशीर्ष मास का आकाश का चित्र पट

इस हिसाब से आज ७ बजे सध्या को जो नक्षत्र सिर पर दिखेगा वह कल ७ बजे संध्या को १° पश्चिम मे हटा दिखेगा। १५ दिन मे वही तारा (१५×४)=६० मिनट (१ घण्टा) पहिले अर्थात् ६ बजे सध्या को सिर पर आवेगा। ७ बजे सध्या को उसे देखेंगे तो १५° पश्चिम को वह तारा हटा दिखेगा। जो नक्षत्र आज ७ बजे सध्या को सिर पर है वह तीन महीना वाद ७ बजे सध्या को आकाश मे डूबते दिखेगा, अर्थात् ३ महीने मे ९०° का अन्तर पड जाता है। जो तारा आज १० बजे रात सिर पर दिखेगा, १ महीना वाद वह सिर पर ८ बजे रात दिखेगा अर्थात् १ महीने के वाद वह तारा आज से २ घण्टा पहिले उस स्थिति मे आवेगा।

इस नियम को ध्यान मे रख कर नक्षत्र पर (नकशा) देखने का समय जान सकते है कि किस-किस तारीख को किस-किस समय पर चित्रपट मे दिये हुए तारागण दिखाई देंगे।

नक्षत्र पट (नकशा) देखने का समय।

चित्रपट सख्या ३९			चित्रपट सख्या ४०			चित्रपट सख्या ४१।		
तारीख	महीना	समय	ता०	महीना	समय	ता०	महीना	समय
२०	नवम्बर	४ बजे रात	८	मई	५ बजे रात	२२	अगस्त	४ बजे रात
६	दिसम्बर	३ ,,	२३	,,	४ ,,	६	सितम्बर	३ ,,
२१	,,	२ ,,	७	जून	३ ,,	२१	,,	२ ,,
५	जनवरी	१ ,,	२२	,,	२ ,,	६	अक्टूवर	१ ,,
२०	,,	१२ ,,	७	जुलाई	१ ,,	२१	,,	१२ ,,
४	फरवरी	११ ,,	२२	,,	१२ ,,	५	नवम्वर	११ ,,
२०	,,	१० ,,	६	अगस्त	११ ,,	२०	,,	१० ,,
७	मार्च	९ ,,	२१	,,	१० ,,	६	दिसम्बर	९ ,,
२२	,,	८ ,,	५	सितम्वर	९ ,,	२१	,,	८ ,,
६	अप्रैल	७ ,,	२०	,,	८ ,,	५	जनवरी	७ ,,

अध्याय ८

राशियों के स्वरूप

आकाश मे इन नक्षत्रो के आकार यदि ध्यान पूर्वक देखें तो कुछ आकृतियाँ वनी हुई प्रतीत होगी।। इन्ही आकृतियो के अनुमान से राशियो का नाम पडा है। जैसे—

१—मेष=मेढा

२—वृष=बैल

३—मिथुन=स्त्री पुरुष का जोडा ।

४—कर्क=केकडा ।

५—सिंह=सिंह ।

६—कन्या=नाव मे वैंठी कुमारी ।

७—तुला=तराजू ।

८—वृश्चिक=विच्छू ।

९—धन=धनुपधारी पुरुप जिसका धड घोडे सरीखा है ।

१०—मकर=सिर हिरन सरीखा और धड मगर सरीखा ।

११—कुम्भ=हाथो मे घडा लिये हुये पुरुप ।

१२—मीन=२ मछलियाँ जिनमें १ का मुँह दूसरी को पूँछ की ओर है ।

इनके अनुमानिक चित्र सख्या ४२ से ५३ तक मे दिये है ।

राशियां के कल्पित चित्र

चित्र सख्या ४२ मेष | चित्र सख्या ४३ वृप | चित्र सख्या ४४ मिथुन

चित्र सख्या ४५ कर्क | चित्र सख्या ४६ सिंह | चित्र सख्या ४७ कन्या

चित्र सख्या ४८ तुला | चित्र सख्या ४९ वृश्चिक | चित्र सख्या ५० धन

चित्र मख्या ५१ मकर | चित्र सख्या ५२ कुभ | चित्र सख्या ५३ मीन

अध्याय ६

पृथ्वी के अक्षांश और देशान्तर का स्पष्टीकरण

पृथ्वी के अक्षाश और देशान्तर का अधिक काम पडता है। इस कारण इनको समझ लेना चाहिये।

पृथ्वी नारगी के सदृश गोल है और दोनो सिरो पर चपटी है। पृथ्वी के इन दोनो सिरो को ध्रुव Pole कहते है। उत्तर के छोर को उत्तर ध्रुव और जो ठीक उसके विरुद्ध नीचे का छोर है उसे दक्षिण ध्रुव कहते है। दोनो ध्रुवो के बीचोबीच एक कल्पित रेखा गई है उसे धुरी axle कहते है। दोनो ध्रुवो के बीचोबीच ध्रुवो से समानान्तर दूरी पर जो एक कल्पित रेखा पूर्व पश्चिम पृथ्वी की सतह पर से पृथ्वी को घेरते हुए गई है उसे विपुववृत्त या विपुवत् रेखा या भूमध्य रेखा Equator कहते हैं। इस रेखा से उत्तर या दक्षिण ध्रुव समानान्तर दूरी पर है। इसे भूमध्य रेखा कहते हैं।

अक्षांश Latitude

भूमध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण को समानान्तर दूरी पर जो कल्पित रेखाएँ पृथ्वी की सतह पर पूर्व-पश्चिम बनाई गई है वे रेखाएँ अक्षाश कहलाती हैं। इन रेखाओ

से प्रकट होता है कि किसी स्थान की उत्तर या दक्षिण दूरी भूमध्य रेखा से कितनी है।

अक्ष=धुरी, अक्ष + अंश=धुरी का कोणात्मक अंश।

अर्थात् उससे प्रगट होता है कि उस स्थान में पृथ्वी की धुरी का झुकावकोणात्मक अंश क्या है और भूमध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण किसी स्थान विशेष की कोणात्मक दूरी का ही नाम अक्षांश है।
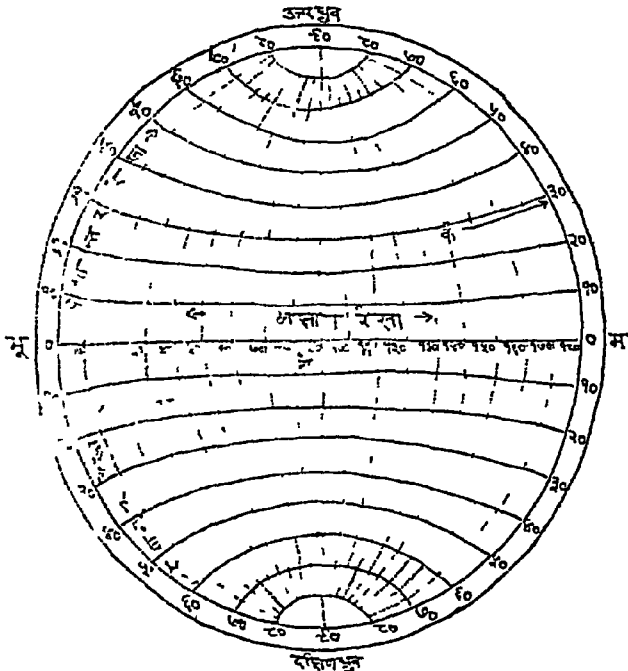
चित्र संख्या ५४–अक्षांश और देशान्तर

चित्र संख्या ५४ देखने से अक्षांश समझ में आ जायेगा। भूमध्यरेखा पर अक्षांश ० होता है और उसे निरक्ष देश कहते है क्योकि वहाँ कुछ भी अक्षांश नही रहता। यहाँ से ज्यो-ज्यो उत्तर या दक्षिण की ओर जाओ तो अक्षांश बढता जायेगा।

देशान्तर—Longitude देश + अंतर=देशो का अन्तर।

इसे मध्याह्न रेखा Meridian भी कहते है। किसी प्रधान रेखा Prime meridian से पूर्व या पश्चिम में किसी स्थान का अन्तर इससे नापा जाता है।

किसी प्रधान मध्याह्न रेखा से आरम्भ कर समानान्तर दूरी पर भूमध्य रेखा पर जो रेखाएँ पूर्व-पश्चिम की दूरी बताने को खीची जाती है, वे ही देशान्तर रेखाएँ

कहलाती हैं। इन रेखाओ का एक छोर उत्तर ध्रुव मे और दूसरा छोर दक्षिण ध्रुव में मिलता है। ये रेखाएँ भूमध्य रेखा को काटते हुए उत्तर और दक्षिण को जाती है। इनके बीच का हिस्सा अपने सिर के ऊपर से होकर जाता है। ये भी कल्पित रेखाएँ है। यद्यपि ये रेखाएँ उत्तर दक्षिण खीची गई है परन्तु इनसे किसी स्थान का पूर्व-पश्चिम अन्तर प्रधान मध्याह्न रेखा के स्थान से मालूम होता है जैसा चित्र सख्या ५४ के देखने से प्रकट होगा। जब सूर्य इस रेखा पर आता है तो उन सव स्थानो मे एक ही समय मध्याह्न [दोपहर] होता हैं, जहाँ-जहाँ से वह रेखा जाती है, उसके पैर के नीचे वाले देशो मे उस समय अर्द्धरात्रि होती हैं। इसी कारण इस रेखा को मध्याह्न रेखा भी कहते है।

प्रधान मध्याह्न रेखा Prime meridian

जहाँ से आदि स्थान मानकर पूर्व-पश्चिम अन्तर नापा जाता हैं। पहिले उज्जैन से—अर्थात् जो रेखा उज्जैन पर से होते हुए उत्तर दक्षिण गई है, उससे—देशान्तर नापा जाता था। परन्तु अव इग्लेण्ड के ग्रीनविच नामक स्थान को प्रधान मध्याह्न रेखा मान कर देशान्तर [ग्रीनविच से ही] नापा जाता है। और आज कल के सव नकशो मे देशान्तर इसी के अनुसार वताया जाता हैं।

परन्तु ज्योतिप शास्त्र मे पचाग वनाने आदि के लिये अब भी उज्जैन को प्रधान रेखा मान कर उज्जैन से देशान्तर निकालते है।

प्राचीन मध्याह्न रेखा इन देशो पर से जाती है —

लका देवकाँची, स्वेत पर्वत, पर्जली, वत्सगुल्म, अवन्ती, गर्गराट, कुरुक्षेत्र, रोहितक और मेरु। इन स्थानो का नाम ज्योतिष ग्रन्थो मे आया है। इनमे से कुछ स्थानो के नाम प्राचीन होने से नही समझ पडते परन्तु अवन्ती [उज्जैन], कुरुक्षेत्र, लका आदि के नाम सवको प्रकट है। इस कारण भारत वर्ष मे उज्जैन पर से ही देशान्तर नापा जाता है।

चित्र सख्या ५४ मे गोलाकार पृथ्वी वताई है। इसके उत्तर मे उत्तर ध्रुव और दक्षिण मे दक्षिण ध्रुव है और [अ ब] कल्पित रेखा धुरी हैं। पृथ्वी के वीच से जो [भू म] रेखा दोनो ध्रुवो के समानान्तर पर पूर्व-पश्चिम गई है वही भूमध्य रेखा हैं।

इस रेखा के उत्तर और दक्षिण को जो आडी रेखाएँ लकीर द्वारा वताई गई हैं ये अक्षाश है। ये रेखाएँ पूर्व-पश्चिम खीचो गई है। ये आडी रेखाएँ उत्तर-दक्षिण नाप के लिये मानो नाप सूचक हदवदी हैं।

भूमध्य रेखा पर अक्षाश ० है। यहाँ से उत्तर ध्रुव तक १ से ९० अश तक अक्षाश वने है। इसी प्रकार दक्षिण ध्रुव की ओर भी १ से ९० अश तक अक्षाश दिये है क्योकि एक वृत्त के चौथाई भाग मे ९० अश होते है। भूमध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण में कोई स्थान जितने अश दूरी पर होगा, वही अश उस स्थान का अक्षाश है। वह स्थान उत्तर मे होगा तो उत्तर अक्षाश कहलायेगा, दक्षिण मे होगा तो दक्षिण अक्षाश कहलायेगा। इन अक्षाशो का नाप चित्र सख्या ५४ मे गोला के किनारे-किनारे वताया है।

देशान्तर—जो रेखाएँ उत्तर ध्रुव से होकर भूमध्य रेखा को काटती हुई दक्षिण ध्रुव में जाकर मिली है ये देशान्तर रेखाएँ है, जो विन्दुओ द्वारा चित्र मे वताई गई है। ये रेखाश भी कहलाती है। इनका नाप पूर्व-पश्चिम होता है। उत्तर-दक्षिण रेखाएँ तो केवल नाप वताने वाली हदवदी रेखाएँ है।

कोई स्थान ग्रीनविच या उज्जैन [किसी प्रधान मध्याह्न रेखा के स्थान से] चाहे वह वहाँ से पूर्व या पश्चिम मे हो उस स्थान से कितने अश की दूरी पर है, वताया जाता है। यदि पूर्व में अपना देश है तो पूर्व देशान्तर होगा, पश्चिम मे है तो पश्चिम देशान्तर होगा।

मान लो कि [क] स्थान की स्थिति जाननी है। यह स्थान भूमध्य रेखा से ३० अश उत्तर मे है। देखे उस लकीर के छोर पर ३० अश लिखा है, तो उस स्थान का अक्षाश ३० अश उत्तर हुआ। अव उत्तर से दक्षिण जाने वाली रेखा का नाप देखें जो (क) स्थान पर से जाती है। यह देशान्तर रेखा विन्दुओ से वताई गई है। नीचे १४०° लिखा है यह नाप पश्चिम से पूर्व का है। यदि ० स्थान पर प्रधान मध्याह्न रेखा का देश है तो वहाँ से (क) का देशान्तर १४०° पूर्व हुआ। इस प्रकार (क) का अक्षाश ३०° उत्तर और देशान्तर १४०° पूर्व हुआ।

दूसरा उदाहरण—मान लो [ख] स्थान का आक्षाश देशान्तर जानना है। आडी अक्षाश की रेखाएँ १०° और २०° के वीच मे [ख] दोनो के वीच १० का अन्तर है मान लो १०° के आगे और ५° आगे [ख] है तो यह भूमध्य रेखा से १०°+५°= १५° दूरी पर है। इससे इसका अक्षाश १५° दक्षिण हुआ। अव देशान्तर जानना है। मान लो मध्याह्न रेखा का स्थान ८१° पर है जहाँ [ग] है। ३०° और ४०° देशान्तर रेखा के वीच [ख] स्थान है। मान लो ३०° के आगे ४° और चलकर यह स्थान है अर्थात् ३४° पर [ख] स्थान है, तो यह स्थान मध्याह्न रेखा से पश्चिम मे हुआ। अव दोनो का अन्तर निकाला [मध्याह्न रेखा ८१°-अपना स्थान ३४°]=४७° देशान्तर हुआ। इससे [ख] का देशान्तर ४७° पश्चिम हुआ। क्योकि [ग] से ४७° पश्चिम में है।

(१) किसी स्थान के अक्षांश जानने की युक्ति

एक पतली सुतली लेकर उसका एक छोर सम धरातल [भूमि] में लगाकर रखें और दूसरा छोर ध्रुव तारा की सीध मिलाकर किसी ऊँची चीज पर [या किसी बाँस को गाडकर या किसी वृक्षादि से] इस प्रकार बाँध दें कि सुतली का ऊपरी छोर ठीक ध्रुव तारा की सीध मे रहे, तो उस सुतली से जमीन के धरातल पर एक कोण बनेगा। उस कोण को नाप लें, जितने अशादि वह कोण नाप में होगा वही वहाँ का अक्षाश होगा।·यहाँ पर २३° का कोण बना है इसमे अक्षाश २३° हुआ। देखे चित्र सख्या ५५।
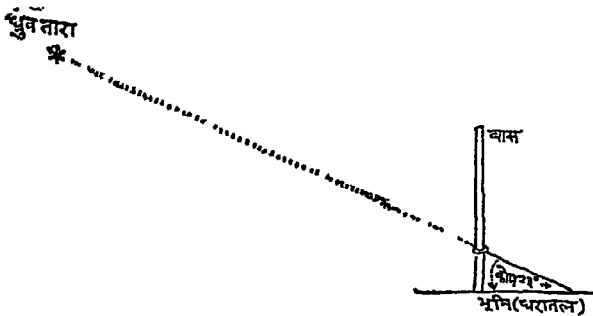
चित्र सख्या ५५–अक्षाश और ध्रुव की ऊँचाई का नाप

साराश इसका यह है कि उस स्थान पर ध्रुव तारा की जो ऊँचाई है उसी ऊँचाई का कोणात्मक अश वहाँ का अक्षाश होता है। उत्तरी गोलार्द्ध के किसी भी स्थान का अक्षाश ध्रुव तारा की ऊँचाई से ज्ञात हो सकता है। जैसे लाहौर मे ध्रुव तारा की ऊँचाई ३१°-३०′ है तो वहाँ अक्षाश भी ३१°-३०′ होगा। नरसिंहपुर मे ध्रुव की ऊँचाई का कोण २२°-५७′ है तो यहाँ का अक्षाश २२ अंश ५७′ हुआ।

उत्तरी गोलार्द्ध North Hemis Phere

भूमध्य रेखा से पृथ्वी के २ भाग हो जाते हैं। एक भूमध्य रेखा से उत्तर का आधा भाग, दूसरा दक्षिण का आधा भाग। भूमध्य रेखा से जो उत्तर का भाग है वही उत्तरी गोलार्द्ध है। इसके दक्षिण का भाग दक्षिणी गोलार्द्ध कहलाता है।

ध्रुव तारा उत्तर में है इसलिये वह केवल उत्तरी गोलार्द्ध वालो को दिखता है, वह दक्षिणी गोलार्द्ध वालो को नही दिखता।

(२) अक्षांश जानने की दूसरी रीति।

२१ मार्च या २३ सितम्बर को [जब दिन-रात बराबर रहता है] किसी स्थान के मध्याह्न कालीन [दोपहर के] सूर्य को जो ऊँचाई है वह ऊँचाई ९० अंश से घटा दें, घटाने से जो शेष रहे, वह उस स्थान का अक्षाश होगा।

जिस प्रकार ध्रुव तारा की ऊँचाई निकाली गई थी उसी प्रकार सूर्य की ऊँचाई भी निकाली जाती है। देखें चित्र सख्या ५६ और ५७
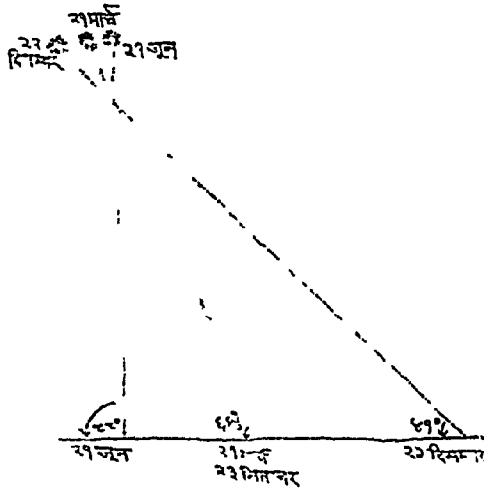
चित्र सख्या ५६—इलाहाबाद मे मध्याह्न के समय सूर्य की ऊँचाई
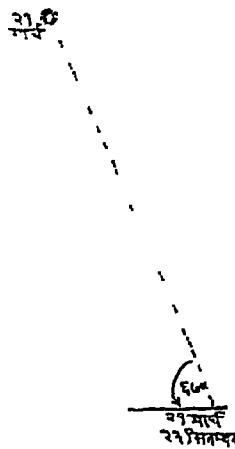
चित्र सख्या ५७—नरसिंहपुर मे मध्याह्न के समय सूर्य की ऊँचाई

जैसे यहाँ इलाहाबाद की भिन्न-भिन्न समय की सूर्य की ऊँचाई नापी गई है, २१ मार्च या २३ सितम्बर को मध्याह्न समय की सूर्य की ऊँचाई ६४½° है तो [९०-६४½]= २५½ अक्षाश हुआ।

नरसिंहपुर मे ऊँचाई [उसी समय की] ६७ अश है तो [९०–६७]=२३ अश वहाँ का अक्षाश हुआ ।

[३] स्कूल के नकशो मे प्राय प्रत्येक स्थान का अक्षाश मिल सकता है । नकशे में अपना स्थान खोजकर अक्षाश जान लें । यदि अपना स्थान न मिले तो समीप के किसी वडे स्थान को खोज कर उसमे अक्षाश जान लें ।

किसी स्थानके अक्षांश व देशान्तर से देशके अन्तरका नाप मीलमे करना ।

A mile of Latitude=Geographical mile=Aknot=2028 yards. A knot=one minute of Latitude=1 15 ordinary mile

अक्षाश का १ मील=भौगोलिक मील=१ नाट=२०२८ गज १ कला=१ १५ साधारण मील ।

भूमध्य रेखा पर १ अश अक्षाश का=$\frac{1}{360}$ भाग पृथ्वी की परिधि का । भूमध्य रेखा पर पृथ्वी की परिधि २४८४० मील, लगभग २५००० मील है, इस हिसाव से १ अश मे ६९ मील पडा । किसी दो स्थानो की ध्रुव की ऊँचाई [अक्षाश] से दोनो स्थानो का अन्तर मील मे निकालने के लिये दोनो स्थानो के अक्षाश का अन्तर निकालें फिर अन्तर के मील वनाने को ६९ मे गुणा कर दे । जैसे नरसिंहपुर का अक्षाश २३ अश है और पूना का १९ अश है तो दोनो का अन्तर [२३ अश–१९ अश]=४ अश हुआ । ४×६९=२७६ मील दोनो देशो का अन्तर हुआ । इसी प्रकार किसी भी स्थान का अन्तर नापा जा सकता है ।

देशान्तर का नाप

देशान्तर रेखाओ के अश मे, पृथ्वी के भिन्न-भिन्न भागो मे भिन्न-भिन्न नाप होता है । इसका कारण यह है कि भूमध्य रेखा पर तो पृथ्वी की परिधि २४८४० मील है । पृथ्वी गोल होने के कारण उत्तर या दक्षिण मे जाने पर परिधि घटती जाती है । इस कारण प्रत्येक १०-१० अश पर नाप लगभग कितने मील होते है, नीचे दिया है—

भूमध्य रेखा पर परिधि $\frac{२४८४०}{३६०}$=१ अश मे ६९ मील लगभग हुआ । भूमध्य रेखा पर ० अक्षाश होता है । यहाँ से उत्तर या दक्षिण १०-१० अक्षाश आगे वढने पर प्रति अक्षाश मे इस प्रकार मील होते है —

अक्षाश	०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
मील	६९	६८	६५	६०	५३	४४	३४॥	२३	११॥	०

अन्त मे ९० अश पर अर्थात् ध्रुव स्थान मे अन्तर शून्य हो जाता है ।

इन्ही अक्षाशो पर मे जिस अक्षाश के देशान्तर का अन्तर मील मे निकालना हो, ऊपर वनाये चक्र के अनुसार निकाल सकते है ।

अध्याय १०

आकाशीय कल्पित रेखाओं का स्पष्टीकरण

जिस प्रकार अक्षांश और देशान्तर से पृथ्वी के किसी स्थान की ठीक स्थिति प्रकट की जाती है उसी प्रकार आकाशीय तारागण आदि की स्थिति ठीक प्रकार से प्रकट करने के लिये आकाशीय अक्षांश और विषुवांश या रेखांश भी होते हैं। आगे इन्ही को समझाते हैं। आकाशीय अक्षांश को शर और रेखांश को भोग या भोगांश कहते हैं।

आकाशीय विषुव वृत्त Celestial equator

जिस प्रकार पृथ्वी के बीचो-बीच पूर्व-पश्चिम विषुववृत्त [भूमध्यरेखा] गई है उसी प्रकार आकाशीय विषुववृत्त भी है।

पृथ्वी के विषुव रेखा के सीध में प्रत्येक विन्दु से यदि सीधे आकाश तक रेखा बढ़ाई जावे तो आकाश में भी उसी की सीध मे एक कल्पित रेखा बन जायगी। इसी आकाशीय कल्पित रेखा को विषुववृत्त या नाडीवृत्त भी कहते हैं। इसे निरक्ष भी कहते हैं अर्थात् यहाँ पर अक्षांश शून्य रहता है।

विषुववृत्त [नाडीवृत्त] आकाश के २ समान विभाग करता है। इसका १ भाग उत्तर मे और दूसरा भाग दक्षिण मे हो जाता है। उत्तर मे जो है वह उत्तर गोल और दक्षिण का दक्षिण गोल कहलाता है। ध्यान रहे कि सूर्य इस नाडीवृत्त पर से नही घूमता, वह क्रांतिवृत्त पर से घूमते दिखता है।

क्रांतिवृत्त Ecliptic

आकाश मे जिस मार्ग मे सूर्य घूमते हुए दिखता है वही क्रांतिवृत्त है। वास्तव मे यही पृथ्वी की कक्षा Orbit है जिस पर से होकर पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। यह मार्ग अंडाकार है। देखें चित्र संख्या ७।

क्रांति प्रदेश Zodic

क्रांतिवृत्त के दोनो ओर ९°-९° का एक कल्पित चौडा पट्टा है जिसके भीतर सब ही ग्रह घूमते हैं। इस प्रकार १८° के चौडे पट्टे को क्रांतिप्रदेश कहते हैं। इसके भीतर १२ राशिया और २७ नक्षत्र है।

क्रांतिवृत्त का धरातल Plane of ecliptic

क्रातिवृत्त के जिस धरातल में ग्रह परिक्रमा करते है उसे क्रातिवृत्त का धरातल कहते है ।

आकाशीय ध्रुव Celestial pole

जिस प्रकार पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण ध्रुव है उसी प्रकार ठीक इन्ही के सीध मे आकाश में आकाशीय उत्तर या दक्षिण ध्रुव हैं । ये भी कल्पित स्थान है ।

यामोत्तरवृत्त meridian

आकाशीय दोनो ध्रुवो से जो रेखाएँ आकाशीय नाडीवृत्त पर लम्ब होकर जाती है वे कल्पित रेखाएँ यामोत्तरवृत्त कहलाती है । यह रेखा उसी प्रकार की है जैसे पृथ्वी की देशान्तर रेखा है । यामोत्तर=याम+उत्तर । याम=दक्षिण ।=उत्तर से दक्षिण जाने वाली कल्पित रेखाएँ जो नाडीवृत्त को काटती हुई जाती है वे ही रेखाएँ यामोत्तरवृत्त है ।

इसी यामोत्तरवृत्त से पूर्व या पश्चिम का जो अतर है वह भोग का भोगाश या क्षेप Celestial longitude कहलाता है । आकाश मे एक मुख्य यामोत्तरवृत्त से यह पूर्व या पश्चिम को नापा जाता है और यह अन्तर क्रातिवृत्त पर नापा जाता है । इसका मुख्य यामोत्तरवृत्त वसत सम्पात है जिसके विपय मे आगे वताया गया है ।

ऊपर जो नाडीवृत्त का वर्णन किया है उसके विपय मे ध्यान रहे कि इस नाडी वृत्त का आकाश मे कोई स्थिर और पक्का वृत्त नही है । जैसे पृथ्वी मे भूमध्य रेखा की स्थिति निश्चित है ठीक वैसी स्थिति इस आकाशीय नाडीवृत्त की नही है । क्योकि वहुत वर्षो के उपरान्त उसके स्थान मे कुछ परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण भिन्न-भिन्न काल मे वह आकाश का भिन्नता पूर्वक भाग करता है, क्योकि सारा विश्व चल रहा है । इसी कारण नाडीवृत्त से आकाशीय अक्षाश नही नापा जाता ।

क्रांति Declination

आकाशीय नाडीवृत्त से क्रातिवृत्त की ओर ग्रहो का अन्तर इस नाडीवृत्त से नापा जाता है जिसमे प्रकट हो कि कोई तारा नाडीवृत्त से उत्तर या दक्षिण को कितने अन्तर पर है । जितने अश की दूरी पर वह ग्रह या तारा उपरोक्त नाप से निकलेगा वही नाप उस ग्रह या तारे की उत्तर या दक्षिण क्राति होगी ।

अक्षांश=शर=Celestial latitude

आकाश मे अक्षाश क्रातिवृत्त से नापे जाते है क्योकि क्रातिवृत्त की स्थिति स्थिर और निश्चित है ।

क्रांतिवृत्त के समानान्तर उत्तर या दक्षिण दूरी पर जितने अंश दूरी पर वह ग्रह होगा वही उसका अक्षांश होगा। आकाशीय अक्षांश को शर भी कहते हैं। इसी को विक्षेप भी कहते हैं।

क्रांतिवृत्त से उत्तर या दक्षिण को ग्रहों या तारा के अन्तर को शर या अक्षांश कहते हैं परन्तु नाडीवृत्त से ग्रह आदि की उत्तर या दक्षिण की दूरी को क्रांति कहते हैं।

सूर्य सदा क्रांतिवृत्त पर ही चलता है। इससे उसका कोई शर नहीं होता परन्तु नाडीवृत्त से उसका अन्तर घटता-बढता रहता है, इस कारण सूर्य की क्रांति घटती-बढती रहती है। इसी प्रकार चंद्र आदि ग्रह जब क्रांतिवृत्त पर रहते हैं तब उसका कोई शर नहीं रहता।

क्रांति से प्रगट होता है कि वह ग्रह नाडीवृत्त से कितने कोणात्मक अन्तर पर उत्तर या दक्षिण गोल में है अर्थात् नाडीवृत्त से उत्तर या दक्षिण किसी तारा या ग्रह का अन्तर याम्योत्तरवृत्त पर नापने में जो मिले वही क्रांति कहलाती है।

ये सब बातें आगे चित्र संख्या ५८, ५९ और ६० देखने में समझ में आ जायेंगी।

सम्पात बिन्दु Equinox

आकाशीय विषुववृत्त और क्रांतिवृत्त एक दूसरे को [२३°–२८° का कोण बनाते हुए] दो स्थानों में काटते हैं। उन दो बिन्दुओं को सम्पात बिन्दु कहते हैं। इसे ही अयन बिन्दु या विषुव बिन्दु भी कहते हैं।

मेष का आरम्भ बिन्दु जिसे उत्तर सम्पात या वसंत सम्पात Vernal equinox कहते हैं, इसमें आकाशीय रेखांश का पूर्व पश्चिम नाप होता है और यह पृथ्वी की गति की दिशा में, अर्थात् पश्चिम से पूर्व की ओर नापा जाता है।

यहाँ पर यह बात ध्यान में रखने की है कि ध्रुव भी दो प्रकार के हैं। नाडीवृत्त के ध्रुव को ध्रुव Pole of the celestial equator कहते हैं। और ध्रुव से जो याम्योत्तरवृत्त नाडीवृत्त पर समकोण बनाते हुए खींचे जावें उन्हें ध्रुव प्रोतवृत्त meridian of the celestial equator कहते हैं। और क्रांतिवृत्त के ध्रुव को कदम्ब pole of the ecliptic कहते हैं। कदम्ब से जो वृत्त समकोण बनाते हुए क्रांतिवृत्त पर खींचे जावें वे कदम्ब प्रोतवृत्त कहलाते हैं।

किसी ग्रह में विषुववृत्त [नाडीवृत्त] पर जो अन्तर ध्रुव प्रोतवृत्त पर से नापा जावे उसे क्रांति कहते हैं। ग्रह में ध्रुव प्रोतवृत्त विषुववृत्त तक खींचा जावे तो ध्रुव प्रोतवृत्त के नापने में जो अन्तर ग्रह और विषुववृत्त का होगा वही अन्तर उस ग्रह की क्रांति होगी।

किसी ग्रह से क्रांतिवृत का अन्तर कदम्ब प्रोतवृत्त पर होता है। वही अन्तर उस ग्रह का शर या विक्षेप होता है। कदम्ब से एक कदम प्रोतवृत्त उस ग्रह से होते हुए इस प्रकार खींचें जो क्रांतिवृत्त पर समकोण बनाती हुई मिले तो उस ग्रह का जो अन्तर क्रांतिवृत्त

तक होगा वह अन्तर, कदम्ब प्रोतवृत्त पर से नापने में जो मिले, वह अन्तर उस ग्रह का शर होगा। ग्रह से जो ध्रुव का अन्तर होता है वह ध्रुव अन्तर Palar distance कहलाता है। ग्रह दक्षिण ध्रुव के पास हो तो दक्षिण ध्रुव से और उत्तर ध्रुव के पास हो तो उत्तर ध्रुव से अन्तर निकाला जाता है।

भोग या भोगांश Longitude

कदम्ब प्रोतवृत्त जो कदम्ब से निकल कर ग्रह या तारा पर से होते हुए क्रातिवृत्त पर समकोण वनाते हुए मिले, तो उत्तर सम्पात विन्दु से उस मिलन विन्दु तक नापने से जो अन्तर होगा वही उस ग्रह का भोगाश होगा। और उस ग्रह मे उस मिलन विन्दु तक नाप मे जो अन्तर होगा वह उस गह का शर होगा।

विपुवांश Right Assession

R. A. M. C=Ark in Right Assession of the meridian

उत्तर सम्पात से नाडीवृत्त पर यह नापा जाता है। ध्रुव प्रोतवृत्त जो ग्रह से होकर नाडीवृत्त पर समकोण वनाते हुए जहाँ मिलता है उस विन्दु तक उत्तर सम्पात से नापने में जो अन्तर आवे वह उस ग्रह का विपुवाश होगा। यह ग्रह की गति की ओर अर्थात् पश्चिम से पूर्व को नापा जाता है। यह सव आगे उदाहरण देकर समझाया गया है।
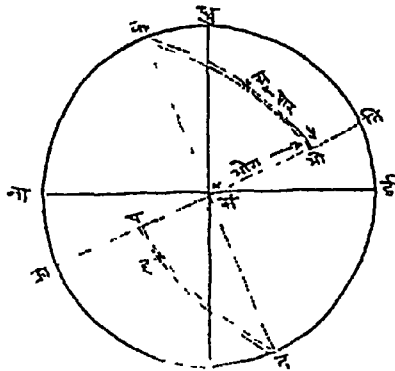
चित्र सख्या ५८—नाडीवृत्त, क्रातिवृत्त, भोग और शर

विपुववृत्त (नाडीवृत्त) के नाप के अश होने से इन्हें विपुवाश भी कहते हैं।

चित्र सख्या ५८ में ग्रह का शर और भोग समझाया है। शर और भोग क्रातिवृत्त पर ही नापे जाते हैं। देखो चित्र सख्या ५८

ना डी=नाडीवृत्त
ध्रु व=उत्तर और दक्षिणध्रुव
क्रा ति=क्रातिवृत्त
क=कदम्ब=क्रातिवृत्त का उत्तर ध्रुव
द= " " दक्षिण "
स=उत्तर सम्पात विन्दु जहाँ नाडीवृत्त
और क्रातिवृत्त एक दूसरे को काटते हैं।
ग्र=एक ग्रह।

क ग्र भो=कदम्ब मे एक कदम्ब प्रोतवृत्त ग्रह पर मे होते हुए इस प्रकार खीचा गया है जो क्रातिवृत्त पर भो स्थान पर समकोण वनाते हुए मिला है।

ग्र भो=उस ग्रह का उत्तर शर हुआ।

स भो=उस ग्रह का भोग हुआ। ग्रह स (सम्पात विन्दु) से भो स्थान तक जो अतर है वही भोग हुआ। यहे भोग उत्तर सम्पात विन्दु मे आरभ होकर पश्चिम से पूर्व को नापा जाता है, जैसा दूसरे उदाहरण से समझ पडेगा।

दूसरा उदाहरण (चित्र सख्या ५८)

ह दूसरा ग्रह है

द ह प=दक्षिण कदम्ब से एक कदम्बवृत्त ह ग्रह पर से होते हुए इस प्रकार खीचा गया है जो क्रातिवृत्त पर समकोण वनाते हुए प स्थान पर मिला है।

ह प=यह ग्रह का शर हुआ और यह दक्षिण मे होने से दक्षिण शर हुआ।

स भो. ति क्रा पृ यह ग्रह का भोग हुआ अर्थात सम्पात विन्दु से पूर्व की ओर जाकर, फिर घेरते हुए क्रा मे प विन्दु आने तक जो दूरी होगी, उसी का नाप भोगाश होगा।

या प स अंतर को ३६०° मे घटा दें तो भी ग्रह का भोग निकल आवेगा।

ग्रह की क्राति और विपुवाश नाडीवृत्त मे नापे जाते है। उसका उदाहरण देकर समझाते है देखें चित्र सख्या ५९।

ना डी नाडीवृत्त
ध्रु=नाडीवृत्त का उत्तर ध्रुव
व= " दक्षिण "
क्रा ति=क्रातिवृत्त
क द=कदम्ब उत्तर-दक्षिण
सं पा=दो सम्पात विन्दु

सं=उत्तर सम्पात

ग्र =एक ग्रह

ध्रु ग्र वि =ध्रुव से एक ध्रुव प्रोतवृत्त ग्र (ग्रह) पर से होते हुए इस प्रकार खीचा गया है जो नाडीवृत्त पर समकोण वनाते हुए वि स्थान पर मिला है ।
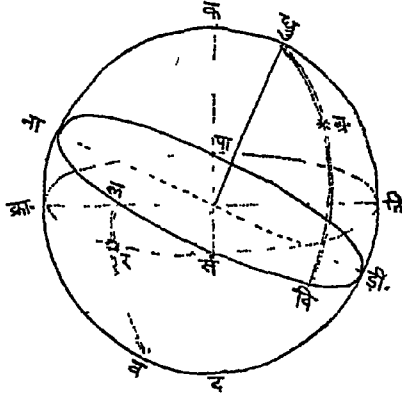
चित्र सख्या ५९–भोग, शर, नाडीवृत्त, क्रातिवृत्त, आदि

ग्र. वि =ग्रह की उत्तर क्राति

ध्रु ग्र=ग्रह का ध्रुवान्तर=(९०°-ग्र वि)

स वि=ग्रह का विपुवाश

दूसरा उदाहरण देखें चित्र सख्या ५९ ।

र =रवि यह सदा क्रातिवृत्त पर रहता है ।

व. र ल=एक ध्रुव प्रोतवृत्त (यामोत्तरवृत्त) जो व दक्षिण ध्रुव से र (रवि) पर से होते हुए नाडी वृत्तपर ल स्थान पर समकोण वनाते हुए मिला है ।

व र =ध्रुवातर हुआ ।

र ल =सूर्य की दक्षिण क्राति हुई

स वि डी पा ना ल =यह सूर्य का विपुवाश हुआ ।

यह विपुवाश स =उत्तर सम्पात से पूर्व की ओर नापा जाता है । इस कारण स विन्दु से होकर डी पर मे पूरा चक्कर घूमते हुए ना पर से होते हुए ल तक आने मे जितनी दूरी होगी वही विपुवाश होगा ।

या=(३६०—ल स की दूरी=सूर्य का विपुवाश)

आकाश मे नक्षत्र आदि या ग्रह क्यो तिरछे घूमते हुए दृष्टिगोचर होते है ? चित्र सख्या ६० के देखने से समझ मे आ जायेगा ।

पृथ्वी के ध्रुव का झुकाव उत्तर की ओर है। इसी प्रकार आकाश का भी उत्तर ध्रुव कुछ उत्तर की ओर झुका हुआ है। इसी कारण यह तिरछापन दिखाता है।

किसी स्थान में खडे होकर चारो ओर देखें तो पृथ्वी के चारो ओर आकाश लगा हुआ दिखेगा। इसी को क्षितिज कहते हैं। जहाँ आकाश पृथ्वी से लगा हुआ दिखता है वही उस स्थान का (जहाँ से खडे होकर देख रहे हैं) क्षितिज है।

क्षितिज के ठीक ऊपर शिरोविन्दु है। नाडीवृत्त पर, नाडीवृत्त के शिरोविन्दु से उत्तर ध्रुव लम्ब रूप है, परन्तु उत्तर ध्रुव कुछ झुका हुआ होने के कारण नाडीवृत्त भी तिरछा दिखता है।
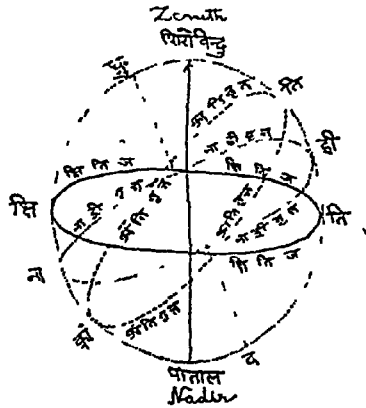
चित्र सख्या ६०—क्षितिज, नाडीवृत्त, क्रातिवृत्त और ध्रुव

अपना आधा विपुववृत्त (नाडीवृत्त) क्षितिज पर दिखता है। अपने स्थान से ध्रुव जितना ऊँचा दिखता है उतना ही आकाश का नाडीवृत्त अपने सिर के स्थान मे दक्षिण को दिखता है। इस कारण नाडीवृत्त में पूर्व-पश्चिम को तिरछापन है। इसका एक-छोर ठीक पूर्व विन्दु पर है दूसरा पश्चिम में है।

अव क्रातिवृत्त भी २३°-२८' का कोण वनाते हुए इस नाडीवृत्त को काटता हुआ तिरछा जाता है, इस कारण क्रातिवृत्त में अधिक तिरछापन आ जाता है। इसी कारण नक्षत्र आदि क्रातिवृत्त से तिरछे घूमते हुए दिखते है क्योकि क्राति प्रदेश ही तिरछा है।

अध्याय ११

ग्रहों की गति Velocity or motion & Planets

प्रत्येक ग्रह की पृथक् २ गति (चाल) होती है। सब ग्रहो के साथ राहु केतु भी आकाशमार्गीय क्रान्ति प्रदेश के पथ पर घूमते हैं।

गति दो प्रकार की होती है (१) परिभ्रमण Rotetion और (२) परिक्रमण Revolution।

परिभ्रमण—जब ग्रह अपनी धुरी पर अपने ही आस-पास पश्चिम से पूर्व को घूमता है, उस गति को परिभ्रमण कहते है।

परिक्रमण—ग्रह जब अपने मार्ग से चलते हुए सूर्य के आस-पास घूमता है, जैसे परिक्रमा दे रहा हो, तो उस गति को परिक्रमण कहते हैं।

पृथ्वी जब अपनी धुरी पर दिन-रात मे अर्थात् २४ घण्टे मे अपने ही चहुँ ओर घूम लेती है तो उसे परिभ्रमण कहते हैं। पृथ्वी जब परिभ्रमण करते हुए अपनी कक्षा पर सूर्य की परिक्रमा करने को आगे बढती है तो उसे परिक्रमण कहते है। जैसे भौरा अपने आस-पास चक्कर लगाते हुए भी आगे बड़ता है।

परिक्रमण दो प्रकार का है :—(१) मार्गी गति Acceleration or direct (२) वक्री गति Retrograde

(१) मार्गी—जब ग्रह अपने मार्ग मे सीधा बढते चला जाता है तो उसे मार्गी ग्रह कहते है। यह गति पश्चिम से पूर्व को होती है जैसे कि सूर्य चलता है। जैसे कोई ग्रह मेष राशि मे है तो उसके उपरान्त वृष फिर मिथुन आदि की ओर बढता जायेगा। यही ग्रहो की सीधी गति है।

(२) वक्री—जब ग्रह सीधी चाल जाते-जाते एकदम वापस लौट पडता है तो उसे वक्री ग्रह कहते है। यह गति पूर्व से पश्चिम को सूर्य की चाल के विरुद्ध होती है। जैसे कोई ग्रह मिथुन राशि पर है उसके उपरान्त कर्क की ओर जाना था परन्तु आगे न बढकर फिर वृष की ओर लौट पडे तो उस ग्रह का वक्री होना कहते है।

ग्रह जब वक्री होकर फिर सीधा-सीधा रास्ता चलने लगता है तो उसे फिर मार्गी कहने लगते है।

इस प्रकार प्रत्येक ग्रह की पृथक्-पृथक् गति होती है। कोई शीघ्र चलता है कोई धीरे-धीरे चलता है। इस प्रकार क्रान्ति प्रदेश मे कोई ग्रह कभी आगे रहते है, कभी पीछे रहते है, कभी-कभी चलते-चलते मिल जाते है।

प्रत्येक ग्रहों की गति

(१) चन्द्र—सबसे शीघ्र चलने वाला ग्रह है। पृथ्वी के आस-पास प्राय ३० दिन में घूमकर अपनी परिक्रमा पूरी करता है।

(२) शनि—सबसे धीमी चाल चलने वाला ग्रह है। यह ३० वर्ष मे अपनी परिक्रमा पूरी करता है।

(३) सूर्य—१ वर्ष (३६५¼ दिन) मे परिक्रमा पूरी कर लेता है। प्रतिदिन लगभग १° चलता है। इस प्रकार स्थूल मान से १ राशि में १ मास रहता है।

इस प्रकार १ राशि मे चन्द्र २। दिन, मगल १।। मास, बुध १ मास, गुरु १३ मास, शुक्र १ मास, शनि ३० मास, राहु १८ मास, केतु १८ मास, हर्शल १ राशि मे ७ वर्ष और नेपच्यून १३ वर्ष रहता है।

इस प्रकार कम ज्यादा समय परिक्रमा में लगने का कारण यह है कि जो ग्रह पास है उनकी परिक्रमा मे अल्प समय लगता है और जो ग्रह दूर है उनकी परिक्रमा मे दूरी के अनुसार अधिक समय लगता है। चित्र सख्या १ से परिक्रमा की दूरी समझ पडेगी। ग्रहो की प्रतिदिन की मध्यम गति (औसत गति) भी इस प्रकार है —

	दैनिक मध्यम गति				दैनिक मध्यम गति		
ग्रह	अंश	कला	विकला	ग्रह	अश	कला	विकला
सूर्य	०	५९	८	मगल	०	३१	२६
चन्द्र	१३	१०	३४	गुरु	०	४	४९
बुध	१	५	३२	शनि	०	२	०
शुक्र	१	३६	७	राहु, केतु	०	३	११

राहु केतु को छोडकर शेप ग्रहो की गति सदा बदलती रहती है। राहु केतु की गति कभी नही बदलती, सदा इनकी एक सरीखी गति रहती है। राहु केतु सदा वक्री रहते है अर्थात् सदा एक सरीखी चाल से उल्टे चलते रहते है।

सूर्य और चन्द्र कभी वक्री नही होते शेप ग्रह बुध, शुक्र, मगल, गुरु, शनि, हर्शल और नेपच्यून सदा वक्री और मार्गी होते रहते है और उनकी दैनिक गतियो मे भी परिवर्तन होता रहता है।

उपरोक्त ग्रह अपनी इच्छानुसार वक्री मार्गी नही होते परन्तु एक प्रबल शक्ति सूर्य के कारण ही गतियो मे यह सब परिवर्तन होता है, क्योकि सब ग्रह सूर्य की आकर्षण शक्ति के प्रभाव से खिचे हुए है।

सूर्य के आस-पास जो परिक्रमा का मार्ग है, वह एक सरीखा गोल नही अडाकार है, जिसके बीच में सूर्य है। देखें चित्र सख्या ७। चित्र से प्रकट होगा कि इस मार्ग का

कुछ भाग सूर्य के समीप पड जाता है कुछ दूर हो जाता है। कोई ग्रह जब चलते-चलते सूर्य के अधिक पास पहुँच जाता है तो उसे सूर्य के समीप Perihelion कहते है (यह घटना पृथ्वी के सम्बन्ध मे लगभग १ जनवरी को होती है)। जब सूर्य से ग्रह अधिक दूरी पर चला जाता है तब उसे सूर्य से अधिक दूर Aphelion कहते है। पृथ्वी १ जुलाई के लगभग अधिक दूरी मे होती है।

ग्रह जब सूर्य के समीप हो जाता है तो सूर्य की आकर्षण शक्ति बढती है जिसके कारण सूर्य के खिचाव से ग्रह की गति मे अधिक तेजी आ जाती है और ज्यो-ज्यो वह ग्रह सूर्य से दूर होता जाता है उसकी गति धीमी होती जायेगी क्योकि सूर्य से दूरी होने के कारण सूर्य का खिचाव (आकर्षण शक्ति) कम होने लगता है और उस समय ग्रह वक्री हो जाता है अर्थात् फिर लौट पडता है। परन्तु जब दूर से लौट कर ग्रह सूर्य की ओर बढता है तो फिर ग्रह मे भी सूर्य के प्रभाव मे बल आ जाता है और सम्हल कर फिर आगे बढता है तब मार्गी ग्रह हो जाता है। अब समझ गये होगे कि इसी अडाकार वृत्त के कारण उन पर सूर्य की आकर्षण शक्ति का घटाव-बढाव होता है जिससे ग्रह वक्री-मार्गी होते है।

कुचस्तंभ Stationary

जब ग्रह वक्र होकर उसकी गति मन्द हो जाती है तब उस ग्रह का स्तम्भ होना कहते है। उस समय ग्रह एक राशि पर बहुत दिनो तक रहता है, इसे ही कुचस्तभ कहते है। परन्तु मगल ग्रह के सम्बन्ध मे ही कुचस्तम्भ शब्द का प्रयोग होता है। शेष ग्रहो की ऐसी स्थिति में स्तभ ही कहेंगे।

साधारण प्रकार से कौन ग्रह कितने दिनो मे वक्री मार्गी होता है, यह नीचे चक्र में बताया है।

उदय अस्त वक्री मार्गी चक्र

ग्रह	अस्त होने के इतने मास उपरात उदय होगा	उदय के उपरात इतने मास मे वक्री होगा	वक्री के उपरात इतने मास मे मार्गी होगा	मार्गी के उपरात इतने मास में अस्त होगा
मंगल	४ मास	१० मास	२ मास	१० मास
गुरु	१ मास	४$\frac{१}{४}$मास	४ मास	४$\frac{१}{४}$ मास
शनि	१$\frac{१}{४}$ मास	३ मास	४ मास	३$\frac{१}{२}$ मास

ग्रह	पूर्व मे अस्त होने के उपरात पश्चिम मे इतने दिनो मे उदय होगा	पश्चिम में उदय उपरात इतने दिनो मे वक्री होगा	वक्री के इतने दिनो वाद पश्चिम में अस्त होगा	पश्चिम मे अस्त के वाद इतने दिनो मे उदय होगा	पूर्व में उदय के वाद इतने दिनो मे मार्गी होगा	मार्गी के इतने दिनो वाद पूर्व में अस्त होगा
वुध	३२ दिन	३२ दिन	४ दिन	१६ दिन	४ दिन	३२ दिन
शुक्र	७५ दिन	२४० दिन	२३ दिन	९ दिन	२३ दिन	२४० दिन

राहु केतु सदा वक्री रहते है। सूर्य और चन्द्रमा कभी वक्री नही होते। शेप ग्रह वक्री मार्गी होते है।

उदय अस्त ज्ञान Heliacal rising and satting of planets

सूर्य के पास कोई ग्रह आ जाने से उस ग्रह को अस्त होना कहते है। यदि वह ग्रह सूर्य के आगे चला जावे तो उसे उदय होना कहते है।

सूर्य के पास ग्रह आ जाने से ग्रह नही दिखता इस कारण उसे अस्त कहते है। जव सूर्य के दूर चले जाने के कारण वह ग्रह दिखने लगता है तो उसे उदय होना कहते है।

सूर्य को छोडकर शेप ग्रहो का उदय अस्त होता है। इसमें भी यह प्रमाण है कि सूर्य से विशेप अश दूर हो जाने पर कोई ग्रह दिखने लगता है कोई नही दिखता।

सूर्य के कितने अन्तर पर ग्रह चले जाने पर दिखने लगता है अर्थात् उदय होता है, नीचे दिया है। सूर्य से इतने अशो के भीतर ग्रह हो तो वह ग्रह अस्त ही समझा जायेगा। जैसे सूर्य से चन्द्र का अन्तर १२ अश के भीतर रहने तक चन्द्र अस्त ही रहेगा (नही दिखेगा) परन्तु १२° हो जाने पर चद्र उदय होगा (दिखने लगेगा)। इसी प्रकार सव ग्रहो के विपय मे समझना।

ग्रहो के कालांश

ग्रह	चन्द्र	मगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य मे अतर–कालाश (अशोमें)	१२	१७	१३	११	९	१५

इस अन्तर को कलाश भी कहते है।

अस्तोदय—२ प्रकार का है। एक तो प्रति दिन ग्रह उदय होते है और अस्त होते है। यहाँ जो वताया गया है वह इससे भिन्न है अर्थात् सूर्य के पास जव ग्रह होता है तो अस्त होना कहा जाता है। जव सूर्य के पास ग्रह होता है तो उसे सूर्य सनिध भी कहते है। उदय अस्त को और भी अच्छी तरह समझाते है।

उदय —सूर्य से अल्प गति वाले ग्रह (मगल, गुरु, शनि) सूर्य से कालाश तुल्य अतर पर (कालाश अतर जो ऊपर वनाया है) पूर्व दिशा में और थोडी रात्रि रहने

पर उदय होते है सूर्य से अधिक गति वाला ग्रह चद्र है। यह सूर्य से, अपने कालाश से अधिक होने पर पश्चिम दिशा में सध्या को उदय होता है। बुध, शुक्र, के लिये विशेष बात यह है कि ये सूर्य के अधिक पास है। ये दोनो :दिशाओ (पूर्व और पश्चिम) मे उदय और अस्त होते है। क्योकि ये दोनो ग्रह वक्र होकर फिर सूर्य के कालाश तुल्य अतर मे आ जाने से इनका अस्त और उदय होता है अर्थात् दोनो ग्रह सूर्य से अधिक गति वाले होने के कारण अपने कालाश अतर होने पर सूर्य के आगे पश्चिम मे सध्या को उदय होते है फिर वक्र होकर सूर्य के पास आकर पश्चिम मे ही इनका अस्त होता है। फिर वक्र गति ही से सूर्य के पीछे होकर अपने कालाश अतर पर पूर्ण दिशा मे थोडी रात्रि रहने पर उदय होते है फिर मार्गी होकर पूर्व मे ही अस्त होते है।

अस्त—सूर्य से अल्प गति वाले ग्रह (मगल, गुरु, शनि) सूर्य से, अपने कालाश के भीतर होने से पश्चिम दिशा मे अस्त होते है और अधिक गति वाला ग्रह चद्र अपने कालाश के भीतर सूर्य के समीप आ जाने पर पूर्व दिशा मे अस्त होता है।

वक्री बुध शुक्र का कालाश १° कम लेना अर्थात् बुध का कालाश १२° है तो वक्री बुध का ११° लेना। शुक्र का ९° है तो वक्री शुक्र का ८° लेना। वक्रीग्रह होने के कारण कालाश कम लिया जाता है।

अध्याय १२

सम्पात equinox

पहिले बता चुके है कि क्रातिवृत्त और नाडीवृत्त दोनो पृथक्-पृथक् वृत्त है, जो एक दूसरे को २३° २८° का तिरछा कोण बनाते हुए दो स्थानो मे काटते है, जिससे दो पृथक्-पृथक् भाग हो जाते है। देखें चित्र सख्या ६१।
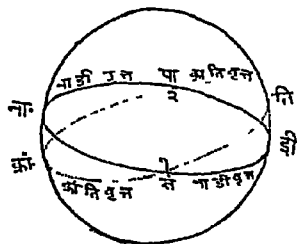
चित्र सख्या ६१–सम्पात विन्दु

भाग (१) क्रातिवृत्त का ऊपर का आधा भाग स० ति० प० और नाडीवृत्त का नीचे का आधा भाग स० डी० पा०।

भाग (२) क्रातिवृत्त का नीचे का आधा भाग स० क्रा० पा० और नाडीवृत्त का ऊपर का आधा भाग स० ना० पा० ।

जहाँ एक दूसरे को काटते है वे दो विन्दु स० और पा० सपात विन्दु है ।

इनमे से १ सं० को अयन मेप या सायन मेप या वसत सम्पात Autumnal equinox कहते है । दूसरे को अयनतुला या सायनतुला या शरद सम्पात Aatumnal equinox कहते है ।

इस प्रकार सूर्य क्राति वृत्त मे घूमते हुए दो वार नाडीवृत्त को पार करता है, उस समय दिन रात वराबर होता है ।

क्रातिवृत्त की वक्रता के ही कारण सूर्य ६ मास उत्तर और ६ मास दक्षिण को उदय होता है । इसी से सूर्य की उत्तरायण और दक्षिणायन सज्ञा होती है ।

ज्यो ज्यो अयन विन्दु के आगे वढते हुए सूर्य जाता है त्यो त्यो दिन वढता जाता है । सूर्य जव क्रातिवृत्त के अतिम छोर पर पहुँच जाता है तो वहाँ सूर्य की सवसे वडी क्राति होती है और यह स्थान क्रातिसीमा कहलाता है ।
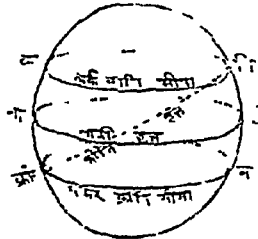
चित्र संख्या ६२–क्रान्तिवृत्त, नाडीवृत्त और क्रान्तिसीमा

चित्र सख्या ६२ देखें । ऊपर वताया गया ति० और नीचे का क्रा० स्थान ही क्राति सीमा है । ये स्थान नाडीवृत्त से २३° २८° की दूरी पर है ।

क्रांति सीमा Tropic

पृथ्वी के नकशे मे ये दो छोटे छोटे वृत्त नाडीवृत्त के समानान्तर २३° २८° की दूरी पर खीचे गये है । उत्तर में कर्क की क्रातिसीमा Tropic of cancer और दक्षिण मे मकर की क्रातिसीमा Tropic of capricorn कहलाती है । यही चित्र सख्या ६२ मे समझाया गया है ।

सम्पात और अयन विन्दुओ का स्पष्टीकरण

१ सायन मेप, उत्तर सम्पात, या वसत सम्पात Vernal equinox—

सूर्य २१ मार्च को विपुववृत्त पर आता है, इसके उपरात उत्तर गोलार्द्ध की ओर जाने

लगता है। इसे वसंत सम्पात कहते है। क्योकि इसी समय वसत ऋतु होती है और सायन मेष संक्रमण होता है। इस समय सूर्य ठीक पूर्व को उदय होता है और दिन रात वराबर होती है। अर्थात् सूर्य प्रात काल ठीक ६ वजे उदय होता है। नाडीवृत्त और क्रातिवृत्त एक दूसरे को काटते है उनका यह पहिला स्थान है। इस स्थान से ग्रहो का भोगाश और विपुवाश नापा जाता है।

२ सायन तुला—दक्षिण सम्पात या शरद सम्पात Autumnal eyinox नाडीवृत्त और क्रातिवृत्त के एक दूसरे को काटने का यह दूसरा स्थान है। २१ सितम्वर के लगभग सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध की क्रान्तिसीमा पर से लौट कर ६ मास मे उत्तरी गोलार्द्ध की यात्रा समाप्त कर जिस सम्पात विन्दु पर आता है उसे सायन तुला कहते है। इस समय सूर्य लौटकर विपुववृत्त पर आ जाता है और ठीक पूर्व मे उगता है तथा दिन रात्रि वरावर होती है। इसके उपरात सूर्य की दक्षिण गोल की यात्रा आरम्भ होती है। इसी से इसे दक्षिण सम्पात भी कहते है। और इसके वाद ही शरद ऋतु आरम्भ होती है। अर्थात् सूर्य उत्तर गोल मे सायन मेप से सायन तुला तक रहता है और दक्षिण गोल मे सायन तुला से सायन मेप तक।

३ ग्रीष्म क्राति--दक्षिणायन विन्दु Summer solstice

यह २१ जून के लगभग होता है जव सूर्य सायन मेप से चल कर उत्तर गोल यात्रा मे वह इस क्रान्तिसीमा पर २१ जून के लगभग पहुँच जाता है, उस समय सूर्य की किरण कर्क रेखा पर समकोण वनाती है। इस समय सूर्य सवसे दूर रहता है और सूर्य के उदय अस्त का घेरा वहुत वडा होता है अर्थात् उस दिन, दिन मान सवसे वडा होता है। इसी को सायन कर्क सक्रमण कहते है। इसके उपरान्त सूर्य लौट कर २१ जून के लगभग उत्तर गोलार्द्ध की यात्रा समाप्त कर सायन तुला पर आता है। इस विन्दु पर पहुँच कर सूर्य दक्षिण की ओर मुडता है और सूर्य दक्षिणायन हो जाता है इस कारण ग्रीष्म क्राति को दक्षिणायन विन्दु भी कहते है।

४ शरदक्राति—उत्तरायण विन्दु Winlet solstice—यह २१ दिसम्वर को होता है, जव सूर्य विपुवरेखा से वहुत दूरी पर वहुत दक्षिण की ओर रहता है। यह क्राति वृत्त की दक्षिण सीमा है। लगभग २२ दिसम्वर को जव सूर्य की किरणे मकर रेखा पर समकोण वनाती है उस समय सायन मकर सक्राति होती है। इस समय सूर्य की दक्षिण क्राति २३°-२८' होती है। उसी दिन सूर्य पूर्व विन्दु के दक्षिण में प्राय २५° पर उगता है। उस दिन से सूर्य उत्तर की ओर जाने लगता है। उस दिन, रात्रि (रात्रि मान) सवसे वडी होती है। इस विन्दु पर पहुँच कर सूर्य उत्तर की ओर जाने लगता है तव उत्तरायण का आरम्भ होता है। इसी कारण इसे उत्तरायण विन्दु कहते है।

अयनविन्दु आकाश मे सदा एक ही जगह नही रहते, ये पश्चिम की ओर खिसकते रहते हैं। जिस नक्षत्र के पास आजकल उत्तरायण या दक्षिणायन होता है पुराने समय मे उस स्थान मे नही होता था। आजकल उत्तरायण का आरम्भ मूल के आधे भाग पर और दक्षिणायन का आरम्भ आर्द्रा के आरम्भ मे होता है।

सूर्य की उत्तर-दक्षिण गति का स्पष्टीकरण

सूर्य जव २१ मार्च को उत्तर सम्पात पर आता है तो दिन रात वरावर होता है अर्थात् ६ वजे प्रात काल ठीकपूर्व मे उदय होता है और ठीक पश्चिम दिशा में अस्त होता है। इसके उपरान्त अवलोकन करेंगे तो प्रकट होगा कि सूर्य ठीक पूर्व बिन्दु पर उदय नही हो रहा है। वह कुछ उत्तर की ओर वढ रहा है। सूर्य इस प्रकार ३ मास तक उत्तर की ओर वढते ही जाता है और २१ जून को विपुव रेखा से सवसे अधिक दूरी पर चला जाता है। उस समय सवमे वडा दिन होगा। क्योकि मूर्य इस समय सवसे दूर हो जाता है और पूर्व मे वहुत दूर हट कर उत्तर को उदय होगा। पूर्व और उत्तर के वीच का जो अन्तर है उस अन्तर का लगभग ⅓ भाग सूर्य उत्तर को चला जाता है। यही क्रान्तिसीमा है। उस समय सूर्य पश्चिम मे क्रान्तिसीमा पर ही डूवता दिखेगा।

इसके उपरान्त सूर्य विपुवरेखा को ओर जाने लगता है और २१ सितम्वर को फिर विपुववृत्त पर आ जाता है और उसी प्रकार उदय अस्त होगा जैसे २१ मार्च को होता है। उस समय दिन रात वरावर होती है। क्रान्ति सीमा मे विपुववृत्त में सूर्य को आने में ३ मास लगते हैं। इस प्रकार ६ महीना मे, जिसमे गर्मी की भी ऋतु सम्मिलित है, सूर्य अपनी पूरी यात्रा कर ठीक उसी जगह आ जाता है। सूर्य इस समय तक उत्तरी गोलार्द्ध मे रहा और इसके उपरान्त दक्षिण गोलार्द्ध मे आ जाता है।

सूर्य जव दक्षिण को जाने लगता है तो दिन छोटा होने लगता है। २१ दिसम्वर को जव सवसे छोटा दिन होता है, सूर्य दक्षिण क्रान्तिसीमा पर ३ मास की यात्रा कर पहुँच जाता है। दक्षिण में क्रान्तिसीमा मे उदय अस्त होते दिखता है। उपरान्त ३ मास की और विपुववृत्त की ओर यात्रा कर २१ मार्च को विपुववृत्त पर फिर आ जाता है।

इस कारण जव सूर्य के उदय अस्त मे अन्तर पडता है तो मध्याह्न (दोपहर) की ऊँचाई मे भी अन्तर पडता है जिसके कारण दिन छोटे-वडे होते है। जून के वीच सवसे अधिक ऊँचाई होती है इससे मवमे वडा दिन होता है। सूर्य के उदय काल पर दिन की लम्वाई छुटाई अवलम्वित है। मूर्य ज्यो ज्यो विपुव रेखा मे उत्तर को जाता है दिन की लम्वाई वढती जाती है।

पहिले मम्पात, अयन विन्दु, और मूर्य की उत्तर दक्षिण गति समझा चुके है इन्ही के कारण भिन्न-भिन्न ऋतुएँ होती है।

सायन राशियाँ संक्रान्ति की तारीख एवं ऋतुऐं

उच्च नीच राशियाँ	राशि	सायन सक्राति की तारीख	ऋतु	
उच्च	१ मेष	२१ मार्च	वसंत और ग्रीष्म की राशियाँ	ये ६ राशियाँ नाडी मडल के उत्तर में हैं
,,	२ वृष	१९ अप्रेल		
,,	३ मिथुन	२० मई		
नीच	४ कर्क	२१ जून	वर्षा और शरद की राशियाँ	
,,	५ सिंह	२२ जुलाई		
,,	६ कन्या	२१ अगस्त		

उच्च या नीच	राशि	सायन सक्राति की तारीख	ऋतु	
उच्च	७ तुला	२३ सितम्बर	शरद और हेमन्त की राशियाँ	ये ६ राशियाँ नाडी मडल के दक्षिण में हैं
,,	८ वृश्चिक	२३ अक्टूबर		
,,	९ धन	२२ नवम्बर		
नीच	१० मकर	२१ दिसम्बर	शिशिर और वसत की राशियाँ	
	११ कुभ	२० जनवरी		
	१२ मीन	१९ फरवरी		

जय सूर्य उपरोक्त ३ राशियो मे से किसी में होता है तो उसकी क्रान्ति वढती है और दूसरे ३ राशियो मे होता है तो क्रान्ति घटती है। इस कारण पहिली उच्च राशियाँ और दूसरी नीच राशियाँ है।

अध्याय १३

सायन और निरयन

राशि ग्रह आदि २ प्रकार के है (१) सायन movable
(२) निरयन fixed zodic

सायन—अयन सहित With Procession

निरयन—अयन रहित Without Procession

अयनाश—अयन के अंश। हिन्दूमत मे माना हुआ प्रथम विन्दु और शरद सम्पात के बीच जो अंतर है वह निश्चित विन्दु से नापा जाता है, उसे अयनाश कहते हैं।

अयनProcession of equinoxes

अयन क्या है ? यह जानने के लिये सम्पातविन्दु का जानना आवश्यक है, जिसके विषय में पहिले अच्छी प्रकार समझा चुके है। नाडीवृत्त और क्रान्तिवृत्त एक दूसरे को जगह जगह काटते है, वे ही सम्पातविन्दु equinox ctial points है। इनमें १ शरद सम्पात दूसरा वसंत सम्पात है। इन्ही दोनो विन्दुओ को अयन भी कहते हैं। इन्ही विन्दुओ पर सूर्य आने से दिन रात बराबर होता है।

इन सम्पात विन्दुओ की वक्र गति होती है अर्थात उल्टे चलते हैं। (जिस प्रकार राहु केतु उल्टे चलते हैं)। शरद सम्पात का विन्दु अपनी पूर्व स्थिति से पीछे हटता जा रहा है इसी कारण इसे वक्र गति कहते है। पहिले वता चुके है कि अयन विन्दु पश्चिम की ओर खिसक रहे हैं।

इस सम्पात विन्दु की पूर्व स्थिति, ज्योतिष शास्त्र में रेवती नक्षत्र से मानी है, परन्तु ज्योतिप चक्र (भचक्र) में सम्पात विन्दु मेप के प्रथम अश से माना गया है।

इस सम्पात विन्दु की वार्षिक गति होती है और यही गति अयन चलन कहलाता है। इसे विपुवत्क्राति-वलय पात चलन भी कहते हैं।

जहाँ इस सायन का उपयोग होता है उसे सायन (चलित ग्रह) movable zodic कहते हैं। निरयन में स्थिर मेष के पहिले अंश से यह सम्पात विन्दु आरंभ होना मानते है और इसमें अयन का उपयोग नही होता इस कारण निरयन को स्थिर fixed zodic कहते हैं।

इसी सम्पात की गति को अयनाश Procession कहते हैं। इस सम्पात का पूर्ण चक्र २५८६८ वर्ष में अर्थात् लगभग २६००० वर्ष में पूरा होता है। इस कारण इस प्रमाण से इसकी गति १ अंश चलने को ७२ वर्ष लगते हैं। अर्थात १ वर्ष मे प्राय ५० विकला के हिसाब से अयन की गति होती है।

अयनाश सहित ग्रह—चलित ग्रह—सायन ग्रह—सायन मत

अयनाश रहित ग्रह—स्थिर ग्रह—निरयन ग्रह—निरयन मत

सायन मतको पाश्चात्य लोग भविष्य कथन मे उपयोग करते हैं और उनके पचाग मे सायन ग्रह दिये रहते है, परन्तु हिन्दू लोग प्राय निरयन मत से ही भविष्य कथन करते हैं। कही कही महाराष्ट्र में भी सायन मतका भी उपयोग करते है।

जो कोई ग्रह मे अयनाश मिलाकर ग्रह को सायन बनाकर सायन ग्रह का उपयोग करते है वे सायन मतके है और जो सायन मे से अयनाश निकाल कर (घटा कर) उसे निरयन बनाकर या निरयन ग्रह हो तो विना अयनाश मिलाए ही ग्रह का बहुधा उपयोग करते है वे निरयन मतके हैं।

सायन मतवालो का कहना है कि ग्रह को सायन बनाकर सायन ग्रह की स्थिति पर से जो फल कहा जायगा वह सच्चा निकलेगा। निरयन मतवालो का कहना है, कि विना अयनाश मिलाए ही ग्रह की स्थिति पर से जो फल कहा जायगा वह सच्चा उतरेगा। यही सायन और निरयन वाद है अर्थात् दोनो मतवालो मे इस प्रकार मतभेद है।

अयनाश का उपयोग निरयन मत मे भी कई जगह होता है। जैसे भाव स्पष्ट करने के लिये निरयन सूर्य मे अयनाश मिलाकर उसे सायन सूर्य बनाकर उस पर से लग्न साधन करते है और फिर सायन लग्न निकलने पर अयनाश घटाकर निरयन ग्रहण करते है। अयनाश का उपयोग आगे जन्म कुडली आदि वनाने के गणित मे काम पडेगा इस लिये इसको जानना आवश्यक है।

किसी वर्ष के अयनाश निकालने की ग्रह लाघव मत के अनुसार सरल रीति —

शाके ४४४ मे रेवती का तारा सम्पात विन्दु पर था। उस समय पर से किसी वर्ष का अयनाश निकालने के लिये, इष्ट शाका में ४४४ घटाना, इसके घटाने से जो शेष बचे वही अयनाश की कला होती है। उनमे ६० का भाग देकर उनके अश वनालें तो वही अयनाश वर्ष आरभ का होगा।

अयनाश —(इष्ट शाका–४४४) ÷ ६०= अयनाश

जैसे शाका १७६९ का अयनाश निकालना है तो शाका मे ४४४ घटा कर शेप मे ६० का भाग दिया तो उत्तर अश कला मे अयनाश आता है।

```
इष्ट शाका  १७६९      ६० ) १३२५ ( २२° उत्तर २२-६ अश कला यह वर्ष आरम्भ
            ४४४           १२०                      का अयनाश हुआ।
        ---------        -----
        शेष १३२५          १२५
                          १२०
                          ---
                            ५
```

अध्याय १४

कुछ प्रारम्भिक ज्ञान होने के उपरान्त यही इच्छा होती है कि हमे पचाङ्ग देखना आ जावे। पंचाङ्ग के मुख्य ५ अग (१) तिथि, (२) वार, (३) नक्षत्र, (४) योग, और (५) करण, होने से उसे पचाङ्ग कहते है। ये सब क्या है यह वतलाने के उपरान्त पचाङ्ग देखना वतायेंगे। पचाङ्ग के उपरोक्त ५ अगो के अतिरिक्त सम्वत्सर, मास, अयन, ऋतु, ग्रह स्थिति, दिनमान सूर्योदय आदि कई और आवश्यक विषय भी

अत पंचाङ्ग मे दिये रहते हैं । इन सबको पहिले समझ लेना चाहिये । वर्ष प्रमाण आदि जानने के पूर्व काल प्रमाण प्रत्येक को जानना आवश्यक है ।

काल प्रमाण Division of Time

त्रुटि—कमल के कोमल से कोमल १ पत्र मे अति नुकीली सुई चुभाने में जो समय लगता है उसे त्रुटि कहते हैं ।

निमेष—पलक झपकाने मे जो समय लगता है उसे निमेष कहते हैं ।

गुरु अक्षर—एक गुरु अक्षर के उच्चारण मे जो समय लगे वह गुरु अक्षर है ।

प्राण—एक गुरु अक्षर के उच्चारण में जो समय लगे उसके १० गुने समय को प्राण कहते हैं ।

भगण काल—कोई ग्रह १ भगण (३६०°) चक्कर पूरा करने मे जो समय लगावे ।

सावन दिन—एक दिन सूर्योदय होने के उपरान्त दूसरे दिन के सूर्योदय होने तक का जो समय है वह सावन दिन कहलाता है ।

१०० त्रुटि=१ लव=१ तत्पर

३० लव=१ निमेष

१० गुरु अक्षर=१ प्राण=१ असु

४५ निमेष=१ प्राण

६ प्राण=१ पल=विनाडी=विघटिका
या=विघटी

१० विपल=१ प्राण या असु

६० विनाडी=१ नाडी=घटी
[पल]=घडी-दड

६० नाडी=१ नाक्षत्र दिन
[घटी]=अहोरात्रि=१ दिन रात

७½ घटी=१ प्रहर

८ प्रहर=२४ घण्टा [होरा]
=१ दिन रात

२ घटी=१ मुहूर्त

३० मुहूर्त=१ दिन रात

७ दिन=१ सप्ताह

३० दिन=१ मास

१२ मास=१ वर्ष

३० नाक्षत्र अहोरात्रि=१ सावन मास

३० सावन दिन=१ सावन मास

३० चान्द्र तिथि=१ चान्द्र मास

१ सक्राति से दूसरी सक्राति तक } =१ सौर मास

१२ मास [१ वर्ष]=१ दिव्य दिन

३६० वर्ष=१ दिव्य वर्ष

---

६० तत्प्रति विकला=१ प्रतिविकला

६० प्रतिविकला=१ विकला

६० विकला=१ कला

६० कला=१ अश

३० अंश=१ राशि

१२ राशि=१ भचक्र=भगण=ज्योतिप चक्र

६० तत्परस=१ परस

६० परस=१ विलिप्ता

६० विलिप्ता=१ लिप्ता

६० लिप्ता=१ विघटिका=पल

६० विघटिका=१ घटिका=दंड

६० घटिका=१ दिन रात्रि

६० अनुपल=१ विपल=२/५ सेकण्ड

६० विपल=१ पल=२४ सेकण्ड

६० पल=१ घडी=२४ मिनट

६० घडी=१ दिन रात्रि=२४ घण्टा

२½ विपल=१ सेकण्ड

२½ पल=१ मिनट

२½ घडी=१ घण्टा

११¼ निमेष=१ सेकण्ड

१ असु [प्राण]=४ सेकण्ड

स्मरण रहे कि अंग्रेजी समय घण्टा मिनट में रहता है। वह अर्द्ध रात्रि के १२ वजे के उपरान्त से आरम्भ होता है और हिन्दू समय घडी पल में सूर्योदय के उपरान्त से आरम्भ होता है।

सूर्योदय का समय प्रत्येक पचाङ्ग में घण्टा मिनट मे दिया रहता है। इष्ट समय यदि घण्टा मिनट मे हो तो सूर्योदय का समय घटा देने से सूर्योदय के वाद के घण्टा मिनट निकल आवेंगे। जैसे ८ वजे दिन किसी वालक का जन्म है। पचाङ्ग में देखा उस दिन ६ वजे प्रात सूर्योदय है।। ८ घण्टा मे से ६ वजे सूर्योदय के घटाये तो शेष २ घण्टा वचे। अव २ घण्टा के घडी पल बना लो। २×२॥=५ घडी हुई। वस यही मूर्योदय के उपरान्त का अपना समय घडी पल में हुआ। इसी प्रकार जहाँ घडी पल में समय दिया हो आवश्यक होने पर उसके घण्टा मिनट वना लो।

नाप का प्रमाण Measurement

६० तत्प्रति अंगुल=१ प्रति अंगुल=व्यंगुल

६० व्यागुल=१ अंगुल

नवीन नाप	प्राचीन नाप	अंग्रेजी मील और योजन का मिलान
२¼ इच=१ गिरह	८ जव की चोडाई=१ अंगुल	यदि १½ फुट का १ हाथ
४ गिरह=१ वीता	२४ अंगुल=१ हाथ	माना जावे तो
४ वीता १ गज	४ हाथ=१ दण्ड	१दण्ड=२ गज
१२ इच १ फुट	२०००दण्ड=१ कोस	१ कोस=४००० गज
३ फुट=१ गज	४ कोस=१ योजन	अर्द्ध कोस [मील]=२००० गज
१७६० गज=१ मील	१० हाथ=१ वाँस	अग्रेजी मील=१७६० गज
२ मील=१ कोस		दोनो का अतर=२४० गज

१ नाट Knot = अक्षांश
की १ कला

१ नाट=१०१५ साधारण
मील=२०२८ गज

अंग्रेजी मील २४० गज छोटा है।
इस प्रकार
४ कोस=१ योजनामें=१९२०
गज या मील–गज
१–१६० का
अन्तर पडेगा
∴ १ योजन=९$\frac{1}{10}$ मील
या=मील–गज
९–१६०

[१] युग प्रमाण

काल प्रमाण जानने के उपरान्त युग प्रमाण भी जानना चाहिये, क्योकि पचाङ्ग में दिया रहता है कि कलियुग के इतने वर्ष बीत गये हैं इत्यादि।

कलियुग ४३२००० वर्ष का होता है। कलियुग का दूना द्वापर, तिगुना त्रेता, चौगुना सतयुग होता है। इन ४ युग का १ महायुग होता है। ७१ महायुग का १ मन्वंतर और १००० महायुग का १ कल्प या ब्रह्मा का एक दिन होता है। ३६० कल्प का १ वर्ष ब्रह्मा का होता है। प्रत्येक मन्वतर के आदि और अत में सतयुग प्रमाण की १ सधि होती है। सधि को प्रलय काल भी कहते हैं। १५ सधि समेत एक मन्वतर का १ कल्प होता है। ब्रह्मा की आयु ३६० कल्प×१०० वर्ष की होती है।

सतयुग=१७२८००० वर्ष
त्रेता=१२९६००० ,,
द्वापर=८६४००० ,,
कलियुग=४३२००० ,,
१ महायुग=४३२०००० वर्ष
७१ महायुग=१ मन्वंतर=
३०६७२०००० वर्ष
१००० महायुग=१ कल्प
४३२००००००० वर्ष
= ब्रह्मा का १ दिन
३६० कल्प=१ वर्ष ब्रह्मा का
आयु १०० वर्ष
प्रत्येक मन्वतर के आदि और

मनु १४ है उनके नाम
१ स्वायम्भुव
२ स्वारोचिष
३ उत्तमज [औत्तमि]
४ तामस
५ रैवत
६ चाक्षुप
७ वैवस्वत
८ सावर्णि
९ दक्ष सावर्णि
१० ब्रह्म ,,
११ धर्म ,,
१२ रुद्र ,,

वर्तमान कल्प के आरम्भ से ६ संधियो समेत ६ मनु व्यतीत हो चुके है उनके नाम–
[१] स्वायम्भुव मनु
[२] स्वारोचिष ,,
[३] उत्तमज ,,
[औत्तमि] ,,
[४] तामस ,,
[५] रैवत ,,
[६] चाक्षुप ,,
इस समय सातवाँ वैवस्वत मनु वर्तमान

सृष्टि आरम्भ होने से वर्तमान कलियुग आरम्भ होने तक १९७२९४४००० वर्ष या ईसा के जन्म समय तक (सन् ईस्वी आरम्भ होने तक)=१९७२९४७१०२ वर्ष हो चुके हैं।

इसके आगे वर्तमान सन ईस्वी जोड दो तो वर्तमान सन ईस्वी तक सृष्टि आरभ होने का वर्ष निकल आयगा।

या द्वापर तक के वर्ष १९७२९४४००० में ३०४५ और जोड दो तो सम्वत आरभ होने तक का सृष्टि आरंभ का समय निकल आयगा।

सन् ईस्वी के ३१०२ वर्ष पहिले कलियुग आरभ हुआ था। सन् ईस्वी आरभ होने के ५७ वर्ष पहिले विक्रम सम्वत प्रचलित हुआ था। इस प्रकार [३१०२–५७]= ३०४० वर्ष हुए। ये वर्ष, सम्वत के आरंभ होने के समय तक के कलि के गत वर्ष हुए।

द्वापर तक के वर्ष	१९७२९४४०००	इतने वर्ष सृष्टि आरंभ से सम्वत आरंभ तकके हुए।
सम्वत आरभ तक कलि वर्ष+	३०४५	
योग	१९७२९४७०४५	

इसमें इष्ट सम्वत और जोड दो तो इष्ट सम्वत तक के वर्ष प्राप्त होगे।

कलियुग सन् ईस्वी के ३१०२ B C (बी. सी) [इतने वर्ष पहिले] आरंभ हुआ था। सम्वत २००० में ५०४४ वर्ष कलि के वीत चुके और ४२६९५६ वर्ष व्यतीत होने को शेप रहे। ता० १८ फरवरी ३१०२ बी सी [ईसा के जन्म के पहिले] अर्धरात्रि से कलियुग आरंभ हुआ था। भाद्रपद मास, कृष्णपक्ष १३ रविवार आश्लेषा नक्षत्र व्यतीपात योग में अर्द्धरात्रि के समय कलियुग की उत्पत्ति हुई थी।

इस प्रकार यह कलियुग का प्रथम चरण है, ब्रह्मा का दूसरा पहर है, श्वेत वाराह कल्प है और वैवस्वत मन्वन्तर है। जब कलियुग आरंभ हुआ था सूर्य चद्र आदि सब ग्रह एक ही राशि पर थे।

विक्रमादित्य ने ५७ बी सी में पहिले विदेशियो को भारत से भगाया था, उस समय से विक्रम सम्वत चला है। ईसा के जन्म के ७८ वर्ष के उपरात शालिवाहन राजा ने शाका चलाया है।

[२] वर्ष प्रमाण—

	वर्ष
शाके + ७८ वर्ष=सन् ईस्वी	सन् ईस्वी—५८३=सन् हिजरी
सम्वत—५७ ,, = ,, ,,	सन् हिजरी—१०=सन् फसली
सन् ईस्वी+५७ ,, = सम्वत	सन् फसली—१=वगला सन्
, —७८ = शाका	
सम्वत—१३५ = शाका	

विक्रम सम्वत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होता है। सन् ईस्वी से सम्वत् वनानें में यह ध्यान रहे कि सम्वत् मार्च के महीना मे वदल जाता है और पूस मास मे सन् बदलता है। इस प्रकार एक सम्वत् मे २ सन् या १ सन् मे २ सम्वत् आ जाते है। इस कारण मास का विचार कर सन् या सवत् का निर्णय करना चाहिये। अर्थात् सम्वत् मे ५७ घटाने से जो सन् आता है वह वर्ष आरभ का सन् होता है। आगे पूस में सन् बदल कर दूसरा सन् लग जाता है। जैसे सम्वत् २००२–५७=१९४५ सन् ईस्वी, यह सन् सम्वत् के आरभ मे होगा और सम्वत् २००२ के पूस मास मे सन् बदल कर १९४६ सन् हो जायगा।

वर्ष मान – वर्ष ४ प्रकार के है

	दि०	घ०	पल	
[१] सौर वर्ष =	३६५	१५	३०	=सूर्य १२ राशियो मे १ वार घूम लेने से होता है। इस प्रकार १२ सौर मास का १ वर्ष होता है।
	दि०	घ०	पल	
[२] चाद्र वर्ष =	३५४	३०	०	=शुक्ल प्रतिपदा से अमावस तक १२ मास का या मलमास होने से १३ मास का १ वर्ष होता है।

[३] सावन वर्ष = ३६० सावन दिन का=१२ सावन मास का

	दि०	घ०	पल	
[४] नाक्षत्र वर्ष =	३२४	०	०	=१२ नाक्षत्र मास का १ वर्ष

सम्वत्सर

पंचाग मे सम्वत्सर का नाम दिया रहता है। सकल्प तर्पण आदि मे जिस का उपयोग होता है और इससे फल भी विचारते है।

सम्वत्सर ६० होते है। किसी शाका मे २४ जोड कर ६० का भाग देने से जो शेष बचे उसी क्रमानुसार सम्वत्सर का नाम होता है। जैसे शाका १८५६+२४–६०= $\frac{१८८०}{६०}$ = शेप २०=२० व्यय नाम का सम्वत्सर हुआ या सम्वत्+९÷६०=शेष सम्वत्सर। जैसे सम्वत् $\frac{१९९१+९}{६०}$ = $\frac{२०००}{६०}$ = शेष २० = व्यय सम्वत्सर।

इसके अनुसार सम्वत्सर होता है, परन्तु कभी २ एक सम्वत् में २ सम्वत् आ जाते है। सम्वत् १९९३ मे २२ वा सर्वधारी सम्वत्सर के उपरान्त २३ वा विरोधी सम्वत्सर भी उसी वर्ष लग गया था, जिससे १ अधिक हो जाता है। वास्तव मे गुरु की गति के अनुसार गणित से सम्वत्सर निकाले जाते है। यहाँ तो सम्वत्सर निकालने की मोटी रीति दी है।

सम्वत्सर के नाम

१ प्रभव	१६ चित्रभानु	३१ हेमलम्बी	४६ परिधावी
२ विभव	१७ सुभानु	३२ विलवी	४७ प्रमादी
३ शुक्ल	१८ तारण	३३ विकारी	४८ आनन्द
४ प्रमोद	१९ पार्थिव	३४ शार्वरी	४९ राक्षस
५ प्रजापति	२० व्यय	३५ प्लव	५० नल
६ अंगिरा	२१ सर्वजित्	३६ शुभकृत्	५१ पिंगल
७ श्रीमुख	२२ सर्वधारी	३७ शोभन	५२ कालयुक्त
८ भाव	२३ विरोधी	३८ क्रोधी	५३ सिद्धार्थी
९ युवा	२४ विकृति	३९ विश्वावसु	५३ रौद्र
१० धाता	२५ खर	४० पराभव	५५ दुर्मति
११ ईश्वर	२६ नन्दन	४१ प्लवग	५६ दुंदुभि
१२ बहुधान्य	२७ विजय	४२ कीलक	५७ रुधिरोद्गारी
१३ प्रमाथी	२८ जय	४३ सौम्य	४८ रक्ताक्षी
१४ विक्रम	२९ मन्मथ	४४ साधारण	५९ क्रोधन
१५ वृष	३० दुर्मुख	४५ विरोधकृत्	६० क्षय

जैसे सम्वत २००३ + ९=२०१२ ÷ ६०= शेष ३२ + १=३३ विकारी सम्वत्सर। गुरु मध्यमगति जितने समय में १ राशि चलता है उसे सम्वत्सर कहते हैं। गुरु के १ भगण में १२ सम्वत्सर या ४३३२ ३२०६ सावन दिन होते है। या १ सम्वत्सर में ३६१ ०२६७२ सावन दिन होते है।

[३] अयन

अयन २ होते है १ उत्तरायण २ दक्षिणायन

१ उत्तरायण= मकर सक्रांति से आरम्भ होता है और मिथुन सक्रांति की समाप्तितक रहता है। इसमें दिन क्रम क्रम से बढता है।

२ दक्षिणायन-- कर्क सक्रांति से लेकर धनु सक्रांति के अन्त तक दक्षिणायन सूर्य कहलाता है। इसमे रात्रि क्रम क्रम से बढती है। इसमे जो सक्रांति की राशिया बताई हैं वे सायन नही है अर्थात् निरयन है।

[४] गोल

गोल २ है। आकाश के २ भाग इस प्रकार किए जाय कि ऊपर भाग के मध्य में आकाश का उत्तर ध्रुव हो और दूसरे भाग के मध्य में दक्षिण ध्रुव हो तो पहिले को उत्तर गोल और दूसरे को दक्षिण गोल कहेंगे।

सायन, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह और कन्या ६ ये राशियाँ उत्तर गोल में है और शेष ६ राशियाँ सायन तुला, वृश्चिक, धन, मकर कुंभ और मीन ये ६ राशियाँ दक्षिण गोल में है।

[५] ऋतुएँ

१२ मास में ६ ऋतुएँ होती है।

अयन	ऋतु	सूर्य	चन्द्रमास
१ उत्तरायण	१ शिशिर	मकर-कुंभ	माघ-फाल्गुन
,,	२ वसन्त	मीन-मेष	चैत्र-वैशाख
,,	३ ग्रीष्म	वृष-मिथुन	ज्येष्ठ-अषाढ
२ दक्षिणायन	४ वर्षा	कर्क-सिंह	श्रावण-भाद्रपद
,,	५ शरद	कन्या- तुला	आश्विन-कार्तिक
,,	६ हेमत	वृश्चिक-धन	मार्गशीर्ष-पौष

अध्याय १५

(६) मास और पक्ष विचार (Month and fortnight)

मास ४ प्रकार के हैं—

१ **चान्द्रमास** = शुक्ल प्रतिपदा से अमावस्या तक १ चान्द्रमास है।

२ **सौरमास** = सूर्य की १ संक्राति से दूसरी संक्रान्ति तक।

सूर्य जब १ राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है उस समय दूसरी राशि की सक्रान्ति होती है। जैसे मेष राशि के बाद सूर्य वृष राशि में जिस दिन आया उसी दिन वृष की संक्राति कहलायगी।

३ **सावन मास** = ३० सावन दिन = सूर्य के एक उदय से दूसरे उदय तक के समय को १ सावन दिन कहते हैं। इस प्रकार ३० दिन का १ सावन मास होता है। सावन दिन यह नाक्षत्र दिन से ४ मिनट बडा होता है। सावन दिन का मान समान नही होता, इस कारण मध्यम सावन दिन का मान लिया जाता है और उसी का समय घडियो से जाना जाता है।

४ नाक्षत्र मास = अश्विनी आदि २७ नक्षत्रो में चन्द्र एक बार पूरा घूम लेता है तब चन्द्र मास होता है।

चन्द्र के बारह मास के नाम

१	चैत्र [चैत]	४	आषाढ [आसाढ]	७	आश्विन [कुआर]	१०	पौष [पूस]
२	वैशाख	५	श्रावण [सावन]	८	कार्तिक [कातिक]	११	माघ
३	ज्येष्ठ [जेठ]	६	भाद्रपद [भादो]	९	मार्गशीर्ष [अगहन]	१२	फाल्गुन [फागुन]

इन महीनो के उपरोक्त नाम पडने का कारण यह है कि इन महीनो की पूर्णिमा के लगभग ये नक्षत्र पडते हैं।

क्रम	चन्द्रमास	नक्षत्र	क्रम	चन्द्रमास	नक्षत्र	क्रम	चन्द्रमास	नक्षत्र
१	चैत्र	चित्रा	५	श्रावण	श्रवण	९	मार्गशीर्ष	मृगशिर
२	वैशाख	विशाखा	६	भाद्रपद	भाद्रपद	१०	पौष	पुष्य
३	ज्येष्ठ	ज्येष्ठा	७	आश्विन	अश्विनी	११	माघ	मघा
४	आषाढ	आषाढा	८	कार्तिक	कृत्तिका	१२	फाल्गुन	फाल्गुनी

चन्द्र मास २ प्रकार के हैं।

१ अमान्त मास=शुक्ल प्रतिपदा से अमावस्या तक १ मास होता है। यह दक्षिण मे और महाराष्ट्र देश में चालू है।

२ पूर्णिमान्त मास = कृष्ण प्रतिपदा से पूर्णिमा तक १ मास यह उत्तर भारत में चालू है।

दोनो प्रकार के मास में कोई अन्तर नही आता, क्योंकि एक जगह पूर्णिमा या अमावस्या हुई तो सर्वत्र ही उस दिन पूर्णिमा या अमावस्या अवश्य होगी। केवल मास गणना मे कृष्ण पक्ष में अपने यहां १ मास का अन्तर पड जाता है। जैसे अपने यहां चैत्र कृष्णपक्ष हुआ तो महाराष्ट्र लोग उसे फाल्गुन कृष्ण पक्ष कहेंगे अर्थात् कृष्ण पक्ष मे अपने मास से १ मास कम महाराष्ट्र लोगो का मास होता है। मराठी पचाग मिले तो कृष्णपक्ष में १ मास बढा कर लेना चाहिये। परन्तु शुक्ल पक्ष में दोनो प्रकार के पञ्चाग मे कोई अन्तर नही पडता।

बंगला मास

सूर्य की निरयन सक्राति से आरम्भ होता है और मेषार्क (मेष की सक्रान्ति) से नया बगला सन् आरम्भ होता है। मीनार्क से चैत्र मास आरम्भ होता है और मेषार्क में वैशाख मास होता है। जब वर्ष आरम्भ होता है तब सक्रान्ति जिस दिन होती है

उसके दूसरे दिन से बगला की पहली तारीख (तिथि) गिनी जाती है। किसी महीने मे २९, ३०, ३१ या कभी ३२ दिन पड जाते है।

अंग्रेजी महीनों के नाम

क्रम	अंग्रेजी महीना	दिन	चान्द्रमास	क्रम	अंग्रेजी महीना	दिन	चान्द्रमास	क्रम	अग्रेजी महीना	दिन	चान्द्रमास
१	जनवरी	३१	पूस	५	मई	३१	वैशाख	९	सितम्वर	३०	भाद्रपद
२	फरवरी	२८	माघ	३	जून	३०	ज्येष्ठ	१०	अक्टूबर	३१	आश्विन
३	मार्च	३१	फाल्गुन	७	जुलाई	३१	आषाढ	११	नवम्बर	३०	कार्तिक
४	अप्रैल	३०	चैत्र	८	अगस्त	३१	श्रावण	१२	दिसम्बर	३१	मार्गशीर्ष

प्लुत वर्ष=Leap year लीप इयर=मे फरवरी २९ दिन की होती हैं। जिस सन् मे ४ का भाग पूरा लग जाय या सदी Century मे ४०० का भाग पूरा लग जावे तो उसे प्लुत वर्ष कहते है। शेष वर्षो मे फरवरी २८ दिन की होती है।

मुसलमानी महीनो के नाम अर्थात् हिजरी सन् के महीने

१ मोहर्रम	५ जमादि उल अव्वल	९ रमजान
२ सफर	६ जमादिउल आखर (सानी)	१० सव्वाल
३ रविउल अव्वल	७ रज्जब	११ जीकाद
४ रविउल आखर (सानी)	८ सावान (शअवान)	१२ जिल हिज्ज

चाद दिखने से महीना आरम्भ होता है और इनमे लौद का वर्ष या अधिक मास नही होना। इस कारण प्रत्येक तीसरे वर्ष इनके महीनो से अन्तर पडता रहता है अर्थात् कभी मुहर्रम जाडे में कभी वरसात मे कभी गरमी मे पड़ता है। मुहर्रम की १ तारीख से हिजरी सन् आरम्भ होता ह और चाद दिखने के दूसरे दिन महीने की पहली तारीख होती ह। कभी २९ दिन कभी ३० दिन का महीना चन्द्र की तिथि की घटा-वढी के अनुसार होता है।

फ़सली सन् मे महीना प्रत्येक कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ होता है और रमजान महीना से नया सन् आरम्भ होता है। इसमें भी चन्द्र तिथि के अनुसार कभी २९ कभी ३० दिन हो जाते है।

सौर मास और सक्रांति

सूर्य जब १ राशि के अन्त मे जाकर दूसरी राशि मे सक्रमण करता है (जाने लगता है) तब उसे संक्रांति कहते है। अर्थात् जब २ राशियो की संधि पर सूर्य आता है तब आगे की राशि की सक्रांति होती है। इस प्रकार प्रत्येक .सौर मास मे एक सक्रांति

होती हैं। जिस राशि पर सूर्य जाता हैं उस राशि की संक्रान्ति कहलाती हैं। जैसे धनं का अत होने पर सूर्य मकरराशि मे जाता हैं तो वह मकर-सक्रान्ति कहलावेगी। अर्थात् सूर्य ने मकर राशि मे सक्रमण किया ऐसा कहेंगे।

मेप से तुला सक्राति को विपुव सक्राति कहते हैं।

कर्क से मकर सक्राति को अयन सक्राति कहते हैं।

अधिक मास

जिस चान्द्र मास मे सूर्य की सक्राति नही होती उसे अधिक मास कहते हैं। अर्थात् जब दो पक्ष में सक्राति नही होती तो उसे अधिक मास कहते हैं। जैसे सम्वत् १९९९ मे वैशाख कृष्ण १३ (ता० १३ अप्रैल) को मेप सक्राति हुई। ज्येष्ठ कृष्ण १४ को (ता० १४ मई) वृप की सक्राति हुई। इसके उपरान्त फिर (ता० १४ जून) शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मिथुन राशि पर सूर्य गया अर्थात् मिथुन की सक्राति हुई। वृपार्क शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की १४ तिथि को था, उसके बाद अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष और फिर अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष बीत गया, परन्तु इन दोनो के बीच सक्राति नही हुई। इस कारण ये दोनो पक्ष अधिक मास माने गये। इसके पहिले का ज्येष्ठ कृष्ण शुद्ध माना गया और फिर उसके बाद जो अधिक २ पक्ष बढ़े उनमें से १ का नाम अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पडा और उसके आगे फिर अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष माना गया। ये दोनो अधिक पक्ष व्यतीत हो जाने पर शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मिथुन की सक्राति हुई। इससे वह शुद्ध ज्येष्ठ मास माना गया।

३२ मास १६ दिन ४ घडी बीतने पर अधिक मास होता है। अर्थात् तीसरे वर्प अधिक मास होता हैं और उस वर्प में १३ मास हो जाते हैं।

अधिक मास को मल मास या पुरुपोत्तम मास कहते हैं। चन्द्र मास के गणित से वर्प में ३५४ दिन ९ घटे और सूर्य मास के वर्प मे ३६५ दिन ६ घटे प्राय होते हैं। इस कारण सूर्य और चन्द्र के दिनो का अतर अधिक मास होने से बराबर हो जाता हैं।

क्षय मास

जिस चान्द्र मास के २ पक्ष मे २ सक्राति होती हैं उसे क्षयमास कहते हैं। क्षय मास केवल कार्तिक आदि ३ महीनो में पडता हैं और महीनो मे नही पडता। जिस वर्प क्षय मास होता हैं उस वर्प एक वर्प के भीतर २ अधिक मास होते हैं।

यह कई वर्पो मे पडता है। यदि भाद्रपद अधिकमास होगा तो सूर्य की गति अधिक होने से मार्ग शीर्प में २ संक्राति वाला क्षयमास होगा और सूर्य की गति अल्प हो जाने के कारण चैत्र मास भी अधिक होगा।

जिस सम्वत् मे क्षय मास होता है उसके १४१ या १९ वर्ष उपरान्त पुन क्षयमास होना सम्भव होता है अर्थात् कभी १४१ वर्ष में कभी १९ वर्ष में संभव होता है।

जैसे सम्वत् ९७४ मे क्षय मास होकर पुन आगे सम्वत् (९७४ + १४१)-१११५ में और (१११५ + १४१)=१२५६ सम्वत मे क्षय मास होगा, इसी प्रकार आगे और भी जानें। भविष्य मे सम्वत् २०२० में क्षय मास होगा।

(७) पक्ष

चान्द्र मास मे २पक्ष=(पखवाडा या पदरवाडा) होते है। जब सूर्यास्त के उपरात कुछ समय तक अन्धेरी रात आ जाती है या सम्पूर्ण रात भर या रात के कुछ भाग तक ही सूर्यास्त के बाद अंधेरा रहे उसे कृष्ण पक्ष कहते है। जब सूर्यास्त के उपरान्त कुछ समय या सम्पूर्ण रात भर चन्द्र का प्रकाश रात्रि को रहे तब उसे शुक्ल पक्ष कहते हैं।

कृष्णपक्ष=बदी। शुल्क पक्ष=शुद्ध या सुदी।

अध्याय १६

पंचाङ्ग के अङ्ग

तिथि—यह पचाङ्ग का प्रथम अग है। पंचाङ्ग में पहिले तिथि ही दी रहती है। चान्द्रमास की तिथियाँ ३० होती है।

१ प्रतिपदा (परिवा) परमा या पडिवा
२ द्वितीया (दोज)
३ तृतीया (तीज)
४ चतुर्थी (चौथ)
५ पचमी (पाँचें)
६ षष्ठी (छठें)
७ सप्तमी (साते)
८ अष्टमी (आठें)
९ नवमी (नमें)
१० दशमी (दसें)
११ एकादशी (ग्यारस)
१२ द्वादशी (बारस)
१३ त्रयोदशी(तेरस)
१४ चतुर्दशी (चौदस)
१५ पूर्णिमा (पूनो)
३० अमावस्या (अमावस) या अमावास्या

तिथियाँ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से गिनी जाती है और १५ तिथि पूर्णिमा को होती है, इस कारण पूर्णिमा के स्थान में १५ तिथि लिखते है। इसके उपरान्त कृष्ण पक्ष की तिथियाँ आरम्भ होती है। वे भी प्रतिपदा से आरम्भ होकर अमावस्या तक गिनी जाती है। परन्तु अमावस्या को ३० वी तिथि कहते है। अमावस्या के स्थान ३० तिथि लिखी जाती है। जहाँ ३० तिथि लिखी हो वहाँ अमावस्या समझें।

जिस दिन सूर्य और चन्द्र एक स्थान मे आ जाते है तब अमावस्या होती है अर्थात् सूर्य के पास चन्द्र आ जाता है (अस्त हो जाता है) तब अमावस्या होती है। गणित करने से जिस समय सूर्य और चन्द्र का पूर्व पश्चिम अन्तर शून्य हो जाता है उसी समय अमावस्या तिथि होती है।

सूर्य की गति से चन्द्र की गति अधिक है। जब दोनो का अन्तर बढते लगता है तो १ तिथि का आरम्भ होने लगता है। अर्थात् प्रतिपदा तिथि का आरम्भ होने लगता है, जब वह बढते-बढते बारह अश का अन्तर हो जाता है तो प्रतिपदा तिथि पूरी हो जाती है। ३६०° एक चक्र मे होते हैं — ३० तिथि=१२°=१ तिथि। अर्थात् सूर्य चन्द्र में जब १२ अश का अन्तर पडता है तो १ तिथि होती है।

यह अन्तर (अर्थात् १ तिथि) मध्यम मान से ५९ घण्टा ३ पल का होता है। चान्द्रमान २९½ दिन का होता है, जिसमे ३० तिथियाँ व्यतीत होती है। इस प्रकार १२ मास में ३५४ दिन हुए जिसमे ३६० तिथिया होती है अर्थात् तिथियो का क्षय वृद्धि आदि होकर ६ दिन कम हो जाते है।

चद्र गति कभी ६६ घटी से घटते घटते ५० घटी तक कम हो जाती है। जब तिथि का मान ६० घडी से अधिक होता है तो वृद्धि तिथि और ६० घडी से कम होता है तो क्षय तिथि होती है।

वृद्धि तिथि

जैसे सोमवार को ५८ घडी तक द्वितीया है। १२ अश अन्तर होने मे चद्र की गति के अनुसार तृतीया पूर्ण होने को ६५ घटी लगी। सोमवार को ५८ घटी के उपरात द्वितीया व्यतीत होकर शेष में तृतीया रहेगी। फिर मगलवार को सब दिन अर्थात् ६० घटी तृतीया रही और बुध को सूर्योदय के अनतर ३ घटी और तृतीया रही। इस प्रकार सोमवार, मगलवार और बुधवार को मिला कर ६५ घटी तृतीया रही। इसके उपरात चतुर्थी आरंभ हुई।

पचाग मे सोमवार को द्वितीया ५८ घटी लिखा होगा। मगल की और बुध को भी तृतीया लिखा रहेगा।

सूर्योदय के उपरान्त वह तिथि चाहे १ घडी क्यो न हो, जो तिथि सूर्योदय पर होगी वही तिथि पचाग मे लिखी रहेगी। जैसे बुधवार को ३ घडी तक तृतीया है तो भी उस दिन तृतीया ३ घटी लिखी रहेगी। इसमे समझ जाना चाहिये कि सूर्योदय के उपरान्त ३ घटी तक तृतीया तिथि थी उसके उपरात चतुर्थी तिथि आरम्भ हुई।

इस प्रकार जब दो दिन एक ही तिथि पचाग मे लिखी देखो तो उसे वृद्धि तिथि जानो।

क्षय तिथि

मान लो सोमवार को सूर्योदय के अनंतर २ घडी दशमी है। पंचाग में उस दिन २ घडी लिखा होगा। इसके बाद एकादशी तिथि मान लो ५५ घटी रही फिर द्वादशी आरंभ हुई, तो सोमवार को पूरे ६० घटी में २ घटी दशमी के गये, बचे ५८ घटी। इसमें ५५ घटी एकादशी के गये तो ३ घटी द्वादशी के बचे तो उस दिन ३ घटी ही द्वादशी रही। दूसरे दिन मंगलवार को भी शेष द्वादशी रहेगी ही। इस कारण मगल वार को द्वादशी तिथि पंचाग में लिखी मिलेगी। परन्तु एकादशी तिथि पचाग में लिखी हुई न मिलेगी। परन्तु ऊपर बताई रीति से जान सकते हो कि ग्यारस कब से कब तक रही। ऐसा नही समझना कि पंचाग में ग्यारस नही लिखा तो ग्यारस है ही नही। सूर्योदय पर जो तिथि किसी भी दिन पचाग मे नही बताई गई वह क्षय तिथि समझना।

पूर्णिमा और अमावस्या के नाम

तिथि	चतुर्दशी मिश्रित	प्रतिपदा मिश्रित
अमावस्या ३०	सिनी	कुहू
पूर्णिमा १५	अनुमति	राका

(२) वार (दिन) Day

यह पंचाग का दूसरा अंग है। पचाग मे तिथि के पास वार दिया रहता है। वार ७ है

क्रम	वार नाम	फारसी नाम	अंग्रेजी नाम
१	रविवार=सूर्यवार (इतवार) आदित्यवार	एक संबा	Sunday
२	चद्रवार (सोमवार)	दुसवा (पीर)	Monday
३	भौमवार (मगलवार)	शि संबा	Tuesday
४	बुधवार	चहार संबा	Wednesday
५	गुरुवार (बृहस्पतिवार)	पज सबा (जुमेरात)	Thursday
६	भृगुवार (शुक्रवार)	जुमा	Friday
७	शनिवार (शनीचर)	संबा	Saturday

ये दिन के नाम ग्रहो के ऊपर से पडे है। जिस ग्रह का होरा प्रात काल होता है उसी ग्रह के नाम से उस दिन का नाम पडता है। पृथ्वी भर मे सर्वत्र इसी क्रम से ही दिन माने जाते है और ७ दिन होते है।

ग्रहों का होरा

आकाश मे पृथ्वी से अधिक दूरी के क्रम से इस प्रकार ग्रहो की स्थिति है—(१) शनि, (२) गुरु, (३) मगल, (४) रवि, (५) शुक्र, (६) वुध, (७) चद्र। अर्थात् पृथ्वी से सबसे पास चद्र है फिर उससे कुछ दूर वुध, फिर शुक्र, फिर रवि, मगल, गुरु और शनि क्रम से एक दूसरा ग्रह अधिक दूरी पर हैं। होरा के विचार में उपर्युक्त ग्रहो का क्रम जिसमें आदि शनि है लिया है, क्योकि पृथ्वी से शनि सबसे अधिक दूरी पर है चित्र स० ४ देखें।

१ होरा एक घटे का होता है इस कारण होरा Hour) को घटा भी कहते है। दिन रात में २४ घटा होते है। इस प्रकार दिन रात मे २४ होरा हुए। ७ ग्रहो का प्रभाव क्रमश एक २ होरा में होता है=२४ होरा ÷ ७ ग्रह=३$\frac{3}{7}$। अर्थात् २४ घंटा में ७ ग्रह के पूरे ३ चक्कर होकर शेष ३ होरा (घटे) बच रहते है, जिसमें प्रति ग्रह १ घंटा के हिसाब मे ३ ग्रह और भोग सकते है। इस प्रकार ३ ग्रह और भोग चुकते है। इस प्रकार (२४ घण्टा पूरे होने पर) चौथे ग्रह के होरा में दूसरे दिन का आरम्भ होता है।

जैसे प्रात शनि का होरा था शनि से दूसरा गुरु, तीसरा मंगल का होरा शनिवार के २४ घटा में व्यतीत हो गये। अब दूसरे दिन प्रात काल चौथा ग्रह (शनि से चौथा रवि है रवि का होरा आया। उस दिन प्रात काल रवि का होरा था, इस कारण उस दिन का नाम रविवार पडा।

इसके वाद रवि मे चौथा चंद्र है। इसमें रविवार के दिन भर के वाद दूसरे दिन प्रात चद्र का होरा आयगा, इसलिये उस दिन का नाम चद्रवार (सोमवार) होगा। अब सोमवार के वाद चौथा ग्रह (१ चद्र, २ शनि, ३ गुरु) चौथा मगल हुआ तो दूसरे दिन प्रात काल मगल का होरा होने से मगलवार दिन का नाम पडा। मगल से चौथा ग्रह (१ मंगल, २ रवि, ३ शुक्र और चौथा) वुध है तो दूसरे दिन बुधवार होगा। इसी प्रकार वुध मे चौथा गुरु है, गुरु से चौथा शुक्र है, शुक्र से चौथा शनि है। इस क्रम मे प्रात काल जिस ग्रह का होरा होता है उसी ग्रह के नाम पर से वार का नाम पडता है।

इष्ट घडी के घटा बना लो, उसमें ७ का भाग दो जो शेष बचे उतनी सख्या उस दिन के प्रात समय के होरा से, उस दिन को १ गिनते हुए शेष सख्या तक गिनो, जिस ग्रह का होरा आवे उस समय वही होरा होगा ऐसा जानना।

जैसे २५ घडी दिन चढे पर कौन होरा होगा देखना है। २५ घडी=१० घटा। उस दिन मानो मगलवार था तो १० में ७ का भाग दिया शेष ३ बचा, मंगल का दिन था।

इससे मंगल से गिना तो (१) मंगल, (२) रवि, (३) तीसरा शुक्र आया। इस कारण उस समय शुक्र का होरा होगा ऐसा जानना।

नीचे दिये हुए चक्र से प्रगट होगा कि सूर्योदय के उपरान्त इष्ट घडी पर किस दिन कौन होरा होगा। घड़ी पल मे समय दिया हो तो घडी पल मे (घटा बनाने को) २/५ का गुणा कर ७ का भाग दो शेष जो बचे वही होरा होगा।

इष्ट घडी × २/५ ÷ ७=शेष ग्रह का होरा जैसे इष्ट घड़ी ४० है गुरुवार का दिन है ४० × २/५ ÷ ७=१६ ÷ ७=शेष २, दिन गुरुवार था तो गुरु से २ गिना। १ गुरु २ मगल आया इस कारण उस समय मगल का होरा हुआ। इसी के अनुसार नीचे चक्र से इष्ट घडी का होरा जान सकते हो। यदि समय घटा मे हो तो इसी चक्र से घटा के अनुसार भी होरा जान सकते हो।

होरा चक्र—

किस घडी तक				रवि वार	चंद्र वार	मंगल वार	बुध वार	गुरु वार	शुक्र वार	शनि वार	घंटा तक			
२॥	२०	३७॥	५	सूर्य	चद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	१	८	१५	२२
५	२२॥	४०	५७॥	शुक्र	शनि	सूर्य	चद्र	मंगल	बुध	गुरु	२	९	१६	२३
७॥	२५	४२॥	६०	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मगल	३	१०	१७	२४
१०	२७॥	४५	०	चद्र	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	४	११	१८	०
१२॥	३०	४७॥	०	शनि	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	५	१२	१९	०
१५	३२॥	५०	०	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चद्र	मगल	बुध	६	१३	२०	०
१७॥	३५	५२॥	०	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चद्र	७	१४	२१	०

यहाँ दिया घटा का समय सूर्योदय से लेना अर्थात् घड़ी के समय में सूर्योदय घटा कर लेना।

इस चक्र से प्रगट होगा कि शनि, गुरु, मगल, रवि, शुक्र, बुध, चन्द्र इस क्रम से ग्रह का होरा होता है। रविवार को रवि, शुक्र, बुध, चन्द्र, शनि, गुरु, मगल का दिन रात मे ३ वार पूरा चक्र होकर शेष रात्रि मे ३ और ग्रह का होरा बुध का होरा

तक होता है। वुध के वाद चन्द्र है इस कारण दूसरे दिन प्रातः चन्द्र का होरा होने से दूसरे दिन का नाम चन्द्रवार पडा। इसी प्रकार और ग्रहो के सम्वन्ध में जानना।

(३) नक्षत्र

यह पंचाग का तीसरा अग है।

नक्षत्र २७ है और अभिजित मिलाकर २८ नक्षत्र होते है, परन्तु पचाग मे २७ ही नक्षत्र दिये रहते है।

क्रांति प्रदेश के २७ समान भाग करने से प्रत्येक भाग १३°-२०′ का, १ नक्षत्र होता है। इस कारण चद्रमा को १३°-२०′ चलने मे जो समय लगता है उसे नक्षत्र या दिन नक्षत्र कहते है। यहाँ नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र जानना।

मध्यम मान से चन्द्र नक्षत्र ६० घ ४३ पल का होता है। कभी २ इससे कम या अधिक का मान हो जाता है। इसी २$\frac{1}{4}$ नक्षत्र मिलकर चन्द्र की १ राशि होती है। प्रत्येक पंचाग मे नक्षत्र के अतिरिक्त चन्द्र किस राशि मे है यह भी दिया रहता है।

जिस प्रकार चन्द्र इन २७ नक्षत्रो पर से चलता है उसी प्रकार सूर्यादि ग्रह भी इन्ही नक्षत्रो पर से चलते है। जिस प्रकार चन्द्र एक नक्षत्र एक दिन मे चल लेता है उसी प्रकार सूर्य १३ या १४ दिन मे एक नक्षत्र को पार कर करता है, ये सूर्य नक्षत्र कहलाते है। जव आर्द्रा पर सूर्य आता है तो वर्षा ऋतु का आरम्भ समझा जाता है। खेती के सम्वन्ध से किसान इन नक्षत्रो पर विशेष ध्यान देते है। सूर्य नक्षत्र को महा-नक्षत्र भी कहते है।

जिस दिन जिस नक्षत्र पर सूर्य जाता है वह पंचाङ्ग मे लिखा रहता है। जैसे आर्द्रार्क=आर्द्रा + अर्क (सूर्य)=अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र पर उस दिन सूर्य गया। किस घडी पल पर उस नक्षत्र में प्रवेश किया वह भी दिया रहता है।

इसी प्रकार वुध, मगल, गुरु आदि ग्रह भी किसी नक्षत्र पर पहुँचते है तो उस नक्षत्र पर पहुँचने का दिन समय आदि भी पचाङ्ग में दिया रहता है। उस नक्षत्र के किस चरण मे वह ग्रह आया है यह भी दिया रहता है।

ऊपर सूर्य का जो सौर नक्षत्र वताया है, उसके अतिरिक्त पचाङ्ग में सायन सूर्य किस नक्षत्र पर आया है वह भी दिया रहता है। कौन ग्रह किस राशि मे है पचाङ्ग में दिये रहते है। किसी पचाङ्ग मे दैनिक, किसी मे साप्ताहिक दिये रहते है। २$\frac{1}{4}$ नक्षत्र की एक राशि होती है, इससे नक्षत्रो के प्रमाण से ग्रहो की राशि भी निकल

आती है। पचाङ्ग मे स्पष्ट ग्रह के अतिरिक्त कुण्डली चक्र भी दिये रहते है। इस प्रकार ग्रहो के सम्वन्ध की प्रत्येक सूचनाएँ पचाङ्ग मे दी रहती है।

(४) योग

यह पचाङ्ग का चौथा अंग है।

योग २७ है। चन्द्र और सूर्य की गति मे जब १३°-२०'' का अतर पडता है तव एक योग होता है। ३६०° — २७ = १३°-२०' = १ योंग। परन्तु नक्षत्र के प्रमाण से इन योगो का आकाश की स्थिति से कोई सम्वन्ध नही है। योग केवल सूर्य चन्द्र का अन्तर वतलाते है।

२७ योगो के नाम

१	विष्कम्भ	८	धृति	१५	वज्र	२२	साध्य
२	प्रीति	९	शूल	१६	सिद्धि	२३	शुभ
३	आयुष्मान	१०	गड	१७	व्यतीपात	२४	शुक्ल
४	सौभाग्य	११	वृद्धि	१८	वरीयान	२५	ब्रह्म
५	शोभन	१२	ध्रुव	१९	परिघ	२६	ऐन्द्र
६	अतिगड	१३	व्याघात	२०	शिव	२७	वैधृति
७	सुकर्मा (सुकर्म)	१४	हर्षण	२१	सिद्ध		

(५ , करण

यह पचाङ्ग का पाँचवाँ अंग है।

करण यह तिथि का आधा भाग है (१) तिथि के पूर्वार्द्ध अर्थात् पहिले आधे भाग मे एक करण और उत्तरार्द्ध (अन्त के आधे भाग मे) दूसरा करण होता है। इस प्रकार १ तिथि मे २ करण होते है।

१ चान्द्रमास मे ३० तिथि और ६० करण होते है। सूर्य और चन्द्र के वीच ६° का अन्तर पडने पर १ करण होता है। करण कुल ११ है उनके नाम ये है।

चर करण—(१) वव, (२) वालव, (३) कौलव, (४) तैतिल, (५) गर, (६) वणिज, (७) विष्टि।

स्थिर करण—(८) शकुनि, (९) चतुष्पद, (१०) नाग, (११) किंस्तुघ्न।

पूर्वार्द्ध=पूर्व दल पहिला आधा भाग) उत्तरार्द्ध=परदल (अन्त का आधा भाग)।

किस करण मे कौन-कौन तिथि होती है नीचे चक्र मे दिया है—

पक्ष	करण	किस्तुघ्न	वव	वालव	कौलव	तैतिल	गरल	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्पद	नाग	
शुक्ल पक्ष	पूर्व दल	१	५,१२	२,९	६,१३	३,१०	७,४	४,११	८,१५	०	०	०	तिथियाँ
की तिथि	उत्तर ,,	०	१,८,१५	५,१२	२,९	६,१३	३,१०	७,१४	४,११	०	०	०	
कृष्ण पक्ष	पूर्व ,,	०	४,११	१,८	५,१२	२,९	६,१३	३,१०	७,१४	०	३०	०	
की तिथि	उत्तर ,,	०	७	४,११	१,८	५,१२	२,९	६,१३	३,१०	१४	०	३०	

चक्र मे जो अङ्क दिये है ये तिथियों के अङ्क है। १५ से पूर्णिमा, ३० से अमावस्या समझना। ऊपर के चक्र से प्रगट होगा कि शुक्ल प्रतिपदा को पहिले किस्तुघ्न फिर वव करण होता है। शुक्ल द्वितीया को वालव फिर कौलव होता है। १५ पूर्णिमा को पहिले चतुष्पद फिर नाग होता है।

इसी को अच्छे प्रकार से समझाने के लिए किस तिथि में कौन करण होता है यह तिथि के अनुसार करण नीचे दिये है।

शुक्ल तिथि	१	२-९	३-१०	४-११	५-१२	६-१३	७-१४	८-१५	×	×
पूर्व दल	किस्तुघ्न	वालव	तैतिल	वणिज	वव	कौलव	गरल	विष्टि	विष्टि	चतुष्पद
पर दल	वव	कौलव	गरल	विष्टि	वालव	तैतिल	वणिज	वव	शकुनि	नाग
कृष्ण तिथि	×	१-८	२-९	३-१०	४-११	५-१२	६-१३	७	१४	३०

भद्रा—विष्टि करण का दूसरा नाम है, जो शुभ कार्यों मे अनिष्ट कारक होती है। यह केवल मुहूर्त आदि मे विचारणीय है।

पचाङ्ग मे किसी तिथि के पूर्वार्द्ध मे जो करण होता है प्राय वही किस समय तक रहेगा दिया रहता है। इसके बाद जो दूसरा करण आना चाहिये वह नही दिया रहता। इस चक्र मे समझ में आ जावेगा कि किस तिथि के उत्तरार्द्ध में कौन करण होगा।

(६) **दिनमान**—सूर्योदय से, सूर्यास्त तक दिन की अवधि को दिनमान कहते है। इससे प्रगट होता है कि दिन कितने घडी पल तक है। अर्थात् दिन कितने घडी पल लम्बा है।

दिन रात मे ६० घडी होती है=(६० घटी–दिनमान)=रात्रिमान।

प्रतिदिन दिनमान घटता-बढता रहता है। २१ मार्च से प्रतिदिन बढते-बढते ता० २१ जून को सबसे बडा दिन होता है। उसके उपरान्त घटना आरम्भ होता है। इसको पहिले समझा चुके है।

अक्षाश के अनुसार भी प्रत्येक स्थान मे दिन छोटा-बडा होता है। इसके विषय में भी यहाँ कुछ बतला देना है।

जब सूर्य उत्तर गोल मे होता है तब पृथ्वी के ध्रुव प्रदेश में ६ मास तक बराबर सूर्य दिखलाई देता है। उस समय दक्षिण ध्रुव पर ६ मास बराबर अन्धकार रहता है। जब सूर्य दक्षिण गोल मे होता है तो इसके विरुद्ध होता है अर्थात् दक्षिण ध्रुव मे ६ महीने का दिन और उत्तर ध्रुव मे ६ महीने की रात्रि रहती है।

उत्तर और दक्षिण ध्रुव के बीच में दोनो ध्रुवो से बराबर ९०° पर पृथ्वी की मध्य रेखा होती है। मध्य रेखा के स्थान को निरक्ष देश भी कहते है, क्योकि वहाँ पर अक्षाश शून्य होता है। निरक्ष देश में १२ घटे का दिन और १२ घंटे की रात्रि होती है। मध्यरेखा से अक्षाशो की दूरी के अनुसार परम दिन रात्रि में अन्तर पडता है। मध्य रेखा से ६६° उत्तर के देश मे सबसे बडा दिन २४ घण्टे का और ७०° अश पर सबसे बडा दिन २ मास का, ७८॥ अश पर ४ मास का और ९०° पर (ध्रुव देश मे) परम दिन (सबसे बडा दिन) ६ मास का होता है। दूसरी ओर दक्षिण गोल मे ठीक इसके विरुद्ध होता है अर्थात् जब उत्तर गोल मे सबसे बडा दिन, जिस मान का होगा तो दक्षिण गोल मे उसी मान की सबसे बडी रात्रि होगी।

सायन सूर्य मेष पर जब आता है तब दिन रात्रि बराबर होती है। जब सूर्य सायन कर्क पर आता है तो सबसे बडा दिन और सबसे छोटी रात्रि होती है। जब सूर्य सायन तुला पर जाता है तब फिर दिन रात्रि बराबर होती है, जब सायन मकर पर आता है तो सबसे बडी रात्रि और सबसे छोटा दिन होता है। यह उत्तर गोल मे होता है और दक्षिण गोल मे इसके विपरीत होता है।

अशो के अनुसार देशो का परम दिन का प्रमाण छोटा बडा होता है। ज्यो ज्यो अक्षाश बढता जायगा महा दिन (परम दिन) का प्रमाण बढता जायगा । महादिन का प्रमाण अक्षाशो के अनुसार नीचे चक्र मे दिया है।

अक्षांश के अनुसार महादिन चक्र

लघु	अक्षाग				परम दिन-		लघु	अक्षाश				परम दिन-	
भू	से		तक		मान		भू	से		तक		मान	
मेखला	अंश	कला	अंश	कला	घं०	मि०	मेखला	अंश	कला	अंश	कला	घं०	मि०
१	१	०	८	३४	१२	३०	१६	६२	२६	६३	२२	२०	०
२	८	३४	१६	४४	१३	०	१७	६३	२२	६४	१०	२०	३०
३	१६	४४	२४	१२	१३	२०	१८	६४	१०	६४	५०	२१	०
४	२४	१२	३०	४८	१४	०	१९	६४	५०	६५	२२	२१	३०
५	३०	४८	३६	३१	१४	३०	२०	६५	२२	६५	४८	२२	०
६	३६	३१	४१	२४	१५	०	२१	६५	४८	६६	५	२२	३०
७	४१	२४	४५	३२	१५	३०	२२	६६	५	६६	२१	२३	०
८	४५	३२	४९	२	१६	०	२३	६६	२१	६६	२९	२३	३०
९	४९	२	५१	५९	१६	३०	२४	६६	२९	६६	३२	२४	०
१०	५१	५९	५४	३०	१७	०	२५	६६	३२	६७	१८	१	महीना
११	५४	३०	५६	३८	१७	३०	२६	६७	१८	६९	३३	२	,,
१२	५६	३८	५८	२७	१८	०	२७	६९	३३	७३	५	३	,,
१३	५८	२७	५९	५९	१८	३०	२८	७३	५	७७	४०	४	,,
१४	५९	५९	६१	१८	१९	०	२९	७७	४०	८२	५९	५	,,
१५	६१	१८	६२	२६	१९	३०	३०	८२	५९	९०	०	६	,,

अध्याय १७

पचाग में मुहूर्त आदि के सम्बन्ध से इतर विषय भी दिये रहते हैं उनके सम्बन्ध में संक्षिप्त ज्ञान यहाँ कराया जाता है।

पचाग में सिद्ध योग क्रकच योग आदि दिये रहते हैं वे सब मुहूर्त से सम्बन्ध रखते हैं। मुहूर्त का स्वतंत्र विषय है यहाँ तो बहुत ही संक्षेप मे आवश्यक बातें दी जाती हैं, जिनका उल्लेख कभी पचाग मे आता है तो नया विद्यार्थी विचार में पड जाता है कि ये क्या हैं, इस कारण यहाँ समझाया जाता है।

पंचक

जव चन्द्र कुभ और मीन राशियो मे होता है तो पंचक होता है। अर्थात् जव धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्द्ध (अन्त का आधा भाग) और शतभिषा, पूर्व भाद्रपद, उत्तर भाद्रपद और रेवती नक्षत्र पर चन्द्र होता है तो पचक कहलाता है।

इस पचक मे काम करने का फल पचगुना होता है अर्थात् पचगुनी हानि होती है। घर छाना, प्रेत दाह, घास लकडी आदि इकत्र करना, खाट बुनना, चुल्हा बनाना आदि कार्य पचक मे करना मना है, क्योकि कहा जाता है कि पचक मे कोई काम करने से पाँच वार वही काम करना पडेगा। आवश्यक कार्य प्रेत दाह आदि करना होता है तो उसका फल कम करने को पृथक विधान बताया गया है। दक्षिण यात्रा मे भी यह वर्जित है।

द्विपुष्कर और त्रिपुष्कर योग

मृत्यु, विनाश, वृद्धि आदि का फल इसमे दुगुना या तिगुना होता है जैसे त्रिपुष्कर में कोई वस्तु घुमे तो ३ वस्तु घुमेगी । द्विपुष्कर मे कोई हानि हो तो २ वार हानि होगी। इसी प्रकार सवका विचार होता है। अर्थात द्विपुष्कर मे हानि या लाभ दुगुना और त्रिपुष्कर मे तिगुना होता है।

द्विपुष्कर योग			त्रिपुष्कर योग			
तिथि	वार	नक्षत्र	तिथि	वार	नक्षत्र	तिथि, वार
२	शनिवार	धनिष्ठा	२	शनिवार	विशाखा	और नक्षत्र जव
७	मगलवार	चित्रा	७	मंगलवार	उ० फाल्गुनी	तीनो इस प्रकार
१२	रविवार	मृगशिर	१२	रविवार	पूर्व भाद्र०,पुनर्वसु	हो तव ये योग
					कृत्तिका,उत्तराषाढा	होते है।

मुहूर्त—दिनमान ÷ १५=१ मुहूर्त

मुहूर्त लगभग २ घडी का होता है । दिनमान के प्रमाण से उसका १५ वा भाग करना तव एक मुहूर्त होता है। दिनमान के प्रमाण से मुहूर्त २ घडी से कम या अधिक भी हो जाता है। दिन में १५, रात मे १५, सव ३० मुहूर्त दिन रात मे होते हैं।

मुहूर्त चक्र

वार	रविवार	चद्रवार	भौमवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
कुलिक (दुर्मुहूर्त)	१४ वाँ	१२	१०	८	६	४	२
कालवेला	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघट	१०	८	६	४	२	१४	१२
कटक	६	४	२	१४	१२	१०	८
यमार्द्ध	७	९	३	९	१५	५	१

जैसे रविवार को १४ वा मुहूर्त कुलिक है, ८ वा मुहूर्त कालवेला है, १० वा यमघट है इत्यादि इस चक्र के अनुसार जानो । इस चक्र मे यह वताया है, कौन वार को गिनती मे कौन से मुहूर्त का क्या नाम है ।

मुहूर्त निकालना ।

वर्तमान वार से शनि तक गिनो २२=कुलिक
,, बुधवार ,, ,, × २=कालवेला
,, गुरुवार ,, ,, × २=यमघट
,, मगल ,, ,, × २=कटक
} ये मुहूर्त शुभकार्य मे वर्जित है ।

जैसे रविवार है शनिवार तक गिना=७×२=१४ वा मुहूर्त कुलिक हुआ ।

कालवेला मे यात्रा करने से मृत्यु, विवाह मे स्त्री विधवा हो, व्रतवन्ध मे यह योग हो तो ब्रह्महत्या होती है । इससे सब कार्यो मे कालवेला वर्जित है ।

यमार्द्ध - वारवेला

दिन में ४ प्रहर होते है । १ प्रहर=लगभग ८ घडी का होता है ।

यमार्द्ध=½ प्रहर=४ घडी

दिनमान÷८=यमार्द्ध घटी दिन की

रात्रिमान ÷ ८= ,, ,, रात्रि की

दिन मान कभी-कभी २, १६ घटी का होता है । इस कारण उपरोक्त विचार मे यमार्ध ४ घटी का वताया है परन्तु दिन मान के ठीक विभाग करने से दिनमान की और रात्रिमान से रात्रि की यमार्द्ध की घटो निकल आती है । दिन रात मे सव मिलाकर ८ यमार्द्ध होते है । यमार्द्ध को ही वारवेला कहते है । इसमे दिन और रात का पृथक २ चौघडिया दिया रहता है और उस चौघडिया का नाम भी दिया रहता है । उसका फल नाम सदृश होता है । नीचे चौघडिया दिया है उसमे चौघडिया का नाम सकेताक्षर में दिया है वे ये है ।

च=चर अ=अमृत शु=शुभ उ=उद्वेग ला=लाभ का=काल रो=रोग ।

ये ७ ही है नाम सदृश इनका फल होता है। दिन मे ७ यमार्द्ध होते है फिर आठवें यमार्द्ध मे वही पहिला मुहूर्त आता है। इस प्रकार आगे क्रमानुसार सब मुहूर्त होते हैं।

दिन का चौघड़िया

रवि वार	चन्द्र वार	मगल वार	बुध वार	गुरु वार	शुक्र वार	शनि वार
उ	अ	रो	ला	शु	च	का
च	का	उ	अ	रो	ला	शु
ला	शु	च	का	उ	अ	रो
अ	रो	ला	शु	च	का	उ
का	उ	अ	रो	ला	शु	च
शु	.च	का	उ	अ	रो	ला
रो	ला	शु	च	का	उ	अ
उ	अ	रो	ला	शु	च	का

रात का चौघड़िया

रवि वार	चन्द्र वार	मगल वार	बुध वार	गुरु वार	शुक्र वार	शनि वार
च	का	उ	अ	रो	ला	शु
ला	शु	च	का	उ	अ	रो
अ	रो	ला	शु	च	का	उ
का	उ	अ	रो	ला	शु	च
शु	च	का	उ	अ	रो	ला
रो	ला	शु	च	का	उ	अ
उ	अ	रो	ला	शु	च	का
च	का	उ	अ	रो	ला	शु

इतवार के दिन को पहिले यमार्द्ध मे उद्वेग, दूसरे मे चर, तीसरे मे लाभ इत्यादि क्रमानुसार मुहूर्त यमार्द्ध मे भोगते है । जैसे मगलवार को दिनमान २९ घ -२० प है ÷ ८=१ यमार्द्ध ३ घ ४० प का हुआ । मान लो इष्ट ८ घडी है तो ७-२० तक २ यमार्द्ध पूरे होकर तीसरा यमार्द्ध वर्तमान है । मगल वार को तीसरा=च=चर मुहूर्त हुआ । इसी प्रकार मुहूर्त निकाल लेना ।

राहु वारवेला और कालवेला

यमार्द्ध पर से और भी विचार

वार	रवि वार	सोम वार	मगल वार	बुध वार	गुरु वार	शुक्र वार	शनि वार
यमार्द्ध-राहु का वारवेला	४ चौथा	७	२	५	८	३	६
दिन का कालवेला	५ वा	२	६	३	७	४	१-८
रात्रि ,, ,,	६ छठवा	४	२	७	५	३	१-८

यहाँ वताया है कि किस दिन के कौन से यमार्द्ध मे राहु का वारवेला होता है और दिन के या रात्रि के कौन से यमार्द्ध को कालवेला कहते है।

नक्षत्र विषघटी

४-४ घटी की विषघटी होती है।

नीके नक्षत्रो के आगे विषघटी दी है उससे ४ घटी आगे तक विषघटी रहती है।

नक्षत्र विषघटी चक्र

क्रम	नक्षत्र	घटी	क्रम	नक्षत्र	घटी	क्रम	नक्षत्र	घटी	क्रम	नक्षत्र	घटी
१	अश्विनी	५०	८	पुष्य	२०	१५	स्वाती	१४	२२	श्रवण	१०
२	भरणी	२४	९	आश्लेपा	३२	१६	विशाखा	१४	२३	धनिष्ठा	१०
३	कृत्तिका	३०	१०	मघा	३०	१७	अनुराधा	१०	२४	शतभिषा	१८
४	रोहिणी	४०	११	पू. फा.	२०	१८	ज्येष्ठा	१४	२५	पू भा.	१६
५	मृगशिर	१४	१२	उ फा	१८	१९	मूल	५६	२६	उ. भा.	२४
६	आर्द्रा	२१	१३	हस्त	२१	२०	पू. षा	२४	२७	रेवती	३०
७	पुनर्वसु	३०	१४	चित्रा	२०	२१	उ षा	२०			

जैसे अश्विनी नक्षत्र मे ५० घडी उपरात ५४ घडी तक या रेवती मे ३० घडी उपरान्त ३४ घडी तक उस नक्षत्र में विषघटी होती है। इसका विचार नक्षत्र की घटियो पर से करना। नक्षत्र जव से आरम्भ हो उसके वाद ये घटियाँ गिन कर विष घटी निकाल लेना।

वार विषघटी

वार	सूर्यवार	चन्द्रवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
घटी	२०	२	१२	१०	७	५	२५

तिथि विषघटी

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घटी	१५	५	८	७	७	११	४	८	७	११	३	१३	१४	७	८

विषघटी नक्षत्र वार या तिथि मे पूरी ४ घडी तक रहती है। ये शुभ कार्यो में वर्जित है।

यदि नक्षत्र आदि मे पूरा ६० घटी का मान न हो तो अनुपात से (त्रैराशिक से) घटी निकाल लेना चाहिये और तिथि या वार नक्षत्र आरम्भ होने के वाद इतनी घटी (जो विषघटी मे वताई है) गिनो, उसके आगे ४ घटी तक और विषघटी रहेगी।

विषघटी दोष नाश—यदि चद्र केन्द्र या त्रिकोण मे वली हो या लग्नेश शुभ ग्रह युक्त हो तो विपघटी का दोप नही लगता।

गंड

राशि चक्र मे किसी राशि के साथ किसी नक्षत्र का भी अन्त होता तो उस स्थान को गड कहते है अर्थात् जहाँ दोनो का अंत हो (केवल १ का नही)।

जैसे—(१) मेप राशि के आरम्भ और मीन राशि के अन्त का सन्धि स्थल=गड है।
(२) कर्क राशि और आश्लेपा के अन्त पर व सिंह राशि और मघा के प्रारम्भ मे।
(३) वृश्चिक राशि और ज्येष्ठा के अन्त पर व धन राशि और मूल के आरम्भ मे।
इन तीनो गड का नाम १ सधा गड, २ रात्रि गंड, ३ दिवा गड।

गंडात [नक्षत्र]

नक्षत्र	मघा, आश्लेपा	मूल, ज्येष्ठा	अश्विनी और रेवती
घटी	२+२=४ घटी	२+२=४ घटी	२+२=४ घटी

इन नक्षत्रो के आदि की २ घटी और अन्त की २ घटी इस प्रकार ४ घटी का एक [प्रत्येक] गडात होता है।

मूल—जन्म समय में मूल लगे है या नही इसका विचार।

ऊपर जो ६ नक्षत्र गडात के वताये गये है उन्हो मे मूल लगते है। वे नक्षत्र ये है १ आश्लेषा, २ मघा, ३ ज्येष्ठा, ४ मूल, ५ रेवती, ६ अश्विनी।

इन नक्षत्रो में बालक का जन्म होने से मूल लगता है। मूल भी कई प्रकार के है। गडात में बालक का जन्म हो तो पिता को कुछ समय तक बालक का मुख न देखना चाहिये। जब मूल की शान्ति कराने का समय हो जावे तब शान्ति कराकर मुख देखने का विधान है। इसका विचार फलित और मुहूर्त खण्ड मे विशेष प्रकार से मिलेगा।

भद्रा

विशिष्ट करण को भद्रा कहते है यह शुभ कार्य मे वर्जित है। विष, घात, तान्त्रिक कार्य मे भद्रा मे कार्य करने का विचार होता हैं। युद्ध, राजदर्शन, वैद्य बुलाना, जल तरना, शत्रु उच्चाटन, स्त्री सेवन, यज्ञ कार्य मे इसका विचार करना पडता हैं।

इन तिथियो मे भद्रा होती है—

पक्ष	शुक्ल पक्ष		कृष्णपक्ष	
तिथि	८, १५	४, ८	३, १०	७, १४
	पूर्वार्द्ध	परार्द्ध	परार्द्ध	पूर्वार्द्ध

तिथि के आधे भाग मे ही भद्रा होती हैं। इसका मोटा प्रमाण ३० घटी का होता है। भद्रा के आरम्भ और अन्त समय [घटी पल] पचाङ्ग मे दिया रहता है।

अग में भद्रा का वास इस प्रकार समझा जाता है

अंग	मुख	कठ	छाती	नाभि	कटि	पुच्छ
घटी	५	१	११	४	६	३
फल	कार्यनाश	मरण	धननाश	वृद्धिनाश	कलह	विजय

वृश्चिकी भद्रा=शुल्क पक्ष की भद्रा=कोई रात्रि की भद्रा को ही वृश्चिकी कहते है।
सर्पिणी " =कृष्ण " =" दिन " " सर्पिणी "

आवश्यक कार्य मे सर्प का मुख और वृश्चिक की पूछ का एक भाग त्याग कर कार्य कर सकते हैं।

चन्द्र की राशि के अनुसार भद्रा का वास

चन्द्रराशि	लोक	फल	विशेष
१, २, ३, ८,	स्वर्ग	शुभ	धन धान्य मिले
६, ७, ९, १०,	पाताल	शुभ	धन प्राप्ति
४, ५, ११, १२,	मृत्यु	अशुभ	कार्य सिद्ध नही हो।

तिथि और नक्षत्र आदि के योग—

योग	ति	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०
१ तिथि स्वामी		अग्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	शेपनाग	कार्तिकेय	रवि	शिव	दुर्गा	काल	विश्वेदेवा	विष्णु	काम	शिव	चन्द्र	पितर
२ तिथि सज्ञा		नदा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	न०	भ	ज	रिक्ता	पू.	नदा	भ	जया	रिक्ता	पूर्णा	
३ शून्य लग्न		तुला		सिंह		मि		धन		कर्क		धन		वृष			
(विषमतिथिमे)		मकर		मकर		कन्या		कर्क		सिंह		मीन		मीन			
४ निंदित नक्षत्र		उ पा	अनु	तीनों उत्तरा		मघा	रो	हस्त मूल	पू भा	कृ		रोहणी	अ.	चि.स्वा.			
५ पक्षरन्ध्र तिथि	तिथि				४		६		८	९			१२		१४		
दोनो पक्ष की वर्जित घटी ..	घटी				(८)		(९)		(१४)	(२५)			(१०)		(५)		
६ दग्ध तिथि }			धन		वृप		मेप		मि.		सिंह		तुला				
सूर्य राशिकी }			मीन		कुम्भ		कर्क		कन्या		वृ.		मकर				
७ शुभ कार्य मे }							हस्त	मृग	अ.	अनु.	पुष्य	रेवती	रोहणी				
वर्जित योग }							रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि				
८ दग्ध योग				बुध		मङ्गल	गुरु		शुक्र	शनि		सोम	रवि				
९ विप योग			बुध		रवि		सोम	म	गुरु	शुक्र	श						
१० हुताशन योग							सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि				
११ ज्वालामुखी				अनु.	उत्तरा	मघा				रोहिणी कृ.							

ये योग शुभ कार्य मे वर्जित है नाम सदृश फल होता है। पक्षरध्र की तिथि की वर्जित घटी छोडकर उसकी शेप घटी ले सकते है।

मास तिथि नक्षत्र योग—

योग	चैत्र	वैशाख	जेठ	अषाढ	श्रावण	भादो	कुँवार	कार्तिक	अगहन	पूस	माघ	फागुन
१ शून्य तिथि दोनो पक्षकी	८–९	१२			२–३	१–२	१०–११		७–८	४–५		
शून्यतिथि कृष्ण पक्ष			१४	६				५			५	
शून्यतिथि शुक्लपक्ष			१३	७				१४			६	३–४
२ शून्य नक्षत्र	अ रो.	चि. स्वा.	उ. पा. पुण्य	पू. पा. ध.	उ. पा. श्र.	श. रे.	पू. भा.	म. कृ.	वि. चि.	आर्द्रा अ. ह.	श्र. मू	भ. ज्ये.
३ शून्य राशि	कुभ	मीन	वृप	मि.	मे.	कन्या	वृ.	तुला	धन	कर्क	मकर	सिंह
४ मन्वादि तिथि	शुक्ल ३–१५		शु १४	शु. १०-१५	कृ. ३०-८	शु ३	शु. ९	शु. १५-१२	शु. ७	शु. ११		शु. १५-
५ युगादि तिथि		शुक्ल ३ त्रेता				कृ.१३ द्वापर		शु. ९ सतयुग			कृ. ३ कलियुग	–

शून्य तिथियो को मास दग्ध तिथि भी कहते है। शून्य नक्षत्र राशि और मन्वादि तिथि और युगादि तिथि शुभ कार्य मे वर्जित है, धन नाशक है।

तिथि वार नक्षत्र के योग=चर योग

	योग	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	
१	सिद्धि योग		— तिथि	जया (३,८, १३)	भद्रा (२,७, १२)	पूर्णा (५,१०, १५)	नंदा (१,६ ११)	रिक्ता (४,९, १४)	सब दोषों को नाश करता है
२	मृत्यु योग (अधमयोग)	नंदा	भद्रा	नंदा	जया	रिक्ता	भद्रा	पूर्णा	घातक है। शुभ कार्य में वर्जित है।
३	दग्ध नक्षत्र	भरणी	चित्रा	उ. पा	धनि	उ फा.	ज्ये	रेवती	शुभकार्यमें वर्जित।
४	क्रकच योग	ति. १२	११	१०	९	८	७	६	तिथि वार मिल कर १३ होने से यह योग होता है शुभ मे वर्जित है
५	सम्वर्तक योग	सप्तमी	—	—	प्रति	—	—	—	सदा वर्जित
६	दग्ध योग	ति. १२	११	५	३	६	८	९	
७	विष योग	,, ४	६	७	२	८	९	७	
८	हुताशन योग	,, १२	६	७	८	९	१०	११	
९	यमघंट योग	मघा	विशा	आर्द्रा	मूल	कृत्ति	रोहि	हस्त	शुभ कार्य, यात्रा में वर्जित
१०	उत्पात योग	विशा	शत	धनि.	रेवती	रोहि	पुष्य	उ. फा	
११	मृत्यु नक्षत्र	ज्ये	उ भा	पू. भा	भर	आर्द्रा	मघा	चित्रा	
१२	यमदंष्ट्र योग	मघा	मूल	कृ	पू षा	रेव	रोहि	श्रवण	शुभ कार्य में वर्जित
		धनि	विशा	भ	पुन०	अश्वि	अनु	शत	
१३	चर योग	पू पा	आर्द्रा	वि	रो	पुष्य	म	मूल	
१४	मूसलवज्र योग	भरणी	चि	उ पा	धनि	उ फा	ज्ये	रेव	
१५	अमृतसिद्धि ,,	हस्त	मृग	अश्वि	अनु	पुष्य	रेवती	रोहि	
१६	सर्वार्थसिद्धि ,,	हस्त	श्र	अश्वि	रोहि	रेवती	रे	श्र	
		मूल	रोहि	उ भा	अनु	अनु	अनु	रोहि	इन में सब कार्य
		तीनो उत्तरा	मृग.	कृ	हस्त	अश्वि	अश्वि	स्वा	की सिद्धि होती है
		पुष्य	पुष्य	श्ले	कृ	पुष्य	पुन		
		अश्वि	अनु		मृग	पुन०	श्रवण		

तिथि वार या नक्षत्र के योग से विशेष योग बनते है। सिद्धि योग को छोड कर और सब अशुभ योग है।

(१ सिद्धि योग, (१५) अमृत सिद्धि योग (१६) सर्वार्थ सिद्धि योग, सर्व दोष नाशक और कार्य सिद्ध करते है। (२) मृत्युयोग, घातक तिथिया है और सब अशुभयोग शुभ कार्यो मे वर्जित है।। ४) क्रकच योग मे तिथि और दिन मिलकर १३ होने से शुभ कार्य मे वर्जित है।

(५) सम्वर्तक योग सदा वर्जित है।

उपरोग मृत्युयोग मे १२ घटी और यम घट मे ८ घटी वर्जित करना १ उपर्युक्त अशुभ योगो मे आवश्यक होने पर मध्याह्न के उपरान्त कार्य करने मे अशुभता घट जाती है। यदि चन्द्र शुभ हो तो मृत्यु, क्रकच, दग्ध आदि योगो का अशुभ फल नही होता। विशेष कर यात्रा में इसका विचार होता है। दुष्ट योग और सिद्ध योग एक साथ पडे तो अच्छा योग होकर दुष्ट फल को नष्ट करता है।

आनन्द आदि योगो का ज्ञान और फल

आनन्द आदि २८ योग है

क्रम	नाम	फल	क्रम	नाम	फल
१	आनद	सिद्धि	८	श्रीवत्स	सौभाग्य सम्पत्ति
२	कालदड	मृत्यु	९	वज्र	क्षय
३	धूम्र	असुख	१०	मुद्गर	लक्ष्मी क्षय
४	धाता	सौभाग्य	११	क्षत्र	राज्यमान
५	सौम्य	बहुत सुख	१२	मित्र	पुष्टि
६	ध्वाक्ष	धन नाश	१३	मानस	सौभाग्य
७	केतु	सौभाग्य	१४	पद्म	धनागम

क्रम	नाम	फल	क्रम	नाम	फल
१५	लुम्ब	धन क्षय	२२	मसल	धन क्षय
१६	उत्पात	प्राण नाश	२३	गद	अक्षय विद्या
१७	मृत्यु	मृत्यु	२४	मातग	कुलवृद्धि
१८	काण	क्लेश	२५	रक्ष(राक्षस)	महाकष्ट
१९	सिद्ध	कार्यसिद्ध	२६	चर	कार्यसिद्धि
२०	शुभ	कल्याण	२७	सुस्थिर	ग्रहारभ
२१	अमृत	राज सन्मान	२८	प्रवर्धमान	विवाह

इन योगो को जानने की रीति

रवि को अश्विनी से, सोमवार को मृगशिर मे, मगल वार को आश्लेषा से, बुधवार क हस्त मे, गुरुवार को अनुराधा मे, शुक्रवार=उ षा, शनि=शतभिषा से गिने तो आनन्द आदि योग मिलता है। इसमे अभिजित भी गिना जाता हे। नीचे चक्र मे यही समझाया है।

आनन्द आदि योग चक्र—

योग क्रम	क्रम	रविवार नक्षत्र	सोम न०	मंगल न०	बुधध न०	गुरु न०	शुक्र न०	शनि न०
१	१—	अश्विनी	५	६	१३	१७	२१	२५
२	२—	भरणी	६	१०	१४	१८	२२	२६
३	३—	कृत्तिका	७	११	१५	१६	२३	२७
४	४—	रोहिणी	८	१२	१६	२०	२४	२८
५	५—	मृगशिर	६	१३	१७	२१	२५	१
६	६—	आर्द्रा	१०	१४	१८	२२	२६	२
७	७—	पुनर्वसु	११	१५	१९	२३	२७	३
८	८—	पुष्य	१२	१६	२०	२४	२८	४
९	९—	आश्लेषा	१३	१७	२१	२५	१	५
१०	१०—	मघा	१४	१८	२२	२६	२	६
११	११—	पू० फा०	१५	१९	२३	२७	३	७
१२	१२—	उ० फा०	१६	२०	२४	२८	४	८
१३	१३—	हस्त	१७	२१	२५	१	५	९
१४	१४—	चित्रा	१८	२२	२६	२	६	१०
१५	१५—	स्वाती	१९	२३	२७	३	७	११
१६	१६—	विशाखा	२०	२४	२८	४	८	१२
१७	१७—	अनुराधा	२१	२५	१	५	९	१३
१८	१८—	ज्येष्ठा	२२	२६	२	६	१०	१४
१९	१९—	मूल	२३	२७	३	७	११	१५
२०	२०—	पू०षा.	२४	२८	४	८	१२	१६
२१	२१—	उ. षा.	२५	१	५	९	१३	१७
२२	२२—	अभिजित	२६	२	६	१०	१४	१८
२३	२३—	श्रवण	२७	३	७	११	१५	१९
२४	२४—	धनिष्ठा	२८	४	८	१२	१६	२०
२५	२५—	शतभिषा	१	५	९	१३	१७	२१
२६	२६—	पू. भा.	२	६	१०	१४	१८	२२
२७	२७—	उ. भा.	३	७	११	१५	१९	२३
२८	२८—	रेवती	४	८	१२	१६	२०	२४

विवरण—

योग का क्रम आरम्भ में जो दिया है वह योग का क्रमानुसार अंक है। उस क्रम में कौन योग आता है ऊपर दिया है। दिन के नीचे जो अक है वे नक्षत्र के क्रम के अक है। इष्ट दिन जो चन्द्र नक्षत्र हो उस नक्षत्र के क्रम का अक उस दिन के नीचे जहाँ मिलेगा उसके वाई ओर जो योग का अक होगा वही क्रम के अनुसार उस दिन योग होगा।

जैसे मंगलवार को पुष्य नक्षत्र है तो उस दिन कौन सा योग होगा जानना है।

पुष्य नक्षत्र के क्रम का अक ८ है। मगलवार के नीचे ८ अक खोजने से प्रकट हुआ कि सब के अन्त मे ८ दिया है। ८ के वाई ओर योग देखा तो योग का क्रम २८ मिला। २८ वाँ योग प्रवर्द्धमान होता है, इससे प्रगट हुआ कि उस दिन यह योग था। उसका फल विवाह है अर्थात् अच्छा फल है, आनद-का दिन है।

सूर्य नक्षत्र के विशेष नाम

अश्विनी से लेकर ४ नक्षत्र तक अंतरंग इसके उपरान्त ३ नक्षत्रो की वहिरग सज्ञा है। इसके उपरान्त ४ नक्षत्र फिर अतरग कहलावेंगे। इसी क्रम मे वर्तमान सूर्य नक्षत्र तक गिनकर देखना कि वर्तमान नक्षत्र अतरग है या वहिरंग।

अंतरंग मे वाहर से घर मे लाना, वहिरग मे घर से वाहर ले जाना। पशु आदि आदि को अदर लाना या वाहर भेजना इसके अनुसार मुहूर्त में विचार होता है।

सूर्य नक्षत्र-सख्या

संज्ञा	नक्षत्र			
अतरग नक्षत्र	अश्वि भ कृ रो	पुष्य श्ले म पूफा	स्वा वि अनु ज्ये	अभि श्र ध शत
वहिरंग ,,	मृग,आर्द्रा पुन०	उफा ह चित्रा	मू. पूषा उपा	पूभा उभा. रे.

समय विभाग संज्ञा

१ दिन में=१५ मुहूर्त। १ मुहूर्त=लगभग २ घडी का।

दिन विभाग	प्रात काल	मगव	मध्यान्ह	अपरान्ह	सायंकाल
घडी तक	मूर्योदय से ३ घडी तक	उपरान्त ३ मुहूर्त तक	उपरान्त ३ मुहूर्त तक	उपरान्त ३ मुहूर्त तक	उपरान्त ३ मुहूर्त तक

मूर्य अस्त मे	(साय) सध्या	प्रदोप	महानिशा	उपाकाल	अरुणोदय	प्रात काल
समय	३ घड़ी तक	उपरान्त ३ मुहूर्त तक	अर्द्ध रात्रि की मध्य की २	५५ घडी घड़ी मे	५७ घडी में	५८ घड़ी में

५८ घडी के उपरान्त सूर्योदय, सूर्योदय से ३ घडीतक प्रात सध्या और सूर्यास्त से ३ घडी तक साय सध्या भी कहलाती है।

अध्याय १८

पंचाङ्ग कैसे देखना और उपयोग

जिस सम्वत् का वह पंचाङ्ग होता है आरम्भ में ऊपर की ओर वह सम्वत् और शाका दिया रहता है। प्रत्येक पृष्ठ पर चान्द्र मास पक्ष ऋतु अयन और गोल भी दिया रहता है। इसके अतिरिक्त अँग्रेजी महीने का नाम और सन् ऊपर दाहिनी ओर दिया रहता है।

चैत्र शुक्ल से वर्ष आरम्भ होता है। उसमें नीचे कई प्रकार की खडी पक्तियाँ दी रहती है। उनमें से प्रत्येक को समझाते है।

[१] तिथि—आरम्भ में तिथि रहती है। शुक्ल पक्ष मे १ से १५ तक और कृष्ण पक्ष मे १ से १४ और ३० (अमावस्या) दी रहती है। बीच में जो तिथि हानि होती है वह पचाङ्ग में नही दी रहती। जो तिथि वृद्धि होगी वह २ बार लिखी मिलेगी। १५ तिथि को पूर्णिमा और ३० को अमावस्या सदैव समझना।

[२] वार—उसके आगे की पक्ति में वार दिया रहता है। वार का नाम सकेताक्षर में लिखा रहता है। र=रविवार या सू=सूर्यवार (रविवार=इतवार), च=चंद्रवार (सोमवार), म=मगलवार या भौ=भौमवार, बु=बुधवार, गु=गुरुवार या बृ=बृहस्पतिवार (गुरुवार), शु=शुक्रवार या भृ=भृगुवार (शुक्रवार), श=शनिवार, इस प्रकार दिन का नाम पढ लेना। उस तिथि को कौन वार है या वार के अनुसार उस दिन कौन तिथि है जान लेना।

[३] घडी-पल—आगे की पक्ति मे तिथि की घडी पल दिया है। पहिली पक्ति मे जो तिथि दी है वह कितने घडी पल तक है इससे प्रगट होता है। सूर्योदय के उपरान्त उतने घडी पल तक वह तिथि रहेगी ऐसा समझना। जैसे ४।श०।४-१२ दिया है, इससे प्रगट होता है कि शनिवार को चौथ सूर्योदय के उपरान्त ४ घडी १२ पल तक है। उसके उपरान्त उसी दिन पचमी लग जायगी। वह पंचमी कब तक रहेगी उसके आगे दिन में लिखा होगा जैसे ५।र०।८—४८ अर्थात् इतवार को सूर्योदय उपरान्त ८ घड़ी ४८ पल तक पचमी रहेगी। इसके उपरान्त इतवार को ही छट लग जायगी।

पंचाङ्ग में जो घडी पल दिया रहता है उसके घटा मिनट बनालो तो प्रगट हो जायगा कि सूर्योदय के उपरान्त उतने घण्टा मिनट तक वह तिथि रहेगी। उसमें सूर्योदय का समय जोड दो तो घडी के अनुसार उस तिथि के अन्त होने का समय जाना जा सकता है। पंचाङ्ग मे ही सूर्योदय का समय दिया रहता है। जहाँ सूर्य उदय दिया है सकेताक्षर सू उ लिखा रहता है।

जैसे शनिवार को चौथ ४ घ० १२ प० है मान लो उस दिन ६ बजे सूर्योदय था तो ४ घ० १२ प० के १ घ० ४० मि० ४८ से० हुए। इसमे सूर्योदय के ६ घंटा जोडे तो ७ घ० ४० मि० ४८ से० हुए। इस समय तक उस दिन चौथ तिथि रहेगी।

४ घडी×$\frac{२}{५}$=१ घ० ३६ मि०
१२ पल×$\frac{२}{५}$= ४-४८
योग १-४०-४८
+सूर्योदय ६-०-०
योग ७-४०-४८

घड़ी पल के घण्टा मिनट और घण्टा मिनट के घडी पल बनाने का अभ्यास कर लेना चाहिये, क्योंकि इसका अधिक काम पडता है: घड़ी पल के घण्टा मिनट या घण्टा मिनट के घडी पल बनाने का चक्र आगे दिया है। इस चक्र मे घडी आदि के घण्टा आदि बनाने का एक चक्र है और घण्टा आदि के घडी पल बनाने का दूसरा चक्र है। पहिले चक्र में जो घडी दिया है उसका उत्तर घण्टा मिनट में आयगा, यदि पल है तो उत्तर मिनट सेकण्ड मे आयगा। विपल है तो सेकण्ड में उत्तर आयगा।

इसी प्रकार दूसरे चक्र मे दिया हुआ घण्टा का उत्तर दिन घडी पल में, मिनट का घड़ी पल मे और सेकण्ड का पल विपल मे उत्तर आयगा।

जैसे ११ घं० १० मिनट ८ से०
११ घटा= दिन-घड़ी-पल वि०
०-२७-३०-०
१० मिनट= ०-२५-०
८ सेकण्ड= ०-२०-०
योग=०-२७-५५-२०-०
=०दिन २७ घड़ी २५ पल २० विपल

३१ घडी ४० पल ५ विपल
३१ घडी= घ० मि० से०
१२-२४-०
४० पल = १६-०
५ विपल= २-०
योग= १२-४०-२
=१२ घण्टा ४० मि० २ से०

यदि अपने पास यह तुलनात्मक चक्र बना कर रख लो तो अच्छा होगा।

घंटा और घड़ी का तुलनात्मक चक्र—

घडी के घटा						घंटा की घडी							
घड़ी=घंटा पल=मिनट वि.=से.		मिनट सेकेण्ड X	घडी=घंटा पल=मिनट वि.=से		मिनट सेकेण्ड X	घटा=दिन मिनट=घडी सेकेण्ड=पल		घडी पल वि	पल विपल X	घंटा=दिन मि =घडी से =पल		घडी पल वि	पल विपल X
१	०	२४	३१	१२	२४	१	०	२	३०	३१	१	१७	३०
२	०	४८	३२	१२	४८	२	०	५	०	३२	१	२०	०
३	१	१२	३३	१३	१२	३	०	७	३०	३३	१	२२	३०
४	१	३६	३४	१३	३६	४	०	१०	०	३४	१	२५	०
५	२	०	३५	१४	०	५	०	१२	३०	३५	१	२७	३०
६	२	२४	३६	१४	२४	६	०	१५	०	३६	१	३०	०
७	२	४८	३७	१४	४८	७	०	१७	३०	३७	१	३२	३०
८	३	१२	३८	१५	१२	८	०	२०	०	३८	१	३५	०
९	३	३६	३९	१५	३६	९	०	२२	३०	३९	१	३७	३०
१०	४	०	४०	१६	०	१०	०	२५	०	४०	१	४०	०
११	४	२४	४१	१६	२४	११	०	२७	३०	४१	१	४२	३०
१२	४	४८	४२	१६	४८	१२	०	३०	०	४२	१	४५	०
१३	५	१२	४३	१७	१२	१३	०	३२	३०	४३	१	४७	३०
१४	५	३६	४४	१७	३६	१४	०	३५	०	४४	१	५०	०
१५	६	०	४५	१८	०	१५	०	३७	३०	४५	१	५२	३०
१६	६	२४	४६	१८	२४	१६	०	४०	०	४६	१	५५	०
१७	६	४८	४७	१८	४८	१७	०	४२	३०	४७	१	५७	३०
१८	७	१२	४८	१९	१२	१८	०	४५	०	४८	२	०	०
१९	७	३६	४९	१९	३६	१९	०	४७	३०	४९	२	२	३०
२०	८	०	५०	२०	०	२०	०	५०	०	५०	२	५	०
२१	८	२४	५१	२०	२४	२१	०	५२	३०	५१	२	७	३०
२२	८	४८	५२	२०	४८	२२	०	५५	०	५२	२	१०	०
२३	९	१२	५३	२१	१२	२३	०	५७	३०	५३	२	१२	३०
२४	९	३६	५४	२१	३६	२४	१	०	०	५४	२	१५	०
२५	१०	०	५५	२२	०	२५	१	२	३०	५५	२	१७	३०
२६	१०	२४	५६	२२	२४	२६	१	५	०	५६	२	२०	०
२७	१०	४८	५७	२२	४८	२७	१	७	३०	५७	२	२२	३०
२८	११	१२	५८	२३	१२	२८	१	१०	०	५८	२	२५	०
२९	११	३६	५९	२३	३६	२९	१	१२	३०	५९	२	२७	३०
३०	१२	०	६०	२४	०	३०	१	१५	०	६०	२	३०	०

(४) नक्षत्र-इसके उपरान्त नक्षत्र दिये रहते हैं। नक्षत्रो का नाम संकेताक्षरो में दिये रहते है। जैसे अ=अश्विनी, भ=भरणी, कृ=कृत्तिका इत्यादि। इन नक्षत्रो के नाम अच्छी प्रकार स्मरण रखना चाहिये। सब का नाम क्रम पूर्वक दिये रहते हैं। इसमे अभिजित्त नही रहता, २७ ही नक्षत्र दिये रहते है।

कभी कभी एक ही सकेताक्षर के २ नक्षत्र होते हैं, परन्तु किसके बाद कौन नक्षत्र आता है स्मरणर खोगे तो भूल नही होगी। जैसे आ=आर्द्रा के वाद पु=पुनर्वसु, इसके बाद पु=पुष्य। इसी प्रकार पूर्वा और उत्तरा ३ बार आता है। कही कही पूर्वा को पू० और उत्तरा को उ० ही दिया रहता है। यदि क्रम स्मरण रहे तो कभी भूल नही होगी। जैसे माघ के वाद फाल्गुन आता है उसी प्रकार म=मघा के उपरात पू=पूर्वा फाल्गुनी, उ=उत्तरा फाल्गुनी आते हैं। जिस प्रकार जेठ के वाद असाढ आता है उसी प्रकार ज्येष्ठा और मूल के वाद पूर्वापाढा आता है। ज्ये=ज्येष्ठा, मू=मूल, के बाद, पू=पूर्वाषाढा, उ=उत्तराषाढा होगा। श्रावण के वाद भाद्रपद मास आता है उसी प्रकार श्रवण घनिष्ठा शतभिषा के उपरात पूर्वा भाद्रपद आयगा। श्र श्रवण, ध=धनिष्ठा श=शतभिषा, पू=पूर्वाभाद्रपद, उ=उत्तरा भाद्रपद हैं। अंत में रे रेवती आती है, अश्विनी और अनुराधा दोनो के लिये अ० लिखते हैं। रेवती के वाद अ=अश्विनी, विशाखा के बाद अ= अनुराधा होता है। कभी कभी अनुराधा को ऽनु भी लिख देते हैं।

पंचाग में कभी-कभी एक नक्षत्र ६० घडी से अधिक रहने के कारण दूसरे दिन भी दिया रहता है। नक्षत्र के आगे घडी पल दिये हैं जिससे प्रगट होता है कि सूर्योदय उपरान्त वह नक्षत्र उस दिन उतने घडी पल तक रहेगा उसके वाद आगे के नक्षत्र का भोग समझना। जैसे सोमवार को मघा ६-५७ है तो सूर्योदय से ६ घ० ५७ प० बाद तक मघा नक्षत्र रहेगा, उसके वाद आगे का नक्षत्र पूर्वा फाल्गुनी उसी दिन लग जायगा। दिन रात के ६० घडी में से ६-५७ घटा दो तो शेप ५३ घ० ३ पल तक उस दिन पूर्वा फाल्गुनी रहेगा। अब देखना है कि पूर्वा फाल्गुनी कब तक और है। उसके आगे दिन मंगलवार को देखा तो पूर्वा फा० १३।२४ लिखा है अर्थात् मंगलवार को पू० फा० इतना और है। पू० फा० सोमवार को (५३-३) + मगलवार को (१३-२४)= योग ६६ घ० २७ प० यह पूर्वा फाल्गुनी के पूरे भोग का मान हुआ। इसे भभोग अर्थात् पूर्ण नक्षत्र का भोग कहते है। पूर्ण नक्षत्र की जितने घडी पल भोग हो उसे भभोग या सर्वर्क्ष भी कहते हैं। जितना नक्षत्र व्यतीत हो चुका अर्थात् भुक्त हो चुका उसे भयात (भभुक्त) या भुक्तर्क्ष या गतर्क्ष कहते है। भोगने को जो घडी पल शेप रहे उसे भोग्य या भोग्यर्क्ष कहते है। ऋक्ष=नक्षत्र। भुक्त + भोग्य=भभोग=सर्वर्क्ष=पूरा नक्षत्र। भुक्त=भयात भुक्तर्क्ष=गतर्क्ष=जितनी घडी व्यतीत हो गई। भोग्य=भोग्यर्क्ष=जितनी घडी व्यतीत होने को शेष रही।

(५) योग--इसके आगे योगो के नाम दिये रहते है। योगो के नाम पहिले दे चुके है। पंचाग में योग के नाम का सकेताक्षर दिया रहता है। उनका क्रम स्मरण रखने से जाना जा सकता है कि संकेताक्षर किस नाम का सूचक है। इसमें कई जगह भूल हो जाना सभव है—जैसे हर्षण के बाद व=वज्र, व्यतीपात के बाद व=वरीयान। साध्य के बाद शु=शुभ, फिर शु=शुक्ल। वज्र के बाद सि=सिद्धि, शिव के बाद सि= सिद्ध। ऽगं अतिगडा। ऐसी अवस्था मे आगे पीछे के संकेताक्षर देख कर वीच मे कौन योग है जान सकते हो।

पंचाग मे क्रम देखते समय इसका भी ध्यान रहे कि बीच के कोई योग तो नही छूट गये। क्योकि जो योग सूर्योदय पर होगा वही पचाग मे वताया जाता है। उसके आगे का और कोई योग भुक्त हुआ हो तो नही दिया रहता। परन्तु कोई कोई पचाग वाले उसकी घडी पल भी दे देते है। जैसे शनिवार को वै० २-३९। इतवार को वि० १–६ सोमवार को आ० ४८-५७। अर्थात् शनिवार को वैधृति योग २-३६ है। इतवार को विष्कभ १-६ है। इसके बाद प्रीति योग लगा, परन्तु पचाग मे प्रीति योग नही दिया केवल ५३–१५ दिया है। इससे प्रगट होता है कि प्रीति योग ५३–१५ तक है, उपरान्त आयुष्मान् योग लगा और सोमवार को वही आयुष्मान् ४८-५७ तक है। इन घडियो के पिछली बताई रीति से घटा मिनट बनाकर घडी का समय बना लो।

(६) करण—किसी किसी पचाग में दोनो करण दिये रहते है। पूर्व में जो करण है उसका नाम फिर उसकी घडी पल उपरान्त दूसरा करण (जो उत्तरार्द्ध में आता है) वह भी दिया रहता है और उसके घडी पल दिये रहते है। परन्तु अधिकतर पञ्चागो मे एक ही करण दिया रहता है। सूर्योदय पर जो तिथि होती है उसी तिथि का करण चाहे वह पूर्वार्द्ध या परार्द्ध का हो दिया रहता है। जैसे पञ्चाग मे शुक्ल ७ (सप्तमी) ०–६ दिया है तो सप्तमी के अत का (उत्तरार्द्ध) करण वणिज होता है वह व १०-६। दिया रहेगा। क्योकि ०–६ पर तो तिथि का ही अन्त होने से करण का भी अन्त हो जायगा। मान लो कृष्ण ३ मंगलवार ४४–३७ तिथि दी है तो तीज को पूर्वार्द्ध मे वणिज है वह दिया है व० १२–३५=वणिज करण का भोग्यपूर्ण तिथि का आधा दिया है वह इस प्रकार है। द्वितीया ४०–३६ सोमवार को थी ६०-(४०–३६)= १६–२१ तीज सोमवार को +४४–३७ तीज मंगल को=६३–५८ पूरी तीज=आधा ३१–५६ हुआ। मंगलवार को शेष तीज पचाग मे (४४–३७)—(३१–५९) आधा १ करण=शेष १२–३८। यह १२–३८ पहिले करण का और भोगने को रहा। इस कारण पञ्चाग मे व १२–३८ दिया है—४४–३७

१२-३८ भुक्त करण

शेष ३१–५६=आगे का विष्टि करण परार्द्ध में होगा।

(७) दिनमान — इसके आगे पञ्चाग में दिनमान दिया रहता है। किसी-किसी पञ्चाग के अन्त मे और किसी मे पहिले इसे दे देते हैं। सूर्योदय से सूर्य अस्त तक जितने घडी पल होते हैं यही दिनमान में दिया रहता है। ६० घटी से दिनमान घटाने से रात्रि मान होता है।

(८) चन्द्र—आगे चन्द्र की स्थिति दी रहती है। प्रत्येक राशि मे चन्द्र कब आता है और कब तक रहता है यह दिया रहता है। पञ्चाग मे चौथ शनिवार को वृ २९-२५ (चन्द्र) दिया है। इसका अर्थ यह है कि वृपराशि पर चन्द्र २६ घ० २५ प० के उपरान्त आवेगा। यहाँ जो घडी पल राशि के आगे दिया रहता है उससे समझना कि उस राशि पर उतने घडी पल के उपरान्त चन्द्र आयगा। रविवार को वृप पर दिन और रात्रि भर चन्द्र रहा, इसलिए पञ्चाग में केवल वृप दिया है। या कोई राशि का नाम भी नही देते, इससे समझना अभी ऊपर बताई राशि पर ही चन्द्र है। सोमवार को मि० १९–२० लिखा है अर्थात् सोमवार को १९–२० तक वृप का ही चन्द्र रहेगा, उसके उपरान्त उसी समय से मिथुन राशि पर चन्द्र आवेगा। इसमें राशि के नाम सकेताक्षर से कभी-कभी दिये रहते हैं जिनसे ही राशिका नाम जान लेना। पहिले का और आगे का संकेताक्षर पढ लेने से बीच का सकेताक्षर समझ मे आ जाता है।

(९) सूर्यस्पष्ट—इसके उपरान्त मिश्रकालीन या प्रात कालीन स्पष्ट सूर्य दिया रहता है। उस दिन प्रात काल या मिश्र काल पर सूर्य की स्थिति दी रहती है, अर्थात् सूर्य उस समय ठीक किस स्थान पर (किस राशि, अश, कला, विकला पर) है दिया रहता है। इसके आगे सूर्य की प्रतिदिन की गति दी रहती है। प्रतिदिन ६० घड़ी में कितने कला विकला चलता है यह गति दी रहती है। जैसे सूर्य ६–१२–१८–२८ दिया है तो ६ राशि, १२ अश, १८ कला, २८ विकला पर सूर्य उस समय है ऐसा समझना। गति ६०-७ दी है तो सूर्य की दिन-रात्रि की गति ६० कला ७ विकला समझना। ग्रहो की गति प्राय कला विकला में दी रहती है।

किसी पंचाङ्ग में मिश्र मान दिया रहता है और प्रात काल का सूर्य न देकर मिश्र कालीन सूर्य दिया रहता है।

मिश्रकाल—यह पंचाङ्ग में दिये हुए ग्रहो का इष्ट काल है जो प्राय अर्द्ध रात्रि समय का दिया रहता है।

अर्द्ध रात्रि का इष्ट जानना = (३० + दिनमान २) या (६० − रात्रिमान २) मान लो दिनमान ३४-४ है तो दिनार्द्ध=१७ २ हुआ + ३०=४७ घड़ी २ पल या (६० − ३४–४ दिनमान) = २५–५६ रात्रिमान = रात्रि अर्द्ध १२–५८ ६० − (१२–५८ रात्रि अर्द्ध) = ४७ घड़ी २ पल।

इसलिये रात्रि अर्द्ध का इष्ट = ४७-२ हुआ, यही साधारण प्रकार से मिश्रमान हुआ। पंचाङ्ग मे उस दिन का ठीक मिश्रमान गणित से निकाल कर दिया रहता है। किसी पंचाङ्ग में प्रतिदिन का मिश्रमान नही दिया रहता।

अर्द्ध रात्रि के लगभग (मिश्रकाल) मे जो सूर्य की ठीक स्थिति होगी वह मिश्र कालीन सूर्य स्पष्ट किसी-किसी पचाङ्ग मे दिया रहता है। प्रात काल या मिश्रकाल के सूर्य को अपने इष्टकाल (समय) का गणित से बनाना पडता है तब इष्ट कालीन सूर्य स्पष्ट कहलाता है। सूर्य दिन रात मे जितनी कला विकला चलता है और सूर्योदय से या मिश्र काल से इष्ट तक का अन्तर निकाल कर उस अन्तर की चाल गणित से निकाल कर पचाङ्ग मे दिये हुए सूर्य में जोडने से इष्टकालीन सूर्य स्पष्ट बनता है। इसका गणित उदाहरण सहित गणित खण्ड मे मिलेगा।

(१०) इसके उपरान्त प्रतिदिन के सूर्योदय और सूर्यास्त का समय घण्टा मिनट मे दिया रहता है।

दिनमान से सूर्योदय या अस्त सरलता से निकल सकते है। दिनमान को आधा कर घण्टा मिनट बना लो तो सूर्य अंस्त का समय होगा। इसे १२ घण्टा मे घटा दो तो उदय का समय घण्टा मिनट मे निकल आवेगा। जैसे दिनमान २६ घ० १८ प०÷ २=१३ घ० ९ प०=५ घं० १५ मि० ३६ से० सूर्यास्त। १२ घण्टे मे से सूर्यास्त घटाया तो ६ घं० ४४ मि० २३ से० सूर्योदय हुआ।

१२-०-०
५-१५-३६ सूर्यास्त
६-४४-२४ सूर्योदय

(११) अन्त मे मुसलमानी तिथि, बंगला तिथि, अग्रेजी तारीख दी रहती है। अं=अग्रेजी तारीख। फा=फारसी। बं=वंगला।

(१२) किसी-किसी पंचाङ्ग में विशेष योग भी दिये रहते है। किसी विशेप तिथि को विशेष दिन या नक्षत्र आदि पडने से कोई योग वन जाता है वही आनन्द योग, मृत्यु योग, चर योग, छत्र योग आदि दिये रहते हैं। इन योगो के विषय में पहिले समझा चुके है कि ये कब और किस प्रकार बनते है।

(१३) किसी-किसी पंचाङ्ग मे सूर्य की उत्तर या दक्षिण क्रान्ति भी दी रहती है। और किसी-किसी मे मिश्रकालीन दैनिक चद्र स्पष्ट भी दिया रहता है।

(१४) अन्त मे एक सूचनापत्र सदृश प्रत्येक दिन के सम्वन्ध में कोई विशेष बात आने पर लिख दी जाती है। जैसे परवा (परिवा) या दोज को जब चद्र दिखेगा तो उस दिन चद्रदर्शन लिखा रहता है। कोई पर्व त्यौहार आदि होता है या कोई जयंती होती है तो वह भी लिख दिया जाता है। अंग्रेजी महीना का अन्त होने पर

दूसरा आरम्भ होने वाला महीना या सन् बदलता है तो नया सन् इत्यादि आवश्यक बातें लिखी रहती हैं ।

पर्व दिन के अतिरिक्त ग्रहो के योग आदि भी दिये रहते है । सूर्यादि ग्रह जब १ राशि या एक नक्षत्र मे दूसरी राशि या नक्षत्र पर जाते है तो उस दिन उसका समय भी दिया रहता है । इसके अतिरिक्त ग्रहो के उदय अस्त, ग्रहो का वक्री मार्गी होना, ग्रहण आदि और भी ग्रहो के सम्बन्ध की पूरी सूचना रहती है और आवश्यक मुहूर्त या विवाह लग्न आदि सम्बन्ध की सूचनाएँ भी रहती हैं ।

कुछ सकेताक्षरो को भी समझ लेना चाहिये जिनका यहाँ उपयोग होता है । सायन मेषेऽर्क ८-२४ सायन सूर्य की मेष की सक्रान्ति ८ घ० २४ पल पर होगी । मेषे चार्क· ३०-४२ = निरयन सूर्य की मेष की संक्रान्ति ३० घ० ४२ प० पर होगी । मिथुने रवि ६-४८=निरयन सूर्य मिथुन पर ६-४८ पर गया । रोहिण्या बुध ५३-२६ बुध रोहिणी नक्षत्र पर ५३-२६ में गया । घनिष्ठाया १ चरणे बुध ४७-११=बुध धनिष्ठा के पहिले चरण मे ४७-११ पर गया । शतभिषाया २ चरणेऽर्क =निरयन सूर्य शतभिषा नक्षत्र के दूसरे चरण में गया । धनिष्ठायास्तृतीयचरणे स कुम्भेऽर्क =धनिष्ठा के तीसरे चरण मे कुभराशि पर निरयन सूर्य की सक्रान्ति हुई । वक्री भौम ६-५= ६-५ मंगल वक्री हुआ । बुधास्त पश्चिममें=बुध पश्चिम में अस्त हुआ । सकेताक्षरो को एक बार समझ लेने पर फिर अडचन न होगी और ध्यान से देखते-देखते सब समझ मे आने लगेगा ।

उ=उपरान्त, या=यावत् (इतने समय तक) भ० १५-४० या=भद्रा १४-४० तक रहेगी । भ० २४-३९ उ भद्रा २४-३९ के उपरान्त होगी ।

(१५) पचाङ्ग के नीचे की ओर गोचर ग्रह कुडली और सासाहिक मिश्रकालीन या प्रात कालीन ग्रह स्पष्ट और प्रत्येक ग्रहो की दैनिक गति भी दी रहती है । किसी-किसी पञ्चाङ्ग मे दैनिक (प्रतिदिन के) ग्रह स्पष्ट भी दिये रहते हैं ।

ग्रह स्पष्ट—जब किसी विशेष समय पर गणित द्वारा प्रत्येक ग्रहो की गति के विचार मे गणित कर ग्रह की ठीक स्थिति निकाल कर रखते हैं तो उससे प्रगट होता है कि कौन-कौन ग्रह उस समय कहाँ-कहाँ पर है । और इसे ही उस समय का ग्रह स्पष्ट कहते है ।

इष्टकाल— कोई समय को, जिस समय के सम्बन्ध मे अपने को विचारना है उसे इष्ट समय का काल (इष्टकाल) कहते है । जैसे सूर्योदय के बाद ४ घडी पर किसी ने कोई प्रश्न पूछा तो उस समय का इष्टकाल ४ घडी हुई ।

पञ्चाङ्ग में कोई ग्रह मिश्रकाल ४४–३६ के दिये है तो कहा जायगा कि इष्टकाल ४४–३६ के ग्रह स्पष्ट है। यदि प्रात काल के ग्रह स्पष्ट दिये है तो इष्ट ०–० का ग्रह स्पष्ट समझा जायगा।

किसी पञ्चाङ्ग मे इस प्रकार ग्रह स्पष्ट दिये हैं।

फाल्गुन कृष्ण ८ रवौ मिश्रमान ४४-३६––

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	८	८	९	२	११	१	४	१०
१६	१	२९	२२	२०	१४	१३	५	५
१९	२७	६	१०	४८	१०	८	४	४
५९	२४	२४	४९	२०	४३	३४	२५	२५
६०	८५१	४३	८९	३	७३	२	३	३
१६	११	५५	५६	१३	४४	२२	११	११
				व	मा			

गोचर ग्रहाः
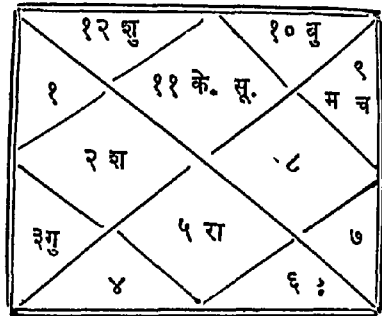
पंचाग मे यहाँ फाल्गुन कृष्ण अष्टमी रविवार के इष्ट ४४-३६ का ग्रह स्पष्ट दिया है। ग्रहो की स्थिति इस प्रकार समझना—

ग्रह	राशि	अंश	कला	वि०			कला	वि०	
सूर्य	१०	१६	१९	५९	पर है	गति	६०	१६	है
चंद्र	८	१	२७	२४	,,	,,	८५१	११	,,
मंगल	८	२९	६	२४	,,	,,	४३	५५	,,
बुध	९	२२	१०	४९	,,	,,	८९	५६	,,
गुरु	२	२०	४८	२०	,,	,,	३	१३	,, व=वक्री
शुक्र	११	१४	१०	४३	,,	,,	७३	४४	,, मा=मार्गी
शनि	१	१३	८	३४	,,	,,	२	२२	

इसी प्रकार राहु केतु का भी समझना। जहाँ व लिखा है वहाँ ग्रह की मार्गी गति का अंत होकर वह ग्रह वक्री हुआ है। मा=वक्री गति का अंत होकर वह ग्रह मार्गी हुआ है ऐसा समझना।

यहाँ जो ग्रहो की गति दी है वह दिन रात्रि अर्थात् ६० घडी की प्रतिदिन की हैं। यह गति सदा बदलती रहती है। ग्रह कभी वक्री कभी मार्गी हो जाते है। ग्रह के नीचे संकेताक्षर मे यह ऊपर बताये अनुसार लिखा रहता है। जिसमे वक्री या मार्गी कुछ भी

न लिखा हो उस ग्रह को मार्गी समझो, परन्तु राहु केतु सदा वक्री रहते है । किसी पचांग मे ग्रह उदय हैं या अस्त है यह भी ग्रह के नीचे दिया रहता है, उ=उदय, अ=अस्त, जिनके सकेताक्षर हैं।

ग्रह स्पष्ट के एक ओर गोचर ग्रह कुडली दी रहती है । यह कुंडली आकाश का नकशा हैं जिसके विषय में आगे समझाया जायगा । पचाग में मिश्रकालीन या प्रात कालीन ग्रह स्पष्ट दिये रहते हैं उन्ही के अनुसार उसके समीप ही कुडली मे स्थूल रूप से ग्रह दिये रहते हैं।

इस कुंडली मे १२ राशि के १२ कोठे हैं और उनमें १-२-३ आदि क्रमानुसार राशियो के सूचक अक लिखे रहते हैं । जैसे १ से मेष, ८ से वृश्चिक इत्यादि । ग्रह जिस राशि पर है उसी राशि के कोठे मे वह ग्रह लिख दिया जाता है । जैसे ऊपर ग्रह स्पष्ट देखो सूर्य रा० १०°-१६°-१९-५९ पर है अर्थात् १० राशि व्यतीत होकर ग्यारहवी राशि के १६° पर सूर्य है, अर्थात् सूर्य ग्यारहवी राशि (कुभ राशि) पर है । जहाँ ११ का अक कुडली में होगा वहाँ सूर्य का सकेताक्षर सू० लिख देंगे। सूर्य प्रधान ग्रह है वह जिस राशि पर रहता है उसी राशि को ऊपर की ओर बीच मे लग्न के स्थान पर पञ्चाग मे लिखने की प्रथा है । चन्द्र धन का है ९ अक जहाँ है उस कोठे में लिखा । मगल भी नववी राशि धन का है ९ में लिखा । बुध मकर का है १० मे लिखा । गुरु मिथुन का है=३ मे, शुक्र मीन का=१२ मे, शनि वृष का=२ मे, राहु सिंह का=५ में, केतु कुंभ का=११ मे सूर्य के साथ लिखा है । इसी प्रकार कुडली मे ग्रह भरने की रीति अच्छी प्रकार से समझ लेना चाहिये ।

कई पञ्चागो मे गोचर ग्रह स्पष्ट जहाँ दिया रहता है उसमें चन्द्र नही दिया रहता तो पचाग में उस तिथि को चन्द्र किस राशि पर है यह देखकर गोचर कुडली मे भर देते हैं।

इसी प्रकार प्रति सप्ताह पृथक्-पृथक् गोचर कुडली और ग्रह स्पष्ट दिये रहते हैं जो लगभग अष्टमी और अमावस्या या पूर्णिमा के होते हैं ।

(१६) दैनिक लग्न होरा सारिणी (होरा=घण्टा)

किसी-किसी पञ्चाग में तिथि पत्र के नीचे दैनिक लग्न होरा सारिणी भी दी रहती है, जैसे काशी या जबलपुर आदि के पञ्चाग में दिया रहता है । सब के नीचे १ चक्र बना रहता है उसमें १५ तिथि और वार ऊपर लिखा रहता है । उसके बायी ओर बाजू से लग्न की राशियो के नाम और उसके आगे दिन और रात का समय घण्टा मिनट मे दिया रहता है । इससे प्रगट होता है कि वह लग्न कितने बजे तक रहेगी । जैसे तिथि

१ गुरुवार मीन ६ घण्टा २६ मिनट=मीन लग्न ६ बज कर २६ मिनट तक गुरुवार को रहेगी, उसके बाद मेष लग्न आरम्भ होगी। इस सारिणी से देखकर जान सकते हो कि उस समय कौन लग्न है। रात्रि की लग्न के ऊपर रा=(रात्रि) लिख दिया जाता है।

पूर्व मे क्षितिज पर जो राशि उदय हो रही है उसी को लग्न कहते है। २४ घण्टा मे सब राशिया पृथ्वी के चारो ओर घूम लेती है इस कारण प्रत्येक लग्न स्थूल मान से लगभग २ घण्टे की हुई। परन्तु इससे किसी का कम किसी का अधिक प्रमाण होता है।

किसी-किसी पंचाग मे लग्न प्रारम्भ होने का समय होरा लग्न सारिणी मे दिया रहता है। वहा लग्न के नाम के आगे "प्र०" (प्रवेश) लिखा रहता है। वह लग्न प्रवेश करने का समय है। किसी मे दिन रात्रि न लिख कर मध्याह्न के उपरान्त (१२ बजे के ऊपर) रेलवे के समय के अनुसार १३, १४, १५ आदि २४ बजे तक लिखा रहता है। जरा ध्यान देने से सब समझ मे आने लगेगा। लग्न के विषय में आगे समझाया जायगा।

तिथिपत्र के आगे पीछे पञ्चाग में कई उपयोगी चक्र मुहूर्त आदि विषय के दिये रहते है उन सब विषय का वर्णन क्रमश उपयुक्त स्थान मे करेंगे।

विवाह के १० महादोष होते है जो विवाह का मुहूर्त विचारने मे काम आते है। जहाँ विवाह का मुहूर्त दिया रहता है उन दोषो के क्रमानुसार वह मूहूर्त जो दोष से रहित है अर्थात् शुद्ध है उसके लिए। (खडी लकीर) और जो दोष युक्त है ऽ (वेडी लकीर) पञ्चाग मे दी रहती है इसका वर्णन मुहूर्त खण्ड मे मिलेगा।

(१७) पञ्चाग अब जगह-जगह से प्रकाशित होने लगे है। उन पञ्चागो में उस स्थान के अक्षाश और देशान्तर के अनुसार समय निकाल कर दिया रहता है। यही कारण है कि एक स्थान के पञ्चाग का समय दूसरे स्थान के पञ्चाग के समय से मिलान करने पर कुछ अन्तर पड जाता है, क्योकि एक स्थान मे जो समय दिया रहता है वह प्रत्येक स्थान मे नही रहता, अर्थात् दूसरी जगह मे अक्षाश देशान्तर के अनुसार उस समय मे अन्तर पड़ जाता है। इस कारण अपने स्थान के समीप का पञ्चाग खरीदना चाहिये।

पञ्चांग परिवर्तन

किसी स्थान के पञ्चाग मे दिये हुए समय से अपने स्थान के समय का अन्तर जान लेना चाहिये। उसके जानने की स्थूल रीति यहाँ दी है।

अपने स्थान का देशान्तर मालूम करो। मुख्य-मुख्य स्थानो की देशान्तर सारिणी किसी-किसी पञ्चाग मे दी रहती है, उससे या किसी स्कूल के नकशे से मालूम कर लो।

जहाँ का पञ्चाग वना है वहाँ का देशान्तर और अपने यहाँ के देशान्तर में अन्तर निकालो और देखो पञ्चाग के स्थान से अपना देशान्तर अधिक है या कम है।

नकशो मे देशान्तर ग्रीनविच (इंगलैंड) से दिया रहता है। परन्तु भारतवर्ष के पञ्चागो में उज्जैन से देशान्तर दिया रहता है। इस प्रकार किसी भी एक स्थान के देशान्तर का अन्तर नाप लो, फिर दोनो देशान्तरो का अन्तर निकालो। वह अन्तर अंशो में दिया हो तो उसके घडी पल वना लो। पञ्चाग के स्थान से अपना स्थान पूर्व में हो तो+ (धन=जोडना), पश्चिम में हो तो – (ऋण = घटाना)। इस प्रकार पञ्चाग के समय मे जोडने या घटाने से जो समय प्राप्त होगा वह स्थानिक समय होगा।

देशान्तर अश में दिया हो उसके घण्टा मिनट या घडी पल वनाना—

१५ अंश = १ घण्टा = २॥घडी	१ अंश = ४ मिनट = १० पल
१५ कला = १ मिनट = २॥ पल	१ कला = ४ सेकण्ड = १० विपल
१५ विकला=१ सेकण्ड=२॥ विपल	१ विकला=$\frac{४}{१५}$ सेकेण्ड = १० अनुपल
	= $\frac{१}{६}$ विपल

जैसे पूना के पञ्चाग में एकादशी ४० घ० १० पल है। वम्बई मे एकादशी का मान जानना है। वम्वई पूना से पश्चिम मे हैं और दोनो के देशान्तर का अन्तर १ अंश है। १अंश – ४ मिनट = १० पल। वम्वई पश्चिम में होने से यह अंतर ऋण होगा। = –१० पल। पूना में ४० घ० १० पल है, इससे १० पल घटाया तो ४० घ० १० पल रहे। इस प्रकार वम्वई में एकादशी का मान ४० घ ० प होगा। अर्थात् पूना के मान में १० पल घटा देने से वम्वई का मान होगा। काशी में २०–४० एकादशी है तो जवलपुर में क्या होगा ?। जवलपुर ३° पश्चिम है। ३×१०=३० पल ऋण= २०-१० का मान जवलपुर में एकादशी का होगा। अर्थात् काशी के मान में ३० पल घटा देने से जवलपुर का मान प्राप्त हुआ। इसी प्रकार नक्षत्र योग आदि का मान स्थानिक समय का निकाल लेना।

परन्तु स्मरण रहे पंचाग मे तिथि आदि का मान घटी पल में मध्यम सूर्योदय से दिया रहता है। उसमे स्पष्ट और स्थानिक ठीक समय वनाने के लिये देशान्तर सस्कार के अतिरिक्त विशेष सस्कार करना पडता है, क्योंकि समय भी कई प्रकार के होते हैं। मध्यम समय Mean Time, स्टेन्डर्ड समय Standard Time (रेलवे आदि का समय) स्थानिक समय Local Time (जो धूप घडी के अनुसार होता है और प्रत्येक स्थान का पृथक्-पृथक् समय होता है)। स्टेन्डर्ड समय (घडी के अनुसार घटा मिनट) सारे भारतवर्ष के लिये एक ही समय है जो ग्रीन विच से ५॥ घंटा अधिक होता है। यह ८२$\frac{१}{२}$° देशान्तर का समय है। मध्यम समय सूर्य के अनुसार निकाला जाता है।

इस प्रकार स्थानिक समय निकालकर उसके अनुसार देशान्तर संस्कार के अतिरिक्त उस समय में और भी जोडना घटाना पडता है और चर सस्कार भी करना पडता है। यह विषय कुछ कठिन होने से यहा नही दिया गणित खड मे मिलेगा। यहा तो प्रारभिक ज्ञान के लिये स्थूल रीति दी है।

अध्याय १६

अंग्रेजी पंचांग Almanac या Ephemeris

पिछली वताई हुई वाते समझ लेने पर पंचाग देखना अच्छी तरह आ जायगा। परन्तु अंग्रेजी पचाग देखने के लिए कई नवीन वातो की आवश्यकता पडेगी, उनको भी संक्षेप से वता देना आवश्यक है।

इंग्लेंड में ग्रीन विच की वेधशाला के आधार पर अंग्रेजी पचाग (ऐफेमरीज) Raphel's Astronomical Ephemeris अंग्रेज में प्रतिवर्ष प्रकाशित होती है जिसमें ग्रहो के सम्बन्ध में अनेक सूचनाएँ और दैनिक ग्रह स्पष्ट दिया रहता है। उसमें हर्शल और नेपच्यून की स्थिति भी दी रहती है। ग्रहो के स्थान पर केवल उनके चिन्हो का उपयोग होता है। यहा के पंचाग सरीखी कई उपयोगी वातें उस पंचाग में दी रहती है। अंग्रेजी पंचाग को 'अलमनक' कहते है।

उज्जैन की वेधशाला से भी एक ऐफेमरीज प्रतिवर्ष प्रकाशित होती है। उसमें भारतवर्ष के स्टेन्डर्ड टाइम के दैनिक ग्रह स्पष्ट और विविध ग्रह योग दिये रहते हैं। ग्रहो की ठीक स्थिति जानने के लिये अच्छे ज्योतिपी उनका उपयोग करते है।

सावन दिन apparent day

जव सूर्य मध्यान्ह (दोपहर) आता है और घूमकर फिर दूसरे दिन उदय होकर मध्याह्न पर आने मे जो समय लगता है वह सावन कहलाता है। कोई सूर्योदय से सूर्योदय तक के समय को सावन दिन कहते हैं। सावन दिन का मान कम ज्यादा होता रहता है। इस पर से सावन दिन का मध्यम मान निकाला जाता है।

मध्यम काल Mean Tme

अपने इस सावन दिन के मध्यम काल को २४ घंटा या ६० घडी का मानते हैं।

सूर्य की मध्यम गति ५९'-८" प्रतिदिन रात में जानकर एक मध्यम रवि विषुववृत्त में घूमता है ऐसा मान लेते है। यह मध्यम रवि मध्यान्ह में आकर फिर

अस्त होता है और दूसरे दिन उदय होकर फिर मध्यान्ह में आता है। इस प्रकार एक वार मध्यान्ह से दूसरे दिन के मध्यान्ह मे फिर आने तक मध्यम मान से २४ घंटा लगते है। इसी समय को मध्यम काल कहते है।

स्पष्ट काल Apparent Time

सूर्य को देखकर जो स्पष्ट समय समय पडता है वही स्पष्ट काल कहलाता है।

नाक्षत्र दिन=(नाक्षत्र काल) Side real day

तारो की दैनिक गति पृथ्वी की गति के कारण जान पडती है कि तारे ऊगते हैं और फिर सिर पर आते है फिर डूब कर उदय होते है। इसी प्रकार तारा या कोई नक्षत्र उदय होने या मध्यान्ह पर आने से दूसरे दिन फिर उदय होने या मध्यान्ह पर आने तक जो समय लगता है उसे नाक्षत्र दिन और नाक्षत्र दिन के समय को नाक्षत्र काल Side real time कहते है।

इस नाक्षत्र काल को साधारण प्रकार से २४ घटा या ६० घडी का मान लो तो काम चल जायगा।

वेधशाला Observatory में नाक्षत्रकाल देखने की एक घडियाल रहती है। पहिले बता चुके है कि नक्षत्र का उदय होना या अस्त होना पृथ्वी की दैनिक गति के कारण है। यह काल सावन मान से २३ घ. ५६ मि ४०९०६ से. का होता है। इस प्रकार नाक्षत्र दिन का मान बराबर एक समान रहता है। सावन दिन सरीखा कम ज्यादा नही होता। इस प्रकार नक्षत्र से सावन का भी ज्ञान सूक्ष्म प्रकार से हो सकता है।

मध्यम रवि Mean Sun

सूर्य की गति प्रतिदिन बदलती है परन्तु अपनी घडियो की गति प्रतिदिन एक समान रहती है गति कम ज्यादा नही होती। इस कारण घडी से जिस प्रकार मध्यम समय दीखता है उसी प्रकार मध्यम रवि या मध्यम काल समझना चाहिये।

जैसा मध्यम रवि मध्यम काल बतलाता है उसी प्रकार घडी भी मध्यम काल बतलाती है। मध्यम काल से इच्छित काल निकाला जा सकता है।

मध्यम रवि आकाश में नही दीखता, परन्तु गणित से उसको गतियो का मध्यम मान के प्रमाण से मान निकालते है। मध्यम रवि का उदय ठीक ६ बजे प्रात, १२ बजे मध्याह्न और सध्या ६ बजे सदैव मानते हैं। इस मान में कोई अन्तर नही पड़ता।

मध्यम रवि का होरात्मक काल या नाक्षत्र काल Side real Time

अग्रेजी पञ्चाङ्ग मे यह काल महत्व का दिया रहता है। यह काल किसी विशेष तारीख को क्या होता है, आगे दिया है। इस काल को अशो में परिवर्तन कर देने पर उसे मध्यम रवि का होरात्मक विषुवाश कहेंगे।

विषुववृत्त के पूरे वृत्त के ३६० अंशो को २४ घण्टो में बाँटो तो १ घण्टा=१५° या ४ मिनट=१° पडा। विषुवाश (विषुव रेखा के अंशो को) अंश कालादि में न बना कर उसे घण्टा मिनट में बना लेते है और पञ्चाङ्ग में यही प्रतिदिन का नाक्षत्र काल घण्टा मिनट में दिया रहता है। यह होरात्मक नाक्षत्र काल प्रतिदिन प्राय ४ मिनट के हिसाब से बढता है। इस प्रकार १५ दिन मे १ घण्टा बढ जाता है। अंग्रेजी पञ्चाङ्ग में प्रतिदिन का नाक्षत्र काल दिया रहता है। यह भावसाधन आदि के काम आता है। यहाँ यह नाक्षत्र काल किस तारीख को लगभग कितने घण्टे का रहता है, आगे दिया है उस पर से किसी भी दिन का नाक्षत्र काल निकाल सकते हो। नाक्षत्र काल और तारो का विषुवाश जानने से और तारो को पहिचान लेने से रात को देख कर लगभग ठीक समय भी जान सकते है। २२ मार्च को नाक्षत्र काल शून्य होता है।

दोपहर (१२ बजे) का नाक्षत्र काल नीचे दिया है।

तारीख	महीना	घंटा	ता०	महीना	घंटा	ता०	महीना	घंटा	ता०	महीना	घंटा
५	जनवरी	१९	६	अप्रैल	१	७	जुलाई	७	६	अक्तूबर	१३
२०	,,	२०	२१	,,	२	२२	,,	८	२१	,,	१४
४	फरवरी	२१	७	मई	३	६	अगस्त	९	५	नवम्बर	१५
२०	,,	२२	२२	,,	४	२१	,,	१०	२०	,,	१६
७	मार्च	२३	६	जून	५	५	सितम्बर	११	६	दिसम्बर	१७
२२	,,	२४=०	२१	,,	६	२०	,,	१२	२१	,,	१८

यदि अंग्रेजी पञ्चाङ्ग न हो और नाक्षत्र काल निकालना हो तो इस चक्र से निकाल सकते हो।

मान लो ५ अप्रेल दोपहर का ना० का० जानना है।

ऊपर २१ अप्रेल का नाक्षत्र काल २ घण्टा दिया है=२ घ०—० मि०

२१ तारीख से ५ अप्रेल तक अन्तर (२१.५)-१६ दिन

१ दिन में ४ मिनट तो १६ दिन में=(१६×४) मि०
६४ मिनट= =१ घण्टा ४ मि० } =१—४ घटाया
शेष ०—५६

यह पिछले समय का है, इससे २१ अप्रेल के समय मे अन्तर का समय घटाना पडेगा। इसलिये ५ अप्रेल के दोपहर को ना० का०=० घण्टा ५६ मि० हुआ। यह समय घण्टा मिनट सेकण्ड मे निकलता है।

यह स्थूल रीति है। सूक्ष्म रीति से नाक्षत्र काल अंग्रेजी पञ्चाङ्ग मे दिया रहता है। किसी पुराने अंग्रेजी पञ्चाङ्ग मे जिस तारीख महीने का नाक्षत्र काल चाहिये उसी तारीख और महीने में जो नाक्षत्र काल मिले उससे काम चल जायगा, क्योकि नाक्षत्र काल में अधिक अन्तर नही पडता, प्राय. मिलता-जुलता समय रहता है।

अध्याय २०

कुंडली विचार

आकाश में जो राशिया और ग्रहो की स्थिति हैं उसका ही नकशा कुडली है। अर्थात् कुंडली आकाश का नकशा है और उसमे प्राप्त होता है कि कौन ग्रह उस समय कहा थे।

केवल कुडली चक्र देखने से ही समय, तिथि, पक्ष, मास, वर्ष आदि जन्म समय का या इष्ट समय का (जिस समय की वह कुडली बनी हो) जाना जा सकता है। इसी कारण जन्म की तिथि आदि एवम् स्थान भी निश्चित कर उसके अनुसार ठीक गणित करके शुद्ध कुडली चक्र बनाया जाता है। इस कुडली चक्र पर से जीवन की घटनाएँ और जीवन सम्बन्ध से विविध ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इस कारण कुडली क्या है और कैसे बनती है, अच्छी तरह समझ लेना चाहिये।

जैसे पृथ्वी का नकशा बनाने मे उत्तर सदैव ऊपर की ओर रहता है वैसा कुडली में नहीं होता। आकाश के नकशे (कुडली) में पूर्व दिशा ऊपर को रखते है, क्योकि पूर्व दिशा बहुत महत्व की है। यही लग्न का स्थान है जो कुडली मे मुख्य वस्तु है।

जब पूर्व दिशा ऊपर रहती है तो पश्चिम दिशा नीचे की ओर रहेगी। सूर्य जहाँ उदय होता ह वह पूर्व और जहाँ अस्त होता है वह पश्चिम दिशा होती है।

आकाश के नकशे में ठीक १२ विभाग किये गये है। इस प्रकार पूरे ३६०° के चक्र के १२ विभाग करने से प्रत्येक विभाग ३०° का होता है। इस प्रकार पूर्व दिशा (लग्न) से आरम्भ होकर जो स्थान सिर पर आता है वह दशम स्थान का दशम भाव कहलाता है, जैसे चित्र सख्या ६३ मे बताया है। दशम स्थान को दक्षिण दिशा समझो। पाताल अर्थात पैर के नीचे का स्थान चतुर्थ स्थान कहलाता है उसे उत्तर दिशा समझो।

साधारण प्रकार मे पूर्व दिशा ऊपर को रखो तो चित्र सख्या ६४ के अनुसार बनता है। इस चित्र मे दिशाओ के विभाग करने से जिस प्रकार दिशाएँ होती है वह भी बताया है। इस चक्र मे घडी के अनुसार १२ राशियो के अक लिख दिये गये है। इनमे १२ राशियो के नाम न लिखकर उसके क्रम की सख्या लिख दी गई है, जैसे मेप के लिये १, वृप २, मिथुन ३ इत्यादि। ये अक पूर्व से लिखना आरम्भ कर बाई ओर से क्रमानुसार लिखे जाते है जैसा चित्र ६४ ने बताया है। यही आकाश का नकशा है। इसमे केवल जो ग्रह जहा पर है लिखने को रह गये है, उनके लिखने की रीति आगे समझाई जायेगी।

इस नकशा को देखने से प्रगट होगा कि इसमें जो १ (मेष राशि) बताई गई है वह सूर्य का उदय स्थान है। ठीक उसके सामने पश्चिम मे अस्त स्थान पर ७ (तुला
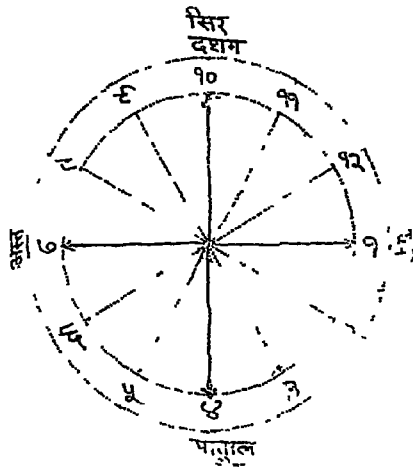
चित्र संख्या ३३

आकाश में भाव स्थान

राशि) है। दक्षिण में ख स्वस्तिक अर्थात सिर के ऊपर का आकाश का भाग या मध्यान्ह मे १० (धन राशि) है। उत्तर मे पैर के नीचे (पाताल में) या अर्द्ध रात्रि
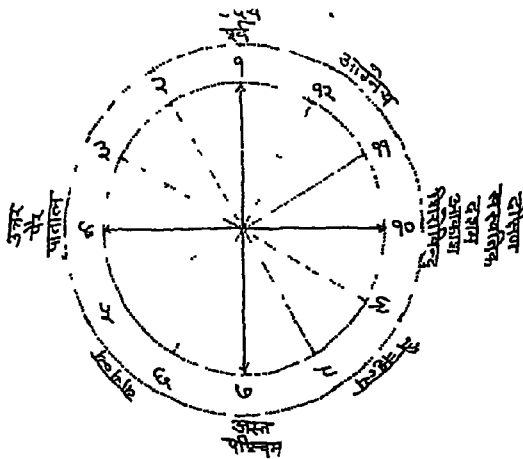
चित्र संख्या ६४

आकाश की दिशाएँ और कुंडली चक्र

स्थान में ४ (कर्क राशि) दी है। इस प्रकार ४ स्थान निश्चित हो जाने पर इनकी विदिशाओं के कोण स्थान मे भी राशियाँ है। जैसे २ (वृष राशि) के सामने ८ (वृश्चिक राशि) ३ (मिथुन राशि) के सामने ९ (धन राशि), ५ (सिंह राशि) के सामने ११ (कुम्भ राशि) और ६ (कन्या राशि) के सामने १२ (मीन राशि) आती है। इस प्रकार ये राशियाँ एक दूसरे मे ६-६ राशियो के अन्तर पर=(१८०° के अन्तर पर) हैं। एक दूसरे के सामने है अर्थात सामने की राशि १८०° के अन्तर पर होती है। ये राशिया सदा चलायमान है। (पृथ्वी की गति के कारण चलायमान दिखती है) अर्थात जो सिर के ऊपर राशि है उसके आगे की राशि पूर्व की ओर मिलेगी। पूर्व मे जो राशि है उसके आगे की राशि क्षितिज के नीचे अर्थात उत्तर की ओर मिलेगी। जैसे पूर्व में मेष राशि है तो उसके आगे उत्तर की ओर जाने मे (क्षितिज के नीचे), २ (वृष राशि), ३ (मिथुन) आदि मिलेंगी। और ठीक उत्तर में ४ (कर्क) रहेगी। इससे यह समझ लेना चाहिये कि जो राशि पश्चिम (अस्त) मे है उसके आगे क्रमानुसार राशियाँ दक्षिण (सिर) पर से होते हुए, पूर्व (उदय स्थान) की ओर घूमते हुए उत्तर (पाताल)की ओर जाती है। अर्थात राशियाँ पश्चिम मे पूर्व की ओर क्रमानुसार स्थित हैं। परन्तु घूमते समग्र राशियाँ पूर्व से पश्चिम की ओर जाती है जैसा चित्र सख्या ५ में बताया है, जैसे मेष उदय होकर पश्चिम की ओर बढेगा तब उस उदय स्थान पर वृष आयगा।

इसी को दूसरे प्रकार मे आकाश का नकशा बनाकर समझाते है। पहिले जो गोल चक्र में आकाश का नकशा बनाया था उसमें एक दूसरे को काटने वाली दिशा सूचक जो लकीरो पर ४ स्थान बनाये गये है वे ये है १-४-७-१० वहाँ ये राशियाँ बनाई गई है। इन्ही स्थानो का नाम केन्द्र स्थान (बीच के स्थान) है।

जिस प्रकार गोल चक्र मे १-४-७-१० राशियाँ केन्द्र में है (चित्र सख्या ६५ देखो) उसी प्रकार चौकोर नकशे में भी चारो केन्द्र स्थान आ जाते है और यहाँ भी चारों स्थानो के नाम केन्द्र स्थान है। चारो केन्द्र स्थान के अतिरिक्त उन दिशाओ के कोण स्थान भी यहाँ कोण में आ गये है, जिससे समझ में अब आ जायगा कि चित्र ६४ में बनाया हुआ गोल नकशा और इस चित्र ६५ के चौकोर नकशा में कोई अन्तर नही है। यही कुडली आकाश का नकशा है।

इसमें भी १ के सामने ७ (६ राशि=१८०° का अन्तर पर), ४ के सामने १०, २ के सामने ८, ३ के सामने ९, ५ के सामने ११, ६ के सामने १२ हैं। इस प्रकार १ राशि के सामने जो राशि होगी वह ६ राशि के अन्तर पर होती है। यहाँ भी मेष राशि पूर्व में है वह उदय स्थान है, तुला पश्चिम में है वह अस्त का स्थान है। मकर राशि

दक्षिण मे है वह सिर के ऊपर का (आकाश) और कर्क राशि उत्तर मे है वह पैर के नीचे का स्थान (पाताल) है।

पूर्व मे जो उदय स्थान है इसी स्थान को लग्न कहते है। जो राशि उस समय पूर्व मे हो उसे ही लग्न या उदय लग्न कहते है और उस स्थान को लग्न स्थान कहते है। कुंडली-चक्र चित्र ६५ मे जहाँ मेप राशि का सूचक अक १ लिखा है वही लग्न स्थान है।
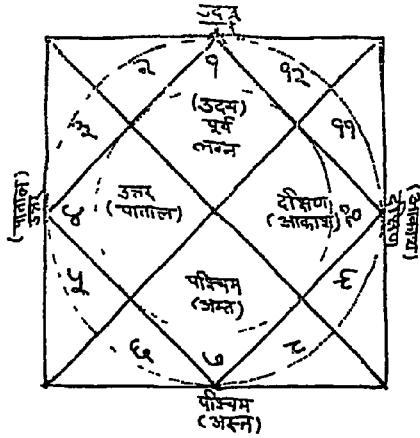
चित्र संख्या ६५
आकाश का चौकोर चित्र और कुडली चक्र

लग्न (राशिया) सदैव पृथ्वी की गति के अनुसार घूमते रहती है। कभी लग्न मे वृष, कभी मिथुन, कभी कोई राशि रहती हैं। इस कारण जो राशि जन्म समय उदय हो रही हो उसे ही लग्न कहते है और उस राशि को कुडली चक्र मे पूर्व के स्थान मे रख देते है।

मान लो किसी का जन्म कुम्भलग्न मे हुआ है अर्थात् पूर्व मे उस समय कुम्भ राशि उदय हो रही थी। कुम्भ लग्न की ११ वी राशि है तो लग्न स्थान (पूर्व) मे इस ११ के अंक को रख देते है और उसके आगे के अक क्रमश बाई ओर से रखते जायेगे जैसे ११ के आगे १२ फिर १ कोने मे रखा, फिर पाताल में २, फिर कोण मे ३ और ४, अस्त मे ५ फिर कोण मे ६–७ और दशम स्थान (सिर स्थान) मे ८ फिर कोण मे ९–१० लिख देंगे देखो चित्र संख्या ६६। इसे ही लग्न कुण्डली कहेगे। इसमे केवल ग्रहो का भरना रह गया है। यह ग्रह रहित लग्न कुण्डली हुई।

अब ध्यान मे आ गया होगा कि जो राशि उदय स्थान मे हो अर्थात् उदय हो रही हो उसे लग्न स्थान मे रखकर बाई ओर से लग्न के आगे की राशि क्रमश एक-एक

चित्र संख्या ६६

लग्न कुंडली

पूर्व उदय

१२ १०

१ ११ लग्न ९

पाताल २ ८ सिर दशम

३ ५ ७

४ ६

अस्त
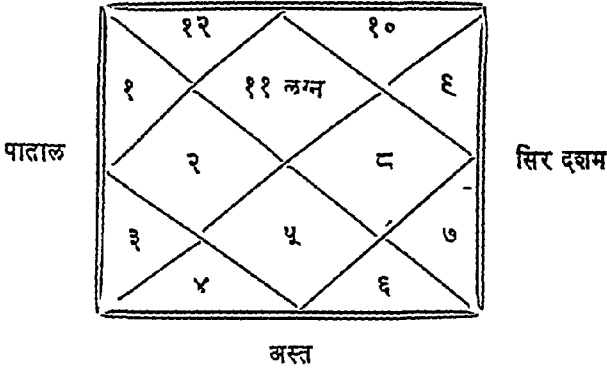
कोठे मे एक-एक राशि लिखते जाओ तो पूरी लग्न-कुण्डली वन जायगी । इससे यह भी प्रगट हुआ कि लग्न मे राशियाँ सदैव वदलती रहती है ।

भाव स्थान

पहिले वता चुके है कि पूर्व में जो राशि हो उसे उदय लग्न या लग्न कहते हैं । इसी प्रकार लग्न के आगे के प्रत्येक स्थानो के भिन्न-भिन्न नाम है जिनके स्थान और नाम जानना आवश्यक है । (१) जहाँ सूर्य उदय होता है वह उदय लग्न या लग्न (२) जहाँ सूर्य अस्त होता है वह अस्त लग्न या सप्तम लग्न=सप्तम स्थान या सप्तम भाव है । (३) जहाँ पाताल है वह चतुर्थ लग्न=चतुर्थ भाव या चतुर्थ स्थान है । (४) आकाश (सिर के ऊपर) दशम लग्न = दशम भाव या दशम स्थान है । ये चारो केन्द्र स्थान कहलाते हैं ।

(५) लग्न के आगे कोण मे दूसरे स्थान को=द्वितीय स्थान या द्वितीय भाव (६) तीसरे घर को तृतीय या तृतीय भाव (७) पाताल के आगे कोण में पाँचवा घर=पचम स्थान या पचम भाव (८) छठे को षष्ठ स्थान या षष्ठ भाव (९) अस्त के आगे कोण मे अष्टम स्थान या अष्टम भाव (१०) नवम को नवम स्थान या नवम भाव (११) दशम के आगे कोण मे एकादश को एकादश स्थान या एकादश भाव (१२) वारहवें को द्वादश स्थान या द्वादश भाव कहते है । देखो चित्र सख्या ६७ । ये भाव के स्थान स्थिर है अर्थात् इन स्थानो मे कभी परिवर्तन नही होता । ये ही स्थान भाव स्थान कहलाते है । भाव स्थिर हैं परन्तु इन भावो में आने वाली राशियाँ सदा चलती रहती हैं ।

चित्र सख्या ६७

आकाश मे द्वादश भाव

उदय

दू भा २
द्वा भा.१२
ती भा ३
लग्न १
ए. भा. ११
पातल
च. भा. ४
द. भा १०
आकाश
पं. भा. ५
स. भा ७
न. भा. ९
ष. भ. ६
अ. भा. ८

अस्त
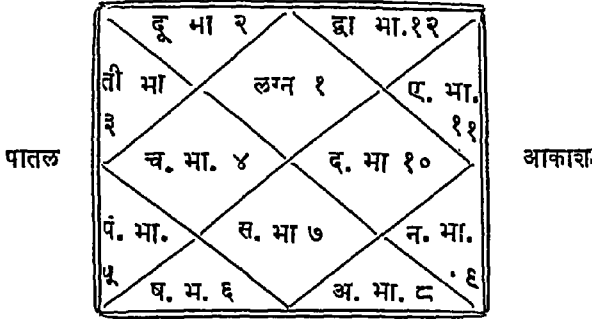
अव इन्ही स्थानो को फिर से क्रम पूर्वक समझाते है। देखो चित्र सख्या ६८ (१) जहाँ सूर्य उदय होता है वह उदय स्थान है इसी को लग्न कहते है। यहाँ कुडली मे कुम्भ राशि लग्न मे हैं। (२) आगे द्वितीय स्थान है इसमे मीन राशि है, (३) तृतीय स्थान में मेष राशि है, (४) चतुर्थ मे वृप राशि, (५) पचम मे मिथुन राशि, (६) पष्ठ में कर्क राशि (७) सप्तम भाव मे सिंह राशि, (८) अष्टम भाव मे कन्या राशि, (९) नवम भाव मे तुला राशि, (१०) दशम भाव में वृश्चिक राशि (११) एकादश भाव मे धन राशि और (१२) द्वादश भाव मे मकर राशि है।

चित्र सख्या ६८

लग्न कुडली
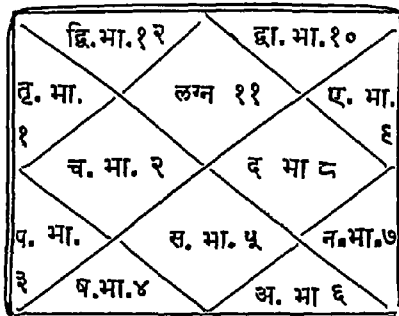
एक और उदाहरण देकर समझाते हैं देखो चित्र संख्या ६९ की भाव सूचक कुडली। यहाँ इस समय कन्याराशि उदय स्थान मे है अर्थात् कन्यालग्न उदय हो रही है। इससे लग्न मे कन्या राशि का अक ६ रखा, (२) दूसरे मे तुला, (३) तीसरे में

चित्र संख्या ६९

भाव नाम सूचक कुंडली
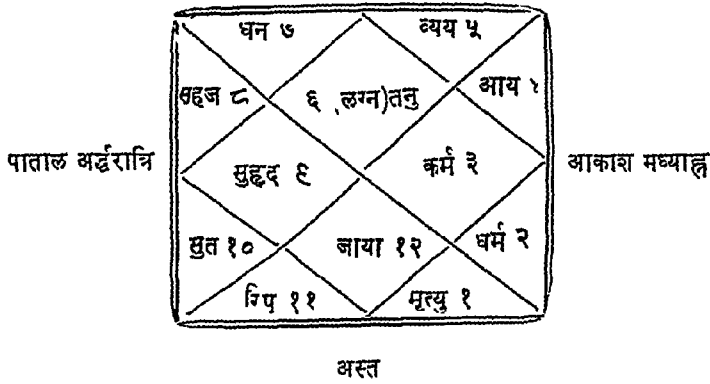
वृश्चिक, (४) चौथे भाव मे धन, (५) पचम स्थान में मकर, (६) षष्ठ मे कुभ, (७) सप्तम मे मीन, (८) अष्टम में मेष, (९) नवम मे वृष, (१०) दशम में मिथुन, (११) एकादश मे कर्क, (१२) द्वादश भाव मे सिंह राशि है।

इसी प्रकार राशियो में परिवर्तन तो होता रहता है परन्तु भाव (स्थान) मे कोई परिवर्तन नही होता।

इन सब भाव या स्थानो के विशेष नाम भी है जिनको भूलना नही चाहिये। स्थान के विशेष नाम चित्र सख्या ६९ की कुडली में बताया है।

भाव स्थान के नाम (१) लग्न=तनु स्थान (शरीर) (२) द्वितीय धन स्थान, (३) तृतीय=सहज=भ्रातृ या पराक्रम, (४) चतुर्थ=सुहृद या सुख, (५) पचम=सुत, (६) षष्ठ=रिपु, (७) सप्तम=जाया, (८) अष्टम=मृत्यु, (९) नवम=धर्म, (१०) दशम=कर्म, भाग्य, (११) एकादश = आय, (१२) द्वादश=व्यय (खर्च)। इन्ही द्वादश स्थानो को द्वादश भाव कहते है। ये भाव आगे समझाये जायेंगे।

द्वादश भावों के नाम पड़ने का कारण

(१) तनु-जिस लग्न का जन्म समय उदय होता है उसका शरीर के साथ उदय होने के कारण शरीर या तनुभाव नाम पडा।

(२) धनभाव-शरीर की रक्षा के लिये अन्न वस्त्र आदि द्रव्य आदि प्राप्त करने का विचार मन मे उत्पन्न होता है इस करण तनुभाव से दूसरे भाव का नाम धन पडा।

(३) सहज-"धन प्राप्ति कर उसकी रक्षा के लिये पराक्रम करना पडता है और इस पराक्रम मे सहायता देने वाले और धन का बटवारा करने वाले सहोदर होते हैं। इससे इसका नाम पराक्रम और सहज पडा।

(४) सुख-"पराक्रम होने पर घर और भाई आदि बंधुओ के सुख की भावना मन में उत्पन्न होती है। इससे इस नाम का गृह बंधु और सुख पडा।

(५) सुत-"ग्रह बन्धु और सुख मिलने पर पुत्र विद्या आदि प्राप्त करने की भावना हृदय मे उत्पन्न होती है। विपय सुख की अपेक्षा ब्रह्मज्ञान प्राप्त करना श्रेष्ठ है। ब्रह्मज्ञान विद्या से होता है इससे इसका नाम पुत्र और विद्या पडा।

(६) रिपु-"सुत प्राप्ति का विचार होने पर इसका साधन विवाह है, इससे सन्तान के लिए विवाह करने का विचार होता हैं। रोगी होने से विवाह नही हो सकेगा। इससे शरीर को रोगहीन बनाने का विचार उत्पन्न होता हैं। इसमे इस भाव का नाम रोगभाव पडा। रिपु भी रोगरूप है और कार्य मे बाधक होता है। इससे इसका नाम रिपुभाव भी पडा।

(७) जाया भाव—रोग से निवृत्ति होने पर विवाह के लिए स्त्री प्राप्ति का विचार उत्पन्न होता है। इससे इसका नाम जाया [स्त्री] पडा।

(८) मृत्यु भाव—स्त्री मिलने के उपरान्त मृत्यु से रक्षा के लिये आयु बढाने का विचार उत्पन्न होता हैं। इस कारण इसका नाम मृत्यु पडा।

(९) धर्म भाव—धर्म करने से ही आयु बढती है और मृत्यु दूर होती हैं। इससे इसका नाम धर्म पडा।

(१०) कर्म भाव—धर्म की वढती के लिए यज्ञ भजन पूजन आदि कर्म और कर्म की रक्षा के लिए पिता या राज्य का सहाय लेना पड़ता है। इसमे यह कर्मभाव हुआ।

(११) आय—कर्म करने के लिए धन आदि के लाभ की भावनाएँ उत्पन्न होती है। इस कारण इसे लाभ या आय भाव कहते हैं।

(१२) व्यय –लाभ होने पर उस धन को किस प्रकार व्यय करना ऐसा विचार उत्पन्न होता है। इससे इसका नाम व्यय भाव पडा।

अध्याय २१

कुंडली बनाने के लिए लग्न निकालना

कुडली बनाने के प्रथम यह जानने की आवश्यकता है कि कौन लग्न है । और इस समय जो लग्न है वह किस प्रकार जान सकते है? क्योकि विना जन्म-समय की लग्न जाने कुडली नही बन सकती । इस कारण जन्म-तिथि, महीना, सन-ईस्वी (या तिथि वार मास सम्वत) और जन्मसमय और जन्मस्थान अवश्य मालूम होना चाहिए । विना समय और तिथि आदि के जाने, लग्न नही मालूम हो सकती । कुडली मे लग्न वहुत महत्व की है, क्योकि यदि लग्न में अन्तर पड जायगा तो कुडली के फल कहने में वहुत अन्तर पडेगा । जितना ही अधिक सूक्ष्म समय होगा उतनी ही सूक्ष्म लग्न निकाली जा सकती है ।

गणित द्वारा सूक्ष्म लग्न निकालने में नवीन विद्यार्थी को आरम्भ में कठिनाई जान पडेगी । इस कारण पहिले उसका सिद्धात वता देते है । सूक्ष्म रूप मे लग्न निकालने की विधि गणित खण्ड मे मिलेगी । यहाँ प्रारम्भिक ज्ञान के लिए लग्न निकालने की स्थूल रीति वतायेंगे, क्योकि स्थूल रीति से लग्न निकालना सरल है, इसी कारण पहिले उसे उदाहरण देकर समझायेंगे ।

लग्न जानने के पहिले यह जान लेना आवश्यक है कि सूर्य कहाँ पर अर्थात किस राशि पर है । यह पचाग मे दिया रहता है । किसी किसी पचाग मे प्रात काल का, किसी मे मिश्र कालीन सूर्य स्पष्ट दिया रहता है । मिश्र काल की जो घडी पल दी है उस समय पर सूर्य किस राशि के कितने अश कला विकला पर है यह देखो । जिस राशि पर सूर्य होगा, पचाग देखने से प्रगट हो जायगा । यदि दैनिक सूर्य स्पष्ट पचाग में नही दिया है तो सूर्य की सक्राति कौन है और कब हुई पंचाग में देखो । जहाँ मेषेऽर्क वृषेऽर्क इत्यादि लिखा होगा वहाँ घडी पल भी लिखी होगी, उससे प्रगट होगा कि अमुक तिथि को अमुक समय पर अमुक सक्राति हुई है । जिस राशि पर सूर्य आता है उसी राशि की सक्राति भी कहलाती है, इसी कारण राशि के आगे अर्क. लिखा रहता है ।

सूर्य एक राशि पर लगभग एक मास रहता है और प्रतिदिन लगभग १ अश अनुमान से चलता है । ज्योतिषी को सदैव ध्यान मे रखना चाहिए कि आजकल कौन राशि पर सूर्य है, और उस राशि पर कब सूर्य आया था (कब सक्राति हुई थी) ।

मान लो श्रावण कृष्ण २ को पचाग मे कर्के चार्क ३४।२ लिखा है । इस समय से कर्क राशि मे सूर्य आया । अपने को श्रावण की अमावस्या को सूर्य की स्थिति जानना है । अमावस्या तक १५ तिथियां होती है । गत २ तिथि घटाई तो शेष १३ दिन में १३°

सूर्य चला। इससे प्रगट हुआ कि सूर्य अभी कर्क का ही है, केवल १३° लगभग कर्क के अभी व्यतीत हुए है।

जिस राशि पर सूर्य होता है वही राशि सूर्योदय पर होती है। ज्यो ज्यो सूर्य मध्याह्न की ओर बढता है उसी के अनुसार उसके आगे की लग्नो का क्रमानुसार उदय होता रहता है। इस प्रकार लग्न मे परिवर्तन होता रहता है।

मान लो वृष राशि पर सूर्य है और समय प्रात. काल का है तो सूर्य उदय के साथ-साथ वृष लग्न भी प्रात.काल उदय होगी तब उस समय कहेंगे कि वृष लग्न का उदय हुआ है। यदि ठीक उसी समय किसी का जन्म हुआ हो तो लग्न स्थान मे हम वृष राशि का सूचक २ अक लिख देगे और आगे की राशियाँ क्रमश एक-एक कोठे मे रखकर आगे की पूरी १२ राशियाँ क्रमानुसार भर देने पर जन्म समय की ग्रह रहित लग्न कुण्डली बन जायगी। इस कुण्डली मे वृष लग्न है।
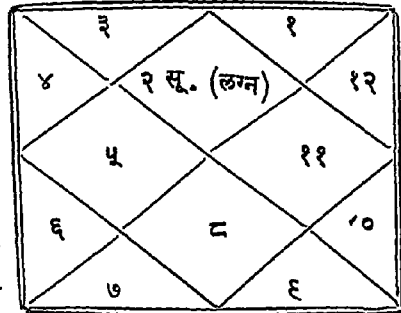
जब सूर्य ठीक सिर पर आता है तो हम कहेंगे कि सूर्य दशम स्थान पर आया है, क्योकि सिर के ऊपर का ही नाम दशम स्थान है और मध्याह्न काल मे सूर्य सिर पर आता है। मान लो किसी का जन्म ठीक दोपहर को हुआ है तो हम दशम स्थान मे, सिर पर जो राशि हो उस राशि को रख देंगे, क्योंकि उस समय दशम स्थान मे सूर्य होने से, सूर्य की वृष राशि भी दशम स्थान मे रहेगी। यहाँ सूर्य वृष राशि का है तो दशम स्थान मे वृष का
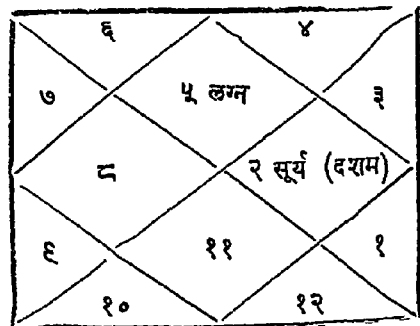
अक २ लिखकर वहाँ सूर्य भी लिख देंगे और आगे की राशियाँ क्रम पूर्वक आगे के कोठो मे भर देंगे जैसा यहाँ बताया है। इस कुण्डली मे लग्न के स्थान में ५ अक आया है यही पाचवी सिंह लग्न यहाँ पर जन्म लग्न हुई, और यही उस समय के जन्म की ग्रह रहित कुण्डली बन गई।

जब सूर्य अस्त होने लगता है तो कहेंगे कि सूर्य अस्त स्थान अर्थात् सप्तम स्थान पर आया है। यदि उस समय किसी का जन्म हो तो सप्तम स्थान पर सूर्य जिस राशि

पर हो वह राशि लिख दो और आगे सब राशियां क्रमश भर दो तो ग्रह रहित लग्नकुण्डली बन जायगी। यहाँ पर वृष राशि का सूर्य है इस कारण सप्तम स्थान [अस्त] पर वृष का २ अंक लिखा और आगे की राशियाँ भर देने से लग्न स्थान में वृश्चिक राशि आई। इससे प्रगट हुआ कि उस समय वृश्चिक लग्न थी।
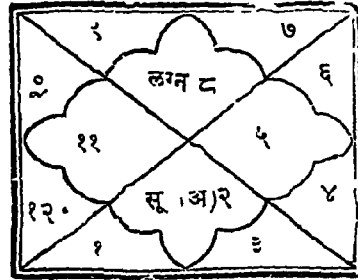
जब ठीक अर्द्ध रात्रि हो तो कहेंगे कि सूर्य पाताल [चतुर्थ स्थान] में है। यदि ठीक उस समय किसी का जन्म हो तो जिस राशि पर सूर्य हो उसे चतुर्थ स्थान में लिखकर आगे की शेष राशियाँ क्रमानुसार भर देंगे तो उस समय की ग्रह रहित कुण्डली बन जायगी। यहाँ वृष का सूर्य है तो २ को चतुर्थ स्थान [पाताल] में रखा और शेष राशियाँ क्रमानुसार भर देने पर लग्न में ११ कुंभ राशि आई तो कहेंगे कि जन्मसमय कुंभ लग्न थी और यही ग्रह रहित जन्मकुण्डली होगी।
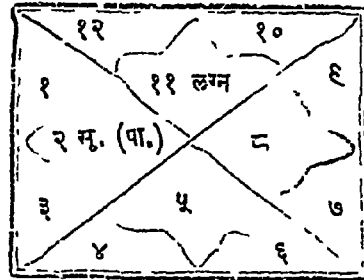
ऊपर के उदाहरण में सूर्य की स्थिति के अनुसार ठीक ठीक जन्म समय मिल जाने पर कुण्डली बना लेना सरल हो गया था।

यदि इनके अतिरिक्त और कोई समय में किसी का जन्म हो तो कैसे लग्न जानना, यहाँ बतलाते हैं।

पहिले बता चुके हैं कि एक चक्र में ३६०° और ४ समकोण होते हैं। सूर्य उदय से अस्त तक १८०° (६ राशिया) पार करता है। ३०-३० अंश की १ राशि होती है। उदय से मध्यान्ह तक ९०° का कोण बनता है और सूर्य ३ राशियाँ पार करता है। इस प्रकार उदय से अस्त तक १८०°=६ राशि पार करता है। देखो चित्रसंख्या ७०।

जब सूर्य उदय होता है तो लग्न पर होता है। मध्याह्न में दशम पर, संध्या को सप्तम पर होता है। इसी के अनुसार बीच के भाव कोण जान लेना। जैसे उदय से ३०° ऊपर सूर्य जाने पर द्वादश भाव में सूर्य पहुँचेगा। ३०° और ऊपर चढ़ने पर एकादश भाव में आवेगा। इसी प्रकार अस्त स्थान से ३०° ऊपर सूर्य है तो अष्टम स्थान में सूर्य है ऐसा कहेंगे। यदि सूर्य और ऊपर अस्त से ६०° पर मध्यान्ह की ओर है या मध्यान्ह से ३० अंश आगे बढ़ा है तो कहेंगे सूर्य नवम स्थान या नवम भाव में है।

आकाश के अर्द्ध गोलाकार को जो क्षितिज के ऊपर है ६ भागो मे अनुमान से विभक्त कर लो और वे ६ भाव (स्थान) आकाश मे कहाँ कहाँ है बताए हुए चित्र सख्या ७० के अनुसार अनुमान करो ।
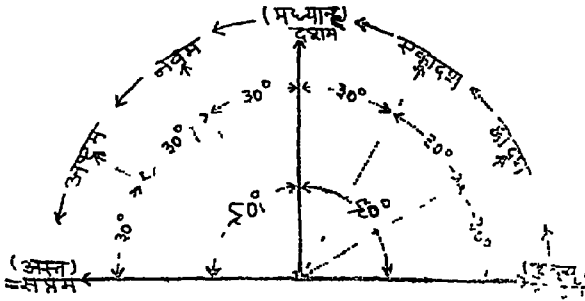
चित्र सख्या ७०

आकाश में लग्न से अस्त तक भाव

यदि दिन है तो सूर्य को देखो और अनुमान करो कि किस भाव मे है, जैसे सूर्य को देखकर कितना बजा होगा इसका अनुमान हो जाता है इसी प्रकार इसके भी अनुमान करने का अभ्यास कर लो । जिस भाव मे सूर्य हो उस भाव मे सूर्य लिख कर सूर्य की राशि भी लिख दो और आगे को राशिया सब क्रमानुसार भर दो तो उस समय की लग्न कुडली बन जायगी और लग्न के स्थान मे जो राशि आवे उसे लग्न समझो ।

अब यह बात विचारने की है कि ६ राशियो मे सूर्य उदय से अस्त तक प्राय १२ घटे मे घूमता है, इससे एक राशि मे लगभग २ घटे का औसत पडा । जैसे सूर्य ६ बजे उदय हुआ तो १२ वें भाव मे ८ बजे, ११ वें में १० बजे, दशम में १२ बजे, (दोपहर) नवम भाव में २ बजे, अष्टम में ४ बजे और सप्तम मे ६ बजे सध्या को सूर्य पहुँचेगा ।

उदय काल के अनुसार समय बदलता रहता है । इस कारण सूर्य को देखकर भाव का अनुमान करना और जिस भाव मे सूर्य दिखे उसी भाव मे सूर्य रखकर सूर्य की राशि भी उसी भाव मे लिख दो और क्रमश आगे की राशियाँ भर दो तो ग्रह रहित लग्न कुडली बन जायगी ।

ऊपर ल न प्रकार २-२ घटे का दिया है, परन्तु वास्तव में किसी लग्न का अधिक किसी का कम प्रमाण है परन्तु (१) मेप-मीन (२) वृप-कुभ (३) मिथुन-मकर [४] कर्क-धन, (५) सिंह-वृश्चिक (६) और कन्या-तुला इनका सदैव एक समान लग्न प्रमाण रहता है अर्थात् मेप और मीन का एक ही लग्न प्रमाण है । इसी प्रकार शेष २-२ राशियो की जोडी दी है उन दोनो का एक ही लग्न प्रमाण होता है ।

परन्तु यहाँ पर अधिक खट-पट में न पडकर स्थूल रूप से २-२ घण्टे का प्रत्येक राशि का उदय प्रमाण सिद्धान्त समझाने के लिए ही मान लिया है। सूक्ष्म रूप से इसका विचार गणित खण्ड मे मिलेगा।

मान लो किसी का जन्म २ वजे रात का है। यदि ६ वजे सूर्योदय हुआ है तो सूर्योदय से (१२–६)=६ घण्टा दोपहर तक + १२ घण्टा आधी रात तक + २ घण्टा और = २० घण्टा हुआ या = २४ घण्टा अर्द्ध रात्रि तक + २ घण्टा = २६ घण्टा – ६ घण्टा सूर्योदय के = २० घण्टा ÷ २ = १० राशि। १ राशि २ घण्टा में हुई तो २० घण्टा में १० राशि हुई। सूर्य वृषराशि का है तो वृषराशि से १ गिना तो १० वी राशि कुम्भ हुई। यही कुम्भ लग्न उस समय होगी।

यदि जन्म २-२५ वजे मध्याह्न का है = १२ + (२-२५) = १४ घ० २५ मि० इसमें से ६ वजे सूर्योदय का घटाया तो ८-२५ रहे। इसमें २ का भाग दिया तो ४ वार पूरा भाग लग गया और शेष वचा उसकी पाँचवी राशि हुई। वृष से पाँचवी राशि कन्या हुई। इस कारण उस समय कन्या लग्न होगी।

इसी प्रकार सूर्योदय से जन्मसमय तक घण्टा मिनट गिन कर २ का भाग देने से और सूर्योदय की राशि से उतनी सख्या गिनने पर इसका अनुमान हो जाता है कि उस समय लग्न में कौन राशि होगी।

मान लो रात्रि का समय है और चन्द्र दिखता है तो पञ्चाग से देख लो कि चन्द्र किस राशि पर है। पञ्चाङ्ग विषय में दैनिक चन्द्र देखना वतला दिया गया है। सूर्य देख कर जिस प्रकार कुण्डली वनाई थी यहाँ उसी प्रकार चन्द्र देख कर कुण्डली वना लेना। जिस स्थान पर चन्द्र आकाश में दिखेगा उसी स्थान पर चन्द्र लिख कर चन्द्र की राशि भी लिख देंगे और क्रमानुसार आगे की राशियाँ भर देंगे तो लग्न कुण्डली वन जायगी।

जैसे कन्याराशि का चन्द्र जन्म समय सिर पर है अर्थात् दशम स्थान मे है तो दशम भाव मे चन्द्र और चन्द्र की राशि का अक ६ लिख कर आगे की राशिया क्रम पूर्वक भर देने से धन लग्न आ जाती है। यह लग्न कुण्डली वन गई। यहाँ सूर्य भी लिख दो। अपने को पहले से मालूम है कि इस समय वृष राशि का सूर्य है। जहाँ वृष राशि हो सूर्य लिख दो। यहाँ पष्ठ भाव में वृष राशि है इस कारण पष्ठ भाव मे सूर्य लिख दिया।
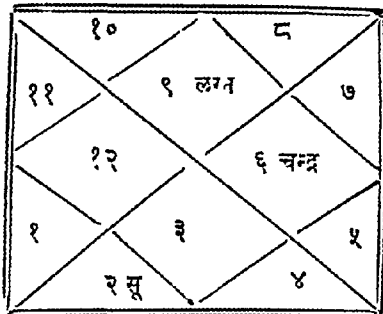
चन्द्र यदि और कोई स्थान मे हो तो आकाश में चन्द्र जिस भाव मे दिख रहा हो उस भाव मे चन्द्र और उसकी राशि लिख कर उपर्युक्त रीति से कुण्डली बना लो तो लग्न निकल आवेगी।

यदि चन्द्र भी नही है और अंधेरी रात है तो तारागणो को देखो कौन नक्षत्र कहाँ पर है और वह नक्षत्र किस राशि का है। किसी एक नक्षत्र पर से राशि जान कर देखो वह किस भाव मे है, जिस भाव मे वह राशि हो लिख कर क्रम पूर्वक शेष राशियाँ भर दो तो लग्नस्थान मे जो राशि आवे वही लग्न होगी यदि सब नक्षत्रो की अच्छी तरह पहचान हो गई हो तो कौन नक्षत्र उदय हो रहा है, कौन उदय हो चुका है उन नक्षत्रो की राशि पर से उनके ठीक-ठीक स्थान का अनुमान कर उपर्युक्त रीति से कुण्डली बना कर ल न जान लो।

परन्तु स्मरण रहे कि यह सब स्थूल मान से है। जैसे कोई पूछे कि इस समय क्या बजा होगा तो सूर्य की ओर देखकर अनुमान किया जा सकता है कि इस समय ३ बजा होगा। यदि उस समय घडी देखते है तो विदित होता है कि ३ बज कर ३० मिनट ४० सेकेण्ड हुआ है या ३ बजने को १४ मिनट बाकी हैं। इसी प्रकार उपर्युक्त रीति भी स्थूल है। इससे कुछ सूक्ष्म और शुद्ध लग्न पञ्चाङ्ग मे दिये हुए दैनिक लग्न पत्र से जानी जा सकती है।

दैनिक लग्न होरा सारिणी

यह प्रत्येक पञ्चाङ्ग मे नही दिया रहता, परन्तु काशी, जबलपुर आदि कई स्थानों के पञ्चाङ्ग मे अवश्य दिया रहता है। यद्यपि इसके विषय मे पहले बता चुके है परन्तु यहाँ और भी उदाहरण देकर समझाते है। उदाहरण के लिए जबलपुर का लोकविजय पञ्चाङ्ग सम्वत् २००० का लेते है।

पञ्चाङ्ग के तिथिपत्र के नीचे उस पक्ष भर की तिथियाँ और वार ऊपर लिखा है। बाई ओर खडी पक्ति मे लग्न के नाम दिये है और आगे वह लग्न कब तक रहेगी उसका घटा मिनट दिया है।

जन्म समय ठीक क्या बजा है देखो, यदि लडाई के समय का नया समय* (१ घंटा बढा हुआ) है तो १ घंटा घटाकर पुराना समय बनालो और लग्नपत्र में उस तिथि और वार के नीचे अपना इष्ट समय खोजो। इष्ट समय सारिणी में दिये हुए जिस समय के भीतर मिले उसके बाई ओर जो लग्न लिखी हो वही लग्न उस समय होगी।

---

* लडाई के समय तारीख १-९-१९४२ ई० से ता० १५-१०-१९४५ तक गवर्नमेन्ट की आज्ञा से भारतवर्ष मे घडियाँ १ घंटा आगे बढा दी गई थी। जिसके कारण उस समय १ घटा बढा हुआ समय प्रचलित था।

मान लो किसी का जन्म वैशाख शुक्ल ३ शुक्रवार के रात्रि के ६–४० बजे का है। लग्न पत्र के नीचे शुक्ल पक्ष की ३ तिथि शुक्रवार के नीचे ७–७ तक तुला और ६–२४ तक वृश्चिक लग्न है। अपना समय बढा हुआ समय होने से एक घटा घटा कर लिया तो (९-४०)-(१-०)=८-४० यह पुराना समय हुआ। ६–२४ के भीतर यह ८-४० है। इस कारण उस समय वृश्चिक लग्न हुई। यही जन्म लग्न हुई। वृश्चिक लग्न को लग्न स्थान मे रखकर कुडली बना लो।

ध्यान रहे लग्नपत्र में घटा मिनट मे ही समय दिया रहता है, इससे अपना समय घटा मिनट में रात या दिन का है जान कर लग्न निकाल लो। इसमे लग्न जानना बहुत ही सरल है।

किसी २ मे लग्न प्रारम्भ होने का समय दिया रहता है और समय रेलवे के अनुसार २४ बजे तक दिया रहता है। जिस प्रकार लग्नपत्र हो बुद्धि से विचार कर उपयोग करो। नये विद्यार्थी को कोई ऐसा पचाङ्ग खरीदना चाहिये जिसमे लग्नपत्र आदि आवश्यक बातें दी हो।

अध्याय २२

इष्ट काल निकाल कर लग्न सारिणी से लग्न निकाल कर जन्म कुडली बनाना।

इष्टकाल—

कोई भी विचारणीय इष्ट विषय के सम्बन्ध मे यह जानना कि उस समय क्या बजा है, वही समय इष्टकाल कहलाता है। जैसे किसी का जन्म १० बजे दिन को हुआ तो १० बजे का समय इष्टकाल घटा मे हुआ। यदि किसी ने कोई प्रश्न पूछा तो उसका उत्तर देने के लिये उस समय की लग्न जानने के लिये समय की आवश्यकता होगी वही समय इष्ट काल है। जैसे किसी ने २ बजे रात को पूछा कि अमुक द्रव्य चोरी गया है मिलेगा कि नही तो २ बजे रात का समय अपना इष्ट काल हुआ।

इष्ट काल का समय घडी पल मे होना आवश्यक है। यदि यह समय घटा मिनट में दिया हो तो इसके घडी पल बना लो। यह स्मरण रहे कि घटा मिनट का समय अर्द्ध रात्रि से आरम्भ होता है अर्थात १२ बजे रात के उपरान्त १–२ आदि बजना है और अपना इष्ट घडी पल का समय सूर्योदय के उपरान्त आरम्भ होता है अर्थात इष्ट घडी पल से प्रगट होता है कि सूर्योदय से इतने घडी पल उपरान्त किसी का जन्म आदि हुआ है।

जन्म समय घटा मिनट मे दिया रहता है उसे घडी पल में परिवर्तन करने की युक्ति यह है :—

उस दिन सूर्योदय का समय (जो घटा मिनट मे दिया रहता है) पचाग से देख लो और उस समय को इष्ट काल के घटा में से घटा दो, जो शेष घटे बचे उनके घडी पल बना लो तो इष्ट निकल आयगा। इसी को कुछ उदाहरण देकर समझाते है —

(१) यदि १२ बजे (दोपहर) के प्रथम जन्म है तो उसमे से सूर्योदय के घटा मिनट घटा कर जो बचे उसके घडी पल बना लो। मान लो सूर्योदय ५ घं० ३१ मि० पर है और जन्म ११ बजकर ५० मिनट पर हुआ है तो जन्मघटा मे सूर्योदय घटाने से ६–१६ घटा बचा। इसके घडी पल बना दे तो १५ घंटा ४७॥ प० हुए तो अपना इष्ट काल १५ घ० ४७॥ पल हुआ।

	घण्टा मिनट	घडी पल
जन्म—	११–५०	६ घण्टा=१५–०
सूर्योदय	५–३१	१६ मि०=०–४७॥
शेष	६–१६	योग=१५-४७॥

(२) यदि दोपहर (१२ बजे) के उपरान्त रात्रि के १२ बजे तक जन्म है तो जन्मसमय रेलवे टाइम के अनुसार बना लो अर्थात १२ घण्टा और जोड देना। जैसे रात के ११ बजे है तो ११ + १२=२३ बजे जन्म समझो। अब इसमे से सूर्योदय घटा कर घडी पल बना लो जैसे जन्म १२ बजे रात का है तो १२ + १२=२४ बजे जन्म समझो। यदि उस दिन सूर्योदय ५ घण्टा ४५ मिनट पर हुआ तो २४ घण्टा से सूर्योदय का समय घटाने से शेष १८ घण्टा १५ मिनट बचा, इसके ४५ घडी ३७॥ पल हुए। इस कारण ४५ घडी ३७॥ पल इष्ट काल हुआ।

	घण्टा मिनट	घडी पल
जन्म —	२४– ०	१८ घण्टा = ४५—०
सूर्योदय	५– ४५	१५ मि० = ०–३७॥
शेष	१८– १५	योग = ४५-३७॥

यदि जन्म अर्द्धरात्रि के उपरात है तो उसमे (१२ दोपहर + १२ घण्टे अर्धरात्रि के=२४) २४ घटा जोड दो और उसमे सूर्योदय घटा कर घटा मिनट के घडी पल बना लो तो इष्ट निकल आवेगा जैसे रात के २ घ० ४५ मि० पर जन्म है तो इसमें २४ घटा जोडे तो २६ घ० ४५ मि० हुए। इसमे सूर्योदय घटाया। मान लो सूर्योदय ५ घ० ३१ मि० पर था। यह घटाने से २१-१४ बचे, इसके ५३-५ घडी पल हुए। इस कारण अपना इष्ट ५३ घ० ५ प० हुआ।

	घ० मि०		घ० प०
जन्म—	२-४५	२१ घण्टा=	५२-३०
	+ २४- ०	१४ मि०=	०-३५
जन्म =	२६-४५	योग	५३- ५
सूर्योदय	५-३१		इष्ट
शेष	२१-१४		

लग्नसारिणी से लग्न देखना

किसी-किसी पञ्चाग में दैनिक लग्नपत्र नही रहता। लग्नपत्र से केवल लग्न ही विदित होती है, परन्तु यह पता नही चलता वह लग्न कितने अश युक्त हो चुकी है। इस कारण लग्न जानने की तीसरी सरल रीति यहाँ देते है। इसमे लग्न की राशि और अंश भी जान सकते है। यह लग्न सारिणी द्वारा जानी जा सकती है।

लग्नसारिणी प्रत्येक पचाग में दी रहती है। वहुधा ज्योतिषी जो गणित द्वारा लग्न निकालने की खट-पट से वचना चाहते है, इसी सारिणी द्वारा लग्न निकाल लेते है। गणित द्वारा इसमे भी सूक्ष्म रूप से शुद्ध लग्न कला विकला तक निकाली जा सकती है। प्रत्येक स्थान के अनुसार लग्न प्रमाण में कुछ अतर पड जाता है, परन्तु काम चलाने की यह सारिणी वहुत उपयोगी है, इससे लग्न तो अवश्य ठीक निकल आती है। आरंभ मे इसका उपयोग जान लेने से नया विद्यार्थी काम चला सकता है। अपने स्थान की लग्नसारिणी वनाना और लग्न निकालने का पूरा गणित, गणित खण्ड में मिलेगा।

जिस दिन की लग्न निकालना हो उस दिन के सूर्य की राशि और अश पञ्चाग से देख लो। जैसे वैशाख शुक्ल ३ सम्वत् २००० शुक्रवार को पचाग में प्रात रवि स्पष्ट ०-२२-१५-१ दिया है अर्थात् मीनराशि गत होकर मेषराशि के २२°-१५′-१″ पर प्रात काल सूर्य था।

अव लग्नसारिणी देखो। वाईं ओर खडी पक्ति में राशि दी है और ऊपर आडी पंक्ति मे अश दिये है। अपनी सूर्य की राशि ० रा २२° है (मेष के २२ अश) यहाँ कला विकला छोड दिया। अव खडी पंक्ति में देखो जहा मेष वृष आदि राशिया लिखी है वहा ० मेष, वृष १, मिथुन २ इत्यादि दिया है अर्थात् दिये हुए अंक की राशि गत हो गई और अक्षरो मे वताई राशि वर्तमान है। जैसे मेष ० दिया है इसका अर्थ यह है कि ० (मीन) राशि तो गत राशि है और मेषराशि वर्तमान राशि है। सूर्य मेष ० का है इससे मेष ० के सीध मे दाहिनी ओर, और सूर्य मेष के २२° पर है, इससे २२° के नीचे देखा (ऊपर की पक्ति में २२° खोजो)। २२° के नीचे मेष की सीध में ५-५६-०

लिखा हुआ मिला। इसमे अपना इष्ट काल जोडो। मान लो अपना इष्ट काल ८-४० वजे रात का है। उस, दिन सूर्योदय ५-३१ पर था तो ८-४० मे १२ घटा जोड के सूर्योदय घटाया और उसके घडी पल वनाये तो इष्ट ३७-५२-३० हुआ। इसमें ऊपर का प्राप्त सारिणी अक ५५-५६-० जोडा तो ४३-४८-३० घडी हुई। अव सारिणी के भीतर

घ० मि०	घ० प०
८–४०	१५ घण्टा = ३७–३०
+ १२– ०	९ मिनट = ०–२२–३०
जन्म=२०–४०	= इष्ट = ३७–५२–३०
सूर्योदय ५–३१	+ सारिणी अक ५–५६– ०
शेष=१५– ९	= ४३–४८–३०

खोजो इस अक के समीप का अक कहा है, सारिणी में इसके समीप का ४३-५९-० मिला। अपना इष्ट युक्त सारिणी अक ४३-४८-३० है। इसके समीप का यही ४३-५९-० मिलता है। इसके आगे ४४-१०-२० अक है वह वहुत अधिक है, इस कारण ४३-५९-० को ही लिया। अव इस अक के वाईं ओर देखा वृश्चिक राशि है और ऊपर अश देखा तो २२° मिला। इससे प्रगट हुआ कि वृश्चिक लग्न २२° युक्त हुए है। या ल न ७ रा० २२° है।

अव लग्न कुंडली में लग्न के स्थान पर वृश्चिक के ८ अक रख कर पूर्व वताई रीति से पूरी कुण्डली वना लो।

लग्न सारिणी से लग्न देखने की रीति यह है कि उस दिन का सूर्य जिस राशि अंश पर है पंचाग से देख लो। समझो किस राशि के कितने अश भुक्त हुए है। जैसे सूर्य रा० १०-२५° दिया है तो मकरराशि भुक्त होकर कुभ के २५° भुक्त हुए है, यहा सूर्य की राशि कुंभ लेंगे। खडी वाई ओर की पंक्ति में सूर्य की राशि मिलेगी और उपर आडी पक्ति मे अंश मिलेंगे। खडी पक्ति में वर्तमान राशियो के नाम और भुक्त राशियो के अक दिये है जैसे ६ तुला, यहा ६ कन्या राशि भुक्त हो गई है और तुला राशि वर्तमान है ऐसा समझना। सूर्य की जो राशि वर्तमान हो उसको खडी पक्ति मे खोज कर उसके आगे दाहिनी ओर सीध मे और सूर्य के इष्ट अशो के नीचे जो अक में मिलें उसमे इष्ट काल जोड दो। यदि इष्ट काल जोडने से ६० घडी से अधिक इष्ट काल हो जाता है तो उसमें से ६० घडी निकाल दो (घटा दो) और शेष (बचे हुए) अक लो। फिर इष्ट युक्त प्राप्त सारिणी अक को सारिणी में खोजो। इससे मिलता जुलता और इससे कम अंक जहा मिले उसके वाईं ओर, लग्न की राशि और सवसे ऊपर सीध में अंश लिखा मिलेगा, वही लग्न होगी। जैसे ३ कर्क लिखा हो और ऊपर १४ अंश लिखा

हो तो लग्न रा० ३-१४° समझना अर्थात कर्क के १४° भुक्त हो गये हैं। कुडली में यही कर्क ल न लिखना जैसा ऊपर उदाहरण देकर समझा दिया गया है।

जन्मसमय वहुधा घंटा मिनट में दिया रहता है, यह वहुत साधारण समय है। वास्तव में समय कई प्रकार के है। जरमन की दूसरी लडाई के समय यहा का प्रचलित स्टेण्डर्ड टाइम १ घण्टा वढा दिया गया था अर्थात् वरमा का स्टेण्डर्ड टाइम भारतवर्ष भर में प्रचलित कर दिया गया था। इस टाइम से स्टेण्डर्ड टाइम पृथक् है। धूप घड़ी के अनुसार (लोकल टाइम स्थानिक समय पृथक् है। यहाँ तो केवल प्रारंभिक वातें वताई जा रही है जिसके समझने मे नवीन विद्यार्थी को सरलता हो। समय का सूक्ष्म ज्ञान गणित खंड में मिलेगा।

संग्रह कुंडली वनाना

अभी तक लग्न निकाल कर कुडली चक्र में राशियाँ स्थापित करना ही वताया है, उसमें ग्रहो की स्थिति विचार कर ग्रह स्थापित करने को रह गया है। कुडली मे ग्रह कैसे रखना यहाँ वतलाते है।

मान लो वैशाख शुक्ल ३ सम्वत २०००, जन्मसमय ८ घं० ४० मि० वजे रात्रि की कुंडली वनाना है। लग्न सारिणी देखने से ८-४० वजे वृश्चिक लग्न आई थी।

लग्न कुंडली

९ ७
१० ८ लग्न ६
११ ५
१२ २ ४
१ सू. ३ चं
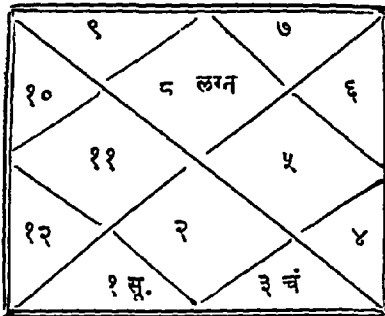
वृश्चिक लग्न होने से लग्न कुडली में, लग्न स्थान में ८ रखकर शेष राशियाँ शेष स्थानो में भर दी। अव ग्रह भरने के लिये पचाग देखो। उस दिन प्रात काल रवि स्पष्ट में सूर्य रा०-२२°-३५'-१" दिया है अर्थात् मीन गत होकर मेष राशि पर सूर्य है। इससे जहाँ मेष का अक १ लिखा है वहाँ सूर्य लिख दिया। अव चद्र को देखा तो उस दिन ३१ घं० ४५ प० उपरात मिथुन राशि में आया है। अपना इष्ट काल ३७ घ० ५२ प० ३० वि० है यह ३१-४५ से अविक है। इस कारण चद्र मिथुन राशि पर आ गया है, इससे मिथुन के अंक ३ के कोठे में चद्र रखा।

शेप ग्रह साप्ताहिक ग्रह चक्र देखकर भरना पडता है। पंचाग मे वैशाख शुक्ल ८ वुधवार का ग्रह स्पष्ट का चक्र दिया है और इसके पहिले चैत्र कृष्ण ३० (अमावस) मंगलवार का ग्रह स्पष्ट का चक्र दिया है। अपना जन्मसमय इन दोनो के वीच का है। दोनो चक्रो को देखो उनमें क्या अतर है। चंद्र और सूर्य ग्रह तो पहिले लिख चुके हैं, शेप ५ ग्रह और लिखना है।

वैशाख कृष्ण ३०

वैशाख शुक्ल ८

इन दोनो चक्रो मे वे ग्रह जिनमे कोई अतर नही है ये है -२ बु० ११ म० ३ गु० २ श० ४ रा० १० के०। इस कारण ये ग्रह अपनी कुडली मे भी इन्ही स्थानो मे लिख देंगे। अब केवल शुक्र ग्रह लिखने को रह गया है, क्योकि पहिली कुंडली में शुक्र वृषराशि में है और दूसरी कुडली मे शुक्र मिथुनराशि में आ गया है। यह कब बदला है पचाग देखो। अब देखना है कि यह अपने इष्ट काल के पहिले बदला है या उसके उपरात। पंचाग के तिथिपत्र के अत मे ये सब सूचनाएँ मिलती है।

पचाग मे वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को मिथुने शुक्र २७-१७ लिखा है अर्थात् वैशाख शुक्ल प्रतिपदा के २७-१७ इष्ट पर मिथुनराशि पर शुक्र आया है। इससे प्रगट हुआ कि इष्ट काल के प्रथम ही मिथुनराशि पर शुक्र आ गया है। इससे शुक्र को मिथुन राशि पर ही लिखना पडेगा। इस प्रकार सब ग्रह लिख देने पर अपनी लग्नकुडली तैयार हो गई।

लग्न कुंडली

चन्द्र कुंडली

अब चंद्रकुंडली तैयार करना है। चंद्र मिथुनराशि का है। इस कारण चंद्र की राशि मिथुन, लग्न स्थान मे लिखो और शेष राशियाँ क्रमानुसार भर कर, लग्नकुंडली के अनुसार ही गह भर दो तो चद्रकुडली बन जायगी। अर्थात् लग्न ८ की जगह चंद्र की राशि ३ लिख कर शेष सब राशियाँ ग्रह सहित लग्नकुडली के अनुसार ही

लिख देना पडता है। चद्र कुडली में केवल राशियो के स्थान में परिवर्तन हुआ है और कोई अंतर नही पडता जैसा ऊपर वताया है।

चद्रकुडली को राशिकुडली भी कहते है। मनुष्य के शरीर से जैसा लग्न का सम्बन्ध है उसी प्रकार चंद्र का भी सम्वन्ध है। विशेप कर चंद्रग्रह मन का द्योतक है। जन्म के चंद्र से गर्भाधान काल का लग्न से विशेप सम्वन्ध रहता है। इस कारण लग्नकुडली के साथ-साथ चद्रकुडली भी स्थापित की जाती है।

ऊपर जो कुंडली वनाने की रीति समझाई गई है यह कुडली, जन्म (जन्म पत्र वनाना), वर्ष (वर्ष फल वनाना), प्रश्न (किसी प्रश्न के निर्णय करने के समय) इत्यादि के सम्वन्ध से जहाँ जैसी आवश्यकता हो वनाई जाती है और उस पर से फल कथन किया जाता है। इस कारण यह कुडली वहुत महत्व की होती है, यह जितनी शुद्धता पूर्वक वनाई जा सके उतना ही शुद्ध फल होगा।

अध्याय २३

राशियाँ और कालाङ्ग

कालाङ्ग (काल पुरुष का अंग)

प्रत्येक राशियो का प्रभाव अग के विशेष भाग में पडता है। काल पुरुष के किस अग के विभाग में कौन राशि विशेष प्रभाव डालती है यह जानना चाहिये। कालपुरुप के अग और राशियो से सम्वन्ध है, इस कारण कालाग यहाँ वतलाते है। लग्न के विभाग के अनुसार लग्न से या मेष से क्रमानुसार गिनने पर शरीर मे इन राशियो का स्थान कहाँ पडता है, नीचे वताया है।

लग्न या राशि	मेष	वृप	मियुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुभ	मीन
मुख्य अग	सिर	मुख गला	कधा वाहु	हृदय छाती	पेट कलेजा	कमर	वस्ति मूत्रपिंड	गुह्येन्द्रिय	जाघ	घुटना	टाग	पैर
	Head	Face neck	Arms	Breast	Stomock Heart	Loins	Pelvis Reins	Private parts anus ect	Thigh	Knees	Legs	Feet

ऊपर चक्र मे इन राशियो या भाव का प्रभाव अग विशेप में वताया है, परन्तु इसके अतिरिक्त और भी अगो पर प्रभाव डालते है इस कारण इनको और भी समझाते है।

१ मेप इसका प्रभाव विशेप कर मस्तक पर पडता है। भोह के ऊपर के भाग पर इसका प्रभाव जानना। सिर और भेजा, मेधाशक्ति आदि इसके अतर्गत है।

२ वृप—भोह के नीचे मुख, नेत्र, चेहरा, गला इसमे शामिल है। इसका प्रभाव ग्रीवा (गर्दन) तक है।

३ मिथुन—दोनो हाथ, कधे, भुजा, और छाती के ऊपर के भाग तक इसका प्रभाव है। इसका प्रभाव फेफडे गला वाणी पर भी पडता है। दोनो छातियो मे भी प्रभाव करता है। ग्रीवा और छाती के बीच के भाग पर इसका प्रभाव पडता है।

४ कर्क—हृदय, चित्त, दोनो छाती और जठर (पेट की अग्नि) पर प्रभाव पडता है।

५ सिंह—कुक्षि (कूख-कोखा), पीठ, पेट, हृदय, रक्त स्थान, कलेजा पर प्रभाव करता है।

६ कन्या—कमर, पेट की अँतडियाँ और जठर पर भी प्रभाव करता है।

७ तुला—मूत्राशय, गुर्दा, वस्ति, पेट, नाभि, कटि आदि पर इसका प्रभाव पडता है। नाभि के नीचे लिंग स्थान के ऊपर के भाग मे इसका प्रभाव है। यह हाथ के पजे पर भी प्रभाव डालता है। त्वचा पर भी प्रभाव करता है।

८ वृश्चिक—गुह्येन्द्रिय, मल मूत्राशय (गुदा लिंग) आदि पर इसका प्रभाव है।

९ धन - दोनो जघाओ पर इसका प्रभाव है। शरीर का नाडी चक्र (Arterial system) धमनी चक्र आदि पर भी प्रभाव डालता है।

१० मकर—दोनो घुटने, हड्डी, हड्डियो की सधि, पर प्रभाव डालता है।

११ कुम्भ—टाँग, घुटने के नीचे का भाग पिंडली आदि पर और रक्त के वहाव पर प्रभाव डालता है। मज्जा ततु और नेत्र पर भी प्रभाव डालता है।

१२ मीन—दोनो पैर के पजे, पैर की अँगुली आदि पर प्रभाव करता है। यह आँत और पेट मे भी प्रभाव करता है।

ये प्रभाव लग्न से या लग्न गत राशियों के अनुसार पडता है।

इनका उपयोग

मान लो किसी के जन्मसमय मेप का सूर्य हो। मेप का सूर्य हो। मेप का सूर्य उच्च का होता है (जैसा आगे वताया है) तो वह मनुष्य वडे मस्तक वाला होगा। अपने मस्तक-वल से धनोपार्जन करेगा। यह मन्त्री आदि वडे ओहदे पर भी हो सकता है।

किसी राशि मे कोई पापग्रह (यह आगे समझाया है) हो तो उन राशियो से जिस अग का वोध होता है, उस अग मे व्रण (फोडे) आदि होगे या उस अग में कोई ग्रह जनित बाधा उपस्थित होगी, जैसे मेप का मगल पडा है तो, मेप से सिर पीडित होगा। यदि जन्मकाल में, जन्मलग्न मे मेपराशि हो और उसमें मगल हो तो उसके सिर में चोट आदि का भय हो। जन्मसमय जिस राशि मे पापग्रह हो उस राशि का वतलाने वाले अग मे मसादि चिन्ह होगे। इसी प्रमाण से जिस राशि मे पाप ग्रह हो या रवि-चन्द्र* पीडित हो उस राशि के अग विभाग मे रोग होगा।

भाव के अनुसार कालांग

ऊपर राशि के सम्बन्ध से कालपुरुष के अग वताये हैं वे अंग लग्नादि भाव से भी सम्बन्ध रखते है और समस्त भाव के सम्बन्ध मे भी शरीर के अगो पर प्रभाव पडने का विचार किया जाता है।

जैसे मिथुन लग्न है यह जातक (जिसकी जन्मकुडली है) का सिर हुआ। उस स्थान पर कोई ग्रह नही हो तो सिर में कोई चिन्ह न होगा। मान लो लग्न मे गुरु है, गुरु शुभ ग्रह होने से उनका कपाल या सिर सुन्दर होगा। दूसरे स्थान मे कर्क राशि है और कोई ग्रह नही है वह मुख का स्थान है, इस कारण मुख स्वच्छ होगा। तीसरा स्थान कंधा या बाहु पर प्रभाव करता है, तीसरे मे सिंह है और कोई ग्रह नही है तो बाहु स्वस्थ होगे। छठा स्थान का प्रभाव कमर पर होता है। मान लो छठे भाव मे वृश्चिक राशि है और इसमें चन्द्र है तो उसे खाज गजकर्ण आदि रोग कमर मे होगे, परन्तु चन्द्र शुभ ग्रह होने से अपनी दशा मे उस रोग को अच्छा करेगा, इत्यादि प्रकार से भाव के सम्बन्ध में भी विचार होता है।

राशि के सम्बन्ध मे विचार करने मे उस राशि पर कोई पाप या शुभ ग्रह प्रभाव करता है तो उस राशि के सम्बन्ध से वैसा अच्छा या बुरा फल होता है, जैसे वृप राशि

---

* टिप्पणी—सूर्य चन्द्र पाप ग्रह से युक्त हो या ग्रहण से युक्त हों या कोई ग्रह युद्ध में पराजित, केतु से धूमित ग्रह और उल्कापात वाला ग्रह पीडित कहलाते है। इसका स्पष्टीकरण पृथक् खड मे होगा।

पर कोई पाप ग्रह हो, पाप ग्रह होने से कठ-विकार उत्पन्न करेगा, क्योकि वृषराशि कंठ आदि पर प्रभाव डालती है। पाप ग्रह उन राशियो के सम्वन्धी अंग में अपनी दशा में अपने पदार्थ द्रव्य आदि से रोग उत्पन्न करते है। ग्रहो के पदार्थ द्रव्य आदि आगे दिये हैं।

मान लो मिथुन राशि पर जन्मसमय चन्द्र या सूर्य है। उस पर शनि या मगल की दृष्टि हो या वहाँ पर ये ग्रह हो तो छाती फेफडा सम्वन्धी रोग दमा आदि उत्पन्न करेंगे। कर्क का प्रभाव दोनो छाती पेट पाचन-इन्द्रिय पर भी होता है और स्त्रियो के शरीर में दुग्ध उत्पन्न करने के स्थान पर भी प्रभाव करता है। कर्क स्त्री राशि है, तो यह स्त्रियो के उस अग सम्बन्ध से सब प्रकार की नैसर्गिक दुर्बलता उत्पन्न करता है। वहाँ कोई पाप ग्रह होने से रोग उत्पन्न कर देता है। सिंह का प्रभाव पेट मे आहार-विहार पर भी होना है, पाप ग्रह के प्रभाव से पेट मे रोग उत्पन्न करेगा। इस राशि वाले को गरम पदार्थ चाय शराब आदि त्यागना चाहिए और आहार-विहार नियमित रखना चाहिए। इसी प्रकार कन्या राशि के सम्बन्ध से सग्रहणी आव, बद्धकोष्ठ और पेट शूल उत्पन्न होना है। तुला मूत्राशय का विकार मधु-मेह, सब प्रकार के प्रमेह आदि उत्पन्न करती है। इस राशि से त्वचा सम्बन्धी रोग भी उत्पन्न होते है। वृश्चिक के सम्वन्ध से साथो का रोग इसे जल्दी लगता है। बुरे ग्रह का प्रभाव इस पर होने से गुह्येन्द्रिय सम्वन्धी रोग होते है। धन मे पाप ग्रह का प्रभाव होने से जाँघो मे खून के विकार होते हैं। मकर राशि पर बुरा प्रभाव होने से सरदी का विकार रक्ताभिषरण सम्वन्वी दोष, सधि वात, बद्धकोष्ठ का, त्वचा रोग उत्पन्न होते है। कुंभ मे पाप ग्रह हो तो घुटना पैर मज्जा ततु आदि पर प्रभाव डालता है। यह नेत्र विकार और रक्त दोष भी उत्पन्न करता है। मीनराशि पर पाप ग्रह का प्रभाव होने से आत के रोग, सधिवात ठंड के विकार, पेट का दर्द भी उत्पन्न होते हैं।

ऊपर जो एक राशि के या भाव के अंग वतलाये हैं उसमें १ से १५° तक दाहिना भाग अंग का समझना और उपरात ३०° तक बाया भाग समझना। जब इन अगो में दाहिने या बायें मे से किसी भाग पर ग्रह प्रभाव डालेगा, यह जानना है तो उस राशि के अंशो के २ भाग कर दो, आधा भाग पूर्वार्द्ध को दाहिना और उत्तरार्द्ध को वाम भाग समझना।

अध्याय २४

राशि गुण-धर्म

प्रत्येक राशियो के पृथक्-पृथक् गुण और धर्म है। ये राशियाँ सम है या विषम, स्त्री है या पुरुष है, इनमे कौन तत्व की प्रधानता है, अल्प सतान या अधिक संतान देती हैं या वध्या राशि है। स्वभाव क्रूर है या सौम्य है। इसका प्रभाव किस दिशा में होता है और वात पित्त कफ सम्बन्ध मे इसकी प्रकृति कैसी है, ब्राह्मण आदि कौन जाति की यह सूचक है। इसका रग क्या है, क्रांति कैसी है, किस समय वह राशि बलवान रहती है और जल थल वन आदि में कहाँ विचरने वालो पर प्रभाव रखती है या इनमें से किस प्रकार के लोगो से इसका सम्बन्ध है यह सब राशियो के गुण-धर्म जानने से प्रगट होता है।

इनका उपयोग आगे बहुत पडेगा, जैसे अग्नि और वायु वाली राशियो का आपस में मित्रता होती है। भूमि और जल वाली राशियो की मित्रता होती है, परन्तु औरो को आपस मे मित्रता नही रहेगी। पुरुष राशियो को पुरुष से, स्त्री राशियो की स्त्रीराशि वालो से मित्रता होगी। पचम स्थान सतान सूचक है, उसमें मीन राशि हो तो यह मीन राशि बहुप्रसव होने से अधिक सतान होगी। यदि उस पर शुभ ग्रह की या इसके भाव स्वामी की इस पर दृष्टि हो (दृष्टि सम्बन्धी विचार आगे मिलेगा) तो अवश्य बहुत संतान होगी। इसी प्रकार प्रत्येक राशियो के सम्बन्ध से जब विचार करने की आवश्यकता होती है तो उन राशियो के गुण-धर्म पर अवश्य विचार करना चाहिये, इसी कारण इनका जानना आवश्यक है।

कोई प्रश्न, वर्ष या जन्म के समय विचारने में इनकी आवश्यकता होती है जैसे क्रूर राशि है तो क्रूर स्वभाव होगा, सौम्यराशि मे सौम्य स्वभाव होगा। प्रश्नसमय चरराशि हो तो जिस सम्बन्ध से विचार कर रहे हो वह चलता-फिरता होगा, स्थिर राशि होने मे वह स्थिर होगा। यदि उस समय राशि द्विस्वभाव राशि की लग्न हो तो दोनो मिला हुआ फल अर्थात् कभी चलता कभी स्थिर होगा। कौन चोर है, चोर की जाति आदि निर्णय मे, राशि की जाति स्त्री है या पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि व धन कहाँ होगा, कर्क राशि है तो जल समीप होगा इत्यादि बातो के विचारने में यह सहायक होता है। इस कारण राशियो का गुण-धर्म चक्र आगे दिया है।

राशि गुण धर्म चक्र—

राशि गुण धर्म	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१ सम विषम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम
२ पुरुष स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
३ चर स्थिर द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्व०	चर	स्थिर	द्विस्व०	चर	स्थिर	द्विस्व०
४ तत्व	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अ०	पृ०	वा०	जल
५ अल्प वहु प्रसव [स्त्री सग]	अल्प या वन्ध्या	मध्यम	मध्यम	वहु	अल्प या वध्या	अल्प	अल्प	वहु	अल्प	अल्प	मध्यम	वहु
६ क्रूर सौम्य स्वभाव	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य
७ दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०
८ प्रकृति	पित्त	वात	त्रिधातु	कफ	पित्त	वात	त्रिधातु	कफ	पित्त	वात	त्रि०	कफ
९ जाति	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्ष०	वै०	शूद्र	ब्रा०	क्ष०	वै०	शू०	ब्रा०
१० रङ्ग	पाटल रक्तपीत	श्वेत	हरा तोतेसरीखा	श्वेत पाटल	पूर्वार्द्ध पीला उत्तरार्द्ध धूम्र	पाडु	चित्र	श्वेत	सुवर्णसम काति	पिगल	विचित्र	पिगल भूरा
११ काति [शरीर]	रूक्ष	रूक्ष	स्निग्ध	स्नि०	रू०	रू०	स्नि०	स्नि०	रू०	रू०	स्नि०	स्नि०
१२ कौन समय वली	दिन वली	रात्रि वली	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि
१३ विचरण स्थान	पर्वत वन	सरल भूमि	वन	जलचारी	पर्वत	सरल भूमि	वन	जल	पर्वत	भूमि	वन	जल
१४ शब्द	अति	अति	दीर्घ	हीन	दीर्घ	अर्द्ध	हीन	हीन	अति	अति	खड	हीन
१५ पाद	चतुष्पद	चतुष्पद	द्विपद	अपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	बहु	द्विपद	चतुष्पद	अपद	अपद
१६ देह कृश पुष्ट	दृढ	दृढ	मृदु	मृदु	मृदु	कृश	दृढ	कृश	दृढ	दृढ	दृढ	दृढ
१७ उदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	शी	शी	शी	पृ	पृ	शी	उभयोदय
१८ चतुष्पद आदि	चौपाया	चौ	द्विपद (पु)	कीटक	चौ	पुरुष	पुरुष	कीटक	पूर्व पु उ चौ.	पूर्व-की. उ. जलचर	जलचर	जलचर

राशियों के भिन्न-भिन्न नाम

कभी-कभी राशियो के चालू नाम के अतिरिक्त और भी नाम ज्योतिप ग्रन्थो में उपयोग में आते है, उन्हे भी जान लेना चाहिये।

१ मेप—अज वस्त, प्रथम, क्रिय।

२ वृप—उक्षा, गौ, तावुरि, शुक्रभ।

३ मिथुन—वीथ, नृयुग्म, जितुम, तृतीय।

४ कर्क—चाद्र, कुलीर, चतुर्थ।

५ सिंह—कठीरव, लेप।

६ कन्या—पाथोन, पष्ठी, अवला, तन्वी।

७ तुला—जूक, वणिक, सप्तम, तौलि।

८ वृश्चिक—कौर्प्य, अष्टम, कौज, अलि।

९ धन—ॐव, धनु, तौक्षिक, चाप।

१० मकर—आकेकर, दशम, चक्र।

११ कुंभ—हृद्रोग, घट।

१२ मीन—रिप्फ, झप, अतिम।

अध्याय २५

ग्रह विचार

भाव फल विचार करने के लिए आवश्यक वातें।

किसी भाव का फल जानने के लिए इन वातो के विचार करने की पहिले वडी आवश्यकता होती है।

१—ग्रह शुभ है या पाप ग्रह।

२—उस भाव का स्वामी कौन है।

३—भाव-स्वामी पाप या शुभ ग्रह है।

४—उस भाव पर कौन कौन शुभ या पाप ग्रह की दृष्टि है।

५—उस भाव का स्वामी और उस भाव में स्थित ग्रह इन दोनो की मैत्री।

६—उस भाव मे स्थित ग्रह उच्चवल (ऊचावल) या नीचवल (नीचावल) का है।

७ वह अपने घर में है (स्वगृही) या मूल त्रिकोण है।

८—उस ग्रह के गुण धर्म क्या है।

इत्यादि वातें विचार कर ग्रह फल कहना पड़ता है, इस कारण इन सवको आगे समझायेंगे ।

ग्रहो का शुभत्व पापत्व, स्वगृह (अपना घर) या भाव स्वामी विचार ग्रहो की उच्च नीच्च मूल त्रिकोण राशिया, ग्रहो की मैत्री, ग्रहो की दृष्टि, ग्रहो के गुण-धर्म आदि आवश्यक वातें प्रत्येक ज्योतिषी को स्मरण रखना चाहिए, विना इसके जाने काम नही चलता ।

(१) ग्रह का शुभाशुभत्व विचार

ग्रह ३ प्रकार के है (१) शुभग्रह (२) पापग्रह या क्रूरग्रह (अशुभ ग्रह) और (३) मिश्रग्रह ।

१ शुभग्रह benefic - गुरु और शुक्र सदैव शुभ ग्रह समझे जाते है ।

२ पाप ग्रह melefic—रवि मगल, शनि, राहु, केतु, हर्शल और नेपच्यून । ये अशुभ ग्रह है इस कारण इनको पाप या क्रूर (दुष्ट) ग्रह कहते है । ये सदैव पाप ग्रह ही समझे जाते है ।

३ मिश्र ग्रह mixed—बुध और चन्द्र ये सयोगवश कभी पाप ग्रह कभी शुभ ग्रह समझे जाते है, इस कारण इनको मिश्र ग्रह कहते है । वास्तव में ये दोनो शुभ ग्रह ही है, परन्तु जव ये पाप ग्रह के साथ होते है तो पाप ग्रह और अकेले या शुभ ग्रह के साथ रहते है तो शुभ ग्रह कहलाते है । इनके सम्वन्ध में विशेष विचार नीचे दिया है ।

(१) वुध—यह शुभ ग्रह से युक्त (साथ) या दृष्ट (शुभ ग्रह की दृष्टि उस पर हो) या शुभग्रह से किसी प्रकार सम्वन्ध हो तो शुभ फल देता है । पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अशुभ फल देता है । वुध अकेला हो और अस्तंगत (सूर्य के साथ) न हो तो शुभ फल देता है ।

(२) चन्द्र–शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की अष्टमी तक शुभ है, इसके उपरात पाप ग्रह समझा जाता है । किसी के मत से चन्द्र शुक्ल प्रतिपदा से दशमी तक मध्यम वलवान होता है, परन्तु उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि होने से वलिष्ठ होता है । शुक्ल दशमी से कृष्ण पक्ष की पचमी तक पूर्ण वलवान होता है । कृष्ण पक्ष को पचमी के आगे १० दिन तक वलहीन होता है ।

(२) **ग्रहो का स्थान या स्वगृह** Planetary ownership or Lord of houses

स्वगृह= अपना घर । स्वक्षेत्र अपना स्थान । गृह=घर ।

यद्यपि ग्रह सूर्य के आसपास घूमते है, परन्तु सुविधा के लिए पृथ्वी के आसपास आकाश में चन्द्र, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, गुरु, शनि क्रमानुसार घूमने हुए मान लिये गये है । देखो चित्र सख्या ५ ।

इन ग्रहो में सूर्य और चन्द्रमा का एक एक अपना (निजी) घर है, और ग्रहो के २-२ घर राशि चक्र मे है। इन घरो को स्वगृह कहते है। कौन कौन राशि किस प्रकार किस ग्रह के बाटे में आई आगे समझाते हैं।

पृथ्वी के सबसे निकट ग्रह चन्द्र है, इसका प्रभाव सीधे मन पर अर्थात हृदय पर पड़ता है। राशि चक्र में कालाग विषय मे बता चुके है कि हृदय का द्योतक राशि कर्क है, इस कारण चन्द्र का स्वस्थान कर्क राशि मानी गयी है।

चन्द्र के आगे सबसे शक्तिशाली ग्रह सूर्य है। सूर्य का प्रभाव आत्मा पर पडता है और सिंह राशि आत्मा का सूचक है, इस कारण सिंह राशि सूर्य का स्वस्थान माना गया है। कर्क के उपरान्त सूर्य की सिंह राशि आती है। सूर्य के पास बुध है इस कारण उनके दोनो बाजुओ की राशि मिथुन और कन्या इन दोनो का स्वामी बुध हुआ अर्थात बुध को ये २ घर मिले। बुध यह सूर्य के पास होने से बुध को युवराज कहते है।

बुध के उपरान्त शुक्र ग्रह है, इसे दोनो ओर की २ राशियाँ वृष और तुला मिली, इस कारण शुक्र इन २ राशियो का स्वामी हुआ। शुक्र के आगे मगल है, इसे आगे को २ राशियाँ मेष और वृश्चिक मिली इस प्रकार इन २ राशियो का स्वामी मगल हुआ।

इसके आगे गुरु है उसे आगे की २ राशिया मीन और धन मिली, इस प्रकार गुरु इन २ राशियो का स्वामी हुआ।
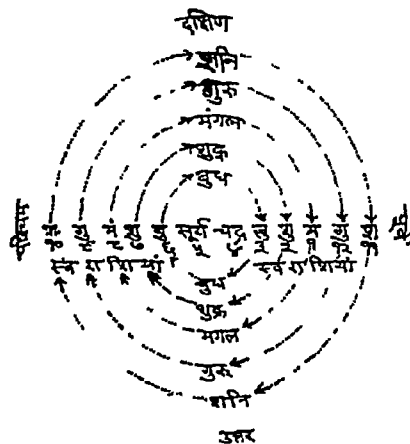
चि०—७१ ग्रहों के घूमने का क्रम और स्वराशि

गुरु के आगे आकाश मे छोर पर शनि है, इसे आजू-बाजू की शेष २ राशिया कुभ और मकर मिली। चित्र सख्या ७१ और ७२ देखने से ये सब समझ में आ जायगा कि किस क्रम से कौन २ राशियो का स्वामी कौन ग्रह हुआ। चित्रसख्या ७१ में बताया

है कि ग्रह किस प्रकार घूम रहे हैं और इनको २-२ राशिया किस प्रकार से मिली है। चित्र ७२ मे स्पष्ट रूप से समझ में आ जायगा कि ग्रहो को किस प्रकार राशिया मिली हैं।
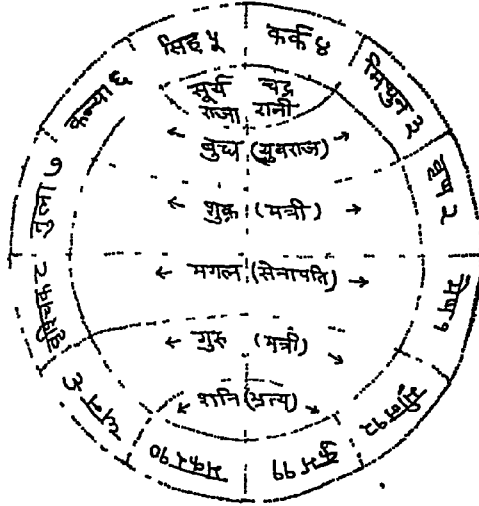
चि०—७२ ग्रहो की स्व राशि

इस प्रकार ये राशिया, इन ग्रहो के स्व-स्थान हुए और इन्ही स्थानो के स्वामी ये ग्रह हुए। स्वगृह को स्वक्षेत्र भी कहते हैं। जो ग्रह अपने स्थान मे होता है वह स्वगृही या स्वक्षेत्री कहलाता है।

ग्रहों के स्वस्थान या स्वक्षेत्र

गृह स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्शल	नेपच्यून
स्वस्थान			१	३	९	२	१०	६	१२	११	१२
की राशिया	५	४	८	६	१२	७	११				

भावस्वामी या गृहस्वामी Sign ruled by the planet

जिस भाव अर्थात् जिस स्थान मे ये राशियाँ रहती है उस भाव या स्थान के जो ग्रह स्वामी होते है वे ऊपर चक्र मे बताये हैं। ये ग्रह स्वामी कहलाते है, इनको गृह स्वामी भी कहते हैं। गृहस्वामी का उदाहरण देकर समझाते हैं।

यहाँ लग्न वृश्चिक है तो वृश्चिकराशि का स्वामी मगल होता है, मंगल वृषराशि में बैठा है, वृष राशि शुक्र का स्व-गृह (घर) है, इसलिये कहेंगे कि लग्नेश मंगल शुक्र के घर

में वैठा है। दूसरे भाव मे धन राशि है धन का स्वामी गुरु होता है। यह गुरु अपने ही घर मे वैठा है तो कहेंगे द्वितीयेश गुरु स्व-गृही या स्वक्षेत्री) है। तीसरे भाव में मकर राशि है, इसका स्वामी शनि होता है। यह शनि, बुध के घर मे है, क्योकि जहाँ शनि वैठा है वहाँ कन्या राशि है और कन्या का स्वामी बुध होता है। यहाँ तृतीये शनि बुध स्थानी है। चतुर्थ भाव मे कुम्भ राशि है जिसका स्वामी शनि होता है। यह शनि बुध के घर मे है। चतुर्थभाव में राहु वैठा है तो कहेंगे राहु शनि के घर में वैठा है, और चतुर्थेश शनि बुध के घर में है। पञ्चम मे मीन राशि है जिसका स्वामी गुरु होता है, गुरु पचमेश होकर धन-भाव मे वैठा है। षष्ठ मे मेष राशि है। इसका स्वामी मगल है। इससे कहेंगे कि षष्ठेश मगल सप्तम में है और मगल के स्थान मे सूर्य वैठा है। सप्तम मे वृष राशि है जिसका स्वामी शुक्र होता है। इससे यह शुक्र का घर है, इसमे मगल और बुध वैठे है। यहाँ बुध, पाप ग्रह मगल के साथ होने से पाप ग्रह माना जायगा। सप्तमेश शुक्र द्वादश भाव में स्वस्थानी (अपने घर का) है। अष्टम में मिथुन राशि है यह बुध का घर है, क्योकि मिथुन का स्वामी बुध होता है। इस घर का स्वामी बुध मगल के साथ, शुक्र के घर में वैठा है। नवम भाव में चंद्र स्वगृही है, क्योकि कर्क राशि यहाँ है जिसका स्वामी चद्र होता है। दशम भाव में सिहराशि है जिसका स्वामी सूर्य षष्ठ भाव में मगल के घर में वैठा है। दशम भाव मे केतु है, यह सूर्य के घर में वैठा है। एकादश स्थान में बुध स्थानी (के स्थान में) शनि है, क्योकि यहाँ कन्या राशि है जिसका स्वामी बुध होता है। द्वादश भाव में स्वस्थानी शुक्र है यहाँ तुला राशि है जो शुक्र का ही घर है।

स्वामित्व का और भी विचार

कुडली में मुख्यत. चंद्र सूर्य और लग्न से फल के विचार मे ध्यान दिया जाता है। द्वितीय स्थान से नेत्र ज्योति, कुटुम्व और विद्या का भी विचार होता है। तीसरे स्थान से कठ, वस्त्र, कर्ण आभूषण, चतुर्थ से वाहन भू सम्पत्ति आदि, पचम से ईश्वर प्रेम विद्या मंत्र आदि, षष्ठ से भृत्य, व्यसन, रोग आदि का विचार होता है। इन सव स्थानो से किस-किस वात का विचार होता है आगे बताया जायगा, यहाँ तो इससे ग्रहो का प्रभुत्व विचारना है, इस कारण सक्षेप में थोडा विचार किया गया है।

सव ग्रहों से सूर्य अधिक प्रभावशाली है, इस कारण उसे राजा कहा है। राजा सूर्य के स्थान सिंह से दूसरी राशि कन्या है। दूसरे स्थान से कुटुम्ब विद्या आदि का विचार

होता है। इस कारण सूर्य के युवराज बुध को यह स्थान (कन्या राशि) मिला। सूर्य से तीसरा तुला है, तीसरे से कण्ठ स्वर और वस्त्रादि का विचार होता है। यह सासारिक सुखो का स्थान होने से दैत्यगुरु शुक्र को यह स्थान मिला, क्योकि शुक्र सासारिक सुखो के स्वामी माने गये है। सूर्य से चतुर्थ स्थान मे वृश्चिक है। चतुर्थ से वाहन भू सम्पत्ति आदि का विचार होता है, वह स्थान सेनापति मंगल को मिला। मंगल भूमि-पुत्र है, जमीन वाहन आदि का स्वामी है। सूर्य से पचम धन है जिससे ईश्वर प्रेम विद्या आदि का विचार होता है, इससे गुरु को जो विद्या ईश्वर प्रेम आदि का दाता है, यह स्थान मिला। अन्त मे सूर्य से षष्ठ स्थान मे मकर है। षष्ठ स्थान रोग दुख आदि को प्रगट करता है, इसीसे रोग दुख आदि के स्वामी शनि को यह स्थान मिला।

इस प्रकार सूर्य राजा है जिसके समीप रानी चंद्र है। सूर्य की रानी चंद्र को इस-लिये कहा है कि चंद्र स्त्री ग्रह है और पृथ्वी के समीप होने से इसका सब से बडा प्रभाव पडता है। सूर्य आत्मा है, चद्र मन है। इस कारण सम्बन्ध होने से चन्द्र को रानी कहा है। इनके समीप युवराज बुध है। युवराज के बाजू से मंत्री शुक्र, फिर इसके बाद सेनापति मंगल को स्थान मिला है। इसके बाद मंत्री गुरु है और अन्त मे शनि दास को स्थान मिला है। यही चित्रसख्या ७२ मे बताया है।

अभ्यास २६

ग्रह की उच्च नीच राशियां Exaltation and Debilitation or fall

जिस प्रकार प्रत्येक ग्रह का स्वस्थान होता है उसी प्रकार प्रत्येक ग्रहो का एक और विशेष महत्व का स्थान माना हुआ है। यह अधिकार ग्रह की उच्चता सूचित करता है। कोई भारी अधिकार प्राप्त मनुष्य अपने अधिकार का पूर्ण उपयोग कर किसी को विशेष लाभ पहुँचा सकता है, परन्तु वह अधिकार चले जाने पर किसी को भी कोई लाभ नही पहुँचा सकता।

इसी प्रकार ग्रह के अधिकार सम्बन्ध का विचार अर्थात् उच्चता का विचार इससे होता है। इस उच्चता की पूर्ण अवधि को अर्थात् पूर्ण अधिकार होने को—deep exaltaton कहते हैं। अधिकार हीन हो जाने पर—नीच कहलाता है। उस नीचता की पूर्ण अवधि को परम नीच deep debilitation or deep fall कहते है। परम नीच ग्रह होने पर लाभ तो कुछ नही कर सकता, परन्तु नीचतापूर्ण कार्य करने की ओर उसका झुकाव हो जाता है।

परम नीच की अवधि पूर्ण होने पर ग्रह क्रमश उच्चता की ओर वढने जाता है और अन्त में परम उच्च पद को प्राप्त होता है। ऐसे ग्रह की स्थिति को आरोही Ascending कहते हैं।

ग्रह उच्चता की पूर्ण अवधि प्राप्त कर फिर क्रमश नीचता की ओर जाने लगता है ऐसे ग्रह को अवरोही Descending कहते हैं। क्रमशः घटते-घटते अन्त मे ग्रह पुन. नीचता की पूर्ण अवधि को प्राप्त होता है।

परम उच्च से परम नीच का अन्तर सदा ६ राशि (१८०°) रहता है। उच्च का अधिकार स्वगृह की अपेक्षा वडा होता है। जैसे मेप यह अग्नि तत्व की राशि है, मंगल भी अग्नि तत्व का ग्रह है, मंगल का स्वगृह भी अग्नि तत्व का है रवि मेप राशि में रहता है तो अग्नि तत्व मे आने से अधिक प्रवल हो जाता है, इस कारण मेप राशि रवि की उच्चता की राशि मानी गई है। रवि मेप राशि का होगा तो कहेंगे कि रवि उच्च का है। उच्चता की अन्तिम अवधि (सूर्य की) मेप राशि के १०° तक है। मेप के १०° के भीतर जव रवि होता है तो कहेंगे कि रवि परम उच्च का है। इसके उपरान्त रवि नीच की ओर जाने लगता है।

मेप से ६ राशि उपरान्त तुला है, इसपर सूर्य आयगा तो कहेंगे कि नीच का सूर्य है। तुला के १०° के भीतर सूर्य आने से कहेंगे सूर्य परम नीच का है। तुला के १०° उपरान्त रवि उच्च की ओर जाने लगता है।

इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहो के सम्बन्ध मे समझना। प्रत्येक ग्रहो की उच्च-नीच राशिया पृथक-पृथक है। उच्च और नीच के वीच सदा ६ राशि का अन्तर रहता है।

ग्रह की उच्च नीच राशियां

ग्रह	सूर्य	चद्र	मगल	बुव	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्च राशि	मेप	वृप	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	वृप	वृश्चिक
परम उच्च अश	१० रा	३ रा	२८	१५	५	२७	२०	२०	२०
परमोच्च राशि अंश	०-१०°	१-३°	६-२८°	५-१५°	३-५°	११-२७°	६-२०°	१-२०°	७-२०°
नीच राशि	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेप	वृश्चिक	वृप
परम नीच अश	१० रा	३	२८	१५	५	२७	२०	२०	२०
परम नीच राशि अश	६-१०°	७-३°	३-२८°	११-१५°	९-५°	५-२७°	०-२०°	७-२०°	१-२०°

हर्शल—यह ग्रह वायु राशि का है। मिथुन तुला में अच्छा माना जाता है। कुम्भ राशि मे विशेष कर बलवान होता है।

नेपच्यून यह ग्रह जल राशि का है। कर्क वृश्चिक और मीन मे बलवान होता है। जल राशि मीन मे अत्यन्त बलवान होता है।

राहु केतु—कोई राहु का उच्च धन और केतु का उच्च वृष भी मानते है।

उच्च नीच—उच्च नीच राशिया ग्रहो के मदोच्च से सम्बन्ध रखती है जिनका उपयोग सिद्धात ग्रथ मे दिया है।

इसके अतिरिक्त ग्रहो का उच्च-नीच विचार दूसरे प्रकार से भी होता है। सूर्य चद्र आदि ग्रहो का पृथ्वो से अन्तर सदैव समान नही रहता। कभी-कभी ग्रह पृथ्वी के समीप आ जाते है कभी दूर चले जाते है, क्योकि सब ग्रह अडाकार मार्ग से सूर्य के आस-पास परिक्रमा कर रहे है।

सूर्य चन्द्र का बिम्ब साधारण प्रकार से देखने मे एक समान दिखता है, परन्तु ध्यान से देखोगे तो जहा पृथ्वी को दूरी समीप या अधिक हो जाती है तो बिम्ब के आकार में कुछ अन्तर प्रगट होने लगता है, कभी कुछ बडा कभी छोटा प्रगट होता है। पृथ्वी की कक्षा से जो बिन्दु समीपवर्ती ज्योति से बहुत दूर है उसे उच्च कहते है और जो पास है उसे नीच कहते है। सूर्य दिसम्बर के अत मे अपनी कक्षा मे नीच मे होता है और जून के अन्त में उच्च का होता है। सूर्य चन्द्र उच्च होते है तो पृथ्वो से सबसे लम्बी दूरी पर होते है और उस समय उसका बिम्ब छोटा दिखता है। जब सूर्य चन्द्र पृथ्वी के पास होते है तब नीच होता है उस समय बिम्ब बडा दिखता है, ऐसे समय में ग्रहण हुआ तो खग्रास ग्रहण होता है। परन्तु यहा ऊपर जो ग्रहो की परम उच्च राशि अश और परम नीच राशि अंश बताये गये है वे स्थिर कर लिये गये है और उनमें कभी परिवर्तन नही होता। इस कारण ऊपर बताये चक्र के अनुसार ही सदा उच्च-नीच ग्रहण करना।

(३) ग्रहों का मूल त्रिकोण

जिस प्रकार ग्रहो का विशेष अधिकार उच्च के सम्बन्ध में पहिले बता चुके है उसी प्रकार एक और ग्रह का अधिकार है उसे मूल त्रिकोण कहते है। यह अधिकार उच्च से कुछ कम होता है। नीचे चक्र में बताया है कि किस राशि के कितने अश पर होने से ग्रह मूल त्रिकोण मे होता है। कुछ ग्रह की राशियाँ स्वक्षेत्र भी है, मूल त्रिकोण भी है और उच्च भी है, इसका स्पष्टीकरण करने के लिये यह भी चक्र में बतलाया है कि कितने अश तक मूल त्रिकोण और कितने अंश तक उच्च या स्वक्षेत्र है। स्वक्षेत्र अधिकार से मूल त्रिकोण अधिकार बडा होता है।

मूल त्रिकोण चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मूल त्रिकोण राशि	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धन	तुला	कुंभ
उच्च के अंश	×	३	×	१५	×	×	×
मूल त्रिकोण के अंश	२०	२७	१२	१०	१०	१५	२०
स्वक्षेत्र अंश	१०	×	१८	५	२०	१५	१०

मूल त्रिकोण के अंशो में किसी-किसी का मतभेद है, परन्तु राशियो के बारे मे कोई मतभेद नही है। यहाँ बृहत्पाराशरी मत से मूल त्रिकोण के अश दिये है।

चक्र का स्पष्टीकरण

सूर्य सिंह राशि में २०° तक मूल त्रि० होता है, शेष १०° उसके स्वक्षेत्र का है। चंद्र वृष के ३° तक उच्च उपरान्त २७° तक मूल त्रि० होगा। मगल मेष के १२° तक मूल त्रिकोण, शेष स्वक्षेत्र होगा। बुध कन्या के १५° तक उच्च, उपरान्त १०° तक मूल त्रिकोण, शेष ५° स्वक्षेत्र। गुरु धन के १०° तक मूल त्रिकोण, उपरान्त स्वक्षेत्र होगा। शुक्र तुला के १५° तक मूल त्रिकोण, उपरान्त स्वक्षेत्र होगा। शनि कुम्भ के २०° तक मूल त्रिकोण, उपरान्त स्वक्षेत्र होगा।

मूल त्रिकोण के विचार से ही ग्रह की नैसर्गिक मैत्री स्थिर हुई है, यह आगे बताया जायेगा।

साधारण प्रकार से ग्रहों के मूल त्रिकोण की राशि—

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धन	तुला	कुम्भ	कुम्भ	सिंह

अध्याय २७

ग्रहमैत्री Friendship

कुण्डली में ग्रहो की मैत्री का विचार होता है। यदि ग्रह अपने घर या मित्र के घर में होता है तो बलवान होता है। शत्रु के घर में बलहीन हो जाता है। यह सब विचारने के लिए देखना पडता है कि ग्रह जिस स्थान (घर) में बैठा है वह उसका

मित्र, शत्रु या सम हैं, इस कारण ग्रहो की मैत्री जानना आवश्यक है। सम का अर्थ है कि वह न तो मित्र है और न शत्रु है, उदासीन ग्रह है।

मैत्री दो प्रकार की है—(१) नैसर्गिक मैत्री (२) तात्कालिक मैत्री। नीचे नैसर्गिक मैत्री चक्र दिया है, उससे जान सकते है कि कौन ग्रह का कौन मित्र या शत्रु है।

नैसर्गिक मैत्री चक्र Natural friendship —

ग्रह	मित्र friend	शत्रु enemy	सम neutral
१ रवि के	चद्र, मंगल, गुरु	शनि, शुक्र, राहु	बुध
२ चद्र ,,	रवि, बुध	राहु	मगल, गुरु, शुक्र, शनि
३ मगल ,,	रवि, चद्र, गुरु	बुध, राहु	शुक्र, शनि
४ बुध ,,	रवि, शुक्र, राहु	चद्र	मगल, गुरु, शनि
५ गुरु ,,	रवि, चद्र, मगल	बुध, शुक्र	शनि, राहु
६ शुक्र ,,	बुध, शनि, राहु	रवि, चद्र	मंगल, गुरु
७ शनि ,,	शुक्र, बुध, राहु	रवि, चद्र, मगल	गुरु
८ राहु ,,	बुध, शुक्र, शनि	रवि, चद्र, मगल	गुरु

स्पष्टीकरण

रवि का मित्र चद्र, मगल, गुरु है, जब रवि, चंद्र की राशि (कर्क) या मगल की राशि (मेष, वृश्चिक) या गुरु की राशि (धन, मीन) मे से किसी राशि मे हो तो कहेंगे रवि मित्रगृही है। सूर्य का शत्रु शनि, शुक्र है, जब रवि इनके घर मे अर्थात् मकर, कुंभ (शनि की राशि) या तुला, वृष (शुक्र गृह) में होगा तो कहेंगे सूर्य शत्रु क्षेत्री है या शत्रुगृही है। जब बुध के गृह मिथुन या कन्या राशि मे से किसी मे सूर्य होगा तो कहेंगे सूर्य समक्षेत्री है। इसी प्रकार दूसरे ग्रहो की भी मैत्री का विचार चक्र के अनुसार होता है। इस मैत्री मे कोई परिवर्तन नही होता। इस कारण इसे नैसर्गिक मैत्री कहते है। यह मैत्री स्वाभाविक है।

नैसर्गिक मैत्री मे विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि कई ग्रहो की परस्पर मैत्री तो ठीक है (जैसे रवि का मित्र गुरु है तो गुरु का भी मित्र रवि है), परन्तु सब ग्रहो का ऐसा सम्बन्ध नही है। कोई ग्रह किसी से मैत्री तो मानता है, परन्तु दूसरा ग्रह उससे शत्रुता रखता है। जैसे चन्द्र, बुध से मैत्री रखता है, परन्तु बुध चद्र से शत्रुता रखता है। इसी प्रकार परस्पर मैत्री मे कही-कही विरोध पड़ता है, वह नीचे के चक्र मे समझाया है जिसका ध्यान रखना चाहिये।

मैत्री संबन्ध सूचक चक्र

जहा परस्पर मैत्री में कोई अन्तर नही है

ग्रह का	मित्र	शत्रु	सम
१ रविका	चं मं गु	श शु रा	–
२ चद्रका	रवि	राहु	–
३ मगलका	र गु	राहु	शुक्र
४ वुधका	शु रा	–	–
५ गुरुका	र. म.	–	श रा
६ शुक्रका	वु श रा.	रवि	म
७ शनिका	गु रा	रवि	गुरु
८ राहुका	वु शु श	चं मं र	गुरु

जहा मैत्री में भिन्नता है।

ग्रहका	मित्र	शत्रु	सम
१ रविका	–	–	बुध
२ चद्रका	बुध	–	मं गु शु श.
३ मगलका	चंद्र	वुध	शनि
४ वुधका	र च	चन्द्र	मं. गु श.
५ गुरुका	चद्र	वु शु	–
६ शुक्रका	–	चन्द्र	गुरु
७ शनिका	बुध	चं म.	–
८ राहुका	–	–	–

नैसर्गिक मैत्री की उत्पत्ति

ग्रहो की नैसर्गिक मैत्री मूल त्रिकोण के सम्बन्ध से स्थापित हुई है। मूल त्रिकोण के स्थान से २-१२, ५-९, ४-८ स्थान पर और उच्च के स्थान पर उस ग्रह का अच्छा प्रभाव पडता है, इस कारण उस स्थान के स्वामी से मित्रता होती है और शेष स्थान पर विरुद्ध प्रभाव पडता है। इस कारण शेष स्थान के स्वामी से शत्रुता होती है। यदि एक प्रकार से मित्र भाव और दूसरे प्रकार से शत्रुभाव आवे तो उसे सम समझना। जहाँ दोनो प्रकार से मित्र-भाव आवे वहाँ मित्र समझना। नीचे चक्र में यही समझाया गया है।
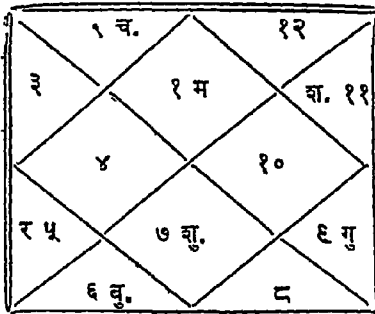
मूल त्रिकोण चक्र

रवि, चन्द्र=मित्र १ वार=मित्र, शेप ग्रह { मित्र + मित्र = मित्र
मित्र + शत्रु = सम }

चिह्न + = २ वार मित्र = मित्र
× = १ वार ,, = ,,
० = मित्र + शत्रु=सम

क्रम	ग्रह	मूल त्रिकोण	स्थान	मित्र स्थान २	१२	५	९	४	८	उच्च स्थान	शत्रु स्थान ३	६	७	१०	११	मित्र + ×	सम ०	शत्रु (शेष)
१	सूर्य	सिंह	राशि	६	४	९	१	८	१२	१	७	१०	११	२	३	गु. मं.	बु.	शु.
			स्वामी	बु.	च.	गु	मं.	म.	गु.	मं.	शु.	श.	श.	शु.	बु.	चं.		श.
				०	×	+	+	+	+	+						०		
२	चन्द्र	वृष	राशि	३	१	६	१०	५	९	२	४	७	८	११	१२		म गु	
			स्वामी	बु.	मं.	बु.	श.	सू.	गु.	शु.	चं	शु.	मं.	श.	गु.	बु. र.	गु श.	
				+	०	+	०	×	०	०		०	०	०	०			
३	मंगल	मेष	राशि	२	१२	५	९	४	८	११	३	६	७	१०	११	गु. र	शु श	बु
			स्वामी	शु.	गु.	र	गु.	च.	म.	श.	बु.	बु.	शु.	श.	श.	चं.		
				०	+	×	+	×		०			०	०	०			
४	बुध	कन्या	राशि	७	५	१०	२	६	१	६	८	११	१२	३	४	शु र.	म. गु.	चं
			स्वामी	शु.	र.	श.	शु.	गु.	मं.	बु.	मं.	श.	गु.	बु.	च		श	
				+	×	०	+	०	०		०	०	०					
५	गुरु	धन	रा.	१०	८	१	५	१२	४	४	११	२	३	६	७	म र.	श.	बु.
			स्वा.	श	म.	म.	सू.	गु.	चं	च.	श.	शु.	बु.	बु.	शु	चं.		शु.
				०	+	+	×		+	+	०							
६	शुक्र	तुला	रा.	८	६	११	३	१०	२	१२	९	१२	१	४	५	बुध	म	सू
			स्वा	मं	बु	श.	बु.	श	शु	गु	गु	गु.	म.	चं	सू.	शनि	गु	च
				०	+	+	+	+		०	०	०	०					
७	शनि	कुम्भ	रा.	१२	१०	३	७	२	६	७	१	४	५	८	९	बुध	गु	र च
			स्वा.	गु	श	बु.	शु	शु.	बु.	शु	म	चं.	सू.	मं.	गु.	शु		मं.
				०		+	+	+	+	+					०			
८	राहु	कुम्भ	शनि के समान।															

इस चक्र में मित्र और उच्च स्थान के सम्बन्ध मे ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन दोनो स्थानो में से किसी स्थान में रवि या चद्र १ ही वार आ जावे तो मित्र होते है, परन्तु दूसरे ग्रह इन स्थानो मे २ वार आवे तव मित्र होते है, १ वार आने से सम होते है, शेप शत्रु होते है। जैसे मगल का विचारना है, गुरु २ स्थान (१२-६) मे आया है तो मित्र हुआ, परन्तु रवि, चद्र १ ही वार, ५ रवि, ४ चंद्र आने से मित्र हुआ। शुक्र १ वार आया है, इसी प्रकार शनि उच्च मे १ हो वार आया है तो शु० श० सम हुए। शेप वुध वचा वह शत्रु हुआ। इसी प्रकार सबकी मैत्री विचारना।

तात्कालिक मैत्री Temporal friendship

जिस प्रकार कोई किसी का मित्र होने पर भी तात्कालिक परिस्थिति के कारण विरोव या समता का भाव दिखाता है या शत्रु रहने पर भी तात्कालिक अवस्था के अनुसार कभी मित्रता कभी समता दर्शाता है, इसी प्रकार ग्रहो की नैसर्गिक मैत्री रहने पर भी परिस्थिति के अनुसार मैत्री मे परिवर्तन हो जाता है इसको तात्कालिक मैत्री कहते है, अर्थात् तात्कालिक अवस्था के अनुसार जो मैत्री होती है उसे तात्कालिक मैत्री कहते है। मित्र=२, ३, ४ और १२, ११, १० वें स्थान के ग्रह शत्रु=१, ५, ६, ७, ८, और ९ वें स्थान के ग्रह जन्म कुंडली या किसी कुडली में कोई ग्रह जहाँ पर भी हो उस स्थान को छोड कर आगे के ३ स्थान और पीछे के ३ स्थानो में रहने वाले ग्रह उस ग्रह के तात्कालिक मित्र हो जाते हैं। शेप स्थान में रहने वाले ग्रह उसके शत्रु हो जाते है।
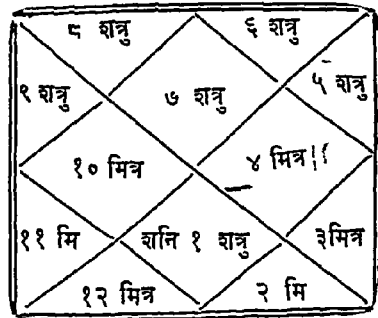
अर्थात् किसी विशेप स्थान से दूसरे, तीसरे और चौथे स्थान में और दशवें, ग्यारहवें और वारहवें स्थान में रहने वाले ग्रह मित्र हो जाते है, शेप स्थान के ग्रह शत्रु होते है। जैसे यहाँ पर शनि सप्तम स्थान में है, उससे कौन-कौन स्थान के गह मित्र शत्रु होंगे ऊपर कुडली मे वताया है।

यहाँ इसको और भी उदाहरण देकर तात्कालिक मैत्री समझाते है।

लग्न कुण्डली
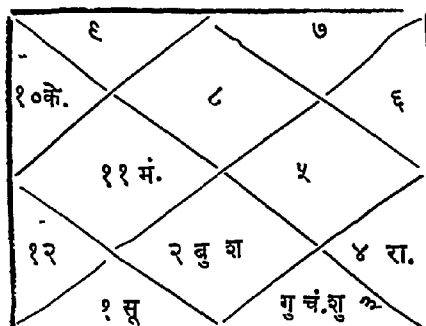
(१) सूर्य—सूर्य से दूसरे घर में शनि वुध, तीसरे मे गुरु चंद्र शुक्र, चौथे में राहु है, वारहवें में कोई ग्रह नही है, ग्यारहवें स्थान में मंगल और दशवें में केतु है ये सब सूर्य के मित्र हुए। शेष कोई नही बचे तो शत्रु कोई नही है।

(२) चंद्र के=रा० वु० श०सू० मित्र है, क्योकि राहु दूसरे घर में है, तीसरे चौथे में कोई ग्रह नही है। वारहवें श० वु०, ग्यारहवें सूर्य, दशवे कोई ग्रह नही है। ये सब मित्र हुए, शेष शत्रु हुए। चद्र के पहिले घर मे जहाँ गुरु शुक्र है, आठवें में केतु नवम मगल है। इस कारण गु० शु० के. और मगल शत्रु हुए। इसी प्रकार सव का निकालना।

(३) मगल के-सू० श० वु० के० मित्र है, क्योकि केतु वारहवें, तीसरे सूर्य, चौथे मे शनि वुध है, दूसरे दशवें और ग्यारहवें स्थान में कोई ग्रह नही है। शेप ग्रह गुरु चद्र शुक्र राहु शत्रु हुए।

(४) वुध के=गु० च० शु० रा० सू० और मं० मित्र, शेष श० और के० शत्रु है।
(५) गुरु के=रा० श० वु० सू० मित्र, शेप च० शु० मं० और के० शत्रु हैं।
(६) शुक्र के=रा० श० वु० सू० मित्र, शेष गु० च० म० और के० शत्रु है।
(७) शनि के=गु० चं० शु० रा० सू० मं० मित्र, शेप वुध और केतु शत्रु है।
(८) राहु के=गु० च० शु० श० वु० सू० मित्र, शेप म० और के० शत्रु है।

पंचधा मैत्री Average friendship

पचधा मैत्री=नैसर्गिक मैत्री + तात्कालिक मैत्री।

मित्र + मित्र = अधि मित्र	शत्रु + शत्रु = अधिशत्रु
मित्र + सम = शत्रु	शत्रु + सम = शत्रु
मित्र + शत्रु = सम	शत्रु + मित्र = सम

नैसर्गिक और तात्कालिक मैत्री मिलाकर पचधा मैत्री होती है। यदि दोनो में मित्र हो तो अधिमित्र, दोनो मे शत्रु हो तो अधिशत्रु होते है। एक में मित्र दूसरे में शत्रु हो तो सम हो जाता है। एक मे मित्र और दूसरे मे सम हो तो मित्र और एक मे शत्रु और दूसरे में सम हो तो शत्रु होता है।

इसी प्रकार विचार कर पचधा मैत्री निकालने का उदाहरण नीचे दिया है। पहिले जो तात्कालिक मैत्री निकाले हैं उसी पर से पचधा मैत्री निकालते है।

(१) नैसर्गिक मैत्री (स्थायी मैत्री) — (२) तात्कालिक मैत्री (जो पहिले निकाल चुके हैं)

ग्रह	मित्र	शत्रु	सम	ग्रह	मित्र	शत्रु
१ रवि	चं. मं. गु.	शु. श	रा. बु.	१ रवि	च बु गु शु.श मं.रा.	×
२ चंद्र	र. बु.	रा.	मं.गु.शु श.	२ चद्र	सू. बु. श. रा.	म. गु. शु.
३ मंगल	र. चं. गु.	बु. रा	शु. श.	३ मगल	सू. बु. श.	चं.गु.शु.रा.
४ बुध	र. शु. रा.	चं.	मं. गु श.	४ बुध	सू. च. गु. शु रा	श.
५ गुरु	र. चं. मं.	बु. शु	श. रा.	५ गुरु	सू. बु. श रा.	चं. मं. शु.
६ शुक्र	बु. श. रा.	र. चं.	मं. गु	६ शुक्र	सू. बु. श. रा.	चं मं. गु.
७ शनि	बु. श. रा.	र. चं.	म. गु.	७ शनि	सू.च.म गु.शु.रा.	बु.
८ राहु	बु. शु. श.	र. च.	म. गु.	८ राहु	सू.चं.बु.गु शु.श.	म.

(३) पंचधा मैत्री (उपर्युक्त दोनो को मिलाकर यहाँ रखा है)

ग्रह	अधिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
१ रवि	च० म० गु०	बु०	श० शु० रा०	०	०
२ चंद्र	र० बु०	श०	रा०	मं० गु० शु०	०
३ मगल	र०	श०	चं० गु० बु०	शु०	रा०
४ बुध	र० शु० रा०	म० गु०	चं०	श०	०
५ गुरु	र०	श० रा०	चं० मं० बु०	०	शु०
६ शुक्र	बु० श० रा०	०	र०	मं० रा०	चं०
७ शनि	शु० रा०	गु०	र० चं० म० बु०	०	०
८ राहु	बु० शु० श०	गु०	र० चं०	०	मं०

यहाँ तात्कालिक में सूर्य का शनि मित्र है, परन्तु नैसर्गिक में शत्रु है तो मित्र शत्रु मिलकर पंचधा मैत्री में सम हो गया। बुध तात्कालिक में मित्र और नैसर्गिक में सम है तो मित्र + सम=मित्र हुआ। रवि का चंद्र और मगल दोनो प्रकार से मित्र हैं तो दोनो अधिमित्र हुए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहो की मित्रता मिलान करके पचधा मैत्री चक्र में स्थापित किया है।

सम्पूर्ण ग्रहो का फल विचारते समय इसी पंचधा मैत्री चक्र के अनुसार ग्रहमैत्री का विचार होता है। जैसे लग्नकुंडली में लग्न में वृश्चिक राशि है। इसका स्वामी

लग्नकुंडली

९	७	
१० के	८	६
११ म		५
१२	२ बु शु.	४ रा
१ सू	३ चं गु श	
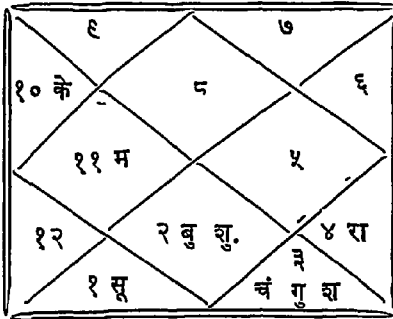
मंगल हुआ, यह मगल चतुर्थ भाव में शनि के घर (कुंभ) मे वैठा है। पचधा मैत्री में मगल का शनि मित्र है। इस कारण मगल मित्रस्थानी हुआ। वृप का शनि सप्तम मे है वृषेश्वर (वृष का स्वामी) शुक्र है, शनि का यह शुक्र पंचधा मैत्री से अधि मित्र है तो कहेंगे कि शनि अधिमित्र क्षेत्री है। इसी प्रकार सब ग्रहो की मैत्री का विचार करना पडता है। मित्र क्षेत्र मे ग्रह होने से उसका वल वढेगा और शत्रु क्षेत्र में वल घटेगा। यह सब विचार के लिये मैत्री का उपयोग होता है।

जो ग्रह मित्रक्षेत्री, स्वक्षेत्री, अधिमित्रक्षेत्री या उच्च का हो वह शुभ फल देगा। शत्रु क्षेत्री, अधिशत्रु क्षेत्री या नीच में ग्रह हो तो अनिष्ट (बुरा) फल देगा। इस कारण ग्रह का क्षेत्र जानने के लिये इस जन्मकुंडली से ग्रह क्षेत्र विचार कर नीचे देते है।

उपर्युक्त लग्नकुण्डली के ग्रहों का क्षेत्र विचार

ग्रह	सूर्य	चद्र	मगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
क्षेत्र	अधि-मित्रगृही	अधि-मित्रस्थानी	मित्र क्षेत्री	अधि-मित्रक्षेत्री	सम गृही	अधि-मित्रगृही	अधि मित्रक्षेत्री	सम क्षेत्री

अध्याय २८

ग्रहों की दृष्टि Aspects of the planets

प्रत्येक भाव राशि या ग्रह पर किस-किस ग्रह की किस प्रकार की दृष्टि है, इसका विचार भी, ग्रहो के फल निर्णय करने के लिए करना पडता है, इस कारण ग्रहो की दृष्टि का जानना आवश्यक है।

दृष्टि का स्पष्टीकरण—

जव सूर्य उदय होता है तो उसकी किरण तिरछी होने के कारण गरमी कम जान पड़ती है। ज्यो-ज्यो सूर्य का अंश वढता है त्यो-त्यो सूर्य का तेज वढता है। जव सूर्य ९०° पर अर्थात् सिर पर आता है तो उसकी किरणें सामने पडने से सूर्य का प्रभाव

अधिक वढ जाता है अर्थात् उस समय गर्मी वहुत वढ जाती है। जव दिन ढलने लगता है तो उसकी किरणें तिरछी पडती है और प्रभाव कम होते-होते अन्त में लुप्त हो जाता है। उसी प्रकार सव ही ग्रहो का प्रभाव होता है। जिस ग्रह के सामने दूसरा ग्रह होगा उस पर, उस ग्रह का पूरा प्रभाव पडेगा, जव वाजू से होगा तो कम प्रभाव पडेगा।

जिस राशि पर कोई ग्रह हो उसके ठीक सामने सातवी राशि होती है और उस समय दोनो ग्रहो का अन्तर १८०° का रहता है। इस कारण सातवें स्थान पर ग्रह का पूरा प्रभाव पडता है, इसी का नाम पूर्ण दृष्टि है। इसी प्रकार शेष दृष्टि मे किरणें तिरछी पडती है। इस कारण उनका प्रभाव कम हो जाता है।

जो ग्रह देखता है उसे द्रष्टा ग्रह कहते है। जिस ग्रह या भाव पर किसी दूसरे ग्रह की दृष्टि पडती है उसे दृश्य कहते है।

दृष्टि ४ प्रकार की होती है—(१) एक पाद दृष्टि या चौथाई दृष्टि, (२) द्विपाद दृष्टि या अर्द्ध दृष्टि, (३) त्रिपाद दृष्टि या पौन दृष्टि और (४) पूर्ण दृष्टि।

चित्र सख्या ७३ ग्रह की दृष्टि
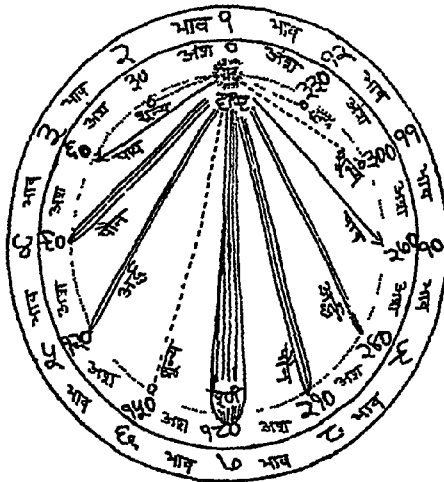
चित्र सख्या ७३ मे वताया है कि किसी ग्रह की अपने स्थान से किसी भाव पर या कितने अन्तर पर किस प्रकार की दृष्टि पड रही है। जहा दृष्टि नही है वहा ० वताया है। इस चित्र मे ग्रहो की दृष्टि के प्रकार वतला कर उनकी किरणो का प्रभाव वताया गया है। इस चक्र में भीतर किनारे पर ३०-३०° की एक-एक राशिया दी है और ग्रह स्थान से अन्तर अशो मे वताया है। चक्र के ऊपर भी १२ भाव या स्थान दिये है। इससे प्रगट होगा कि ग्रह स्थान से कौन से स्थान पर या कितने राशि अन्तर पर किस प्रकार की दृष्टि होती है।

ग्रहो के पहिले, दूसरे, छठवें, ग्यारहवें और बारहवें स्थान पर कोई दृष्टि नही होती।

मगल गुरु और शनि क्रमश पृथ्वी की परिक्रमा मार्ग की परिधि के बाहर एवम् सूर्य से दूर होने के कारण इनकी विशेष दृष्टि का विचार किया गया है।

ग्रह की ४ प्रकार की दृष्टि होती हैं—

(१) पूर्ण दृष्टि=१° पूरी=६० कला दृष्टि
(२) त्रिपाद ,, =पौन दृष्टि=०°-४५' ,,
(३) द्विपाद ,, =अर्द्ध ,, =०-३० ,,
(४) एकपाद ,, =पाव ,, =०-१५।

(१) पूर्ण दृष्टि—सम्पूर्ण ग्रह अपने स्थान से (उस समय जिस राशि मे वे हो उस राशि से) सातवी राशि या सातवें स्थान पर पूर्ण दृष्टि से देखते है। परन्तु मगल गुरु और शनि की विशेष दृष्टि होने के कारण इनकी अतिरिक्त पूर्ण दृष्टि इस प्रकार भी हैं। ये अपने स्थान से इन स्थान या राशियो पर भी पूर्ण दृष्टि से देखते है—

(१) मंगल ४ और ८ स्थान या राशि पर
(२) गुरु ५ और ९ ,, ,, ,,
(३) शनि ३ और १० ,, ,, ,,

(२) त्रिपाद दृष्टि = मगल को छोड कर सब ग्रह अपने स्थान से ४ और ८ स्थान या राशि पर त्रिपाद दृष्टि से देखते है। मंगल की त्रिपाद दृष्टि नही होती, क्योकि यही दृष्टि मगल की पूर्ण दृष्टि हो जाती है।

(३) द्विपाद दृष्टि = गुरु को छोड कर शेष सब ग्रह अपने स्थान से ५ और ९ स्थान या राशि पर द्विपाद दृष्टि से देखते है। गुरु की द्विपाद दृष्टि नही होती, क्योकि यही गुरु की पूर्ण दृष्टि है।

(४) एकपाद दृष्टि = शनि के सिवाय सब ग्रह अपने स्थान या राशि से ३ और १० स्थान या राशि को एकपाद दृष्टि से देखते है। शनि की एकपाद दृष्टि नही होती, क्योकि यह शनि की पूर्ण दृष्टि है।

दृष्टिचक्र

दृष्टि	सू. च. बु. श. रा.	मगल	गुरु	शनि	मतातर राहु	शून्य दृष्टि
पूर्ण दृष्टि	७ वा स्थान	७,४,८	७,५,९	७,३,१०	५,७,९,१२	१,२,६,११,१२
त्रिपाद ,,	४,८	०	४,८	४,८	०	
द्विपाद ,,	५,९	५,९	०	५,९	३,६	
एकपाद ,,	३,१०	३,१०	३,१०	०	२,१० कन्या का= अंधा होता है।	

चारो प्रकार की दृष्टि मे पूर्ण दृष्टि का ही विशेष प्रभाव पडता है, केतु की दृष्टि नही होती।

ग्रह जिस स्थान से पूर्ण दृष्टि से देखता है वह स्थान पूर्ण फल देता है। उदाहरण देकर ग्रहो की दृष्टि विचारना आगे समझाते है।

इस कुण्डली में मंगल चतुर्थ भाव मे है ७, ४, ८ वें स्थान पर इसकी पूर्ण दृष्टि होती है। मगल में सातवें स्थान पर सिंह राशि दशम भाव पर है, चौथे स्थान में वृप राशि सप्तम भाव मे है जहाँ वुध शनि बैठे है। मंगल मे अष्टम में कन्या राशि एकादश भाव में है। इस कारण सप्तम, दशम और एकादश भाव पर और वुध शनि ग्रहो पर मगल की पूर्ण दृष्टि पड रही है। इसी प्रकार सव ग्रहो की दृष्टि का विचार करना। दृष्टि का स्थान गिनते
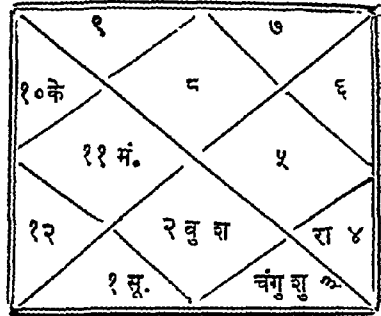
समय जिस स्थान पर ग्रह हो उस स्थान को एक गिनना चाहिये। जैसे सूर्य की एकपाद दृष्टि तीसरे स्थान पर विचारना है तो सूर्य के स्थान मेप को १ गिना तो तीसरे स्थान में अष्टम भाव आया जहाँ च. गु. शु. है, जिन पर सूर्य की एकपाद दृष्टि पड रही है।

आगे इसी कुण्डली का दृष्टिचक्र अभ्यास के लिए दिया है। इस चक्र में पूर्ण दृष्टि १° की अर्थात् ६० कला की वताई गई है। इसी प्रकार पौन दृष्टि ४५', अर्द्ध दृष्टि ३०' और पाव दृष्टि १५' की दी गई है, इसपर से दृष्टि समझ लेना।

इस चक्र के देखने से समझ में आ जायेगा कि सूर्य की पूर्ण दृष्टि वारहवें भाव और तुला राशि पर है, पौन दृष्टि लग्न व वृश्चिक राशि और नवम स्थान की कर्क राशि पर है, अर्द्ध दृष्टि द्वितीय स्थान की धन राशि और दशम भाव की सिंह राशि पर है, पाव दृष्टि तृतीय स्थान की मकर राशि और अष्टम स्थान की मिथुन राशि पर है, शेप राशियो पर कोई दृष्टि नही है। सूर्य की एकपाद दृष्टि श च. गु पर भी पड़ती है जो सप्तम स्थान मे वृप राशि पर बैठे है और अष्टम भाव मे है। राहु पर पौन दृष्टि है जो नवम भाव मे कर्क राशि पर है। केतु पर सूर्य की पाव दृष्टि है जो तृतीय भाव मे मकर राशि पर बैठा है और कोई ग्रह पर सूर्य की दृष्टि नही पडती। इसी प्रकार चक्र के अनुसार शेप ग्रहो की दृष्टि का विचार करना। यहाँ पर देखने वाला सूर्य ग्रह द्रष्टा है और शु चं. गु. जिनपर सूर्य की दृष्टि पडती है वे दृश्य है। कोई ग्रह किसी भाव या दूसरे भाव को देखता है तो कहते है कि उस ग्रह की दृष्टि अमुक ग्रह या भाव पर है।

कुंडली का दृष्टि-चक्र—

ग्रह व भाव जिन पर ग्रहों की दृष्टि पड़ती है

कुण्डली	भाव	लग्न १	द्वितीय २	तृतीय ३	चतुर्थ ४	पचम ५	षष्ठ ६	सप्तम ७	अष्टम ८	नवम ९	दशम १०	एकादश ११	द्वादश १२
	राशि	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
	ग्रह	—	—	केतु	मं.	—	सू.	बु श.	चं. गु. शु	रा.	—	—	—
द्रष्टा ग्रह													
१—सूर्य	कला	४५'	३०'	१५'	०	०	०	०	१५'	४५'	३०'	०	६०'
२—चन्द्र	,,	०	६०'	४५'	३०'	१५'	०	०	०	०	१५'	४५'	३०'
३—मगल	,,	१५'	०	०	३०'	०	१५'	६०'	३०'	०	६०'	६०'	३०'
४—बुध	,,	६०'	४५'	३०'	१५'	०	०	०	०	१५'	४५'	३०'	०
५—गुरु	,,	०	६०'	४५'	६०'	१५'	०	०	०	०	१५'	४५'	६०'
६—शुक्र	,,	०	६०'	४५'	३०'	१५'	०	०	०	०	१५'	४५'	३०'
७—शनि	,,	६०'	४५'	३०'	६०'	०	०	०	०	६०'	४५'	३०'	०
८—राहु	,,	३०'	०	३०'	४५'	६०'	१५'	०	०	०	०	१५'	४५'

कलात्मक दृष्टि=६०'=१° पूर्ण, ४५'=३/४, ३०'=१/२, १५'=१/४ दृष्टि ।

इन चारो प्रकार की दृष्टि में केवल पूर्ण दृष्टि का ही विचार होता है, क्योकि उसका फल पूर्ण रूप से अनुभव में आता है। शेष दृष्टि उपयोगी नही है, क्योकि उनका फल निश्चित नही होता। ग्रहो के दृष्टिबल निकालने में चारो प्रकार की दृष्टि का काम पडता है।

दीप्तांश Orbs of the planets

जब द्रष्टा ग्रह (देखने वाला) और दृश्यग्रह (जिसपर दृष्टि पड रही हो) इन दोनो मे थोडा ही अश का अंतर हो या अश साम्य हो तो उनकी दृष्टि होना समझी जायगी। जैसे वृष के २ अश पर कोई ग्रह हो और दूसरा ग्रह उससे सातवें घर में वृश्चिक राशि के २° पर हो, अर्थात् दोनो में पूरे १८०° का अतर हो तो कहेंगे कि वह ग्रह पूर्ण दृष्टि से देखता है। परन्तु दूसरा ग्रह वृश्चिक के २८° पर हो तो पूर्ण दृष्टि है ऐसा कहना ठीक नही, क्योकि दोनो में २०६° का अतर पड जाता है। वृष राशि के कोई भी अश पर द्रष्टा ग्रह हो और दृश्य ग्रह सप्तम स्थान में जहाँ वृश्चिक राशि है उसके कितने ही अश पर हो तो भी पूर्ण दृष्टि से देखता है ऐसा कहना ठीक नही है। कोई भाव या ग्रह पर दृष्टि करने वाला ग्रह उसी अश साम्य पर देखना चाहिये तब पूर्ण दृष्टि समझी जायेगी चाहे वह द्रष्टा ग्रह भाव के बीच में क्यो न हो। आगे-पीछे दृष्टि हुई तो निष्फल होती है।

इस कारण दोनो द्रष्टा और दृश्य ग्रह की दृष्टि किसी विशेष अंश के भीतर होना चाहिए जिससे वह दृष्टि प्रभाव शाली होती है। प्रत्येक ग्रह की दृष्टि का कुछ विशेष अन्तर नियुक्त है जिसके भीतर दृष्टि रहने से वह दृष्टि प्रभाव शाली समझी जाती है और इस अन्तर का विचार अशो मे होता है। इन अशो के अन्तर को दीप्तांश कहते है। अर्थात् दो या अधिक ग्रह जो एक दूसरे पर दृष्टि योग करते है तब वे ग्रह, दृष्टि योग करने के पूर्व किसी विशेष अंशो के भीतर एक दूसरे पर प्रभाव डालने में समर्थ होते है उस अन्तर को दीप्तांश कहते है। दीप्तांश चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दीप्तांश	१५	१२	८	७	९	७	९

द्रष्टा ग्रह की दृष्टि इन दीप्तांश के भीतर ही दृश्य ग्रह पर उसके आगे पीछे हो तो कहेंगे कि दृष्टि दीप्तांश के भीतर है। ऐसी दृष्टि का विशेष फल होता है। यदि इन दीप्तांशो के अधिक आगे या पीछे दृश्य ग्रह हो तो फल मध्यम होगा। इसका उदाहरण देकर समझाते है।

मान लो सूर्य वृप के १५° पर है और चद्र तुला के २८° पर है। वृप से तुला ६ राशि अन्तर पर अर्थात् सातवें स्थान पर होने से सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो जाती है। अव देखना है कि इनकी दृष्टि दीप्ताश के भीतर है या नही। इसके लिए दोनो के अश देखा। दोनो के अशो में (२८–१५)=१३° का अन्तर है। सूर्य का दीप्ताश १५ है तो यह अन्तर १३ दीप्ताश के भीतर है, तो कहेगे कि सूर्य की दृष्टि चद्र पर दीप्ताश के भीतर है। इसका कारण पूर्ण दृष्टि का पूरा फल होगा। ऊपर जो दृष्टि कोण के दीप्ताश वताये गये हैं वे इसी प्रकार विचारे जाते हैं।

युति Conjunction=जव-जव ग्रह एक ही राशि पर और एक ही अश पर हो तो वह युति दृष्टि योग कहलाता है। यदि दीप्ताश के अनुसार उसमें ८–१० अश से अधिक अन्तर पड जायगा तो वह युति योग प्रभाव पूर्ण नही होगा।

पाश्चात्य पद्धति से दृष्टि विचार

जिस ग्रह या भाव की दृष्टि निकालना है तो दोनो का अशो मे अन्तर निकालो और उस अन्तर के अनुसार दृष्टि का फल विचार करो। द्रष्टा और दृश्य इन दोनो के वीच मे अशो का न्यूनाधिक अन्त होने पर उस अन्तर के अनुसार दृष्टि का विशेप नाम होता है और दृष्टि योग से फल का अनुभव उसी के अनुसार होता है। ग्रह दृष्टि का शुभाशुभ फल उसी दृष्टि के अनुसार होगा।

यह विचार नही रखना चाहिये कि देखने वाला ग्रह शुभ होगा तो सदा शुभ फल देगा या पाप ग्रह होगा तो सदा अशुभ फल देगा। कभी-कभी अशुभ दृष्टि योग से शुभ ग्रह भी अशुभ फल देते हैं और अशुभ ग्रह शुभ फल देते हैं।

पाश्चात्य लोग कोई ग्रह विलकुल शुभ या अशुभ है ऐसा नही मानते, परन्तु दृष्टि योग से शुभाशुभ फल देना मानते है। जैसा गुरु यह शुभ ग्रह है उसका सम्वन्ध चद्र के साथ होने से अति शुभ फल देगा, इसके विरुद्ध शनि ये पाप ग्रह है सूर्य या चद्र के साथ शुभ दृष्टि योग करने से शुभ फल देता है। इस कारण योरोपीय जातक ग्रथो के आधार पर यहाँ दृष्टि योग समझाते है, जिसमे यह भी वताया है कि कौन दृष्टि योग शुभ या अशुभ है। दृष्टि योग सूचक सकेत के चिह्न भी दिये है, क्योंकि अग्रेजी पचाङ्गो मे केवल दृष्टि योग के चिह्न ही दिये रहते है।

दृष्टियोग

दृष्टियोग नाम	ग्रहों का अन्तर राशि या अंश	फल	चिह्न	दीप्तांश
१–सार्द्ध केन्द्रयोग Semi Square or Semi Quartile	१ १/२ = ४५	अशुभ	∠ या S □	२–३ अंश
२ त्रिरेकादश (द्विराश्यंतर) Sextile	२ = ६०	शुभ	✳ या ✳	२–३
३ केन्द्र (वर्तुलपाद) Square	३ = ९०	अति शुभ	□	४–५
४ त्रिकोण (नवम-पंचम) Trine	४ = १२०	अति शुभ	△	४–५
५ सार्द्ध चतुष्टय राश्यतर Sesqui quadrate	४ १/२=१३५	अशुभ	⚼ या ⊠	२–३ २–३
६ षडष्टक Quincunx	५ = १५०	अशुभ	⊽ या π या ⊼	
७ पूर्ण दृष्टियोग (प्रतियोग)= प्रतियुति (सप्तम दृष्टि) Opposition	६ = १८०	अशुभ	☍	८–१०
८ युति दृष्टियोग (युति योग) Conjunction	० राशि अंश समान	युति करने वाले ग्रह के शुभाशुभ धर्म पर अवलम्बित है	☌	८–१०
६ एक राश्यतर युति Semi Sextile Semi Quintile	१ = ३०	सदा अच्छा	⊻ या ⊥⊥ या S ✳	२–३
१० चक्र दशमाश Quintile	१ १/५=३३		⊥	२–३
११ चक्र पचमाश Biquintile	२ २/५=७२	कुछ अच्छा	Q	२–३
१२ चक्र सार्द्ध द्वितीयाश	४ ४/५=१४४	,,	±	२–३
१३ समक्रांति दृष्टियोग Parallel or Declination	जब नाडीवृत्त से बराबर क्रांति अंतर पर हो	युति के समान	P	२

इन ग्रहो का योग अच्छा है—

(१) गुरु का–नेप. हर्शल. श. सू. शु बु. या चं. के साथ अच्छा है।

(२) शुक्र का–बुध या चंद्र से योग अच्छा है।

(३) बुध–चंद्र का भी योग अच्छा है।

(४) शेप ग्रहो का योग कम या अधिक, स्थिति के अनुसार हानि कारक है।

युति योग—रवि–गुरु, गुरु–चद्र, चंद्र–बुध, चद्र–शुक्र, रवि–शुक्र, इनकी युति अच्छी मानी जाती है।

जव २ या अधिक ग्रह एक राशि में जितने पास-पास हो उतना ही अधिक युति का प्रभाव होता है। जैसे वृप के ४° पर ग्रह है और मेष के २६° पर सूर्य है। यहाँ सूर्य गुरु के पास जा रहा है उस समय वह सयोगी applying or approaching कहलायगा। जव सूर्य गुरु के पास मिलकर उसके आगे वढेगा अर्थात् गुरु के अंश से सूर्य के अश अधिक वढने लगे तव सूर्यवियोगी Separating ग्रह कहलायगा। जव ग्रह वियोगी होता है तो वह संयोगी अवस्था से अधिक शक्तिशाली होता है। मान लो गुरु वृप के ४° पर है और सूर्य वृप से १२° पर है तो गुरु और सूर्य का युत योग का अधिक प्रभाव पडेगा, क्योकि वह वियोगी (उससे दूर हटने की) अवस्था है।

क्रांतिसाम्य दृष्टियोग

जव दोनो ग्रहो की स्पष्ट क्राति (चाहे दोनो की क्राति एक दिशा मे या भिन्न दिशा मे हो) अंशादि मे समान आ जावे, उस समय क्रातिसाम्य दृष्टियोग होता है। इसका परिणाम युति के परिणाम से भी अधिक महत्व का समझा जाता है।

प्रति योग—अशुभ ग्रह की अशुभ दृष्टि हो तो विशेष अशुभ दायक होती है।

ग्रहो का योग इस प्रकार विचार किया जाता है —

(१) चंद्र का–सव ग्रहो के साथ, क्योकि यह शक्ति शाली है।

(२) बुध का–शु. सू म गु. श. हर्शल और नेपच्यून के साथ।

(३) शुक्र का–सू. मं. गु. श ह और ने. के साथ

(४) सूर्य का मं गु श. ह. और ने. ,,

(५) मगल का–गु. श. ह. और ने. ,,

(६) गुरु का श. ह. और ने. ,,

(७) शनि का–ह. और ने. ,,

(८) हर्शल का–ने. ,,

(९) नेपच्यून का किसी भी ग्रह के साथ योग नही होता क्योकि वह सब से कम चलने वाला है।

अपवाद---वक्री ग्रह का दूसरे ग्रहो के साथ योग हो सकता है। हर्शल जब वक्री होता है तब उस का योग किसी भी ग्रह के साथ या चद्र के साथ भी हो सकता है।

पाश्चात्य मत से ग्रहों के दीप्तांश

(१) बु. गु. शु. श ह---जब सयोगी हो=९°, वियोगी में ८° दीसाश। मान लो शुक्र शनि का युति योग है। यह योग सयोगी है, जब शुक्र शनि से ९° अतर पर होगा तो उस दृष्टि का प्रभाव होगा और दोनो का योग होकर शुक्र ८° चला जायगा तब तक इसका प्रभाव रहेगा। इसी प्रकार सब ग्रहो का विचारना।

(२) सूर्य का दीसाश अधिक है, सयोगी में १२° और वियोगी में १७° है। ये दीसाश केवल युतियोग, द्विराशि अतरयोग, त्रिकोणयोग और प्रतियोग मे विचारना।

(३) छोटे-छोटे दृष्टि योगो के दीसाश।

(१) एक राशि अतरयोग, ७२° अतरयोग, १४४° अंतरयोग में संयोगी में २° और वियोगी में ३°

(२) सार्द्ध केन्द्रयोग, सार्द्ध चतुष्टयराश्यतरयोग में, संयोगी ३°, वियोगी ४°,

(३) सूर्य और चन्द्र के दृष्टि योग में इन दीसाशो से १° और अधिक लेना।

(४) सम क्रातियोग में २° से अधिक नही लेना। मान लो मगल की क्राति १२° उत्तर और शनि की ११° दक्षिण है तो इन दोनो का सम क्रातियोग हुआ। इसी प्रकार भाव के भी दीसाश होते है।

अध्याय २६

ग्रहों का परिचय

क्रम	ग्रह	सूर्य से अन्तर मील लाख मे	सूर्य की परिक्रमा का समय	अपनी धुरी पर घूमने का समय	पृथ्वीसे कितने गुना वडा है	पृथ्वी से कितने लाख मील दूर है वडा अतर	छोटा अतर	मध्यम व्यास मील में
१	सूर्य	०	०	२५ १/३ दिन	३०००	६३-	९.८	८६०००८
२	बुध	३५७	८७ ९७दिन	२४घं ६मि.	१/८।।	१३६९	४७०	२९९२
३	शुक्र	६६८	२२४.७०दि.	२३ १/३ घ.	०.९	१६१०	२३६	७६६०
४	पृथ्वी	९२३	३६५.९८दि.	२४ घं.	१	०	०	७९१८
				घ. मि से.				
५	मंगल	१४७	६८६.९८दि.	२४-३७-२२	०.१५	२४७६	३३८	४२११
६	गुरु	४८२२	११ ८६वर्ष	१० घं.	१२८१	५९७२	३६३२	८६०००
७	शनि	८८५०	२९.४६ वर्ष	१० १/२ घं.	७०६	१०२३६	७३७३	७०५००
८	हर्शल	१७७१०	८४.२ वर्ष	१०घं. ३८मि.	६४	१९४६६	१५९५४	३१७००
९	नेपच्यून	२७७५०	१६४.७८ वर्ष	१०घं ४९मि.	८३	२८९२८	२६५७२	३४५००
१०	चद्र	०	पृथ्वी की परिक्रमा २९-५३ दि.	२७ १/३ दिन	१/४९	२४० हजार	२२१	२००० मील

ग्रहो का आकार और परिक्रमा मार्ग एक दूसरे से मिलान करने के लिये सूर्य का व्यास २ फुट मान कर उसी अनुपात से प्रत्येक ग्रहो का आकार और परिक्रमा मार्ग का व्यास नीचे चक्र मे समझाया है। चित्रसंख्या ३ भी देखो।

ग्रह	बुध	शुक्र	पृथ्वी	मगल	गुरु	शनि	हर्शल	नेपच्यून
वृत्त (मार्ग) का व्यास	१६४ फुट	२८४ फुट	४३० फुट	६५४ फुट	१/२ मील	४/५ मील	१।।मील	२।।मील
आकार	राई का दाना	मटर	वडा वटाना	वडे अल्पीन का सिर	मामूली संतरा	छोटी नारगी	मामूली वेर	वडा वेर

पृथ्वी की सूर्य से दूरी वास्तव मे ९ करोड से कुछ अधिक है। यह लम्बाई ऊपर बताये क्रम से अनुमान करने पर ४३० फुट का आधा २१५ फुट हुआ। सूर्य की दूरी

इस प्रकार अनुमान कर सकते है कि १ रेलगाडी प्रति घटे ३० मील के हिसाब से पृथ्वी से चले तो ३३८ वर्ष मे वह सूर्य के पास पहुँचेगी।

मंगल और गुरु के बीच सूर्य की परिक्रमा करते हुए और भी कई छोटे-छोटे ग्रह है। यदि उन को भी उपर्युक्त अनुपात से लघु आकार में समझने के लिये विचार करो तो व्यास १००० से १२०० फुट के भीतर लगभग ४० दाने रेत के बराबर हैं। छोटे-छोटे तो और भी अधिक हैं।

सूर्य से इतर ग्रहो की दूरी आदि का अनुमान करने से प्रगट हो जायगा कि जिस ग्रह का छोटा घेरा है वह शीघ्र परिक्रमा पूरी कर लेता है और जिसका परिक्रमा-मार्ग वडा है उसे परिक्रमा पूरी करने में अधिक समय लगता है।

किसी ग्रह का परिक्रमा-मार्ग कितना ही छोटा या वडा हो परन्तु ३६०° में ही वह मार्ग वटा रहता है जिसमें १२ राशिया होती है।

ग्रहो के भिन्न-भिन्न नाम—

यहा ग्रहो के मुख्य-मुख्य नाम सक्षेप में दिये हैं।

१ सूर्य=रवि, भानु, भास्कर, हेलि, भानुकर, भानुमान, दीप्तरश्मि, चंडाशु, अहस्कर।

२ चद्र=सोम, शीतरश्मि, अब्ज, शीताशु, मृगाक, ग्लौ, कलेश, चन्द्रमा।

३ मगल=कुज, भौम, क्रूर, वक्र, लोहिताग, पापी, आर, आवनेय।

४ वुध=चन्द्रपुत्र, ज्ञ, वित्, सौम्य, चाद्रि, वोधन, शात, श्यामगात्र, अतिदीर्घ।

५ गुरु=वृहस्पति, जीव, अगिरा, देवगुरु, वाचस्पति, ईज्य, प्रशात, त्रिदेवेशवद्य।

६ शुक्र=भृगु, सित, दैत्यगुरु, उशना, भार्गवसूनु, काण, कवि, अच्छ।

७ शनि=अर्कपुत्र, छायात्मज, यम, सौरि, असित, नील, पंगु, कोण।

८ राहु=क्रूर, कृष्णाग, तम, असुर, सैंहिकेय, कपिलाक्ष, दीर्घ, अगु, स्वर्भानु, विधुंतुद।

९ केतु=शिखी, ध्वज, शनिमुत, यमात्मज, प्राणहर, अतिपापी, गुलिक, मादि।

१० हर्शल=यूरेनश, वारुणी, प्रजापति।

११ नेपच्यून वरुण।

अध्याय ३०

ग्रह-गुणधर्म

जिस प्रकार राशियो के गुणधर्म वता चुके है उसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के गुणधर्म हैं। इनके अध्ययन करने से प्रगट होगा कि इन ग्रहो से क्या-क्या गुण प्रगट होते हैं, और ये ग्रह किस प्रकार प्रभाव उत्पन्न करते हैं और उनसे क्या-क्या विचार जा सकता है।

ये ग्रह किस धातु से सम्बन्ध रखते है, उनका तत्व क्या है, गुण कैसा है किस प्रकार की पीडा करते है, कहा पीडा करते है, कौन ग्रह किस कुटुम्वी का सूचक है, किस दशा मे विशेष प्रभाव करते है, इत्यादि बातें आगे दिये हुए चक्र से प्रगट होगी।

इन सब बातो का विचार कर फल अनुमान करना होता है। जैसे चोरी के प्रश्न मे विचार करना है, तो चोर की कौन जाति होगी, क्या अवस्था होगी, माल किस प्रकार के स्थान मे रखा होगा इत्यादि बाते राशि और ग्रह गुणधर्म के अनुसार विचार करना पडता है। ग्रह शरीर के किस स्थान पर, किस तत्व का प्रभाव, किस धातु द्वारा करता है या आजीविका किस के द्वारा मिलेगी। वह ग्रह कैसे दोप उत्पन्न करेगा, किस अग मे पीडा करेगा इत्यादि बातें ग्रह की स्थिति के अनुसार बुद्धि से विचारना पडता है।

ग्रह के गुणधर्म का उपयोग फल विचारने में काम आता है। फलित विषय मे समय-समय पर इसका उपयोग होगा। इस कारण ग्रहो के गुणधर्म ध्यान मे रखना चाहिये।

इनकी मैत्री आदि के सम्बध मे इस प्रकार भी विचार होता है—तत्व का योग=वायु (शनि), अग्नि (मगल) और पृथ्वीतत्व (बुध) ये एक ही राशि के होने से आधी (तूफान) आदि उत्पन्न करते है। अग्नि मगल) और आकाश (गुरु) से भूकम्प अग्नि (सूर्य या मगल) और जल तत्व (चन्द्र या शुक्र) से वर्पा।

ग्रह गुणधर्म-चक्र—

	गुणधर्म	सूर्य	चद्र	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
१	शरीर	आत्मा	मन (चित्त)	शारीरिक शक्ति (पराक्रम)	वाणी (विद्या)	ज्ञान बुद्धि	कामदेव (सासारिक सुख)	दुख (विपत्ति)	दुख	दुख
२	पदवी	राजा	रानी	सेनापति	युवराज	मन्त्री	मन्त्री	प्यादा (सेवक)		
३	धातु	हड्डी	रक्त	चर्वी	त्वचा	मस्तिष्क	वीर्य	नसें		
४	तत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आकाश	जल	वायु		
५	त्रिदोष (प्रकृति)	पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	कफ	वात	वात	वात
६	वर्ण(रग)	रक्त	शुक्ल	रक्त	हरा	पीत	श्वेत	कृष्ण	कृष्ण	धूम्र
७	जाति	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र	म्लेच्छ	म्लेच्छ
८	अवस्था	वृद्धा	युवा	युवा	बाल	वृद्ध	युवा	वृद्ध	वृद्ध	वृद्ध

गुण धर्म	सूर्य	चद्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
९ लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुसक	पुरुप	स्त्री	नपुसक	स्त्री	पुरुष
१० दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य
११ गुण	सत्त्वगुण	सत्त्व०	तमो०	रजो०	सत्त्व०	रजो०	तमो०	तमो०	
१२ धातु	सुवर्ण	कासा	गेरु	सुवर्ण	रत्न	रूपा	लोह	लोह	लोह
१३ रस	तिक्त	लवण	कटु	कटु (सवरस)	मधुर	अम्ल	तिक्त (कपाय)	तिक्त	तिक्त
१४ काल	मध्याह्न (वली)	अपराह्न वली	मध्याह्न	पूर्वाह्न (प्रात.)	पूर्वाह्न (प्रात)	अपराह्न,	सध्या	सध्या	संध्या
१५ स्वभाव	स्थिर	चर	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	तीक्ष्ण	तीक्ष्ण	
१६ भूमि	पशुभूमि	आर्द्रभू.	दग्ध०	श्मशान	ग्राम०	जल०	ऊपर	ऊपर	ऊपर
१७ पाद	चतुष्पद	सर्प (अपद)	चौपाया	पक्षी	द्विपद (मनुष्य)	द्विपद	पक्षी	सर्प	पक्षी
१८ आकार	चौकोन	स्थूल	चौकोन	गोल	गोल	खंड(अर्द्ध-चन्द्राकार)	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
१९ मणि	माणिक	मोती	प्रवाल	पन्ना	पुष्यराग	हीरा	नीलम	पिरोजा	लसण
२० स्वभाव	उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप
२१ चर आदि	स्थिर	चर	चर	द्विस्वभाव	स्थिर	चर	पक्षी (स्थिर)	चर	पक्षी (स्थिर)
२२ स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	संधि	विवर	विवर
२३ ,,	देव-स्थान	जल०	अग्नि	क्रीडा	भण्डार	शय्या	गज ढेर)	विल	विल
२४ ग्रहभेद	मूलग्रह	धातुग्रह	धातु	जीव०	जीव०	मूल	धातु	धातु	धातु
२५ ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	वसंत	शिशिर	शिशिर	शिशिर
२६ जल	शुष्क	सजल	शुष्क	जलराशि मे सजल	जलराशि मे सजल	सजल	शुष्क	शुष्क	शुष्क
२७ पीडा-स्थान	सिर या मुख	छाती या गला	पीठ पेट	हाथ पैर	कमर	गुप्त स्थान	घुटना जाघ		
२८ फल समय	अयनमें	मुहूर्त	दिन	ऋतु	महीना	पक्ष	वर्ष		
२९ कारक	पिता	माता	भाई	मामा	सतति	स्त्री	खर्च मृत्यु		
३० दृष्टि	ऊर्ध्व	सम	ऊर्ध्व	तिरछी	सम	तिरछी	अधो	अधो	अधो

ग्रहो के कल्पित स्वरूप के चित्र

चित्र सख्या ७४ — चित्र संख्या ७५ — चित्र संख्या ७६

चित्र सख्या ७७ — चित्र सख्या ७८ — चित्र संख्या ७९

चित्र सख्या ८० — चित्र संख्या ८१ — चित्र सख्या ८२

किस ग्रह से क्या विचारना (संक्षेप में)

१ सूर्य से—आत्मा पिता, स्वभाव, नीरोगता, सामर्थ्य और लक्ष्मी का विचार।

२ चन्द्र से--चित्त, माता, प्रसन्नता, वृद्धि, राजा, सम्पत्ति का विचार।

३ मगल से---पराक्रम, भाई पुत्र, भाई विरादर, रोग गुण, पृथ्वी।

४ बुध से--विद्या, विवेक, वाणी, मामा, मित्र वाधव।

५ गुरु से---बुद्धि, ज्ञान, पुत्र, धन, शरीर की पुष्टि।

६ शुक्र से—कामदेव, स्त्री, वाहन, भूषण, सुख

७ शनि से—आयु, जीवन, मृत्यु का कारण विपत्ति।

७ राहु से—पितामह (दादा) का विचार।

९ केतु से—माता मह (नाना)।

अध्याय ३१

ग्रहों का प्रभाव

१ सूर्य—यह सब ग्रहो से बलवान ग्रह है, क्योंकि सब ग्रहो का चालक है और इसी से सब ग्रहो को तेज मिलता है। यह महत पद दर्शक, दैवी शक्ति, आत्मा, अग्नि देवता, सरकार राज दरबार आदि कार्य का कारक ग्रह है। सब राशियो मे बलवान सिंहराशि का स्वामी है। यह कुण्डली में बलवान होता है तो ऐश्वर्य शौर्य, मान, कीर्ति दैवी व नैतिक सद् गुण आरोग्य, अधिकार ये सब प्राप्त होते है। रवि के प्रभाव से मनुष्य उदार, सत्य काम की अभिलाषा करने वाला, प्रतिभा सम्पन्न, गरीबो पर दया करने वाला होता है।

रवि निर्बल होता है तो अभिमानी, अपनी बडाई करने वाला अधिकार का दुरुपयोग करने वाला होता है। मनुष्य शरीर में हृदय, रक्त का अभिसरण, जीवन शक्ति, हृदय का विकार, पित्त विकार नेत्र रोग, पेट के नीचे विकार प्रगट करता है।

२ चन्द्र यह पृथ्वी का उपग्रह है। इसका प्रभाव कुंडली में बहुत महत्व का है। जिस प्रमाण से ये बलवान होता है उसी अनुसार दैहिक और मानसिक बल देता है। कर्क राशि का स्वामी है। राशिचक्र में भ्रमण करते समय जन्म समय या प्रश्न काल में यह जिस राशि पर हो उसके अनुसार फल उत्पन्न करता है। जन्म समय जिस राशि पर चन्द्र हो उस राशि के अनुसार स्वभाव मानसिक प्रगल्भता आदि उत्पन्न करता है। जिसका जन्म कर्क लग्न मे हो, लग्न में चन्द्र हो तो उस पर अधिक प्रभाव करता है। वह मनोविकार के आधीन रहता है और नवीनता उसे प्रिय होती है, अर्थात् उस की आयुष्य भर में मनोविकार की प्रधानता रहती है और उसके सम्बन्ध से अच्छे बुरे कार्य का सम्बन्ध जन्म समय के चन्द्र की स्थिति पर अवलम्बित है। चन्द्र का प्रभाव शरीर के पेट स्तन, मेदा, लाला, लालोत्पादक पिंड आदि पर होता है और

उस सम्वन्धी विकार उत्पन्न करता है। पूर्ण चन्द्र शुभ होने से अच्छा है शुभ फल देता है, परन्तु क्षीण चन्द्र अशुभ ग्रह समझा जाता है।

३ मंगल – यह आकार आदि मे पृथ्वी सरीखा है, इसी से इसे भूमिपुत्र कहते हैं। वह रुधिर का प्रभाव वताते हुए तामडे रंग का चमकते हुए दिखता है। यह मगल स्वभाव से क्रोधी, चुगुलखोर और झूठा होता है। यह निर्वल हो तो उस समय स्वभाव में झुठाई, चुगलखोरी, क्रोधीपना, दुष्टता और क्रोध के कार्य प्रगट करता है। यह अनिष्ट हो तो उष्णता का विकार, भयकर व त्रिदोपिक ज्वर, प्लेग, कालरा, माता आदि स्पर्श-जन्य रोगो से दु ख उत्पन्न करता है।

४ वुध –यह चन्द्र सरीखा महत्व का है, यह अपने बल के अनुसार मानसिक एव वौद्धिक उन्नति दर्शाता है। जव यह चन्द्र के साथ त्रिरेकादश दृष्टि योग करता है तो उसकी वुद्धि सामर्थ्य अच्छी होती है। ये ग्रह चातुर्य, धार्मिक दशा, शोधक वुद्धि, शास्त्रीय विपय मे प्रवेश, वाणी मे मिठास आदि का कारक है। वुध अनिष्ट होता है तो सिर दुखना, लडखडाते या तुतलाते बोलना, और कई प्रकार के मानसिक त्रास रोग प्रगट करता है।

यह ग्रह दूसरे ग्रह के साथ युक्त या दृष्ट हो तो जैसा वह ग्रह शुभ हो उसी प्रमाण से फल उत्पन्न करता है। इसका फल विचारते समय यह कौन राशि पर है और इस पर कौन ग्रह की कैसी दृष्टि है आदि बातो का पूर्ण विचार करना होता है।

५ गुरु–सव ग्रहो मे बडा है और इसके ४ चन्द्र (उपग्रह) है। उनमेसे एक तो लगभग अपनी पृथ्वी के वरावर है। यह अति शुभ दायक ग्रह है। न्याय प्रियता, सव अच्छे गुण या अच्छी वातें और सुख का द्योतक है। यह शुभ ग्रह है। जिस की कुडली में लग्न चन्द्र या वुध इनसे गुरु का शुभ योग होता है तो वह जातक उदार मन, न्यायी, प्रामाणिक, स्वच्छ हृदय का होता है, परन्तु अशुभ दृष्टि योग से साम्पत्तिक अडचन वडे लोगो की अप्रसन्नता आदि प्रगट करता है। यह ग्रह रक्तदोष, यकृत् का विकार आदि उत्पन्न करता। गुरु जहा हो उस स्थान की हानि करता है, परन्तु जिस भाव पर उसकी दृष्टि हो यह दृष्टि शुभ समझी जाती है, भाव की वृद्धि करती है।

६ शुक्र--यह दूसरे ग्रहो की अपेक्षा अधिक प्रकाशवान दिखता है। यह बुध के साथ हो तो काव्य, ललित कला, चित्र कला, वाचन कला, आदि मे प्रवीण होता है। शुक्र लग्न मे हो तो मुह मनमोहन होता है। उत्तम भाषण शैली, मिलनसार स्वभाव, सवसे मिलने वाला, कपडे आदि स्वच्छ रखता है। शुक्र जन्मकुडली मे निर्वल हो तो, हल्कापन, निर्लज्ज, भयानक शब्द प्रिय आदि अवगुण करता है। शुक्र मे वृष राशि की अपेक्षा तुला राशि मे अधिक वलवान होता है। और शुभ फल देता है ये पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अशुभ फल उत्पन्न करता है।

यह मूत्राशय का विकार, उपदंश आदि विकार, अपने दुर्व्यसन के कारण या अनीति-पथ पर चलने के कारण होने वाले रोग वीर्यपात या उससे होने वाली दुर्वलता आदि विकार उत्पन्न करता है।

७ शनि–इस के चहुँ ओर ३ वलय और ८ चन्द्र (उपग्रह) है। मानो छोटी सूर्य माला ही हो, इसी कारण इसे सूर्यपुत्र कहते हैं। जन्मसमय शनि वलवान हो तो कुशाग्र-मति, मार्मिक, कठोर और कृपण, डरपोक, दृढ, थोडा बोलने वाला, हिसाव किताव से खर्च करनेवाला, उद्योगी और सभ्य स्वभाव का होता है। शनि निर्वल हो तो सशय युक्त, दुष्ट, अधम, क्रोधी स्वभाव का होता है। सव ग्रहो मे शनि अधिक पाप फल देने वाला है। शनि रवि, चन्द्र या लग्न के साथ अशुभ दृष्टियोग करता हो तो दत विकार, नाना प्रकार के रोग जो अधिक समय तक रहने वाले हो, सधिवात, पक्षाघात, कुछ वहरापन आदि रोग दर्शाता है।

संक्षेप में शनि ये डर, उदासीनता और मृत्यु का द्योतक ग्रह माना जाता है। शनि जहाँ पर हो उस स्थान को वृद्धि करता है, परन्तु जिस भाव को देखता है उसकी हानि करता है।

८ हर्षल—(प्रजापति) यह अनेक आकस्मिक विचित्र प्रकार की घटना घटित करने वाला ग्रह है। साधारण प्रकार से ये पाप ग्रह है। इसी प्रकार वह कई प्रकार के चामत्कारिक और कल्पना जिसकी न हो सके ऐसा फल उत्पन्न करता है। जिस कुंडली मे यह वलवान हो तो अच्छे प्रकार के शुभ फल दर्शाता है। निर्वल होने पर ससार के नाना प्रकार के कष्ट और स्त्री-सुख या भ्रातृ-सुख मे न्यूनता लाता है। झगडा और विचित्र प्रकार के भ्रमण सम्वन्धी कार्य प्रगट करता है।

जिसकी कुडली में लग्न चद्र या वुध इस ग्रह से शुभ दृष्टि योग करता हो तो उसकी वृद्धि और मानसिक उन्नति अच्छी प्रकार की प्रगट होती है। उसे विशेष कर आध्यात्मिक, गूढ, फलित ज्योतिष, सामुद्रिक आदि शास्त्रीय विषय में प्रवेश या इतर विषय मे योग्यता वढती है।

९ नेपच्यून—वरुण–इस ग्रह का धर्म पानी सरीखा अस्थिर है और सर्व साधारण पन से यह ग्रह अधिक अशुभ फल उत्पन्न करता है। वार-वार विचार वदलना, विश्वास करने अयोग्य, अस्थिरता आदि गुण प्रकट करता है। यह ग्रह कुंडली मे जव वलवान हो या इसपर शुभग्रह की दृष्टि हो या वुध, चद्र, से शुभ दृष्टि योग करता हो, उस समय वुद्धि की तीव्रता वढेगी। अतर्दृष्टि में या दैवी दृष्टि मे विचार करने की प्रेरणा मन मे वढती है, मन आध्यात्मिक मार्ग की ओर झुकता है। यदि वह कुडली मे वुरे स्थान में या पीडित हो तो वुरी वासना, मत्सर, लोभ, आदि की ओर ले जाने वाले विचार उत्पन्न करता है।

इस ग्रह के प्रभाव से दूसरे की नकल शीघ्र करने मे निपुण होता है। इससे जल तत्व से लाभ, गायन, ततु वाद्य, काव्य, गूढ शास्त्र मे प्रवेश, स्वप्न सृष्टि के विचित्र अनुभव दर्शाता है। यह जल राशि (कर्क या मीन) में वलवान होता है। यह बुध के साथ अशुभ दृष्टि योग करता हो तो मज्जा तंतु में क्षोभ उत्पन्न करता है। चद्र के साथ पीडित हो तो शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य नही रहता।

राहु-केतु

इन दोनो ग्रहो मे राहु का ही महत्व है, क्योकि राहु से सदा ६ राशि अतर पर केतु रहता हैं। राहु को छोडकर केतु कही नही जा सकता। दोनो ग्रह सदा वक्री रहते है और उनकी गति सदा एक-सी रहती है। जब राहु या केतु के वीच चद्र क्राति वृत्त पर आ जाता है उस समय उसका शर शून्य या वहुत थोडा रहता है, तभी ग्रहण सभव होता है। पृथ्वी और सूर्य के वीच चद्र आ जाने से जब सूर्य नही दिखता तो सूर्यग्रहण होता है और सूर्य व चद्र के वीच पृथ्वी आने से चद्रग्रहण होता है। ये दोनो अप्रकाश ग्रह राहु-केतु वडे महत्व के है, इस कारण इनकी गणना ग्रहो में की जाती है।

राहु का मुख्य धर्म मारना है। यह क्रूर ग्रह तीसरे स्थान में हो तो भाइयो का, चतुर्थ मे माता का, पचम मे सतति का, सप्तम मे स्त्री का, दशम मे पिता का मारक होता है। यह पापग्रह है। दाँत ओठो के वाहर या वडे धनुषाकार दिखें तो राहु का प्रभाव समझना। यह लग्न व ६, ७, १२ स्थान मे नाशकर्ता होता है। राहु वलवान हो तो, उन्नत दशा मे लाता है।

इनका फल विचार—

राहु केतु जिस भाव मे हो और जिस-जिस भावस्वामियो के साथ हो उसीके अनुसार शुभ या अशुभ फल देते है। इनका कोई विम्व न होने के कारण दूसरो का प्रभाव ग्रहण कर शुभाशुभ फल देते है। ये तमोगुणी है। केन्द्र मे हो और त्रिकोण से सम्वन्धित हो या त्रिकोण मे हो और केन्द्रेश से सम्वन्धित हो तो शुभकारक होते है। राहु केतु जिस स्थान में हो या जिस भावेश के साथ हो उस भाव की वृद्धि करते है। परन्तु कोई ग्रह अच्छा भी हो तो भी राहु के साथ रहने से वुरा फल होता है। राहु केतु २ या ११ भाव के स्वामी हो तो जिस ग्रह के साथ रहते है वैसा इनका स्वभाव हो जाता है अर्थात् शुभ ग्रह के साथ शुभ और पाप ग्रह के साथ अशुभ हो जाता है।

अध्याय ३२

भाव-परिचय

पहिले वतला चुके है कि द्वादश भाव के स्थान स्थिर है और वे स्थान लग्न स्थान से गिने जाते हैं। उन भाव के विशेष नाम नीचे कुंडली मे वताये गये है।

कुंडली मे ग्रहो की स्थिति वदलते रहती हैं, परन्तु भाव वे ही रहते है। भाव मे कोई परिवर्तन नही होता, परन्तु इन भाव मे जो राशिया रहती है, वे लग्न की स्थिति के अनुसार सदा बदलती रहती है।

भाव के नाम

२ धन
१२ व्यय
३ सहज
१ लग्न तन
११ आय
४ सुहृद
१० कर्म
५ सुत
७ जाया
९ धर्म
६ रिपु
८ मृत्यु

लग्नकुण्डली

ऐसे यहा लग्नकुडली में वृश्चिक लग्न है तो तन स्थान (लग्न) मे वृश्चिक का अक ८ रहेगा और उसी क्रम मे शेष भावो मे राशियो के अक लिखे रहेंगे जैसा यहा लग्न कुडली में दिया है।

इसको इस प्रकार पढ़ेंगे कि (तीसरा) सहज स्थान में केतु मकर का है, (चौथे) सुहृद स्थान मे कुंभ का मंगल है, (षष्ठ) रिपु स्थान मे मेष का सूर्य है, (सप्तम) जाया स्थान में वृष का बुध और शनि है, (अष्टम) मृत्यु स्थान में मिथुन का चद्र, गुरु और शुक्र है, (नवम) धर्म स्थान मे कर्क का राहु है। शेष स्थानो में कोई ग्रह नही है।

तन स्थान में वृश्चिक राशि, धन स्थान में धनु राशि, सुत स्थान में मीन राशि, दशम भाव या कर्म स्थान मे सिंह राशि, आय भाव में कन्या राशि, और व्यय भाव में तुला राशि है। इस प्रकार इन भाव के वर्णन मे विशेष नाम का ही उपयोग होता है।

इन १२ भाव के जो प्रचलित नाम है इन्हे कठस्थ कर लेना चाहिये, परन्तु इनके अतिरिक्त और भी नाम है जो कभी-कभी उपयोग में आते है उनके नाम नीचे दिये है।

१ तनु भाव - लग्न, होरा, मूर्ति, उदय, सिर, अंग, वपु, कल्प।

२ धन भाव—कुटुम्ब, वाक्, पित्त, वित्त, स्व, अर्थ, कोष, अक्षि (नेत्र)।

३ सहज भाव—सहोत्थ, गल, दुश्चिक्य, भ्राता, पराक्रम।

४ सुहृद भाव—सुख, वेश्म, पाताल, हृत् (हृदय), वाहन, मातृ (माता) रसातल, वधु, अम्बु, कर्ण, हिबुक, शौर्य, तुर्य, मान, नीर, सद्म, गृह।

५ सुत भाव—आत्मज, मंत्र, विवेक, शक्ति, उदर प्रवेश, प्रभाव, प्रतिभा, धी, बुद्धि, तनुज, तनय, विद्या, वाक् स्थान।

६ रिपु भाव—रोग, क्षत, अरि, व्यसन, चोर, विघ्न।

७ जाया भाव—चित्तोत्थ, काम, मदन, भर्ता, कलत्र, दधि, सूप, द्यून, अस्त, स्मर, जामित्र या मित्र।

८ मृत्यु भाव—मरण, रंध्र, आयु, अंतक, गुण, मूत्रकृच्छ्र, गुह्य, क्षीर, छिद्र, याम्य, निधन, लय स्थान।

९ धर्म भाव—पैतृक, भाग्य, गुरु, तप, लाभ, शुभ, दया, मार्ग, अर्जित।

१० कर्म भाव—आज्ञा, मान, खं, आस्पद, दशम, व्योम, तात, मेपूरण।

११ आय भाव—लाभ, प्राप्ति, आगम, भव, सर्वतो भद्र।

१२ व्यय भाव—रिष्फ, अत्य, विनाश, लग्न का अन्त्य खड, प्रान्त्य, अंतिम, रिफ।

भाव संज्ञा—

उपर्युक्त भावो के नाम क्रमश वताये है परन्तु विशेष परिस्थिति के अनुसार इनके विशेष नाम भी है जिनको जानना आवश्यक है। नीचे वताया है कि किन-किन भाव की क्या विशेष सज्ञा है। यहा भाव के नाम न लिख कर उनके क्रम सूचक अक दिये है।

	भाव
(१) केन्द्र, कटक या चतुष्टय	१,४,७,१०,
(२) पणफर	२,५,८,११
(३) आपोक्लिम	३,६,९,१२,
(४) उपचय	३,६,१०,११,
(५) अपचय (जो उपचय नही)	१,२,४, ५,७,८,९,१२
(६) चतुरस्र	४, ८।
(७) त्रिक	६,८,१२
(८) त्रिकोण	५,९
(९) त्रित्रिकोण	९

लग्नकुंडली

इन सबको उदाहरण देकर समझाते है ।

लग्नकुण्डली

९ ७
१० के. ८ ६
११ म ५
१२ २ श बु ४ रा
१ सू ३ चं गु श
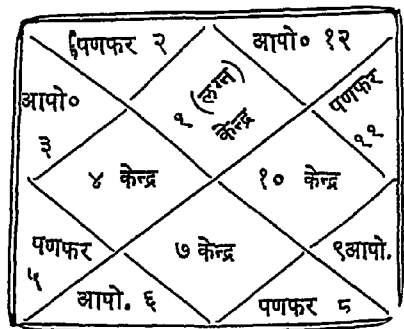
१ केन्द्र (१) लग्न में वृश्चिक (४) चतुर्थ भाव में कुभ राशि का म० (७) सप्तम भाव में वृप का बु० श० (१०) दशम मे सिंह राशि है, ये सब राशिया और ग्रह (८,११,२,५, राशिया और म० बु० श० ग्रह) केन्द्र मे है ।

२ पणफर—(२) में धन राशि, (५) में मीन, (८) में मिथुन, (११) भाव मे कन्या राशि है । इन स्थान की राशिया पणफर मे है । अष्टम में चन्द्र गुरु शुक्र है । ये ग्रह भी पणफर में है ।

३ आपोक्लिम—(३) मे मकर का केतु, (६) मे मेप का सूर्य, (९) मे कर्क का राहु और (१२) में तुला राशि ये सब आपोक्लिम में है ।

केन्द्र अर्थात बीच के स्थान से दूसरा पणफर और तीसरा आपोक्लिम का घर होता है, जैसा यहा समझा चुके है ।

४ उपचय, ५ अपचय—यहा कुडली में जहा उ० लिखा है वह उपचय स्थान है शेष जहा + है वे अपचय स्थान है । यहा लग्न कुडली मे उपचय में (३) मे मकर का केतु, (६) मे मेप का सूर्य, (१०) में सिंह और (११) में कन्या राशि है । शेष बचे हुए स्थान अपचय कहलाये ।

६ चतुरस्र—किसी भी स्थान से चौथा और आठवा चतुरस्र कहलाता है, जैसे मंगल से शनि और बुध चतुर्थ मे और कन्या राशि (११ भाव) अष्टम में है ये मगल से चतुरस्र में हुए । इसी प्रकार किसी भी स्थान से चौथा आठवा स्थान गिनने से जो आवे वह चतुरस्र कहलाता है ।

७ त्रिक—किसी भी स्थान से ६-८ और १२ वा स्थान त्रिक स्थान कहलाते है, जैसे मगल से छठा कर्क का राहु नवम भाव में है । मंगल से आठवा लाभ भाव में कन्या राशि है । मगल से वारहवें मकर का केतु तृतीय भाव मे है । ये सब मगल के त्रिक स्थान में हुए ।

८ त्रिकोण--कोई भी स्थान से नवम स्थान और वहा से पचम स्थान त्रिकोण कहलाता है। एक दूसरे से नवम पचम राशिया इस प्रकार होगी। १, ५, ६। ३, ७, ११। ४, ८, १२। ये राशिया एक दूसरे से त्रिकोण मे है।

जैसे मंगल से पचम मे चन्द्र गुरु शुक्र है और चन्द्र से नवम स्थान में कुंभ का मंगल है तो १ वह स्थान जहाँ ग्रह है वहा से १ गिना, वहा से (५) पाचवे स्थान मे मिथुन का चन्द्र है और वहाँ से (९) नवम स्थान में मगल है, इस प्रकार ये स्थान एक दूसरे से त्रिकोण मे हुए, क्योकि यहा इनसे त्रिकोण वनता है। इसी प्रकार किसी भी स्थान से १-५-९ स्थान गिनो तो वे दोनो स्थान त्रिकोण में पडते है। १ स्थान तो केवल उस स्थान को गिनने के लिये था, यहा बचे हुए २ ही स्थान त्रिकोण के होते है जैसा कुभ का मगल और मिथुन का चन्द्र एक दूसरे से त्रिकोण में है।

९ त्रित्रिकोण--किसी स्थान से नवम स्थान त्रित्रिकोण कहलाता है, जैसे चन्द्र से मंगल नवम स्थान मे है तो कहेंगे कि चन्द्र से त्रित्रिकोण मे मंगल है।

इसी प्रकार लग्न से या किसी भाव विशेष से दूसरे भाव या ग्रह कितने स्थानान्तर पर है विचार कर भाव सज्ञा ऊपर वताए अनुसार निश्चित करना।

भाव स्वामी Lord of the house

जिस भाव मे जो राशि है उस राशि का जो स्वामी होगा वही ग्रह भावस्वामी कहलाता है। भाव स्वामी को भावेश्वर, भुवन पति, भावेश या भाव अधिपति भी कहते है।

भाव स्वामी का भाव सम्बन्ध से भी पृथक्-पृथक् नाम होता है, जैसे :—लग्न का स्वामी–लग्नेश, द्वितीय भाव का स्वामी–द्वितीयेश का धनेश, ११ वाँ लाभ स्थान है उसका स्वामी लाभेश इत्यादि।

भाव स्वामी के विशेष योग Special aspects of the Lords of the houses

(अध्याय २८ का दृष्टि योग भी देखो)

१ भावेश योग—जव दो या अधिक भावेश (भाव स्वामी) का योग होता है तो भावेश योग कहते है।

जव कोई त्रिकेश (त्रिक ६-८-१२ भाव के स्वामी) जव-जव दूसरे भावेशो से योग करते हैं तो अनिष्ट फल देते है।

केन्द्रेश (केन्द्र भाव का स्वामी) व त्रिकोणेश (त्रिकोण भाव का स्वामी) का योग शुभ फल देता है। ये स्थान के अनुसार फल देते है। (त्रिक) ६, ८, १२ भाव मे भावेश निर्वल होता है।

२ भावेश दृष्टि योग—जब दो या अधिक भावेश एक दूसरे पर पूर्ण दृष्टि से देखते है तो भावेश पर दृष्टि योग कहते है। त्रिक भाव का स्वामी, जिस भावेश पर दृष्टि करता है उस भावेश के फल को निर्बल कर देता है।

३ त्रिकोण योग—जब दो भावेश एक दूसरे के त्रिकोण (नवम पचम स्थान) मे हो तो उसे त्रिकोण योग कहते है। ये योग लक्ष्मी, राज वैभव, विभूति, कीर्ति देने वाला होता है। केन्द्रेश और त्रिकोणेश का त्रिकोण योग श्रेष्ठ होता है।

४ केन्द्र योग—दो भावेश परस्पर केन्द्र मे हो तो केन्द्र योग होता है। यह योग महत्व सूचक है। एक ग्रह के केन्द्र स्थान से दूसरा ग्रह भी केन्द्र मे हो तब यह योग होता है।

५ लाभ योग दो भावेश एक दूसरे पर तृतीय एकादश योग करते हो तो उसे लाभ योग कहते है। यह बहुत सम्पत्ति देने वाला होता है। एक ग्रह जहाँ हो उससे दूसरा ग्रह ग्यारहवें स्थान मे हो तो दूसरे ग्रह से पहिला ग्रह तीसरे स्थान मे पडता है। इस प्रकार जब एक ग्रह से गिनने पर दूसरा ग्रह ग्यारहवें स्थान मे हो तब यह योग होता है।

६ द्विर्द्वादश योग -जब दो भावेश एक दूसरे से दूसरे या बारहवें स्थान मे हो तो यह योग होता है। यह योग दरिद्रता सूचक है।

७ षडष्टक योग—दो भावेश एक दूसरे से छठे या आठवें स्थान मे हो तो यह योग होता है। यह दु ख और कष्ट देता है।

८ अन्योन्य आश्रय योग—दो भाव के स्वामी जब एक दूसरे के भाव मे हो तब यह योग होता है, जैसे लग्नेश लाभ स्थान मे हो और लाभेश लग्न मे हो तो यहाँ लग्नेश और लाभेश का अन्योन्य आश्रय योग हुआ। इसे परिवर्तन योग भी कहते है।

९ युति - जब दो भावेश एक ही राशि के एक ही अश पर हो तो उसे युति कहते है।

१० षड्भातर या प्रति योग —जब एक भावेश एक दूसरे से ६ राशि के अतर पर हो अर्थात् एक दूसरे के सन्मुख हो तब यह योग होता है।

इन योगो का वर्णन दृष्टि विचार मे भी हो चुका है, परन्तु भाव से सम्बन्ध होने के कारण यहाँ दिया है। यहाँ केवल मुख्य-मुख्य योग ही दिये है, क्योकि योग अनेक है।

योग—ग्रहो का ऐसी परिस्थिति मे आ जाना जिससे वह दूसरे ग्रह, भाव या राशि से किसी प्रकार सम्बन्धित होकर ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दे वे जिससे कोई विशेष फल उत्पन्न होने की सम्भावना हो। ऐसे अनेक योगो का वर्णन फलित ज्योतिष मे दिया है।

यहाँ इन्ही योगो को उदाहरण देकर समझाते है . —

इस कुण्डली मे षष्ठ भाव का स्वामी मगल और अ'टमेश बुध है, ये त्रिक भाव के स्वामी है । मगल सहज भाव मे है और मगल से दूसरा स्थान चतुर्थ भाव है जिसमें बुध है। यहाँ मगल और बुध का (६) द्विर्द्वादश योग हुआ । क्योकि मगल से बुध दूमरा और बुध से मगल वारहवाँ है । यह योग दरिद्रता सूचक है। इस पर भी त्रिक भाव के स्वामियो का इस प्रकार योग होना अनिष्ट कारक है ।
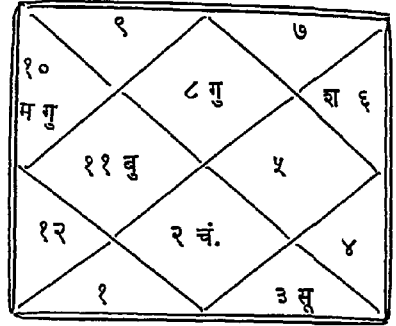
पहाँ चन्द्र सप्तम भाव मे है, मंगल से यह गिनने पर पचम स्थान होता है, इस कारण मगल से नवम पंचम ((३) त्रिकोण) योग हुआ । यह योग अच्छा है, परन्तु यह त्रिकोण के स्वामियो का योग नही हुआ ।

शनि लाभ स्थान में है वह चतुर्थेश (केन्द्र का स्वामी) है, इससे पंचम स्थान में शुक्र तृतीय भाव मे है तो शनि और शुक्र का नवम पचम होने से (३) त्रिकोण योग हुआ । यहाँ शुक्र सप्तमेश (केन्द्र स्वामी) है, इस कारण यहाँ केन्द्र के अधिपतियो का (शनि और शुक्र का) त्रिकोण योग हुआ । यह योग अच्छा है ।

लाभ भाव का स्वामी बुध (चतुर्थ) केन्द्र मे है । धर्म का भाव स्वामी चद्र भी केन्द्र (सप्तम) मे है । यहाँ दोनो भावेश केन्द्र मे हैं और एक दूसरे के केन्द्र मे भी है तो यह (४) केन्द्र योग हुआ । यह अच्छा योग है ।

जव कोई ग्रह एक दूसरे से चतुर्थ या सप्तम मे हो तो एक दूसरे से केन्द्र में होते है. क्योकि जो एक के चतुर्थ है वह दूसरे से दशम मे पडता है और जो एक दूसरे से सप्तम मे है वह दूसरे से में भी सप्तम होता है । लग्नकुण्डली मे १, ४, ७, १० स्थान में रहने वाले ग्रह केन्द्र में कहलाते है, परन्तु एक ग्रह से दूसरे ग्रह के स्थान का अन्तर भी ४, ७, १० स्थान की दूरी पर होने से पहिले ग्रह के केन्द्र में दूसरा ग्रह है ऐसा कहेगे ।

यहाँ शनि जो तृतीयेश और चतुर्थेश होकर लाभ स्थान मे है, इससे तीसरे स्थान मे ल नी (ल न का) गुरु बैठा है जो धनेश और पचमेश है । इन दोनो ग्रहो का (५) तृतीय एकादश योग है, क्योकि शनि से गुरु तीसरा और गुरु से शनि ग्यारहवाँ है । यह सम्पत्तिदाता योग हुआ ।

षष्ठेश मगल तृतीय भाव में है । मंगल से षष्ठ स्थान मे सूर्य अष्टम भाव मे वैठा है यह सूर्य दशमेश है । यहाँ षष्ठ और दशम भाव स्वामी और मंगल और सूर्य का (७) षडष्टक योग हुआ जो कष्टदायक है ।

गुरु लग्न में वृश्चिक के १०° पर है और चद्र सप्तम भाव में वृष के १०° पर है तो गुरु और चद्र का (१०) षड्भान्तर योग या प्रतियोग हुआ ।

मंगल मकर के २२° पर है और शुक्र भी मकर के २५° पर है तो मगल और शुक्र की (९) युति हुई । यदि शुक्र भी मकर के २२° पर होता तो पूर्ण युति होती । परन्तु दोनो के अशो में केवल ३° का अन्तर है अर्थात् दीप्ताश के भीतर हैं तो यह भी युति कहलायगी ।

इस कुण्डली में लाभ भाव मे बुध के स्थान मे शनि बैठा है और चतुर्थ में शनि के स्थान मे (कुभ राशि में) बुध बैठा है यह (८) अन्योन्य आश्रय योग हुआ । इसे परिवर्तन योग भी कहते है । इसी प्रकार और भी ग्रहो का योग विचारना ।

अध्याय ३३

भाव विचार

जब कोई ग्रह किसी भाव में आता है तो उस भाव के सम्बन्ध से ग्रह के फल का विचार होता है, इस कारण इन भावो से क्या-क्या विचार किया जाता है यहाँ बतलाते है ।

१ प्रथम भाव—इसे लग्न, मूर्ति, उदय या पूर्व भी कहते है । इस स्थान का नाम तनु है । इस स्थान मे स्वभाव, प्रकृति, मन, स्वरूप, आयुष्य और इतर शारीरिक दुःख सुख का विचार होता है । शरीर की दुर्बलता, पुष्टता, शरीर का रंग, शील, आकृति, शरीर के लहसन, मसा, तिल आदि चिह्न, आरोग्य, शरीर लक्षण आदि का विचार होता है । इसका मुख्य प्रभाव मस्तक पर है ।

२ द्वितीय भाव—इसे धन स्थान कहते है । इससे जातक (जिसका जन्म हुआ है और जिसके सम्बन्ध मे विचारना है) की सम्पत्तिक स्थिति का बोध होता है । इस भाव मे कोष (खजाना), सोना, रत्न आदि की प्राप्ति, मित्र, वस्त्र, कुटुम्ब व स्त्री पुरुष का सुख और पूर्व अर्जित धन, अश्व कार्य, विद्वत्ता, लेखन, पटुत्व, वाणी, नेत्र और खाद्य पदार्थ आदि का विचार होता है । इसका प्रभाव कण्ठ, नेत्र और मुख पर होता है ।

३ तृतीय स्थान—इसे सहज (साथ में उत्पन्न हुए) स्थान या भ्रातृ-स्थान व पराक्रम-स्थान भी कहते हैं । इसमे भाई बहिन, भाइयो का सुख, पास के सम्बन्धियों का सुख या थोडी यात्रा रेल, बैल गाडी आदि की, पराक्रम (साहस), सेवक, चाचा,

मामा, दासी, हाथ कान सम्बन्धी रोग, कान के गहने आदि का विचार होता है। इसका मुख्य प्रभाव हाथ, वाहु, कन्धा और कान पर होता है।

४ चतुर्थ स्थान—इसे सुहृद, पाताल और सुख स्थान भी कहते है। इस भाव से सुख-दु ख का, माता का, स्थावर सम्पत्ति का, आयुष्य के दिन का, क्षेत्र, गृह (घर) भूमि, वगीचा, तालाव, चौपाया, मित्र, सुख, वन्धु, उद्यम, ससुर, नानी और छाती का विचार होता है। इसका प्रभाव छाती और पेट पर होता है।

५ पचम स्थान – इसे सुत भाव कहते हैं। इससे सतति, गर्भ, विद्या, शील-स्वभाव मत्र, उपासना, सट्टा, लाटरी या इसी प्रकार के व्यवहार मे यश, अपयश, आनन्द और वुद्धि का विचार होता है। इसका प्रभाव हृदय और पीठ व कुक्षि पर होता है।

६ षष्ठ भाव - इसको रिपु-स्थान भी कहते हैं। इससे शत्रु, मामा, मौसी, होने वाला रोग, सेवक, अपने अधीन कार्य करने वाले, ऊँठ, घोडे, भैस आदि पशु-चोर भय, सग्राम, क्रूर कर्म, वन्धन भय, सौतेली मा, अपयश, हानि, रोग, चिन्ता और शङ्का आदि का विचार होता है। इसका प्रभाव कमर आत, नाभि और पेट पर होता है।

७ सप्तम भाव—इसे अस्त या कलत्र या जाया-स्थान कहते हैं। इससे स्त्री, स्त्री-सुख, विवाह, व्यापार, गमन, अदालती झगडे, साझीदार, प्रगट शत्रु या प्रतिद्वन्द्वी, सग्राम, विवाद, वाणिज्य, प्रवास या स्थानान्तर, जारकर्म, कलह आदि का विचार होता है। स्त्री का पति या पतिसुख का भी विचार इसीसे होता है। इसका प्रभाव वस्ति, मूत्रपिंड और कमर पर भी होता है।

८ अष्टम भाव—इसे मृत्यु या आयु स्थान भी कहते है। इससे मृत्यु का निदान, आयु, सकट, शस्त्र, अकल्पित लाभ, स्त्री की ओर से धन प्राप्ति, नदी तैरना, अत्यन्त विषम मार्ग, गुदा रोग, गुह्य रोग, रिपु, दुर्गस्थान, ऋण, रण, लावारसी धन, व्याधि का उत्पन्न होना, छिद्र मार्ग, टेढी वात, युद्धसमय, शत्रु का भय, वस्तु का नाश आदि का विचार होता है। इसका प्रभाव गुह्येन्द्रिय किंवा प्रजोत्पादक इन्द्रिय पर होता है।

९ नवम स्थान—इसे धर्मस्थान कहते हैं। इससे धर्म, श्रद्धा, तप, तीर्थयात्रा, लौकिक, भाग्योदय, दूर की यात्रा, जल प्रवास, स्वप्न, तत्वज्ञान, बुद्धिमत्ता, ग्रथ, कर्तव्य, दीक्षा, मठ, देवग्रह, कुआ-तालाव आदि का विचार, भाग्य की वृद्धि, निर्मल स्वभाव, नम्रता आदि का विचार होता हैं। इसका प्रभाव जाघ पर पडता है।

१० दशम भाव—इसे कर्मस्थान या राज्यस्थान भी कहते हैं। इससे पितृ सुख, ओहदा, कीर्ति, कर्म, कार्य से होने वाला अच्छा या बुरा काम, यज्ञ, उद्योग-धधा, व्यापार, मुद्रा, राजा से आदर, वडी पदवी के प्राप्ति का विचार, नौकरी, पेशा, अधिकार, राज्य, वृष्टि आदिक आकाशीय वृत्तात आदि का, प्रवास (परदेशगमन) और ऋण आदि का विचार होता है। इसका प्रभाव घुटने पर होता है।

११ एकादश भाव---इसे आय या लाभस्थान भी कहते हैं। अनेक प्रकार का लाभ, आशा, इच्छा, द्रव्य लाभ, आभूपण, हाथी, घोडे, पालकी आदि ऐश्वर्य, मित्र सुख, धान्य, विद्या लाभ, परिवार, दामाद, मित्र कैसे मिलेंगे आदि का विचार होता है। इसका प्रभाव पैर व पिंडली पर होता हैं।

१२ द्वादश भाव- इसे व्यय स्थान कहते हैं। इसमे मोक्ष, गुप्त विद्या, आध्यात्मिक विद्या, कैद, दण्ड शत्रु, खर्च का विचार, हानि, दान, व्यय, पाखण्ड, आत्महत्या, राजकीय संकट, कर्ज, ठगबाजी और घेरना या पकडना आदि का विचार इससे होता हैं। इसका प्रभाव पांव का पजा, उगली और तलुवा पर होता है।

इस भावकुण्डली से अपने सम्बन्धियो का भी विचार होता हैं। उसे नीचे के पैरा मे चक्र मे दिये अक के अनुसार मिलावें जैसे --

१ तन, आजी, नाना। २-- धन-समधिन। ३ --सहज, भाई, वहन, नौकर-चाकर। ४--सुहृद, मित्र, माता, ससुर। ५ - सुत, सन्तान। ६--रिपु, काकी, मौसी, मामा, फूफा। ७ - जाया, स्त्री, आजी, भाई-बहन की सन्तान, नानी। ८--मृत्यु, समधी। ९--धर्म, भावज, बहनोई, नाती, साले, साली। १०--कर्म, स्वामी, पिता, सास, राजा। ११--आय, लडके की वहु, दामाद। १२--व्यय, काका, मामी, फूफी।

इस लग्नकुण्डली पर से उसके सम्पूर्ण सम्बन्धियो का इस प्रकार विचार हो सकता हैं कि जिसका विचार करना है उस भाव को लग्न मान कर उसी से तन, धन, सहज आदि भाव क्रमानुसार गिन कर उसी से उसके सम्बन्ध का सम्पूर्ण फल निकाला निकाला जा सकता हैं।
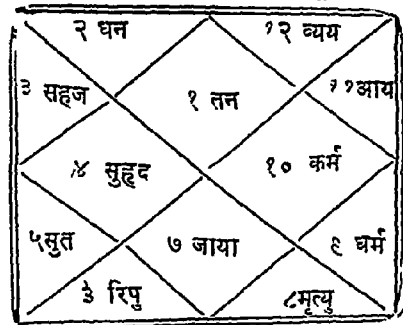
जैसे स्त्री के सम्बन्ध मे विचार करना है तो स्त्रीभाव (सप्तम भाव) को लग्न मान कर उससे तन-धन सहज आदि भाव गिन कर विचारना पडेगा। जैसे सप्तम को लग्न माना तो उसमे स्त्री के शरीर आदि का विचार होगा, उससे दूसरा घर (अष्टम भाव) से स्त्री का धन, तीसरे घर (नवम भाव) से, उसके भाई-बहन, चतुर्थ घर (दशम भाव) से, उसका सुख, माता आदि का विचार होगा। इसी प्रकार सप्तम को लग्न मान कर उससे पूरे १२ भाव का विचार कर, स्त्री के सम्बन्ध का फल विचार हो सकता हैं।

अब साले साली का विचार करना है तो स्त्री भाव सप्तम को लग्न मान कर उसके भाई-बहिन जानने को सप्तम से तीसरा गिनने पर नवम भाव आया। इससे स्त्री के

भाई-वहन (साले-साली) का फल जान सकते हैं। इसी प्रकार सास (स्त्री की मा) का विचारना है तो चौथा घर माता का होने से, सप्तम से चौथा गिना तो दशम भाव आया, यह स्त्री की मा (सास) का घर हुआ। उससे सप्तम घर सास के पति अर्थात् ससुर का होता है तो दशम से चौथा घर, चौथा भाव यह ससुर का घर हुआ।

पुत्र-पुत्री का घर पाचवा है। उससे सातवा स्त्री का और पति का घर होता है तो पंचम भाव स सातवा, एकादश भाव, पुत्र की स्त्री (वहू) या लडकी का पति (दमाद) का हुआ। वहू की मां (समधिन) जानने को एकादश भाव से चौथा घर (धन भाव) वहू की मा (समधिन) का घर हुआ। उससे सातवा (अष्टम भाव) उसके पति अर्थात् समधी का घर हुआ।

तीसरा भाव भाई वहिन का है, उससे सातवा नवम भाव हुआ। यह भाई की स्त्री या वहिन का पति (वहनोई) का घर हुआ। भाई वहिन की सतान जानना है तो पचम भाव सतान का होने से तीसरे से पाचवा घर गिना तो सप्तम भाव आया। यह भाई वहिन की संतान (भतीजे-भतीजो) का घर हुआ।

पिता के भाई वहिन के वारे में जानने को पिता के दशम घर से सहज तीसरा गिना तो व्यय भाव आया। यह काका या फुआ का घर हुआ। इससे सप्तम मे छठों भाव है, वह काकी या फूफा का घर हुआ। पिता की मा (आजी) का स्थान जानने को पिता के दशम स्थान से, चौथा स्थान लग्न हुआ, यह आजी का घर हुआ। इससे सप्तम घर सप्तम स्थान हुआ, इससे आजा का विचार होगा।

माता के स्थान चतुर्थ से चौथा घर सप्तम स्थान हुआ। यह माता की मा अर्थात् नानी का घर हुआ, इससे सप्तम घर लग्न है, यह नाना का घर हुआ।

इसी प्रकार एक ही कुडली पर से सम्पूर्ण सम्वधियो के फल का विचार हो सकता है।

अध्याय ३४

धूप घड़ी

जहाँ घडी नही है या घडी विगड जाने के कारण समय नही मालूम हो सकता, वहाँ धूप घडी अवश्य वना लेना चाहिये। धूप घडी का समय सच्चा स्थानिक समय Local Time है। धूप रहते रहते दिन भर का समय ठीक ठीक जाना जा सकता है। यह ज्योतिषियो के वडे काम की चीज है, क्योकि धूप घडी के समय के अनुसार जो लग्न निकाली जायगी वह शुद्ध लग्न निकलेगी। इस कारण धूप घडी का बनाना जानना चाहिये। इसके वनाने की युक्ति नीचे दी है। एक सीधा बास

लो उसे सीधा करके (जहा समभूमि और खुला हुआ स्थान हो) गाड दो। कई दिन तक लगातार इसकी छाया ८ बजे दिन को देखो तो प्रतीत होगा कि इसकी छाया सदा एक ही स्थान पर नही रहती और थोडी बहुत उसकी दिशा मे अंतर पड जाता है। यदि उत्तर ध्रुव पर सीधा बास गाडा जावे तो उसकी छाया सदा एक ही समय मे एक ही स्थान पर रहेगी। कारण यह है कि उत्तरी ध्रुव पर जो बास गाडा गया वह पृथिवी की अक्षरेखा के समानान्तर होता है और धरातल जिस पर छाया पडती है वह अक्षरेखा से समकोण होता है। यदि किसी दूसरे स्थान पर इस प्रकार बास गाडा जावे तो वह अक्षरेखा के समानान्तर नही होता। वह धरातल जिस पर बान की छाया पडती है बास से समकोण बनाती है, इस कारण सीधे गाडा हुआ बास की छाया एक ही समय पर एक ही स्थान पर नही पडती।

यदि बास समकोण पर न गटा कर भूमि मे ध्रुव की सीध में गडाया जाय तो छाया में परिवर्तन नही होगा। ध्रुव का कोण जिसकी सीध मे बास गाडा गया है उस स्थान का अक्षाश सूचक है अर्थात् उस स्थान के अक्षाश के कोण के अनुसार यह उस बास का झुकाव ध्रुव की ओर हो तो वह बास ध्रुव को सीध में हो जायगा और आस पास जहाँ बास की छाया पडती है। समय सूचक चिह्न बना देने से धूप घडी का काम देगा। इसी सिद्धात पर धूप घडी बनी है।

धूप घडी बनाने के लिये गोल पुट्ठे का टुकडा लो उसमें समान २४ भाग बना कर घटे का निशान लगा दो जिससे २४ निशान २४ घटा के बन जायँगे। फिर एक सलाई उस पुट्ठे के ठीक बीचो बीच इस प्रकार छेद कर लगा दो कि वह पुट्ठे के समकोण में रहे। फिर उस सलाई को एक नोक ध्रुव की ओर करके उसे जमीन में इस प्रकार गाड दो या जमा दो कि सलाई भूमि मे उस स्थान के अक्षाश के बराबर कोण बनावे। उस सलाई की छाया समय सूचक अको पर पडने से वहाँ का ठीक समय ज्ञात होगा। जैसे चित्रसख्या ८३ मे बताया है, समय सूचक अंको पर सलाई की जहा छाया पडेगी उसी के अनुसार स्थानिक समय होगा।

चित्रसंख्या ८३ देखो यहाँ गोल पुट्ठे मे बाहर की ओर समय सूचक घटो के चिह्न बने है। आगे आवश्यक न होने से और भी घटों के अक नही लिखे गये है। मध्याह्न के १२ बजे का चिह्न सबसे नीचे रहता है। यह धूपघडी २८° के अक्षाश के स्थान पर समय बतायगी।

भीतर की ओर १५°-१५° अश के अतर पर अश के चिह्न लगाकर अश लिखे है। एक घटे के भीतर १५-१५ मिनट के ४ कोठे बने है। यहा स्थानाभाव के कारण और विभाग नही किये गये। इन प्रत्येक कोठो के ३-३ और विभाग करने से प्रत्येक विभाग ५-५ मिनट का बन जायगा।

अव धूपघडी को कही स्थापित करने के लिये स्थाई वनाना है तो इस प्रकार वनायेंगे-

चित्रसख्या ८३ धूपघडी वनाना
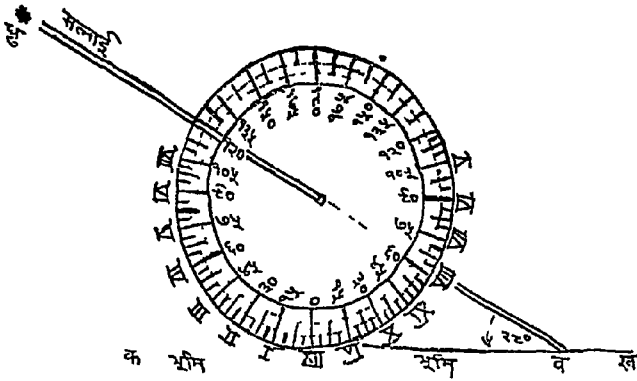
एक त्रिकोण इस प्रकार वनाओ जिसका एक कोण अपने स्थान के अक्षाश के वरावर हो और उसे किसी सम चवूतरे पर इस प्रकार पक्की तौर पर जमा दो कि उस त्रिकोण का ऊपरी किनारा ध्रुव की सीध मे रहे। फिर इस गोल समय सूचक चक्र को (जो किसी धातु के पत्र पर वनाया गया हो,) नीचे की ओर जहा १२ वजे का चिह्न है इस प्रकार समकोण वनाते हुए केन्द्र विन्दु तक काटो, जिससे वह पहिले वताये हुए त्रिकोण मे फसाया जा सके। फिर उसे उस त्रिकोण मे इस प्रकार फसा दो कि त्रिकोण पर वह समकोण वनावे। अव इस त्रिकोण की ऊपरी छाया गोल चक्र पर पडेगी, वह समय सूचक होगी। इस गोल चक्र का ऊपरी अनावश्यक भाग काट कर फेंक दो। वडे से वडा जितने घटे का दिनमान उस स्थान पर होता है उतने ही घटो के चिह्न की आवश्यकता
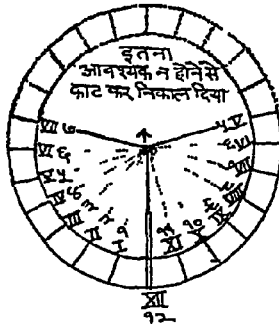
चित्रसख्या ८४ धूपघडी वनाने का चक्र वनाना

पडेगी। शेप भाग अनावश्यक होंगे, इस कारण अनावश्यक भाग को निकाल देना चाहिये, जैसा चित्रसख्या ८४ में वताया है।

यहाँ २८° के अक्षाश पर धूपघडी वनी है, इस कारण १४ घटे के चिह्न यहाँ रहने दिया है। पहिले वता चुके है कि २४°-१२' से ३०°-४८' अक्षाश तक १४ घटे का परम दिन होता है।' इस कारण केवल १४ घटे के चिह्न यहाँ वनाये है। इस प्रकार के कटे हुए चक्र को त्रिकोण समकोण वनाते हुए जमाया है जैसा चित्रसख्या ८५ में बनाया है।
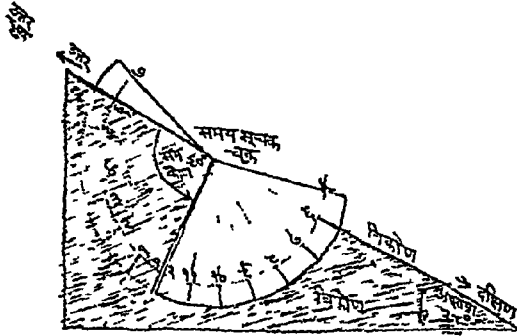
चित्रसख्या ८५ चक्र को त्रिकोण मे फसाना

चक्र मे जो १२ वजे के स्थान में केन्द्र तक फसाने के लिये पहिले काट लिया गया था, उसी कटे हुए स्थान को त्रिकोण में फसा कर जमाना चाहिये जिससे त्रिकोण के दोनो ओर उस चक्र का भाग निकला रहे। इसी चक्र में जिस स्थान पर त्रिकोण की छाया पडेगी, वहाँ वनाये हुए चिह्न के अनुसार समय घटा मिनट मे जाना जा सकेगा।

चक्र को त्रिकोण में फंसाने के लिये यदि आधा त्रिकोण का भाग और आधा चक्र का भाग काट कर फसाया जाय तो अच्छा जम जाता है और इसे त्रिकोण मे जमाते समय इस वात का ध्यान रहे कि त्रिकोण और चक्र के वीच दोनो ओर समकोण रहे।

फिर इस त्रिकोण को किसी लकडी के छोटे पटिया पर जमा दो। वस यही धूप घडी वन गई। समय देखने के लिये इसे सदैव इस प्रकार रखना चाहिये कि त्रिकोण का ऊपरी किनारा और नोक ध्रुव की सीध मे रहे।

अध्याय ३५

१ विना पंचाङ्ग के तिथिज्ञान

यदि पचाङ्ग पास न हो तो स्थूल रूप से तिथि वार नक्षत्र आदि का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है यह नवीन विद्यार्थी को जानना आवश्यक है। इस कारण इन सवके जानने की रीति यहाँ वतलाते है।

इन विधियो से स्थूल ज्ञान ही होता है। सूक्ष्म ज्ञान तो गणित द्वारा ही होता है, इसका सूक्ष्म ज्ञान गणित-खण्ड मे मिलेगा। यहाँ तो प्रारम्भिक ज्ञान के बातें बताई जायगी।

पहिले बता चुके है कि किस-किस मास की पूर्णिमासी को कौन-कौन नक्षत्र पडते हैं, उनको स्मरण रखना चाहिये।

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भा. प	आश्विन	कार्तिक	मार्ग	पौप	माघ	फाल्गुन
नक्षत्र	चित्रा	विशाखा	ज्येष्ठा	पू. षा	श्रवण	पू भा.	अश्वि०	कृत्ति०	मृग०	पुष्य	मघा	उ. फा.

जिस दिन की तिथि जानना हैं उस दिन का नक्षत्र मालूम करो। फिर पूर्णमासी के आगे जो नक्षत्र हो उससे इष्ट दिन के नक्षत्र तक गिनो। जो सख्या हो, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से उतना गिन कर तिथि कह दो। कभी-कभी तिथि मे क्षय वृद्धि होने से एक तिथि का अन्तर पड जाता है। १५ दिन से अधिक हो तो अमावस्या की १५ तिथि घटा कर शेष तिथि शुक्ल पक्ष की जानना।

पूर्णमासी को जो नक्षत्र बताये है उनमे भी कभी-कभी एक नक्षत्र का अन्तर पड जाता हैं, क्योकि कोई नक्षत्र दिन के पहिले भाग मे ही अन्त हो जाता है, कोई पूरे दिन भर रहता है, इस कारण तिथि मे भी कभी-कभी अन्तर पड जाता हैं और कभी-कभी तिथि ठीक निकलती है।

(१) जैसे सम्वत् २००० मे धनिष्ठा नक्षत्र को कौन तिथि वैशाख मे होगी जानना है। चैत्र पूर्णिमा को नक्षत्र चित्रा था, उसके आगे का नक्षत्र स्वाती से धनिष्ठा तक गिना तो ९ हुए। कृष्ण प्रतिपदा से गिना तो ९ तिथि हुई। पचाङ्ग देखो तो उस दिन दशमी तिथि है। सप्तमी की हानि होने से तिथि का अन्तर पड गया।

(२) श्रावण मे मूल नक्षत्र को कौन तिथि पडेगी यह जानना हैं। आषाढ की पूर्णिमा को पू षा नक्षत्र के आगे का नक्षत्र उ. षा. से मूल तक गिना तो–२५ आये, ये १५ से अधिक होने से, १५ तिथि अमावस्या तक के घटाये तो, शेष १० रहे। ये शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि हुई। पचाङ्ग मे उस दिन ग्यारस थी। इस उदाहरण में श्रावण की पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र होता है, अपना मूल नक्षत्र उसके पहिले आता है, इससे इसके पहिले का मास आषाढ की पूर्णिमासी ली गई है।

सूर्य और चन्द्र से तिथि जानना और तारीख से तिथि जानना आगे बताया गया है।

२—विना पंचाङ्ग के वार (दिन) जानना

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को जो दिन हो वह उस वर्ष का राजा कहलाता है। चैत्र शुक्ल परिवा से गत मास की अमावस्या तक गिनो, जो सख्या हो उसे १½ से गुणा

करो और उसमें वर्तमान महीना के पक्ष के बीते हुए दिन जोड दो और योग में ७ का भाग दो, शेष बचे उसे वार के राजा से उस सख्या तक गिनो तो वार ज्ञात होगा।

(१) जैसे सम्वत् २००० में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सोमवार था। यही सोमवार वर्ष का राजा कहलाया।

सम्वत् २००० मे आषाढ शुक्ल ११ का वार जानना है।

चैत्र शुक्ल १ से आषाढ की अमावस्या तक गत मास=३ हुए×१$\frac{१}{२}$=४$\frac{१}{२}$ आषाढ की अमावस्या से आषाढ शुक्ल ११ तक गत दिन=१० पहिले के ४$\frac{१}{२}$ + १०=१४$\frac{१}{२}$ ÷ ७= शेष $\frac{१}{२}$। वर्ष का राजा सोमवार से $\frac{१}{२}$ गिना, तो सोमवार गत हुआ, वर्तमान मगल वार आया। पहिले गत दिन लिया था, इस कारण सोमवार गत दिन आया। यदि वर्तमान दिन लिया होता तो उत्तर मे वर्तमान दिन आता। पचाङ्ग मे आषाढ शुक्ल ११ को मंगलवार है।

(२) सम्वत् २००० कुआँर वदी १४ को कौन वार था?

चैत्र से भादो को अमावस तक=५ मास×१$\frac{१}{२}$=७$\frac{१}{२}$ भादो की अमावस से भादो की पूर्णिमा तक १५ दिन, आगे कार्तिक वदी १४ तक=१४ दिन। ७$\frac{१}{२}$ + १५ + १४ दिन=३६$\frac{१}{२}$ दिन ÷ ७=शेष १$\frac{१}{२}$ दिन। वर्ष के राजा सोमवार से १$\frac{१}{२}$ गिना तो दूसरा मंगल वार आया। इस कारण उस दिन मगलवार था।

(३) सम्वत् २००१ राजा शनि। माघ कृष्ण १० का दिन जानना है।

चैत्र शुक्ल १ से पूस की अमावस तक=९ मास×१$\frac{१}{२}$=१३$\frac{१}{२}$ पूस की अमावस से पूस की पूनो तक=१५ दिन। पूस की पूर्णिमा मे माघ कृष्ण १० तक=१० दिन। १३$\frac{१}{२}$ + १५ + १० ३८$\frac{१}{२}$ − ७=शेष ३$\frac{१}{२}$ दिन। वर्ष का राजा शनि से गिना चौथा दिन मगल वार का दोपहर आया। आधा दिन बचा था इससे प्रगट हुआ उस दिन दशमी आधे दिन तक थी।

(४) सम्वत् २००१ राजा शनि। आषाढ शुक्ल १३ का दिन जानना है।

चैत्र शुक्ल १ मे आषाढ कृष्ण ३० तक=३ मास×१$\frac{१}{२}$=४$\frac{१}{२}$ आषाढ ३० से आषाढ शुक्ल १३ तक=१३ दिन। ४$\frac{१}{२}$ + १३=१७$\frac{१}{२}$ − ७ शेष ३॥ दिन। राजा शनि से चौथा वार मगलवार हुआ। आधा दिन आया है अर्थात् १३ तिथि उस दिन आधे दिन तक ही थी।

बहुधा दिन के किसी भी समय पर तिथि का अन्त हो जाता है। तिथि की हानि या वृद्धि भी हो जाती है, जिसके कारण वार मे भी कभी-कभी एक दिन का अन्तर पड जाता है।

आगे वर्ष के राजा का चक्र कई वर्षो का दिया है जिससे कही खोजना न पडे।

कई वर्षों के वर्ष के राजा का चक्र

सम्वत	राजा वार	सम्वत	राजा	सम्वत	राजा	सम्वत	राजा	सम्वत	राजा
१८४८	सोम.	१८६१	गुरु.	१९२४	शुक्र.	१९५७	शनि.	१९९०	सोम.
१८४९	शुक्र.	१८९२	सोम.	१९२५	बुध	१९५८	गुरु.	१९९१	शुक्र.
१८५०	शुक्र	१८९३	शुक्र.	१९२६	रवि.	१९५९	बुध.	१९९२	गुरु.
१८५१	मगल	१८९४	गुरु	१९२७	शनि.	१९६०	रवि.	१९९३	मङ्गल.
१८५३	शुक्र	१८९५	सोम	१९२८	बुध	१९६१	शुक्र.	१९९४	सोम
१८५४	बुध.	१८९६	शनि.	१९२९	सोम.	१९६२	बुध	१९९५	शुक्र
१८५७	बुध.	१८९७	शुक्र.	१९३०	शनि.	१९६३	रवि.	१९९६	बुध.
१८५८	रवि.	१८९८	बुध	१९३१	गुरु.	१९६४	शुक्र.	१९९७	सोम.
१८५९	शनि.	१८९९	सोम.	१९३२	बुध.	१९६५	गुरु	१९९८	शुक्र.
१८६०	गुरु.	१९००	शुक्र.	१९३३	रवि.	१९६६	सोम.	१९९९	मगल.
१८६१	बुध.	१९०१	मगल	१९३४	शुक्र.	१९६७	रवि.	२०००	सोम.
१८६५	सोम.	१९०२	शनि	१९३५	बुध.	१९६८	शुक्र.	२००१	शनि.
१८६७	गुरु	१९०३	शनि.	१९३६	रवि.	१९६९	मगल.	२००२	गुरु.
१८६९	शनि.	१९०४	बुध	१९३७	शनि.	१९७०	सोम.	२००३	बुध.
१८७०	शुक्र.	१९०५	मगल.	१९३८	बुध.	१९७१	शुक्र.	२००४	रवि.
१८७१	मगल.	१९०६	रवि.	१९३९	सोम.	१९७२	मगल.	२००५	शनि.
१८७२	सोम.	१९०७	गुरु.	१९४०	रवि.	१९७३	सोम.	२००६	बुध.
१८७३	शुक्र.	१९०८	बुध	१९४१	शुक्र	१९७४	शुक्र	२००७	रवि
१८७४	मगल	१९०९	रवि	१९४२	मगल.	१९७५	शुक्र	२००८	शनि.
१८७६	शुक्र.	१९१०	शनि	१९४३	सोम.	१९७६	मगल.	२००९	बुध.
१८७७	बुध.	१९११	बुध	१९४४	शुक्र.	१९७७	रवि.	२०१०	सोम.
१८७८	मगल.	१९१२	सोम	१९४५	गुरु.	१९७८	शनि	२०११	रवि.
१८८०	शनि.	१९१३	रवि	१९४६	सोम.	१९७९	बुध.		
१८८१	बुध.	१९१४	गुरु.	११४७	शुक्र.	१९८०	रवि.		
१८८२	रवि	१९१५	मंगल.	१९४८	गुरु.	१९८१	शनि.		

सवत्	राजा	संवत्	राजा	संवत्	राजा	सवत्	राजा
१८८३	शनि.	१९१६	सोम	१९४९	मगल	१९८२	वुध
१८८४	वुध	१९१७	शुक्र	१९५०	रवि	१९८३	रवि
१८८५	रवि	१९१८	गुरु	१९५१	शनि	१९८४	रवि
१८८६	शनि	१९१९	सोम	१९५२	वुध	१९८५	गुरु
१८८७	गुरु	१९२०	शुक्र	१९५३	रवि	१०८६	वुध.
१८८८	मगल	१९२१	गुरु	१९५४	शनि	१९८७	सोम
१८८९	सोम	१९२२	मगल	१९५५	वुध	११८८	शुक्र
१८९०	शुक्र	१९२३	शनि	१९५६	मगल	१९८९	वुध

३—विना पंचांग के नक्षत्र जानना

किसी चाद्र मास की पूर्णिमा को जो नक्षत्र होता है पहिले वता चुके है। पूर्णिमा से आगे की तिथि तक गिनो, उस सख्या को गत पूर्णिमा के नक्षत्र सख्या मे जोड दो अर्थात् पूर्णिमा को जो नक्षत्र हो उसके आगे इष्ट तिथि की संख्या तक गिनो तो इष्ट नक्षत्र निकल आयगा।

(१)-जैसे सम्वत २००० मे कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को नक्षत्र जानना है। इसके पहिले कुआँर पूर्णिमा को अश्विनी नक्षत्र होता है। कुआँर पूर्णिमा से कार्तिक अमावस्या तक १५ दिन और कार्तिक शुक्ल चौथ तक गत दिन १५+३=१८ दिन हुए। अव पूर्णिमा का नक्षत्र अश्विनी से गिना तो १८ वा नक्षत्र ज्येष्ठा आया। पचाग मे भी उस दिन ज्येष्ठा दिया है।

(२)दूसरी रीति=कार्तिक कृष्ण १ से इष्ट मास तक गिन कर दूना करो और वीते पक्ष के दिन जोड कर १ और मिला दो और २७ का भाग दो। शेष जो वचे उसे अश्विनी से गिन कर इष्ट नक्षत्र कहना। पक्ष के दिन जोडने के लिए कृष्ण पक्ष की प्रति पदा को गिनो और और आगे गिनना आरभ कर इष्ट तिथि तक गिनना चाहिए।

जैसे ऊपर के उदाहरण मे गत मास कुआँर है। इसे कार्तिक से गिना तो यह कुआँर १२ वा महीना हुआ। १२ × २=२४+गततिथि (कुआँर पूर्णिमा से कार्तिक अमावस्या तक १५+चौथके ४ दिन)+ १=२४ + १५+४+१ ४४ — २७ शेष १७=१७ वा नक्षत्र अनुराधा होता है। इस कारण इष्ट तिथि को अनुराधा नक्षत्र आया। पचाग मे उस दिन ज्येष्ठा नक्षत्र है। इसमे भी कभी २ एक नक्षत्र का अन्तर पड जाता है।

दूसरा उदाहरण—माघकृष्ण १० को सम्वत २००० में नक्षत्र जानना है। गत मास पूस हुआ। कार्तिक से पूस तक=३ मास×२=६+गत दिन माघ कृष्ण के १५×माघ

शुक्ल के १० दिन + १=६+१५ + १०+१=३२ ÷ २७=शेष ५=मृगशिर । पंचाग में कुछ देर उपरान्त रोहिणा था, १ दिन का अतर पड गया । तिथि के घट वढ जाने से प्रायः १ दिन का कभी २ अतर पड जाता है ।

(३) तीसरी रीति अमावस्या को सूर्य और चन्द्र एक साथ रहते है । यदि सूर्य नक्षत्र ज्ञात हो तो अमावस्या से आगे जितने दिन (इष्ट दिन तक)हो गिनो, उतने दिन सूर्य नक्षत्र मे गिनने पर अपना दिन नक्षत्र(चंद्र नक्षत्र) आयगा ।

आकाश मे भा यदि चद्र दिखता है तो चंद्र के समीप जो नक्षत्र होगा आकाश में देखकर वता दो । उस दिन वही नक्षत्र होगा ।

(४) बिना पंचांग के योग जानना

सूर्य का जो नक्षत्र हो मालूम करो । सूर्य नक्षत्र से पुष्य नक्षत्र तक दोनो नक्षत्रों को मिलाते हुए गिनो, फिर जिम दिन का योग जानना है उस दिन के चन्द्र नक्षत्र तक श्रवण से गिनो । दोनो सख्या जोड कर २७ का भाग दो, जो शेप वचे वह संख्या योग की होगी ।

जैसे स० २००० मे श्रावण शुक्ल १० को जानना है । उस दिन सूर्य आश्लेपा नक्षत्र पर है और इष्ट दिन (दशमो) को ज्येष्ठा नक्षत्र है । अव पुष्य नक्षत्र मे सूर्य के आश्लेषा नक्षत्र तक गिना=यह दूसरा नक्षत्र है=२सख्या हुई । फिर श्रवण से इष्ट नक्षत्र ज्येष्टा तक गिना २३ आये । =२३+२=२५ ÷ २७=शेप २५ रहे, २८ वा योग ब्रह्म योग आया, पचाग में २६ वा योग ऐन्द्र है । नक्षत्रो के घट वढ जाने से इसमें भी कभी-कभो एक दिन का अतर पड जाता है ।

(५) बिना पंचाङ्ग के करण जानना ।

शुक्ल प्रतिपदा से इष्ट तिथि को गिन कर दूना करो और १ घटा कर ७ का भाग दो तो ये चरकरण निकलेंगे । वह करण तिथि के उत्तरार्द्ध मे मिलेगा । पूर्वार्द्ध मे उसके पहिले का करण जानना ।

ये ७ चर करण है (१) वव (२) वालव, (३) कौलव, (४) तैतिल (५) गर, (६ वणिज, (७) विष्टि ।

स्थिर करण ४ है --(१) शकुनि, (२) चतुष्पद, (३) नाग, (४) किंस्तुघ्न ।

स्थिर करण--शुक्ल परिवा को पूर्वार्द्ध मे किंस्तुघ्न, उत्तरार्द्ध में वव (चर) अमावस्या, कृष्ण ३० को पूर्वार्द्ध मे चतुष्पद उत्तरार्द्ध मे नाग, कृष्ण १४ को पूर्वार्द्ध मे विष्टि (चर) उत्तरार्द्ध मे शकुनि

उदाहरण --सम्वत २००० मे श्रावण पूर्णिमा को करण जानना है । पूर्णिमा तक

१५ तिथि=१५५२=३०-१=२९ ÷ ७=शेष १=वव करण उत्तरार्द्ध में, इसके पूर्वार्द्ध मे (इसके पहिले का) विष्टि करण होगा। १ तिथि मे २ करण होते है।

पहिले करण जानने का चक्र दे चुके है उसके द्वारा किसी भी तिथि का करण सरलता से जान सकते है।

(६) विना पंचाङ्ग के चन्द्र जानना

(इष्ट तिथि × २) × (कृष्ण पक्ष मे ३५, शुक्ल पक्ष में ५) ÷ ५ = लब्धि वर्तमान संक्राति जिस राशि की हो उस राशि से लब्धि सख्या तक गिनो तो चन्द्र की राशि निकलेगी। गिनने मे १२ से अधिक सख्या हो तो १२ घटा कर शेष अक लेना।

(१) जैसे सं० २००० वैशाख शुक्ल १२ को चन्द्र जानना है।
तिथि १२×२ = २४ + ५ शुक्ल पक्ष के=२९ ÷ ५ = लब्धि ५ दशमी को वृष संक्राति थी। वृष से लेकर लब्धि का अक ५ तक गिना तो कन्या आई। तो उस दिन कन्या का चन्द्र था।

५) २९ (५ लब्धि
२५
४

(२) कार्तिक अमावस को चन्द्र जानना है। तिथि १५ × २=३० + ३५ (कृष्ण पक्ष होने). ... ÷ ५ = १३ लब्धि। लब्धि १३ यह १२ मे अधिक है तो १३ − १२ = शेष ... की सक्राति कृष्ण चौथ को थी उसमे १ गिना तो तुला का चन्द्र आया।

(३) ज्येष्ठ पूर्णिमा सं २००० को चन्द्र जानना है। तिथि १५ × २ = ३० + ५ (शुक्ल के) = ३५ ÷ ५ = लब्धि ७ मिथुन। संक्राति १२ तिथि को थी, मिथुन से ७ गिना = सातवा धनु आया, इस कारण इष्ट दिन को धनु का चन्द्र हुआ।

दूसरी रीति—अमावस्या को सूर्य चन्द्र एक राशि पर रहते है तो जो सूर्य की राशि हो वहा से सवा दो दिन चन्द्र एक राशि पर रहता है। तिथि में २¼ दिन = ९/४ का भाग दो। अर्थात् तिथि × ४ ÷ ९ = जो लब्धि होगी, सूर्य की राशि से उतना गिनो तो चन्द्र की राशि ज्ञात होगी। जैसे वैशाख शुक्ल १२ = १२ × ४ ÷ ९ = ४८ ÷ ९=५ लब्धि। सूर्य वृष का है तो वृष से लब्धि ५ तक गिना तो कन्या राशि आई। इस कारण चन्द्र की राशि कन्या हुई।

सूर्य की संक्राति जानना आगे वताया है।

अध्याय ३६

सायन सूर्य जानने की स्थूल रीति

मास	तारीख	अंग्रेजी महीना	सूर्य की संक्राति	अंश	गति कला
१ माघ	२०	जनवरी	कुम्भ	१°	६१'
२ फाल्गुन	१९	फरवरी	मीन	१	६०
३ चैत्र	२१	मार्च	मेष	१	५६
४ वैशाख	२०	अप्रैल	वृष	१	५९
५ ज्येष्ठ	२१	मई	मिथुन	१	५८
६ आषाढ	२१	जून	कर्क	१	५७
७ सावन	२३	जुलाई	सिंह	१	५७
८ भादो	२२	अगस्त	कन्या	१	५८
९ कुआँर	२३	सितम्बर	तुला	१	५८
१० कार्तिक	२३	अक्टूबर	वृश्चिक	१	६०
११ अगहन	२३	नवम्बर	धनु	१	५८
१२ पूस	२२	दिसम्बर	मकर	१	५९

यहाँ अंग्रेजी तारीख के अनुसार सायन सूर्य दिया है। इष्ट दिन का सायन सूर्य जानने की रीति—

चक्र मे सायन सूर्य की संक्रान्ति और उसकी तारीख इष्ट दिन के समीप की खोजो और उससे इष्ट दिन का अन्तर निकालो। उसी के आगे सूर्य की गति दी है। अन्तर समय की गति स्थूल रूप से निकाल कर उसे चक्र मे दिये हुए सायन सूर्य में जोड या घटा कर इष्ट दिन का सायन सूर्य जान सकते हो। चक्र मे दिये हुए तारीख के पहले का समय हो तो घटाना पडेगा, आगे का हो तो जोडना पडेगा, तब इष्ट दिन का सायन सूर्य निकलेगा।

जैसे १८ मार्च का सायन सूर्य निकालना है। चक्र मे देखा अपने इष्ट समय के समीप २१ मार्च दिया है। अब इष्ट दिन और चक्र की तारीख का अन्तर निकालना। (चक्र की तारीख २१ मार्च—इष्ट तारीख १८ मार्च) = २१-१८ = ३ दिन का अन्तर आया। २१ मार्च के आगे गति ५९' दी है। १ दिन मे सूर्य ५९' चलता है तो ३ दिन के अन्तर मे =५९'×३ = १७७ कला = २°–५७' गति हुई। यह सूर्य की इष्ट काल तक की गति हुई। अर्थात् २१ मार्च के आगे सूर्य का अन्तर २°–५७' हो गया। इस गति को चालन कहते है। अर्थात् सूर्य को इतना चलना पडेगा।

चक्र की तारीख से अपना इष्ट समय पहिले का है, इसलिये यह चालन घटाना पडेगा। जहाँ घटाना पडता है उसे चालन ऋण कहते हैं। जहाँ जोडना पडता है उसे चालन घन कहते हैं। इष्ट काल २१ मार्च के आगे का होता तो चालन धन होता, परन्तु अपनी तारीख २१ मार्च के पहिले की है। इस कारण यहाँ चालन ऋण हुआ। चक्र में जो दिया है उसे पक्तिस्थ (जो पंक्ति में है) या चक्रस्थ कहते है। अब पक्तिस्थ २१ मार्च के सायन सूर्य को लिया। वह मेप १° पर है = रा ०–१ अं० इसमें से चालन २°–५७′ (चालन ऋण होने से) घटाया तो शेप रहा ११ रा २८°–३′ यह स्पष्ट सायन सूर्य इष्ट काल का हुआ। यहाँ राशि ० है। इसमें से १ राशि नही घटती थी तो ऊपर १२ राशि मान कर घटाया तो ११ रही। इस प्रकार स्पष्ट सायन रवि हुआ।

रा. अ. क.
०–१—०
–०–२–५७
=११–२८–३
स्पष्ट सायन सूर्य

गणित करने से जो इष्ट समय का ग्रह आदि निकलता है उसे स्पष्ट ग्रह आदि कहते हैं।

इष्ट कालीन सायन रवि स्पष्ट ११ रा २८° ३′ मे यदि २° ५७′ जोड दिया जाय तो वही ० रा १° सायन रवि २१ मार्च का आ जाता है।

यदि घटा भी दिया है तो उतने घटे की गति निकाल कर उस चालन का भी ± (घन ऋण जैसी आवश्यकता हो) करो। घटे की गति त्रैराशिक से इस प्रकार निकालेंगे—६० घडी (१ दिन रात) मे सूर्य की गति उस दिन ५९′ (या जो गति हो) थी तो इतने घडो में (इष्ट घडी मे) कितनी होगी ? घटा की घडी वना लो।

जैसे ५ घडी की गति निकालना है। ६० घडी में ५९′ तो ५ घडी में $\frac{५९\times५}{६० \; १२} = \frac{५९}{१२} = ४'–५५''$ गति हुई। मान लो १८ मार्च को सूर्योदय के आगे ५ घडी की और गति जानना है तो इष्ट दिन के वाद की गति होने से जोडना पडेगा। पहिले का समय होता तो चालन घटाना पडता। १८ मार्च के सूर्य में ५ घडी की गति और जोडा तो योग ११ रा २८° ३४′ ५५″ हुआ। अर्थात् उस समय मीन के २८° ३४′ ५५″ पर सूर्य होगा। सूक्ष्म गणित करने पर १०–१५ कला का अन्तर आ जाता है।

```
१२)५९(४′
   ४८
   ११×६०
१२)६६०(५५″
   ६०
   ६०
   ६०
   ×
```

	रा	°	′	″
१८ मार्च को सूर्य	११	२८	३०	०
+ ५ घडी और	०	०	४	५५
योग=	११	२८	३४	५५

यह इष्ट काल का सायन सूर्य

सायन सूर्य में से अयनांश घटा देने से निरयन सूर्य होता है। अयनाश निकालना पहिले बता चुके हैं।

सौर मास की संक्रांति की तारीख

	सौर मास	सक्रांति (आरंभ)	संक्राति की तारीख
१	वैशाख	मेष	१३ अप्रैल
२	ज्येष्ठ	वृष	१४ जुलाई
३	आषाढ	मिथुन	१४ जून
४	श्रावण	कर्क	१६ जुलाई
५	भाद्रपद	सिंह	१६ अगस्त
६	आश्विन	कन्या	१६ सितम्बर
७	कार्तिक	तुला	१७ अक्टूबर
८	मार्गशीर्ष	वृश्चिक	१६ नवम्बर
९	पौष	धन	१५ दिसम्बर
१०	माघ	मकर	१३ जनवरी
११	फाल्गुन	कुंभ	१२ फरवरी
१२	चैत्र	मीन	१५ मार्च

इसके आगे दिन का हिसाब लगाने से सौर मास की तारीख (तिथि) जानी जा सकती है। अर्थात् इस प्रकार बताई हुई तारीखो के आगे गिनने पर सौर मास की तिथि किसी भी इष्ट दिन की निकाल सकते हो। इसमें भी कभी-कभी एक दिन का अन्तर पड जाता है। यहा अंग्रेजी तारीख के हिसाब से कौन संक्राति उस समय होगी यह साधारण प्रकार से जानी जा सकती है।

स्थूल रीति से बिना पञ्चाङ्ग के चन्द्र साधन (चन्द्र स्पष्ट करना)

जन्म समय पर किसी ग्रह की ठीक स्थिति इष्टकाल तक गणित द्वारा निकालने से जो जानी जाती है उसीको ग्रह स्पष्ट करना कहते हैं और उस ग्रह के स्पष्ट करने के गणित को साधन (साधन करने की विधि) कहते हैं।

ऊपर सायन सूर्य का साधन करना (बिना पंचाङ्ग के) बताया है, उसी प्रकार यहाँ चन्द्र का साधन करना भी बताते हैं।

सूर्य और चन्द्र में जब १२° का अन्तर पड जाता है तब १ तिथि होती है। इस कारण चन्द्र स्पष्ट करने के लिये उस समय का सूर्य स्पष्ट कर लेना आवश्यक है।

जैसे वैशाख कृष्ण पंचमी ता० २५ अप्रैल सन् १९४३ ई० के ४ बजे संध्या समय चन्द्र स्पष्ट करना है।

पहले इस दिन का सूर्य स्पष्ट करेंगे। वैशाख में २० अप्रैल को वृष के १° पर चक्र में सायन सूर्य दिया है और गति ५९ कला है। (२५ अप्रैल–२० अप्रैल)=५×५९′ गति=चालन धन (इष्टकाल पंक्ति के आगे होने से) + हुआ ५×५९′=२९५′=४°-४५′ चालन+इष्ट ४ बजे संध्या का है=(१२+४)=१६ बजे इष्ट। यह समय सूर्योदय के

बाद का है। मान लो सूर्योदय ६ बजे हुआ। (१६ घंटा-६ बजे सूर्योदय) १० घटा इष्ट। २४ घंटा में ५६' गति तो १० घंटा में $= \frac{५६ \times १० ५}{२४} = \frac{२६५}{१२}$ २५ कला के लगभग।

इन सब को जोड़ा तो इष्ट काल में सायन स्पष्ट रवि=रा १–६°–२०'–०" हुआ= (वृष के ६°–२०')

	रा	°	'
सूर्य (वृष १°)=	०	१	
	१	१	०
५ दिन का चालन +=	०	४	५५
योग =	१	५	५५
१० घटे का +=	०	०	२५
=	१	६	२०

इष्ट कालीन सायन रवि

तिथि शुक्ल प्रतिपदा से गिनी जाती है। पूर्णिमा को '१५ और अमावस्या को ६० तिथि होती है। अपनी इष्ट तिथि = वैशाख कृष्ण ५ है=१५ शुक्ल पक्ष के + ५ गत तिथि कृष्ण पक्ष के =(१५+५)=२०+१=२१ गत तिथि।

१ तिथि=१२° तो २१ तिथि=२१×१२°=२५२°=८ रा. १२°

	रा	°	'
सूर्य स्पष्ट	१	६	२०
गत तिथि =	८	१२	०
प्रात चंद्र स्पष्ट =	९	१८	२०

=मकर का १८°–२०'

यह पंचमी को सूर्योदय पर चंद्र की स्थिति हुई और प्रात काल का सायन चंद्र हुआ।

चंद्र की दैनिक गति १२° से १५½° तक है अर्थात् साधारण प्रकार से मध्यम गति १४° है। २४ घटा में १४° गति है तो आधे दिन की सध्या तक ७° हुई है। १ घटा में लगभग ३५' गति हुई। यहाँ ४ बजे सध्या की गति निकालना है। मान लो सूर्योदय ६ बजे हुआ तो सूर्योदय से इष्ट काल तक १० घटा हुआ। १ घंटा में ३५' तो १० घंटा में =३५'×१०=३५०'=५°—५०' गति हुई। यहाँ चालन+है।

प्रात चंद्र स्पष्ट ९–१८–२०
१० घटे का चालन + ०– ५–५०

इष्ट कालीन } = ९–२४–१०
सायनचद्र स्पष्ट } = मकर का २४°–१०'

इस प्रकार ४ बजे तक चद्र मकर के २४°–१०' पर हुआ। यह स्थूल मान से चद्र स्पष्ट हुआ। सूक्ष्म रीति से गणित करने मे लगभग ११ कला का अतर पड जाता है।

(सायन चद्र—अयनाश)=निरयन चद्र।

चंद्र साधन करने का दूसरा उदाहरण

तारीख २५ मई के ६ बजे संध्या का चद्र स्पष्ट करना है, ज्येष्ठ कृष्ण पचमी का।

२१ मई की सूर्य=मिथुन १° गति ५८'=इष्ट २५ मई को ६ बजे संध्या=चालन + (२५ मई–२१ मई)=४ × ५८' गति=२३२'=३°–५२ चालन + । ६ वजे संध्या इष्ट है। मान लो सूर्योदय ६ वजे हैं, ६ वजे से १२ घंटा हुआ। २४ घटा मे ५८' तो १२ घटा मे २९' गति हुई । इन सबको जोडा तो इष्ट कालीन सायन सूर्य स्पष्ट = २ रा- ५°-२१' हुआ।

सूर्य मिथुन १°=२रा-१°-०'
चार दिन का चालन + ०-३-५२
१२ घटे का ,, + ०-०-२९
इष्टकालीन सूर्य स्पष्ट } = २-५-२१

तिथि ज्येष्ठ कृष्ण ५ है = शुक्ल पूर्णिमा =१५ + कृष्ण पंचमी तक गत तिथि ४ = १५+४=१९ दिन।

१ तिथि मे १२° तो १९ तिथि में =१९ × १२°=२२८°=७रा-१८°

रा ° ,,
सायन सूर्य-२-५-२१
तिथि के अश + ७-१८-०

१ दिन की चद्र की मध्यम गति (औसत गति) १४° है तो १२ घंटा (½ दिन, की=७°

=चद्र स्पष्ट=९-२३-२१=चतुर्थी के अन्त तक का।

आधे दिन का+=०-७-०

इष्ट कालीन सायन चंद्र स्पष्ट } =१०-०-२१=कुभ के ०°-२१' पर चन्द्र है। =इष्ट कालीन सायन चंद्र कुम्भ के ०°-२१' पर है।

(२) चन्द्र साधन करने की दूसरी रीति—

चंद्र की मध्यम गति १२° है कोई १४° लेते हैं। रवि और चंद्र में १२° का अंतर पडने पर १ तिथि होती है, शेष २° मध्यम गति के हैं। उस के मिला देने से चंद्र के अंश ज्ञात हो जाते हैं।

अधिक मध्यम गति का अतर इस प्रकार से होता है।

तिथि	प्रतिपदा	द्वितीया	तृतीया	चतुर्थी	पचमी	पचमी से द्वादशी तक	शेष तिथि में
अंतर	२°	४	६	५	३	३	२ अंश

तिथि	पूर्णिमा से कृष्णपचमी तक	एकादशी से अमावस्या तक
अतर	३ अंश	३ अश

चद्र स्पष्ट करने के लिये सूर्य स्पष्ट में तिथि के अनुसार ये अश मिला देना चाहिये। चद्र की गति प्रति दिन १२° के १५½° तक वढ जाती है। इसी के कारण साधारण रीति से अधिक वढे हुए अश ऊपर जोडना वताया है। इस रीति से चंद्र स्पष्ट करने में १° के लगभग अतर पड जाता है, परन्तु ३° से अधिक अन्तर नही आता। तिथियाँ १ मास में पूरी ३० नही होती। इस से ये अंश वढ जाते हैं।

जैसे सन १९४३ मे २५ मई को तदनुसार ज्येष्ठ वदी ६ को १२ बजे दिन का चद्र साधन करना है। १२ वजे दिन अर्थात सूर्योदय से लगभग ६ घंटा हुआ।

२१ मई को सायन रवि=मिथुन १° गति ५८′ इष्ट २५ मई का है। आगे का होने से चालन धन हुआ।

(२५ मई–२१ मई)=४ दिन × ५८′ गति=२३२′=३°–५२′=३°–५२′–०°

२४ घटा में ५८′ गति तो ६ घंटा में=$\frac{५८}{४}$=१४½′   +०–१४–३०

४–६॥ चालन+

रा—०

२१ मई को सूर्य २—१°—०

\+ चालन ०—४—६½

=सायन सूर्य = २—५—६½

रा ०

६ तिथि है=गत तिथि ५=५ × १२°=६०°=२–०°

\+ पंचमी के अन्त तक चद्र =२–०–०

योग ४–५–६½

+०–३–० पचमी की वढती के अंश

+०–३–० छठ „ „ „

योग=४–११–६½ (क्यो कि छठ उदय है)

६ घंटा का + = ३–३० २४ घंटा में चंद्र १४° चला तो ६ घंटा में

चन्द्र स्पष्ट = ४–१५–३६½ $\frac{७ \; १४ \times ६}{२४ \atop ४ \; २} = \frac{७°}{२} = ३°–३०'$

∴ इष्ट कालीन सायन चंद्र स्पष्ट ४-रा १४°-३६½'

यह कुछ मोटा हिसाब है। गणित से १-२ अंश का अन्तर पड़ जाता है। सायन चंद्र से अयनांश घटा दो तो निरयन चंद्र होगा।

चंद्र से नक्षत्र और उसका चरण साधन करना

चंद्र स्पष्ट की राशि आदि की कला बना कर १३°-२०'=८००' का भाग दो तो लब्धिगत नक्षत्र होगा। शेष में ४ गुणाकर ८००' का भाग दो तो वर्तमान नक्षत्र का चरण निकालेगा। १ नक्षत्र में ४ चरण होते हैं। सायन नक्षत्र १३°-२०' का होता है और अश्विनी से आरम्भ होता है। जैसे चंद्र मकर का २९°-५२' है। = ९रा-२९°-५२'=१७९९२"÷८००'=२२ गत नक्षत्र (श्रवण) वर्तमान २३ वा नक्षत्र धनिष्ठा का २ चरण।

```
रा. अं. क.        ८००') १७९९२" (२२ गत नक्षत्र
९-२९-५२              १६००
×३०                  ----
----                 १९९२
२७०                  १६००
+२९                  ----
----                 ३९२
२९९                  ×४
×६०                  ----
----          ८००) १५६८ (१ गत
१७९४०                ८००      चरण
 +५२                 ----
-----                ७६८ शेष
१७९९२ विकला          =वर्तमान दूसरा चरण हुआ
```

किसी राशि के नाम पर से जन्म नक्षत्र और चरण जानना—

आगे होड़ा चक्र दिया है जिस पर से हिन्दुओ के नाम विचार कर रखे जाते हैं। प्रत्येक नक्षत्र के ४ चरण होते है और प्रत्येक चरण के लिये एक अक्षर नियुक्त है। जन्म समय जो नक्षत्र होता है उस नक्षत्र का जो चरण वर्तमान हो उसी चरण के अक्षर के अनुसार नाम रखा जाता है। जैसे किसी का जन्म शतभिषक नक्षत्र के तीसरे चरण में हुआ तो चक्र मे देखने से प्रगट हुआ कि शतभिषक के तीसरे चरण का अक्षर "सी" है। इसी अक्षर पर से सीताराम, शिशुपाल आदि नाम उस बालक का रखा जावेगा। स अक्षर में

श अक्षर भी लिया जा सकता है। वह ह्रस्व हो या दीर्घ हो उसका कुछ विचार नही होता। यहाँ सी अक्षर है इसमें "छोटी इ" की भी मात्रा हो तो कोई अन्तर नही पडेगा। इसमें केवल अक्षर और मात्रा का विचार होता है। मात्रा ह्रस्व हो तो उसे दीर्घ भी ले सकने हैं जैसे कू और कु एक है। इसी प्रकार म और मा एक हैं। मघा के पहले चरण का जन्म होता है म अक्षर है तो मक्खन सिह या मारुती प्रसाद भी नाम रख सकते हैं।

कई अक्षर ऐसे भी हैं जिन पर से नाम नही रखा जा सकता है जैसे ङ. ञ. ण. जब ये अक्षर आते हैं तो नाम "न" अक्षर या किसी दूसरे अक्षर पर से रख देते है।

इसी प्रकार किसी राशि के नाम पर से माम के आदि अक्षर का विचार कर जन्म नक्षत्र या राशि भी जान सकते हैं। जैसे किसी का नाम रामलाल है। नाम का आदि अक्षर रा है। चक्र देखा तो तुला राशि के आगे चित्रा के तीसरे चरण का जन्म है और तुला राशि है।

इस चक्र से किसी ग्रह की राशि अश कला आदि मालूम हो तो उसका नक्षत्र और चरण भी जाना जा सकता है।

जैसे जन्म समय चद्र स्पष्ट ६रा-२६°-५२' है तो यह जानने के लिये कि जन्म नक्षत्र अ र चरण क्या होगा, होडा चक्र का अन्तिम भाग देखो। ६ रा २६°. ४०' तक धनिष्ठा का पहला चरण गत हो चुका, धनिष्ठा का दूसरा चरण १०रा-०°-०° तक है। अपना चद्र इन दोनो के भीतर है इससे यह प्रगट हुआ कि धनिष्ठा के दूसरे चरण का जन्म है।

नक्षत्र का चरण (जैसे नाम से प्रगट हो जाता है) जान लेने पर इसी चक्र द्वारा चद्र की राशि अश आदि भी विदित हो सकता है।

जैसे किसी का जन्म धनिष्ठा के तीसरे चरण का है तो तीसरे चरण धनिष्ठा का १३ रा-३°-२०' तक है। दूसरा चरण १० रा ०° ०' तक है। इस कारण चद्र इन दोनो के वीच है ऐसा समझना। चंद्र ठीक स्थिति तो गणित करने से ही प्रगट होती हैं। यहाँ केवल मोटा हिसाव वतलाया है। गणित खड में इसका गणित दिया है।

होडा चक्र को अवकडहा चक्र या शतपद चक्र भी कहते हैं।

१ चरण (नक्षत्र का) ३°–२०' का होता है। आगे ३°–२० जोडते जाने से राशि के अंशादि का चक्र वन जाता है।

इसमें एक अक्षर को लेकर प्रत्येक चरण के लिय पृथक मात्रा लगा कर चरण के अक्षर वनाये गये हैं। जैसे ल से ला, ली, लू, ले, लो इत्यादि जैसा नीचे के चक्र से प्रगट होगा।

होड़ा चक्र=अवकहड़ा चक्र=शतपद चक्र ।

क्रम	राशि	नक्षत्र	(चरण आदि अक्षर)				राशि के अंशादि			
			चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	पहिला चरण रा – ० – ।	दूसरा चरण रा – ० – ।	तीसरा चरण रा – ० – ।	चौथा चरण रा – ० – ।
१	मेष	अश्विनी	चू	चे	चो	ला	०–३–२०	०–६–४०	०–१०–०	०–१३–२०
		भरणी	ली	लू	ले	लो	०–१६–४०	०–२०–०	०–२३–२०	०–२६–४०
		कृत्तिका	आ	०	०	०	१–०–०	०	०	०
२	वृष	कृत्तिका	०	ई	उ	ए	०	१–३–२०	१–६–४०	१–१०–०
		रोहिणी	ओ	वा	वी	वू	१–१३–२०	१–१६–४०	१–२०–०	१–२३–२०
		मृगशिर	वे	वो	०	०	१–२६–४०	२–०–०	०	०
३	मिथुन	मृग०	०	०	का	की	०	०	२–३–२०	२–६–४०
		आर्द्रा	कू	घ	ङ	छ	२–१०–०	२–१३–२०	२–१६–४०	२–२०–०
		पुनर्वसु	के	को	हा	०	२–२३–२०	२–२६–४०	३–०–०	०
४	कर्क	पुनं०	०	०	०	ही	०	०	०	३–३–२०
		पुष्य	हू	हे	हो	डा	३–६–४०	३–१०–०	३–१३–२०	३–१६–४०
		आश्लेषा	डी	डू	डे	डो	३–२०–०	३–२३–२०	३–२६–४०	४–०–०
५	सिंह	मघा	मा	मी	मू	मे	४–३–२०	४–६–४०	४–१०–०	४–१३–२०
		पूर्वा फा०	मो	टा	टी	टू	४–१६–४०	४–२०–०	४–२३–२०	४–२६–४०
		उ० फा०	टे	०	०	०	५–०–०	०	०	०

६	कन्या	उ० फा०	०	टो	पा	पी	०	५—३—२०	५—६—४०	५—१०—०
		हस्त	पू	ष	ण	ठा	५—१३—२०	५—१६—४०	५—२०—०	५—२३—२०
		चित्रा	पे	पो	०	०	५—२६—४०	६—०—०	०	०
७	तुला	चित्रा	०	०	रा	री	०	०	६—३—२०	६—६—४०
		स्वाती	रु	रे	रो	ता	६—१०—०	६—१३—२०	६—१६—४०	६—२०—०
		विशाखा	ती	तू	तो	०	६—२३—२०	६—२६—४०	७—०—०	०
८	वृश्चिक	विशाखा	०	०	०	तो	०	०	०	७—३—२०
		अनुराधा	ना	नी	नू	ने	७—६—४०	७—१०—०	७—१३—२०	७—१६—४०
		ज्येष्ठा	नो	या	यी	यू	७—२०—०	७—२३—४०	७—२३—४०	८—०—०
९	धन	मूल	ये	यो	भा	भी	८—३—२०	८—६—४०	८—१०—०	८—१३—२०
		पू० षा०	भू	ध	फा	ढ	८—१६—४०	८—२०—०	८—२३—२०	८—२६—४०
		उ० षा०	भे	०	०	०	९—०—०	०	०	०
१०	मकर	उ० षा०	०	भो	जा	जी	०	९—३—२०	९—६—४०	९—१०—०
		श्रवण	खी	खू	खे	खो	९—१३—२०	९—१६—४०	९—२०—०	९—२३—२०
		धनिष्ठा	गा	गी	०	०	९—२६—४०	१०—०—०	०	०
११	कुम्भ	धनिष्ठा	०	०	गू	गे	०	०	१०—३—२०	१०—६—४०
		शतभि०	गो	सा	सी	सू	१०—१०—०	१०—१३—२०	१०—१६—४०	१०—२०—०
		पू० भाद्र०	से	सो	दा	०	१०—२३—२०	१०—२६—४०	११—०—०	०
१२	मीन	पू० भाद्र०	०	०	०	दी	०	०	०	११—३—२०
		उ० भा०	दु	थ	झ	ञ	११—६—४०	११—१०—०	११—१३—२०	११—१६—४०
		रेवती	दे	दो	चा	ची	११—२०—०	११—२३—२०	११—२६—४०	१२—०—०

होड़ा चक्र के अक्षर और उनका नक्षत्र चरण सूचक चक्र—

नक्षत्र क्रम नाम	अक्षर	नक्षत्र चरण	अक्षर	नक्षत्र चरण	अक्षर	नक्षत्र चरण	अक्षर	नक्षत्र चरण	अक्षर	नक्षत्र चरण
१ अश्वि.	आ	३/१	इ	३/२	उ	३/३	ए	३/४	ओ	४/१
२ भरणी	का	५/३	की	५/४	कू	६/१	के	७/१	को	७/२
३ कृत्तिका			खी	२२/१	खू	२२/२	खे	२२/३	खो	२२/४
४ रोहिणी	गा	२३/१	गी	२३/२	गू	२३/३	गे	२३/४	गो	२४/१
५ मृग.	घा	६/२								
६ आर्द्रा	ङ	६/३								
७ पुन.	चा	२७/३	ची	२७/४	चू	१/१	चे	१/२	चो	१/३
८ पुष्य	छ	६/४								
९ आश्ले.	जा	२१/३	जी	२१/४						
१० मघा	झ	२६/३								
११ पू. फा.	ञ	२६/४								
१२ उ. फा.	टा	११/२	टी	११/३	टू	११/४	टे	१२/१	टो	१२/२
१३ हस्त	ठ	१३/४								
१४ चित्रा	डा	८/४	डी	९/१	डू	९/२	डे	९/३	डो	९/४

ख

जो नही हैं अक्षर

घी घू घे घो

छो छू छे छो

जू जे जो

झो झू झे झो

ठी ठू ठे ठो

इस चक्र में अक्षर के आगे ऊपर नक्षत्र का क्रम और नीचे चरण के अक दिये है। नक्षत्र क्रम से यहाँ दिये हुए नक्षत्र का नाम प्रकट हो जायगा।

इनमे ये अक्षर बराबर हैं—

अ=आ
इ=ई
उ=ऊ
ए=ऐ
ओ=औ
अ=अं
स=श
व=ब

१५ स्वाती	ढ	२०/४										ढो	ढू	ढे	ढो	
१६ विशा.	ण	१३/३														
१७ अनु.	ता	१५/४	ती	१६/१	तू	१६/२	ते	१६/३	तो	१६/४						
१८ ज्ये.	थ	२६/३										थी	थू	थे	थो	
१९ मूल	दा	२५/३	दी	२५/४	दू	२६/१	दे	२७/१	दो	२७/२						
२० पू. षा.	ध	२०/२										धी	धू	धे	धो	
२१ उ. षा.	ना	१७/१	नी	१७/२	नू	१७/३	ने	१७/४	नो	१८/१						
२२ श्रवण	पा	१२/३	पी	१२/४	पू	१३/१	पे	१४/१	पो	१४/२						
२३ धनि.	फा	२०/३										फी	फू	फे	फो	
२४ शत.	भ	१९/३	भी	१९/४	भू	२०/१	भे	२१/१	भो	२२/२						
२५ पू. भा.	मा	१०/१	मी	१०/२	मू	१०/३	मे	१०/४	मो	११/१						
२६ उ. भा.	या	१८/२	यी	१८/३	यू	१८/४	ये	१९/१	यो	१९/२						
२७ रेवती	रा	१४/३	री	१४/४	रू	१५/१	रे	१५/२	रो	१५/३						
	ला	१/४	ली	२/१	लू	२/२	ले	२/३	लो	२/४						
	वा	४/२	वी	४/३	वू	४/४	वे	५/१	वो	५/२						
	ष	१३/२														
	सा	२४/२	सी	२४/३	सू	२४/४	से	२५/१	सो	२५/२						
	हा	७/३	ही	७/४	हू	८/१	हे	८/२	हो	८/३						

ष=ख

जब हस्त के दूसरे चरण का जन्म होता है तो ष अक्षर होने से उसे खा मानकर नाम रख देते हैं जैसे—

षरगराम= खरगराम

षडानन= खडानन ।

ङ. ञ. ण. = इन अक्षरो से नाम नही बनता तो इनके बदले "न" या और कोई भी अक्षर नाम रख देते है ।

अध्याय ३७

तारीख से तिथि निकालना

सुवर्णांक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
विशेषाक	०	११	२२	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२०	१	१२	२३	४	१५	२६	७	१८

आरंभ महीना=मार्च को पहिला गिनो ।

आरभ मे विशेषाक शून्य है जिसका क्षेपक ११ है अर्थात् प्रतिदिन ११ बढता है। जैसे ११ + ११ = २२ + ११=३३ इसका ३ ही लिया ३ + ११ = १४, = १४ + ११ =२५ । इसी प्रकार ये विशेषाक ऊपर दिये है । ३० से अधिक तिथि होने पर ३० घटाने से जो बचता है वही ऊपर चक्र में रखा है । जैसे २२ + ११ = ३३ का ३० घटा कर ३ ही विशेषाक रखा है ।

सुवर्णांक Golden numer = सन ईस्वी + $\frac{१}{१९}$ = शेष सुवर्णांक का क्रम ।
(शाका + ७८) = सन ईस्वी ।

जैसे शाका १८६५ + ७८ = १९४३ सन् । $\frac{१९४३}{१९} + १ = \frac{१९४४}{१९}$ = शेष ६ । शेष ६ वचा तो १९४३ सन का सुवर्णांक=६ हुआ । इस सुवर्णांक ६ के नीचे विशेषाक २५ दिया है । इस वर्ष भर के लिये इसी विशेषाक से तिथि निकलेगी ।

१९) १९४४ (१०२
१९
——
४४
३८
——
६ शेष

रीनि—सन् ईस्वी में १ जोड कर १९ का भाग दो जो शेष बचे वह सुवर्णांक होगा। उस सुवर्णाक के नीचे जो विशेषाक मिले उसे लो । फिर जिस अंग्रेजी महीना की तारीख की तिथि जानना हो, मार्च से उस अग्रेजी महीना तक गिनो, गिनते समय मार्च को १ गिनो । गिनती मे महीना की जो संख्या आवे उसे मास संख्या कहते है ।

महीने की तारीक + विशेषांक = मास संख्या = तिथि ।

महीने की तारीख, विशेषाक और मास सख्या जोडने से तिथि निकलती है । तिथि ३० से अधिक आवे तो ३० घटाने से जो बचे उसे लेना । पूर्णिमा को १५ और अमावस्या को ३० तिथि जानो ।

सब योग १ से १५ तक आवे तो = शुक्ल पक्ष की तिथियाँ होगी ।
,, १६ से ३० ,, ,, = कृष्ण ,, ,, ,,

जैसे सन् १९४३ ईस्वी को ७ अप्रैल की तिथि जानना है। सन् १९४३ का सुवर्णांक ६ निकला था, इसका विशेपाक २५ हैं, इष्ट मास अप्रैल है। मार्च से गिना, मार्च १, अप्रैल २, इस प्रकार मास सख्या २ हुई।

=विशेपाक + तारीख + मास संख्या = ३४ − ३० = ४ शुक्ल पक्ष की तिथि।
 २५ ७ २

यह योग ३० से अधिक है, इस कारण ३० घटाया, शेप ४ रहे। १ से १५ तक शुक्ल पक्ष की तिथि होती हैं। इस कारण ४ शुक्ल पक्ष की तिथि तारीख ७ अप्रैल को होगी।

दूसरा उदाहरण—तारीख १८ मार्च सन् १८९० की तिथि जानना है

सन् $\frac{१८९० + १}{१९} = \frac{१८९१}{१९} =$ शेप १० सुवर्णांक, विशेपाक ९ } मार्च से इष्ट मास मार्च १

विशेपाक ९ + तारीख १८ + मास १ = २८ कृष्ण पक्ष की तिथि हुई (२८-१५) = १३ तिथि

ऊपर बताये नियम से तारीख की तिथि निकालने में कभी-कभी एक तिथि का अन्तर पड़ जाता है, क्योंकि कभी-कभी एक तारीख में २ तिथिया हो जाती हैं। कभी-कभी तिथियो की हानि-वृद्धि भी होती है। इस कारण कभी १ तिथि का अन्तर पड जाता है। इस रीति से तिथि का अनुमान हो जाता है। (२) इसी रीति को अब दूसरी प्रकार से करते हैं।

आगे तारीख से चन्द्र की तिथि निकालने की जत्री दी है, उसका देखने की रीति यह है।

सन+१/१९=शेपाक (सन में जोड कर १९ का भाग दो जो बचे वह शेपाक कहलाया)
इष्ट महीना के नीचे और शेपाक के आगे चक्र में जो अक मिले वह मासाक होगा।
मसाक+तारीख=तिथि (तिथि ३० से अधिक होने से ३० घटा देना)

जैसे सन् १९४२ मे १५ दिसम्बर की तिथि जानना है।

$\frac{१९४२ + १}{१९} = \frac{१९४३}{१९} =$ शेपांक ५

१९) १९४३ (१०२
 १९
 ४३
 ३८
 ५ शेपांक

इष्ट मास दिसम्बर के नीचे और शेषाक ५ के आगे देखा तो २४ मिला। यही मासांक हुआ। मासांक २४ + तारीख १५ = ३९--३०=९ तिथि शुक्ल पक्ष की।

दूसरा उदाहरण—

इसी सन् में दिसम्बर की तिथि जानना है।

उपर्युक्त मासाक + तारीख = २६ कृष्ण पक्ष की तिथि
२४ २ (२६--१५)=११ तिथि

पंचाग में उस दिन दशमी थी। एक तिथि बृद्धि होने से अन्तर आ गया।

तारीख से चंद्र की तिथि जानने की जंत्री

शेषांक	जनवरी १	फरवरी २	मार्च ३	अप्रैल ४	मई ५	जून ६	जुलाई ७	अगस्त ८	सितम्बर ९	अक्टूबर १०	नवम्बर ११	दिसम्बर १२
१	०	२	१	२	३	४	५	६	८	८	१०	१०
२	११	१३	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१९	१९	२१	२१
३	२२	२४	२३	२४	२५	२६	२७	२८	०	०	२	२
४	३	५	४	५	६	७	८	९	१	१	१३	१३
५	१४	१६	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२२	२२	२४	२४
६	२५	२७	२६	२७	२८	२९	०	१	३	३	५	५
७	६	८	७	८	९	१०	११	१२	१४	१४	१६	१६
८	१७	१९	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२७	२७
९	२८	०	२९	०	१	२	३	४	६	६	८	८
१०	९	११	१०	११	१२	१३	१४	१५	१७	१७	१९	१९
११	२०	२२	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२८	२८	०	०
१२	१	३	२	३	४	५	६	७	९	९	११	११
१३	१२	१४	१३	१४	१५	१६	१७	१८	२०	२०	२२	२२
१४	२३	२५	२४	२५	२६	२७	२८	२९	१	१	३	३
१५	४	६	५	६	७	८	९	१०	१२	१२	१४	१४
१६	१५	१७	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२३	२५	२५
१७	२६	२८	२७	२८	२९	०	१	२	४	४	६	६
१८	७	९	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१५	१७	१७
१९	१८	२०	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२६	२६	२८	२८

ऊपर के अंक में ११ जोडने से ३० से अधिक होने पर ३० घटा देने से यह सारिणी बनी है।

शुक्ल प्रतिपदा की तारीख जानना

सन इसवी के मासाक को ३० से घटा दो तो शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा की तारीख निकल आवेगी।

जैसे सन १९४३ के मई का मासाक २८ है। $\frac{१९४३+१}{१९} = \frac{१९४४}{१९} =$ ६ शेषाक

सारिणी में ६ शेषाक के आगे और मई के नीचे २८ मासाक मिला।

३०–२८ मासाक = २ तारीख हुई। मई की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (पडिवा) होगी।

पूर्णमासी की तारीख जानना—

इष्ट सन के बाद मासाक को ३० में से घटा दो, शेष १५ रहे तो ३० तारीख को पूर्णिमा होगी। शेष १५ से अधिक हो तो १५ से जितने अधिक हो वही अधिक तारीख होगी। १५ से कम हो तो उसमें १५ और जोडना तो योग फल पूर्णिमा की तारीख होगी।

जैसे सन १९४३ का शेपाक ६ है। जून के नीचे और ६ शेपाक के आगे जून का मासाक २९ दिया है। ३०-२९ मासाक=शेप १ यह १५ से कम है। इस कारण १+१५= १६, तारीख १६ को पूर्णिमा होगी।

इस रीति में भी १ का कभी २ का अन्तर आ जाता है।

सन १९४६ की मई की पूर्णिमा जानना है।

$\frac{१९४६+१}{१९} = \frac{१९४७}{१९} =$ शेपाक इसके आगे और मई के नीचे १ मासाक है। ३०– ९

१ = २९ यह १५ से अधिक है। २९–१५ शेप=१४ तारीख को मई में पूनम होगी।

तिथि से तारीख निकालना

$$\text{तारीख} = \begin{pmatrix}\text{शुक्ल पक्ष तिथि}+३०\\ \text{कृष्ण पक्ष तिथि}+१५\end{pmatrix} - \begin{pmatrix}\text{चैत्र से १ गिनकर} \\ \text{इष्ट मास तक सख्या} & + \text{सन विशेपाक}\end{pmatrix}$$

सायन मेप सक्रान्ति को चैत्र जानो और इससे १ गिनो।

रीति—शुक्ल पक्ष की तिथि ३० और कृष्ण पक्ष की तिथि हो तो १५ जोडना योग-फल को तिथि सख्या जानो।

मास संख्या—जिस मास मे सायन मेप सक्रान्ति हो उसे चैत्र जानो और चैत्र को १ गिन कर इष्ट मास तक सख्या गिनो गिनने से जो संख्या आवे वह मासाक हुआ।

यहाँ नक्षत्र मान से जहाँ महीना पूरा हो उसे मास मानना आवश्यक नही है। केवल एक सायन मेप संक्रमण वाले मास को चैत्र मान कर इसी चैत्र से गिनना।

सन ईसवी का सुवर्णांक और विशेषाक निकालना पहले बता चुके है। विशेषाक को माससंख्या में जोडो और इस योग को तिथि सख्या में घटाओ, जो शेष वचे वही तारीख होगी।

हिन्दी मास में जो अग्रेजी महीना पडता है उस अंग्रेजी महीना की तारीख इस प्रकार निकालना। यदि ३० से अधिक तारीख आवे तो ३० दिन घटा देना। घटाने से जो वचे वह अगले महीने की तारीख होगी।

हिन्दी महोना मे लगभग ये अग्रेजी महीना पडते है।

चैत्र	वैशाख	जेठ	असाढ	सावन	भादो	कुआर	कातिक	अगहन	पूस	माघ	फागुन
मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्वर	अक्टू०	नव०	दिस०	जन०	फर०

कभी इन महीनो मे कुछ अंतर पड़ जाता है।

उदाहरण (१)

सन १९४३ ज्येष्ट शुक्ल १४ की तारीख जानना है—

(१९४३+१) ÷ १९= $\frac{१९४४}{१९}$ = शेष सुवर्णाक, इसका विशेषाक २५ इसी के नीचे दिया है।

तारीख=(शुक्ल १४+३०) – (चैत्र से ज्येष्ठ मास+३ विशेषाक २५)=४४-२८=१६ तारीख हुई। इस तारीख मे भी कभी-कभी १ का अन्तर पड जाता है। क्योकि तिथि की हानि-वृद्धि होती है और कभी-कभी एक तारीख मे २ तिथि हो जाती है।

दूसरा उदाहरण—चैत्र कृष्ण १३ सन १८९० को तारीख जानना है—

$\frac{१८९०}{१९}$+१= $\frac{१८९१}{१९}$=शेप १०, १० सुवर्णाक के नीचे ९ विशेषाक दिया है।

तारीख = (कृष्ण १३ + १५)–(चैत्र से चैत्र मास १+विशेषाक ९)=२८-१० = १८ तारीख आई। मार्च को १८ तारीख हुई।

अमावस्या की तारीख जानना—

तारीख=३०–(सन का विशेषाक +चैत्र से इष्ट मास तक मास संख्या)

जैसे सन १९४२ के दिसम्वर में अमावस्या कौन तारीख पडेगी जानना है।

$\frac{१९४२}{१९}$ + १ = $\frac{१९४३}{१९}$=शेष ५ सुवर्णांक के नीचे १४ विशेषाक दिया है।

तारीख =३०-(विशेषाक + मार्च से दिसम्वर तक)=३०-२४=६ तारीख।
१४ महीना १०

इसमें भी कभी कभी १ दिन का अन्तर पड जाता है। पंचागो में ७ तारीख को अमावस्या दिया है।

विशेष विचार—संक्रान्ति मान में वृद्धि

संक्रान्ति मान ७२ वर्ष मे १ दिन आगे बढता है। जनवरी और फरवरी की तिथि निकालने को इष्ट वर्ष के पिछले वर्ष का विशेषाक निकालो और इन दोनो महीनो की अमावस्या निकालने के लिये गत वर्ष का विशेषांक लो।

अमावस्या निकालने का विशेपाक और महीने का योग ३० से अधिक हो तो ३० से घटा देना, जहाँ ० शेप रहे उसे ३० तारीख समझना। तिथि की क्षय वृद्धि से कभी-कभी तारीख में १ दिन का अन्तर पड जाता है। इस कारण इष्ट वार पर से शुद्ध तारीख निकाल कर मिलान कर -लेना चाहिए। वार से तारीख निकालने की रीति आगे दी है।

तारीख से दिन निकालना—

यदि तिथि से तारीख निकालनी है और दिन भी मालूम करना है तो यह निश्चय कर लेना चाहिए कि उस दिन वह तारीख पडती है या नही। इसके जानने की रीति आगे दी है।

मासाक और वाराक

अक	१	२	३	४	५	६	७
मास	जनवरी अक्टूवर	मई	लीप— फरवरी अगस्त	फरवरी मार्च नवम्बर	जून	सितम्वर दिसम्वर	लीप—जनवरी अप्रैल जुलाई
दिन	रविवार	सोमवार	मगलवार	वुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार

इस चक्र में महीने के ऊपर जो अंक दिये है वे **मासांक** है और दिन के ऊपर के अक **वारांक** है।

रीति सन ईसवी का उत्तरार्द्ध अर्थात् इकाई और दहाई को लेकर उस उत्तरार्द्ध का चतुर्थांश भी उसी में जोड दो। चतुर्थांश निकालते समय आधा या पौन अंक मिले उसी जोडते समय छोड देना चाहिए। उस योग फल में तारीख और अंग्रेजी महीने का अक (मासाक) भी जोड दो और ७ का भाग दो जो शेप वचे वही वार उपर्युक्त क्रम से होगा।

जैसे सन् १९४३ में २३ मई का दिन जानना है। सन् १९४३ का उत्तरार्द्ध ४३ हुआ=४३+$४\frac{३}{४}$=४३+१०$\frac{३}{४}$=५३ (यहाँ जोडते समय $\frac{३}{४}$ छोड दिया)=५३+तारीख २३+मई का मासाक२=७८=७८ ÷ ७=शेष १=रविवार। यहाँ मई के ऊपर २ अंक लिखा है, इससे मई का मासाङ्क २ हुआ। सब का योग ७८ था, ७ का भाग देने से १ बचा, १ के नीचे इतवार लिखा है। इससे प्रगट हुआ कि २३ मई सन् १९४३ को इतवार का दिन था।

वीसवी सदी मे उपर्युक्त नियम से तारीख का दिन निकालना है। परन्तु इसके पहिले की गत सदी की तारीख जानने के लिये प्रति सदी मे २ अधिक जोडना और भविष्य की सदी में २ अक घटा देना होगा, तव ठीक तारीख निकलेगी।

लीप फरवरी हो तो लीप वर्ष में जनवरी और फरवरी की तारीख से दिन निकालने मे कुछ सावधानी की आवश्यकता है। ऊपर चक्र में लीप फरवरी और लीप जनवरी जहाँ लिखा है उस वर्ष उस के ऊपर लिखा मासाक लो अर्थात् लीप जनवरी का निकालने को लीप जनवरी का विशेषाक ० या ७ लेना और लीप फरवरी के लिये मासाक ३ लेना। क्योकि लीप फरवरी के ऊपर ३ अंक लिखा है। यदि लीप वर्ष न हो तो साधारण जनवरी का अंक १ और फरवरी साधारण अंक ४ लेना जैसा पहिले चक्र मे वता चुके हैं।

लीप वर्ष (Leap year)=प्लुत वर्ष। जिस वर्ष में सन् ईसवी में ४ का पूरा २ भाग चला जाय या पूर्ण सदी से तो उसमे ४०० का भाग पूरा २ चला जाय अर्थात भाग देने से शेष कुछ न बचे तो वह लीप इयर (प्लुतवर्ष) कहलाता है। जैसे ४, ८, १२, ८८, ९२, ९६ मे ४ का भाग पूरा २ चला जाता है। शेष कुछ नही बचता तो ये सव लीप वर्ष होंगे। और ४००, ८००, १२००, १६००, २०००, इत्यादि इन ईसवी में जिसमे सदी शेष कुछ नही बचता तो ये सव लीप वर्ष कहलायेंगे।

सन् १९०० ईसवी यह पूरी सदी तो है (अर्थात् सैकडा के २ शून्य इसमें तो है) परन्तु ४०० का भाग पूरा पूरा नही जाता, ४०० का भाग देने से शेष बचता है। इससे यह लीप वर्ष नही है। १९१६ मे ४ का भाग देने से कुछ नही वचता, इस कारण यह लीप वर्ष होगा।

लीप वर्ष में फरवरी २९ दिन की होती है। साधारण फरवरी में २८ दिन होते हैं शेष महीनो में कोई ३० दिन का कोई ३१ दिन का होता है। जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, अगस्त, अक्टूबर और दिसम्बर में ३१ दिन, शेष महीनो में ३० दिन होते हैं।

आगे इसी को सरल जत्री अनन्त वर्षो की बनाई गई है, जिससे किसी भी सन् की तारीख से दिन या दिन से तारीख सरलता से जान सकते हो।

अनन्त वर्षों की जन्त्री

अग्रेजी महीना	सन् ईसवी का नम्वर						
७ लीप जनवरी, अप्रैल, जुलाई	१	२	३	४	५	६	७
६ सितम्वर, दिसम्बर	२	३	४	५	६	७	१
५ जून	३	४	५	६	७	१	२
४ फरवरी, मार्च, नवम्वर	४	५	६	७	१	२	३
३ लीप फरवरी, अगस्त	५	६	७	१	२	३	४
२ मई	६	७	१	२	३	४	५
१ जनवरी, अक्टूबर	७	१	२	३	४	५	६

१	८	१५	२२	२९	रवि	सो	मं.	बु.	गु.	शु	श.
२	९	१६	२३	३०	सो	म	बु,	गु	शु	श.	र
३	१०	१७	२४	३१	म	बु	गु	शु	श	र	सो
४	११	१८	२५	—	बु	गु	शु.	श	र	सो.	मं
५	१२	१९	२६	—	गु	शु	श.	र	सो.	म	बु.
६	१३	२०	२७	—	शु.	श.	र	सो	म	बु	गु
७	१४	२१	२८	—	श	र	सो.	मं.	बु	गु.	शु.
		तारीख					दिन				

जन्त्री -खने की रीति—

इस जन्त्री मे किसी भी सन की तारीख या दिन जान सकते हो। जिस सन् ईसवी की तारीख खोजना हो उसका नम्बर आगे बताई हुई रीति से निकालो। साल में एक बार सन् का नम्बर खोज लेने मे वह नम्बर वर्ष भर काम देता है।

जिस महीने की तारीख जानना है वह अंग्रेजी महीना बाई ओर खोजो। ऊपर अंग्रेजी महीना लिखा है, उसके नीचे इष्ट महीना मिलेगा। उस महीना के सीध में दाहिनी ओर इष्ट सन् का नम्बर खोजो। सन् ईसवी का नम्बर जहाँ लिखा है उसी के नीचे सन् ईसवी का नम्बर मिलेगा। जहाँ सन् ईसवी का नम्बर मिले उसके नीचे उसी खडी पक्ति मे दिन की पक्ति है। उसी दिन की पक्ति में सबसे ऊपर कौन वार है इसका ध्यान रखो। क्योंकि अपनी तारीख इसी वार पक्ति के अनुसार निकलेगी। दिन पक्ति के बाई ओर तारीख की पक्तियाँ हैं। जहाँ तारीख लिखा है उसके ऊपर तारीखें दी हैं और जहाँ दिन लिखा है उसके ऊपर दिन की पक्तियाँ हैं।

दिन की प्राप्त पक्ति के बाई ओर जो तारीखें दी हैं उनमें से इष्ट दिन की तारीख या इष्ट तारीख का दिन खोज लो। दिन की प्राप्त पक्ति का उपयोग करते समय शेष दी हुई दिन की पक्तियो पर कोई ध्यान मत दो। यह पक्ति महीना भर काम देगी। दूसरे महीने की उसी सन् के नम्बर के नीचे दूसरी पक्ति निकलती है।

उदाहरण—सन् १९४३ का नम्बर ५ है (सन् का नम्बर निकालना आगे बताया है) जून के महीने की तारीख और दिन देखना है। बाई ओर ऊपर अंग्रेजी महीनो के नीचे तीसरी पक्ति में जून दिया है, उसके आगे सन् के नम्बर के नीचे सन् का नम्बर ५ खोजा (क्योंकि इष्ट सन् का नम्बर ५ है) यह तीसरी खडी पक्ति मे मिला, इसके ठीक नीचे दिन की पक्ति में दिन खोजने मे दिन की पक्ति मिलेगी। उसमें सबसे ऊपर मगल लिखा है तो मगलवार को पहली तारीख होगी। दिन के बाई ओर इष्ट दिन की तारीख खोज लो। उसी दिन की पक्ति से जिसमें आदित्यवार मंगलबार

है दिन से तारीख या इष्ट तारीख का दिन निकाल लेना चाहिए। जैसे ३० तारीख कौन दिन पड़ेगा देखना है तो ३० के सीध मे बुधवार है। इससे प्रगट हुआ ३० तारीख को बुधवार होगा। इसी प्रकार जून की १० तारीख गुरुवार को पडेगी। तारीख १७ भी गुरुवार को होगी। सोमवार की तारीख देखना है तो सोमवार के आगे ७, १४, २१ और २८ तारीखें दी है। इनमे से जिस तारीख की आवश्यकता हो ले लेना। यहाँ तारीख ३१ तक दी है, परन्तु जून महीने मे केवल ३० दिन होते है। इस कारण ३० तारीख तक इस महीना में लेंगे वाकी छोड देंगे।

सन् का नम्बर जानने का चक्र—

	सन् का नम्बर							शेष से	सदी तक	पक्ति
सन	७	१	२	३	४	५	६	०	९९	१
का	५	६	७	१	२	३	४	१००	१९९	२
नम्बर	३	४	५	६	७	१	२	२००	२९९	३
	१	२	३	४	५	६	७	३००	३९९	४

शेष वर्ष (सन् के इकाई दहाई के अंक)

०	१	२	३	×	४	५	सन् ÷ ४००
६	७	×	८	९	१०	११	शेष जो वचे
×	१२	१३	१४	१५	×	१६	=शेष सदी।
१७	१८	१९	×	२०	२१	२२	शेष सदी की
२३	×	२४	२५	२६	२७	×	इकाई दहाई
२८	२९	३०	३१	×	३२	३३	= शेष वर्ष।
३४	३५	×	३६	३७	३८	३९	सैकडा का
×	४०	४१	४२	४३	×	४४	अंक + १ =
४५	४६	४७	×	४८	४९	५०	पक्ति।
५१	×	५२	५३	५४	५५	×	पक्ति के सीध
५६	५७	५८	५९	×	६०	६१	मे और शेष
६२	६३	×	६४	६५	६६	६७	वर्ष के ऊपर
×	६८	६९	७०	७१	×	७२	सन् का
७३	७४	७५	×	७६	७७	७८	नम्बर
७९	×	८०	८१	८२	८३	×	मिलेगा।
८४	८५	८६	८७	×	८८	८९	
९०	९१	×	९२	९३	९४	९५	
×	९६	९७	९८	९९	×		

शेष वर्ष (सन् के इकाई दहाई के अंक)

सन् ईसवी का नम्बर निकालने की रीति ।

सन्÷४००=शेष सदी । सन् ईसवी यदि ४०० से अधिक हो तो ४०० का भाग दो जो शेष बचे उसे लो । जो इस प्रकार का शेष बचता है उसे शेष सदी कहते हैं । यदि ४०० से कम सन् हो तो चक्र के अनुसार ही पंक्ति का नम्बर होगा, जैसे -

शेष ० से ९९ तक = पक्ति १

शेष १०० से १९९ तक = पक्ति २

शेष २०० से २९९ तक = पक्ति ३

शेष ३०० से ३९९ तक = पक्ति ४

४०० का भाग देने पर जो शेष सदी मिले उसमें फिर १०० का भाग दो जो शेष बचे वह = शेष वर्ष हुआ । और उसमें जितने वार १०० का भाग जाय वह लब्धि हुई । इस लब्धि में १ और जोडना तो वह पक्ति का नम्बर होगा । अर्थात् उस सदी के इकाई दहाई के अंक शेष वर्ष कहलाये जो शेष वर्ष चक्र में दिया है और उस सैकडा के अंक में १ और जोडो तो वह पक्ति का नम्बर होगा ।

ऊपर चक्र में पक्ति का नम्बर अंत में १ से ४ तक दिया है । अपने इष्ट सन के शेष वर्ष के ऊपर और इष्ट पक्ति में जो सन का नम्बर मिले वही इष्ट सन का नम्बर होगा ।

वर्तमान सदी की पक्ति ४ है । इस कारण वर्तमान सदी में सब से नीचे की पक्ति ४ के सन का नम्बर लेना ।

उदाहरण—

(१) सन् १९००÷४००=४ $\frac{३००}{४००}$=शेष ३०० हुआ । शेष ३००－१०० ३ वार भाग गया = लब्धि ३ + १ = ४ पक्ति हुई, शेष ० बचा तो = शेष वर्ष ० हुआ । अब शेष वर्ष चक्र में ० के ऊपर और ४ पक्ति की सीध में देखा तो सन का नम्बर १ मिला । सन का नम्बर १ हुआ ।

(२) सन् २००÷४००=$\frac{२००}{४००}$ = शेष २००÷१००=लब्धि २ + १=३ पक्ति, शेष शेष वर्ष० पक्ति ३ । यहा इकाई दहाई में शून्य है १०० का भाग देने से शेष० रहेगा । इस कारण शेष वर्ष ० हुआ । शेष वर्ष चक्र में ० के ऊपर पंक्ति ३ के सीध में खोजने से सन् का नम्बर ३ मिला ।

(३) सन् १९४४－४०० शेष सदी ३४४ हुई । इसमें इकाई दहाई में ४४ है तो शेष वर्ष ४४ हुए । शेष ३४४ के सैकडा के स्थान में ३ हैं ३ + १ = ४ पक्ति या ३४४÷१००=३ लब्धि + १=४ पक्ति । शेष ४४ = शेष वर्ष ४४ हुए । शेष वर्ष ४४ के ऊपर और पक्ति ४ के सीध में सन् का नम्बर ७ मिला ।

(४) सन् १८०१−४००=शेष सदी २०१, इकाई दहाई में ०१ है तो शेष वर्ष ०१ अर्थात् १ हुआ। २०१ मे सैकडा के स्थान में २ है। २ + १ = ३ पक्ति हुई। या २० −१००=लब्धि २ + १ =३ पक्ति। शेष १=शेष वर्ष १ हुआ। शेष वर्ष १ के ऊपर पक्ति ३ के सोध मे खोजा तो सन् का नम्बर ४ मिला।

यहाँ ४०० का भाग देने के उपरात जो शेष सदी प्राप्त होती है उसमे फिर १०० का भाग देना बताया है, परन्तु यदि ऊपर पक्ति का चक्र देखो तो वहा ही लिखा है कि शेष कितने से कितने के बीच मे बचने पर कौन पक्ति होती है। इस कारण सुविधा के लिये ऊपर ही चक्र के दाहिनी ओर लिख दिया है। सन् मे केवल ४०० का भाग देकर शेष सदी निकाल लो। शेष सदी के इकाई दहाई के अक शेष वर्ष होते हैं। उसी शेष वर्ष के ऊपर इष्ट पक्ति की सीध मे सन् का नम्बर मिल जाता है। वर्ष में केवल १ बार सन् का नम्बर निकालना पडता है और वह नम्बर उसी वर्ष भर काम देता है।

कुछ निकाले हुए सन् के नम्बर—

सन् के न	१	२	३	४	५	६	७
सन् ईसवी	१७९८	१७९९	१८००	१८०१	१८०२	१८०३	+
	१८०४	१८०५	१८०६	१८०७	+	१८०८	१८०९
	१८१०	१८११	+	१८१२	१८१३	१८१४	१८१५
	+	१८१६	१८१७	१८१८	१८१९	+	१८२०
	१८२१	१८२२	१८२३	+	१८२४	१८२५	१८२६
	८२७	+	१८२८	१८२९	१८३०	१८३१	+
	१८३२	१८३३	१८३४	१८३५	+	१८३६	१८३७
	१८३८	१८३९	+	१८४०	१८४१	१८४२	१८४३
	+	१८४४	१८४५	१८४६	१८४७	+	१८४८
	१८४९	१८५०	१८५१	+	१८५२	१८५३	१८५४
	१८५५	+	१८५६	१८५७	१८५८	१८५९	+
	१८६०	१८६१	१८६२	१८६३	+	१८६४	१८६५
	१८६६	१८६७	+	१८६८	१८६९	१८७०	१८७१
	+	१८७२	१८७३	१८७४	१८७५	+	१८७६
	१८७७	१८७८	१८७९	+	१८८०	१८८१	१८८२
	१८८३	+	१८८४	१८८५	१८८६	१८८७	+
	१८८८	१८८९	१८९०	१८९१	+	१८९२	१८९३
	१८९४	१८९५	+	१८९६	१८९७	१८९८	१८९९
	१९००	१९०१	१९०२	१९०३	+	१९०४	१९०५

सन् के नं	१	२	३	४	५	६	७
सन् ईस्वी	१९०६	१९०७	+	१९०८	१९०९	१९१०	१९११
	+	१९१२	१९१३	१९१४	१९१५	+	१९१६
	१९१७	१९१८	१९१९	+	१९२०	१९२१	१९२२
	१९२३	+	१९२४	१९२५	१९२६	१९२७	+
	१९२८	१९२९	१९३०	१९३१	+	१९३२	१९३३
	१९३४	१९३५	+	१९३६	१९३७	१९३८	१९३९
	+	१९४०	१९४१	१९४२	१९४३	+	१९४४
	१९४५	१९४६	१९४७	+	१९४८	१९४९	१९५०
	१९५१	+	१९५२	१९५३	१९५४	१९५५	+
	१९५६	१९५७	१९५८	१९५९	+	१९६०	१९६१
	१९६२	१९६३	+	१९६४	१९६५	१९६६	१९६७
	+	१९६८	१९६९	१९७०	१९७१	+	१९७२
	१९७३	१९७४	१९७५	+	१९७६	१९७७	१९७८
	१९७९	+	१९८०	१९८१	१९८२	१९८३	+
	१९८४	१९८५	१९८६	१९८७	+	१९८८	१९८९
	१९९०	१९९१	+	१९९२	१९९३	१९९४	१९९५
	+	१९९६	१९९७	१९९८	१९९९	+	२०००
	२००१	२००२	२००३	+	२००४	२००५	२००६
	२००७	+	२००८	२००९	२०१०	२०११	+
	२०१२	२०१३	२०१४	२०१५	+	२०१६	२०१७

जन्त्री बनाने की रीति

यह जन्त्री बनाना कठिन नहीं है स्वयं बना सकते हो। इस ढंग से यह बनाई गई है जिससे अपनी स्मरण शक्ति से ही जब आवश्यकता हो बड़ी सरलता से कोई भी इसे बना सके।

आरम्भ में मास के अंक उल्टे क्रम से बाईं ओर रखो अर्थात् पहिले ७ फिर उसके नीचे ६ फिर ५ इत्यादि और उन अंकों के आगे उस नम्बर के महीने लिख दो। पहिले बता चुके हैं कि कौन महीने का क्या नम्बर होता है। उनको कंठस्थ कर लेना कोई कठिन नहीं है। इस प्रकार ७ पंक्तियों में सब १२ महीने (लीप जनवरी और लीप फरवरी भी) आ जाते हैं।

महीने की पक्ति के आगे दाहिनी ओर सन् के नम्बर की पक्तिया है। इसका भरना बहुत सरल है। खडी पंक्ति में ऊपर से नीचे १,२,३,४ आदि क्रम पूर्वक ७ अंक तक लिख लो। फिर सबके ऊपर की पंक्ति में भी बाईं ओर से १ के आगे २,३,४ आदि क्रम पूर्वक लिखते जाओ और ७ अंक तक लिख लो। शेष कोठो मे उसके आगे के अक लिख कर सब कोठे भर दो। ७ अक के बाद फिर १ अंक लिख कर उसके आगे के अक क्रमानुसार लिखना पडता है।

सन् के नम्बर के कोठो के नीचे दिन की पक्तिया है। इसमे रविवार से आरम्भ कर शनिवार तक आडे और खडे कोठो मे दिन भर दो। जिस प्रकार सन् का नम्बर भरा था उसी रीति से क्रमानुसार दिन सब कोठो में लिख दो।

इसके बाईं ओर महीने की पक्ति के नीचे तारीख की पक्तिया है, उनमे १ से लेकर ३१ तक क्रमानुसार तारीख के अंक भर दो। बस, इस प्रकार अनन्त वर्षो की जन्त्री तैयार हो गई। जंत्री बनाने की इतनी सरल रीति और कही न मिलेगी।

सन् का नम्बर निकालने का भी चक्र बनाना बहुत सरल हैं। पक्ति ४ मे १ से लेकर ७ कोठो मे क्रमानुसार ७ अक लिख लो, और उसके ऊपर तीसरी पक्ति में प्रत्येक अंक में २ जोड़ कर लिख दो, ७ के बाद १ अंक लिखना ८ नही लिखना। इसी प्रकार दूसरी और पहिली पक्ति मे सबमें क्रम से २-२ अक बढा कर लिख दो तो पक्ति के अनुसार सन् के नम्बर के अक सब पंक्तियो में लिख जायंगे।

१०० के भीतर पहिली पंक्ति की शेष सदी, २०० के भीतर दूसरी पंक्ति, ३०० के भीतर तीसरी, और ४०० के भीतर चौथी पंक्ति सन् ईसवी की शेष सदी की होती हैं।

शेष वर्ष चक्र बनाना भी सरल है। पंक्ति ४ के सीध में १ से ७ तक सन् के नम्बर के अक लिखे है। उसके नीचे० से लेकर १,२,३, आदि शेष वर्ष के अक भरना आरभ करो। ४-४ अंक लिख लेने पर लीप वर्ष आता है। लीप अग्रेजी शब्द है। इसका अर्थ है कूदना। इससे एक कोठा कूद कर अर्थात् लीप इयर को १ कोठा छोड कर आगे लिखो। जैसे १ सन् के नम्बर के नीचे, ० फिर २ के नीचे १, ३ के नीचे २, और ४ के नीचे ३ क्रमानुसार ४ अक शेष वर्ष के लिख चुके। इसके उपरात चौथा वर्ष ४ लीप इयर का होता है। इस कारण एक कोठा आगे का छोड कर अर्थात् सन् का नम्बर ५ के नीचे × चिह्न लगाकर आगे के कोठे में (सन् का नम्बर ६ के नीचे) ४ शेष वर्ष लिखो, आगे क्रमानुसार ४,५,६, ७ तक लिखने के बाद १ कोठा छोड कर ८ लिखो क्योकि ८ लीप वर्ष है। इसी प्रकार सब कोठो में क्रमानुसार ९९ तक अंक अपने मनसे भरते चले जाओ। जिस वर्ष के पहिले × ढेरा का चिह्न खाली जगह मे है उसे लीप वर्ष समझना।

दो सदी के सन् के नम्बर इसी प्रकार निकाल कर आगे चक्र में दिये हैं, जिससे सन् के नम्बर खोजने में कोई अडचन न हो। इसी प्रकार इसके आगे के सन् के नम्बर निकालने का चक्र बना सकते हो। केवल लीप वर्ष का ध्यान रखना। यदि लीप वर्ष है तो आगे नम्बर के नीचे खाली ढेरे का चिह्न लगा कर उसके आगे के नम्बर के नीचे वह लीप वर्ष लिखना। इस चक्र के देखने से ही सब समझ में आ जायगा। सन् १८०० में ४०० का भाग नही गया तो यह लीप वर्ष नही माना गया, क्योंकि पूरी सदी मे ४०० का भाग पूरा-पूरा लगने से लीप वर्ष माना जाता है। परन्तु साधारण वर्ष में पूरा ४ का भाग लग जाय तब लीप वर्ष माना जाता है।

मुसलमानी सन् हिजरी के महीनों की तारीख जानना—

मुसलमानी महीना	सन् का नम्बर						
मोहर्रम १। सव्वाल १०	१	२	३	४	५	६	७
जमादिउल अव्वल ५	२	३	४	५	६	७	१
रविउल आखिर ४। रमजान ९	३	४	५	६	७	१	२
सावान ८	४	५	६	७	१	२	३
रविउल अव्वल ३। जिलहिज १२	५	६	७	१	२	३	४
सफर २। रज्जव ७	६	७	१	२	३	४	५
जमादिउल आखिर ६। जीकंद ११	७	१	२	३	४	५	६

१	८	१५	२२	२९	शनि.	रवि.	सोम.	मगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.
२	९	१६	२३	३०	रवि	सोम.	मंगल	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.
३	१०	१७	२४	—	सोम.	मंगल	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि	रवि
४	११	१८	२५	—	मगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र	शनि.	रवि	सोम.
५	१२	१९	२६	—	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	रवि.	सोम	मगल.
६	१३	२०	२७	—	गुरु	शुक्र.	शनि.	रवि.	सोम	मगल.	बुध
७	१४	२१	२८	—	शुक्र.	शनि.	रवि.	सोम.	मंगल.	बुध.	गुरु.

जंत्री देखने की रीति—पहिले नीचे बताई विधि से हिजरी सन् का नम्बर खोज लो। वह नम्बर वर्ष भर काम देगा। फिर इष्ट मास के सामने की पक्ति में प्राप्त सन् का नम्बर जहाँ मिले उस नम्बर के नीचे जिस दिन की खडी पक्ति मिले उसके सामने बाई ओर दी हुई तारीख खोज लो या इष्ट तारीख का दिन उसी प्राप्त दिन की पक्ति से खोज लो।

जैसे हिजरी सन् १३७३ के दूसरे महीने सफर की पहिली तारीख किस दिन होगी जानना है। नीचे बताई रीति से हिजरी १३७३ का नम्बर खोजा तो ६ मिला। अब

सफर महीने के आगे सन् का नम्बर ६ खोजा, वह पहिली पंक्ति मे मिला। उस ६ के नीचे दिन की पक्ति जो शनिवार से आरम्भ होती है, ली। शनिवार के आगे बाईं ओर १ तारीख दी है। तो प्रगट हुआ कि शनिवार को मुसलमानी महीना सफर की पहिली तारीख होगी।*

हिजरी सन् का नम्बर निकालने का चक्र

हिजरी सन् का नम्बर								सदी
२	६	४	१	६	३	७	५	अ
६	३	७	५	२	६	४	१	ब
०	१	२	३	४	५	६	७	
८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	हिजरी सदी के शेष वर्ष
३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	
४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	
५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	
६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	
७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	
८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	
९६	९७	९८	९९	०	०	०		

सन् का नम्बर निकालने की रीति—

हिजरी सदी } ÷ ४०० =शेष १०० या ३००=अ सदी
=शेष २०० या ० = ब सदी

हिजरी के इकाई दहाई के अंक=शेष वर्ष।

हिजरी के इकाई दहाई के अंक छोड कर पूरी सदी लो, उसमें ४०० का भाग दो। यदि शेष १०० या ३०० बचे तो = अ = सदी होगी। यदि शेष २०० या ० बचे तो= ब = सदी होगी।

वह हिजरी अ या ब जिस प्रकार की सदी हो, उस पंक्ति में और शेष वर्ष के ऊपर जो सन् का नम्बर मिले वह इष्ट सन् का नम्बर होगा।

---

* टिप्पणी—इसमें तिथि के कारण कभी-कभी एक दिन-का अन्तर पड जाता है।

जैसे हिजरी सन् १३७३ मे इकाई दहाई के अक ७३ शेष वर्ष हुए। इनको छोड कर सदी १३०० ली ÷ ४००- शेष १००=अ=सदी हुई। अब शेष वर्ष ७३ के ऊपर और अ पंक्ति में खोजा तो ६ मिला। यही १३७३ के हिजरी सन् का नम्बर हुआ।

हिजरी सन् के नम्बर खोजने का अन्य प्रकार का चक्र।

	हिजरी सन् का नम्बर				हिजरी की सदी के शेष वर्ष												
सन् का नम्बर	२	६	२	६	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६४	७२	८०	८८	९६
	६	३	६	३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	६५	७३	८१	८९	९७
	४	७	४	७	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६६	७४	८२	९०	९८
	१	५	१	५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	६७	७५	८३	९१	९९
	६	[illegible]	६	२	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	६०	६८	७६	८४	९२	०
	[illegible]		३	६	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	६१	६९	७७	८५	९३	०
	[illegible]	४	७	४	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	६२	७०	७८	८६	९४	०
	५	१	५	१	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	६३	७१	७९	८७	९५	०

सदी	अ	ब	अ	ब
	१००	२००	३००	४००
	५००	६००	[illegible]००	८००
	९००	१०००	११००	१२००
	१३००	१४००	१५००	१६००
	१७००	१८००	१९००	२०००
	२१००	२२००	२३००	२४००
सदी	२५००	२६००	२७००	२८००
	२९००	३०००	३१००	३२००
	३३००	३४००	३५००	३६००
	३७००	३८००	३९००	४०००
	४१००	४२००	४३००	४४००
	४५००	४६००	४७००	४८००
	४९००	५०००	०	०

हिजरी का नम्बर खोजने की रीति —

कोई हिजरी के इकाई दहाई के अक छोडकर पूरी सदी लो। सदी के ऊपर और शेष वर्ष (हिजरी के इकाई दहाई के अक) के सामने जो नम्बर मिले वही सन् का नम्बर होगा। जैसे हिजरी १३७३ की सदी १३०० हुई और शेष वर्ष ७३ हुए। अब १३०० सदी के ऊपर देखो यह सदी अ प्रकार की है। इसके ऊपर और शेष वर्ष ७३ के सामने बाई ओर देखो तो ६ मिला। यही ६ सन् का नम्बर हिजरी १३७३ का हुआ।

हिजरी १२९९=१२०० सदी के ऊपर और ९९ के सामने बाई ओर देखा ५ मिला यही ५ सन् का नम्बर हुआ। यह सदी ब प्रकार की है। बस इस प्रकार प्राप्त सन् के नम्बर से इष्ट मास की तारीख ऊपर बताई रीति से खोज लो। पहले बताई हुई सन् के नम्बर खोजने की रीति और यह रीति एक ही है। यहाँ उदाहरण के लिए ५००० हिजरी तक देकर सन् का नम्बर खोजना बताया गया है।

राष्ट्रीय जंत्री National calender (Gragarion calender)

अभी तक सन् ईसवी का दिनाक प्रचलित था, परन्तु 'यह राष्ट्रीय नही है, इस विचार से भारत सरकार ने दिनाक २२ मार्च ईसवी सन् १९५७ से राष्ट्रीय जंत्री प्रचलित की है।

दिनाक २१ मार्च को बसत सम्पात Vernal equinox होता है, जब दिन रात बराबर होती है और सूर्य ६ बजे उदय होता है। उस दिन राष्ट्रीय वर्ष का अन्त समझ कर दूसरे दिन २२ मार्च से राष्ट्रीय चैत्र मास आरम्भ होता है। उस दिन राष्ट्रीय चैत्र की १ तिथि (दिनाक) शाका १८७९ से यह राष्ट्रीय वर्ष की तिथि आरम्भ होती हैं।

यह राष्ट्रीय दिनाक अर्द्ध रात्रि से अर्द्ध रात्रि तक ईसवी सन् के दिनाक के अनुसार ही माना जायगा। राष्ट्रीय वर्ष दिन ३६५ घंटा ५ मिनट ४८ ८ का माना गया है। लीप इयर (प्लुत वर्ष) मे हर चौथे वर्ष (सन् ईसवी के अनुसार ही) चैत्र मास ३१ दिन का होगा। साधारण वर्ष में चैत्र ३० दिन का ही होगा। आगे वैशाख से भाद्रपद तक ५ महोने ३१ दिन के शेष ६ महीने ३० दिन के होगे।

र ष्ट्रीय मास	दिन	आरम्भ का अंग्रेजी दिनाक	राष्ट्रीय मास	दिन	आरम्भ का अंग्रेजी दिनाक
लीप चैत्र	३१	२२ मार्च से	आश्विन	३०	२३ सितम्बर से
साधारण चैत्र	३०	,, ,,	कार्तिक	३०	२३ अक्टूबर से
वैशाख	३१	२१ अप्रेल से	मार्ग शीर्ष	३०	२२ नवम्बर से
ज्येष्ठ	३१	२२ मई से	पौष	३०	२२ दिसम्बर से
आषाढ	३१	२२ जून से	माघ	३०	२१ ज्नवरी से
श्रावण	३१	२३ जुलाई से	फाल्गुन	३०	२० फरवरी से
भाद्रपद	३१	२३ अगस्त से			

लीप वर्ष मे राष्ट्रीय वैशाख मास और उसके आगे के मास आरम्भ होने की तारीख मे एक दिन अधिक बढ जायगा। परन्तु फरवरी २९ दिन की होने से अन्त में फाल्गुन की ३० तिथि दिनाक २१ मार्च को ही पड जायगी जिससे २२ मार्च से फिर चैत्र आरम्भ होगा।

सरकारी पत्र व्यवहार में राष्ट्रीय दिनाक के अतिरिक्त सन् ईसवी का दिनाक भी दिया जाता है।

पचाग मे दी हुई तिथि और राष्ट्रीय दिनाक (तिथि) मे अन्तर है। आजकल पंचागो मे तिथि और अंग्रेजी दिनाक के अतिरिक्त राष्ट्रीय दिनार्क भी दिया रहता है।

अध्याय ३८

दिनमान जानना

यहाँ स्थूल रूप से दिनमान जानने की रीति वताई जाती है। सूक्ष्म रूप से दिनमान जानना गणित खंड में वताया गया है।

अयन संक्राति से (अर्थात् सायन कर्क और सायन मकर सक्राति से) गत दिन कितने हुए निकालो। गत दिन को ३ से गुणा कर १५३० जोडो और ६० का भाग दो। जो लब्धि मिले वह कर्क सक्राति की गणना करने मे रात्रिमान और मकर सक्राति से गणना करने पर दिन मान निकलेगा।

जैसे सम्वत् २००० मे २२ दिसम्वर की रात को सायन मकर की सक्राति हुई थी। २३ मई का दिनमान जानना है तो दिसम्वर के शेप दिन ३ −२२=९ + जनवरी ३१ के, + फरवरी २८ के, + मार्च ३१ के, + अप्रैल ३० के + मई २३ के = सर्व दिन १५२ दिन×३=४५६+१५३०=१९८६ − ६०=३३ घ. ६ पल

```
६०)१९८६(३३ घडी
   १८०
   ———
    १८६
    १८०
   ———
    ६ पल
```

दिनमान ३३ घ ६ प हुआ।

रात्रिमान=(६०−दिनमान)=६०−(३३−६)=२६ घ ५४ प रात्रिमान

२१ दिसम्वर को सायन मकर सक्राति और २१ जून को सायन कर्क संक्राति प्राय होती है।

दिनमान से सूर्योदय जानना पचाग देखने के प्रकरण मे वता चुके है।

चन्द्रोदय अस्त ज्ञान (स्थूल रूप से)

चन्द्रोदय—पूर्णिमा के उपरात, प्रतिदिन २३/४ घडी=५४ मिनट के उपरात चन्द्रोदय होता है। अर्थात् कृष्ण पक्ष आरम्भ होने पर इतनी देर वाद प्रतिदिन चन्द्र उदय होगा। तिथि में २३/४ घडी का गुणा कर जान सकते हो कि उस तिथि में (कृष्ण पक्ष मे) कितनी घडी उपरान्त चन्द्रोदय होगा।

यदि शुक्ल पक्ष है तो उतने घडी पल या (घण्टा मिनट) गये पर चन्द्र अस्त होगा। यह वहुत मोटा हिसाव है। दिनमान के अनुसार इसमें अन्तर पडता है।

चन्द्रोदय का समय जानना—

रात्रिमान को वर्तमान तिथि से गुणा करो। कृष्ण पक्ष हो तो गुणनफल में २ घटा दो। शुक्ल पक्ष हो तो गुणनफल में २ जोड दो। उपरात १५ का भाग दो, लब्धि चन्द्रोदय की घडी निकलेगी। १५ का भाग देने से जो बचे उसमें ६० का गुणा कर १५ का भाग देने से पल निकलता है।

जैसे ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी को दिनमान ३३ घ ६ प. है तो रात्रिमान २६ घण्टा ५४ प हुआ।

(रात्रिमान तिथि / २६-५४×४) −२ कृष्ण पक्ष होने मे / १५ = घ. प. (१०७- ३६)−२ / १५ = घ प. १०५−३६ / १५ = घ प ७−२

रात्रिमान २६ घ. ५४ प
×४
१०७−३६
− २ कृष्ण पक्ष होने से घटाया।
१५)१०५-३६(७ घडी
१०५
०
१५°)३६(२ पल
३०
६

=सूर्यास्त होने के ७ घ. २ प. होने के उपरात चन्द्रोदय होगा।

अस्त जानना—

पौष शुक्ल ७ दिनमान २६-३० रात्रिमान ३३-३० को चन्द्र के अस्त का समय जानना है।

रात्रिमान ३३-३०
×७ तिथि
२३४-३०
+२·· शुक्ल पक्ष
२३६- ० होने से

१५)२३६-३०(१५ घडी
१५
८६
७५
११×६०
६६०
+३०
१५)६९०(४६
६०
९० पल
९०

= १५ घ. ४६ प रात्रि गये उपरात चन्द्र अस्त होगा।

तारा देखकर रात्रिमान जानना—

(१) सूर्य नक्षत्र से, सिर के ऊपर जो नक्षत्र हो उस तक गिनो, गिनने से जो सख्या आवे उसमें ७ घटा कर २० का गुणा करना और ९ का भाग देना तो जो अंक शेष रहे वह गत रात्रि स्पष्ट होगी।

(२) या सूय नक्षत्र से, सिर के ऊपर जो नक्षत्र हो उस तक गिनने से जो सख्या आवे उसमे ७ घटाकर २ का गुणाकर २ घटा दो तो रात्रि स्पष्ट होगी।

पूर्वाषाढा, अनुराधा, ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती और विशाखा सिर के ऊपर हो तो अष्टम मे उदय होता है। मृगशिर और मूल नक्षत्र मे हो तो नवम मे उदय होता है और जब और कोई नक्षत्र सिर के ऊपर हो तो अष्टम मे उदय होता है। सूर्य नक्षत्र जो होता है वह सूर्योदय के साथ उदय होता है और सूर्य अस्त के समय वही नक्षत्र अस्त स्थान पर आ जाता है। इस कारण सूर्य नक्षत्र से सिर के ऊपर तक जो नक्षत्र हो उनको यहाँ गिनना बताया है और सिर के नक्षत्र से पूर्व की ओर गिनो तो ऊपर बताये अनुसार अष्टम या नवम नक्षत्र उदय स्थान में रहेगा।

मान लो सूर्य मूल नक्षत्र पर है और रात्रि को देखा अश्विनी नक्षत्र सिर पर है। मूल से अश्विनी तक गिना तो १० नक्षत्र हुए। इनमे ७ घटा कर २० का गुणा कर ९ का भाग दिया।

(१० – ७) × २० ÷ ९=(३ × २०) – ९=६० – ९=६$\frac{६}{९}$=६ घडी ४० पल इतनी रात्रि गत हुई ऐसा जानना।

दिनमान में गत रात्रि जोडने से उस समय का इष्ट काल होगा, जैसे उस दिन २६-४ दिनमान में ६-४० गत रात्रि जोडा तो ३२-४४ इष्ट काल हुआ।

दूसरी रीति से सूर्य नक्षत्र से सिरे के ऊपर का नक्षत्र अश्विनी तक १० हुए। इसमें ७ घटाये ३ बचे, २ से गुणा किया=६ हुए। इसमे से २ घटाये ४ घडी रहे। इस रीति से कुछ अतर पड जाता है।

सिर पर नक्षत्र अश्विनी है इससे आठवाँ नक्षत्र पुष्य हुआ। इस कारण इस समय पुष्य नक्षत्र या कर्क राशि उदय हो रही है अर्थात् कर्क लग्न होगी।

रात्रि का समय जानना—

पहिले देखो सिर पर कौन तारा है और उस तारे का क्या विपुवाश है। नाक्षत्र काल से १ घटा कम या अधिक जिस तारे का विपुवांश है वह तारा उस रात्रि को बिलकुल नही दिखेगा। जिस तारे का विपुवाश ६ घटा अधिक हो वह तारा सूर्य अस्त होने के समय सूर्य के ६ घटा आगे होने से सिर पर उस समय होगा। उससे अधिक १२ घटा विपुवांश जिस तारे का है वह रात्रि को और कभी सिर पर आयेगा।

जो तारा सिर पर दिखे उसका विषुवांश आगे दिये हुए चक्र मे से देख कर लिख लो। उसमें से उस दिन का नाक्षत्र काल घटा दो। जो घंटा मिनट बचे उतने घंटा मिनट आगे वह तारा मध्यम रवि के आगे है ऐसा समझना। अर्थात् उतने बजे होगे समझना। क्योकि मध्यम रवि १२ बजे सिर पर आता है और इसके उतने घंटा मिनट आगे वह तारा है। इस कारण समझ लेना कि उतने बजे होगे।

जैसे १ जनवरी को रात्रि मे यह जानना है कि घडी में क्या बजा होगा। ५ जनवरी को दोपहर को मध्यम रवि का विषुवांश १९ घण्टा है। जैसा पहिले चक्र मे दे चुके है अपने को १ जनवरी की रात्रि को जानना है। (ता० ५–१ ता०)=४ अंतर दिन। इसमे दोपहर से रात तक ½ दिन घटाया तो=३½ हुए। अर्थात् ४ दिन से आधा दिन इस कारण घटाया कि अपना समय ५ ता० के पहिले का है। ३½ दिन × ४ मिनट गति=० घ० १४ मि० ता० ५ को १९ घण्टा विषुवांश था। इसमें से ०–१४ मि० घटा दिये तो शेष १८ घ० ४६ मि० बचे—यह उस दिन का नाक्षत्र काल या मध्यम रवि का विषुवांश हुआ।

मान लो उस दिन सिर पर अश्विनी नक्षत्र है। अश्विनी का विषुवांश, चक्र में १ घं० ४९ मि० दिया है। इसमें से नाक्षत्र काल १८ घं० ४६ मि० घटाया तो नही घटता तो २४ घण्टा जोड कर घटाया तो शेष ७ घ० ३ मि० रहे। अर्थात् १२ बजे दोपहर को जब मध्यम रवि मध्याह्न पर था उससे ७ घ० ३ मि० आगे यह तारा है अर्थात् ७ घं० ३ मि० रात के बजे है।

	घं० मि०
	१—४९
	—१८—४६
शेष	७—३

समय देखते समय सिर के ऊपर कोई पहिचान का तारा न मिले तो कुछ समय ठहरो, जब कोई पहिचान का तारा सिर पर आवे तो उससे गणित कर अपनी घड़ी मिला लो।

ऊपर के उदाहरण मे नाक्षत्रकाल १८–४६ आया है। यदि इससे १ घंटा कम या अधिक जिस तारा का नाक्षत्र काल हो अर्थात् १७-४६ या १९-४६ हो तो वह तारा इस रात को बिलकुल नही दिखेगा। जैसे १ जनवरी को पूर्वाषाढा उत्तराषाढा और श्रवण नही दिखेंगे, क्योकि जनवरी मे मकर सक्राति होती है तो धन और मकर के नक्षत्र नही दिखेंगे। जिस तारे का विषुवांश इससे ६ घंटा आगे हो अर्थात् (१८-४६)+६=० घं० ४६ मि० हो तो वह तारा सूर्यास्त के समय ६ घ० आगे होगा जैसे उ० भाद्रपद नक्षत्र, उससे १२ घण्टा अधिक हो (०-४६)+१२=१२·४६ तो विषुवांश का तारा रात्रि को कभी सिर पर आवेगा जैसे हस्त।

तारों का होरात्मक विषुवांश

इनमें स्थिति के अनुसार बहुत थोडा अन्तर पडता है, क्योकि प्रतिवर्ष इनकी गति ३-४ सेकण्ड के लगभग है।

	नक्षत्र	घं०	मि०	से०		नक्षत्र	घं०	मि०	से०		नक्षत्र	घं०	मि०	से०
१	अश्विनी	१	४६	२३.४	११	पूर्वा फाल्गुनी	११	६	१५.४	२१	उत्तराषाढा	१८	३६	४३.३
२	भरणी	२	४४	२६.६	१२	उत्तराफाल्गुनी	११	४४	१२ ६	२२	अभि०	१८	३३	४३.३
३	कृत्तिका	३	४१	५०.१	१३	हस्त	१२	२४	५६.९	२३	श्रवण	१६	४६	८.६
४	रोहिणी	४	३०	२८.१	१४	चित्रा	१३	२०	११.२	२४	धनि०	२०	३५	१३.५
५	मृग०	५	२६	५४.२	१५	स्वाती	१४	११	१६.७	२५	शत०	२२	४७	३६ ५
६	आर्द्रा	६	३२	१३ ५	१६	विशाखा	१४	४५	३७.३	२६	पूर्वा भाद्रपद	२३	००	१ ७
७	पुनर्वसु	७	३६	३० ३	१७	अनुराधा	१५	५४	४२.८	२७	उत्तरा भाद्रपद	०	८	२० ६
८	पुष्य	८	३६	१७.६	१८	ज्येठा	१६	२३	३४.८	२८	रेवती	१	८	४६.०
९	आश्लेषा	८	५०	२२ ४	१९	मूल	१७	२७	६.४			१	२५	१२.२
१०	मघा	१०	३	१८.८	२०	पूर्वाषाढा	१८	२२	६.५					

स्थूल रीति से छाया से दिन का इष्ट जानना—

परम दिन जो २१ जून को होता है वह लेना। पहिले बता चुके हैं कि किस अक्षाश पर कितना परम दिन (बड़े से बडा दिन) होता है।

(१) (परमदिन—अपना दिनमान) $\times \frac{७}{५}$ = (अ) = दिन मध्य छाया (घडी पल मे)।

अपना दिनमान ५६

(१२ अगुल शकु की छाया)—(अ=दिन मध्य छाया) + १२ अंगुल शकु=दिन की गत या गम्य घटी पल अर्थात् दोपहर के पहिले इतना दिन चढा या दोपहर के बाद का इष्ट है तो इतना दिन शेप रहा, जानना।

गत = इतने घडी पल बीत गया ।

गम्य= ,, ,, ,, बीतने को है ।

(२) दूसरा प्रकार

१२१ ÷ (इष्ट छाया का पैर का नाप + ६) = लब्धि घडी पल (दिन की गत, गम्य घटी पल)

(३) व=मेप से तुला संक्राति तक=१ घटाना

तुला व मीन ,, में=२ ,,

वृश्चिक व कुंभ ,, में=४ ,,

धन व मकर ,, में=५ ,,

तीसरा प्रकार—

१०५ ÷ [(छाया नाप+७) – व] =गत गम्य घटी

गत दिन = दिनार्द्ध के पूर्व में इतने घडी पल दिन चढा ।

गम्य=दिन के उत्तरार्द्ध में इतने घडी पल शेष रहा ।

उदाहरण—

(१) मान लो अपना अक्षांश २३ अंश है । यहाँ का परम दिन १३ घं० २० मि० =३३ घ० २० पल का होता है जैसा पहिले समझा चुके हैं ।

अपने स्थान का परम दिन
३३ घडी २० पल है ।
इष्ट दिन का दिनमान
(मान लो) २६ – १७ है
अन्तर ७ १७

अब १ शंकु (सलाका) १२ अंगुल का लिया, उसको सीधा खडा कर छाया नापी तो २५ अंगुल छाया निकली ।

अन्तर ७ – १७×$\frac{७}{५}$ अ=दिन मध्य छाया

७ – १७=१० घ० ११ प०
×७
५)५०–५६(१० घड़ी
५०
०
५)५६(११ पल
५
६
५
४

शंकु छाया २५ अंश–०
–दिन मध्य छाया १०–११
अतर (शेष) = १४–४९
+ शंकु नाप १२–०
योग २६–४९

दिनमान
२६–१७ × ६ = १५७ घ. ४२ प. = ९४६२ पल
योग २६–४९ २६–४९ १६०–६ पल
= ५ घ. ५२ प. दिन शेष रहा
मध्याह्न के बाद होने के कारण

(२) दूसरी रीति

१२१ ÷ (छाया + ६)
=१२१ ÷ (१४ छाया + ६)
=१२१ ÷ २० = ६ घ ३ प.
= ६ घ. ३ प. दिन शेष रहा

मान लो इष्ट काल में अपनी छाया को अपने पैर से नापा तो, नाप में १४ पैर निकली। यह छाया मध्याह्न के उपरात की है।

२०)१२१(६ घडी
१२०
१×६०
२०)६०(३ पल
६०

(३) तीसरी रीति

१०५ ÷ [(छाया + ७)−व]
=१०५ ÷ [(१४ छाया + ७)−५]

मान लो छाया का नाप वही १४ पाव है और धन संक्राति होने से धन के ५ घटाना पडेगा तो व=५ हुआ।

=१०५ ÷ (२१−५)
=१०५ ÷ १६ ६ घ. ३३ प
=६ घ. ३३ प दिन शेष रहा।
यह सब स्थूल रीति है इसका ध्यान रहे।

१६)१०५(६ घडी
९६
९×६०
१६)५४०(३३ पल
४८
६०
४८
१२

अध्याय ३९

केवल कुंडली पर से जन्मसमय मास-पक्ष आदि का ज्ञान

केवल कुडलीचक्र किसी का देख कर उस जातक की आयु, जन्म मास, अयन, ऋतु, पक्ष, जन्म तिथि, नक्षत्र, योग, करण, जन्म दिन में या रात में हुआ, जन्म का समय आदि स्थूल रूप से जान सकते हो। इन सब को जानने की रीति पृथक २ समझाते हैं।

(१) वर्ष ज्ञान—

कुंडली में शनि की राशि और वर्तमान सम्वत में शनि की राशि देखो। शनि २॥ वर्ष में एक राशि पूरी करता है। कुण्डली की शनि की राशि से शनि की वर्तमान राशि

तक गिन कर २।। से गुणा करो तो गत आयु आयगी। वर्तमान सम्वत् में वह संख्या घटा दो तो लगभग जन्म का सम्वत् निकल आवेगा। शनि लगभग ३० वर्ष में १२ राशि घूम लेता है। इस के भीतर की आयु इस से प्रगट हो जायगी। यदि जातक देखने में ३० से अधिक आयु का जान पडे तो शनि के फेरे के अनुसार ३०-३० वर्ष जोडते जाय तो आयु निकल आयगी। इस कारण पहिले देखकर अनुमान लगा लेना चाहिए कि कितनी आयु होगी और शनि के कितने फेरे हो गये होंगे। यदि जातक पास नही हैं तो पूछ सकते हो कि जातक बाल, युवा, अधेड या वृद्ध है तब जन्म समय वताना।

इस कुंडली में शनि सिंह का है। सम्वत् २००० में वृष का शनि है। सिंह के आगे कन्या से वृष तक गिना ९ राशि हुई ९×२।।=२२।। वर्ष हुए। अब इस को आयु २२।। वर्ष या २२।।+३०=५२।। वर्ष, या ५२।।+३०=८२।। वर्ष की होगी। अब जातक को देखकर आयु का अनुमान कर वता दो। या पूछने से प्रगट हुआ कि अधेड से और कुछ उमर हो गई है तो ५२।। वर्ष की आयु होगी। इसे इष्ट सम्वत् मे घटाया (सम्वत् २०००−५२½=१९४७½ आया) तो कह सकते हैं कि सम्वत् १९४७ के लगभग का जन्म होगा। इस में एकाध वर्ष का अन्तर पड सकता है।

इसी प्रकार कुंडली में गुरु की राशि से इस समय के गुरु की राशि तक गिन कर आयु जान सकते हो। गुरु १२ वर्ष मे पूरा भगण (१२ राशि) घूम लेता है। १ महीने में १ राशि घूमता है।

कुडली में गुरु मकर का था। सम्वत् २००० में मिथुन का गुरु है। मकर के आगे कुम्भ से गिना मिथुन तक ५ राशियाँ हुई=५ वर्ष। शनि के साथ ही साथ इस का विचार करना चाहिए। जैसे शनि से तो ५२।। वर्ष की आयु निकली थी तो इस मे गुरु के ४ फेरे हो चुके। ४ आवृत्ति×१२ वर्ष=४८ वर्ष+५ वर्ष=५३ वर्ष वर्तमान सम्वत् तक आया। सम्वत् २००० सम्वत् १९४७ का जन्म निकालता है। अब इस में भी इन के अंशों
—५३ का विचार करो तो और भी ठीक हिसाब आयु का जम जाता है।
१९४७ जन्म के गुरु १४ अंश पर है अर्थात् आधी राशि भुक्त हो चुकी है तो ५३ मे आधा वर्ष घटा दिया तो वही ५२।। वर्ष आ जाते हैं।

इसी के साथ २ राहु का भी विचार करना चाहिए। राहु सदा वक्री रहता है और १८ वर्ष मे पूरा भचक्र घूम लेता है। कुंडली के राहु से वर्तमान राहु तक उलटे

क्रम से गिनो, जो संख्या हो उसे १॥ से गुणा करो, क्योंकि राहु १॥ वर्ष में एक राशि पार करता है। जो गुणन फल आवे उस पर से आयु विचारना।

जैसे कुडली मे राहु मिथुन का है। सम्वत् २००० में कर्क का है। मिथुन से उलटे क्रम से आगे वृप फिर मेष आदि गिना तो ११ राशि हुई। ११ × १॥=१६½ वर्ष + ३६ वर्ष (राहु के २ फेरा)=५२॥ वर्ष आयु। यदि कुडली में ग्रह स्पष्ट दिये हो तो इन ग्रह के अंशों पर से ठीक विचार करने पर आयु का हिसाब ठीक जम सकता है।

जिस सम्वत् की आयु कुण्डली देखकर अनुमान करने से निकले उस वर्ष का पंचाग (यदि पुराने पचाग पास हों तो) या एकाध वर्ष आगे पीछे का पंचाग देखो। जिसमें ग्रहों की ठीक स्थिति कुण्डली के अनुसार मिले ठीक उसी समय का जन्म जानना।

(२) कुण्डली से अयन जानना

अयन—मकर के सूर्य के कुछ पहिले उत्तरायण और कर्क के सूर्य के कुछ पहिले दक्षिणायन होता है। कुण्डली में जिस राशि का सूर्य हो उससे जन्म समय का अयन जानना

जैसे कुण्डली में मीन का सूर्य है तो उत्तरायण जानना और उस जातक का जन्म उत्तरायण में हुआ है कहना।

(३) जन्म की ऋतु और मास जानना

जन्म मास—सूर्य की राशि से चद्रमास का अनुमान इस प्रकार करना

सूर्य की राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
मास	वैशाख	ज्येष्ठ	असाढ	श्रावण	भादों	कुआँर	कातिक	अगहन	पूस	माघ	फागुन	चैत

जैसे मीन का सूर्य कुण्डली में है तो चैत्र में जन्म हुआ होगा।

(४) ऋतु

चन्द्र मास के अनुसार इस प्रकार ऋतु होती है—

ऋतु	वसंत १	ग्रीष्म २	वर्षा ३	शरद ४	हेमंत ५	शिशिर ६
मास	चैत्र	जेठ	सावन	कुआँर	अगहन	माघ
	वैशाख	असाढ	भादों	कातिक	पूस	फागुन

सूर्य मीन का होने से चैत्र मास हुआ। चैत्र में वसन्त ऋतु होती है। इस कारण जातक का जन्म वसन्त ऋतु में हुआ है कहना।

(५) जन्म का पक्ष जानना

कुण्डली मे ७ राशि के भीतर चन्द्र हो तो शुक्ल पक्ष और ७ राशि के वाहर चन्द्र हो तो कृष्ण पक्ष जानना ।

जैसे ऊपर कुण्डली में मीन का सूर्य है और चन्द्र कुम्भ का है। मीन से गिना तो ७ राशि कन्या हुई। इसके आगे कुम्भ का चन्द्र है, इससे जान पडा कि सूर्य से चन्द्र ७ राशि के वाहर हैं, इस कारण जातक का जन्म कृष्ण पक्ष का होगा कहना ।

(६) जन्म की तिथि जानना

कुण्डली मे जहाँ सूर्य हो वहाँ अमावस्या जानो, क्योकि अमावस्या को सूर्य और चन्द्र एकत्र रहते है। उसके आगे जैसे जैसे तिथि वढती है, चन्द्रमा आगे वढते जाता है। इस कारण कुण्डली मे देखो चन्द्र कहाँ है और सूर्य से कितने घर के अन्तर चन्द्र है। एक कोठे मे (१ राशि मे) २॥ तिथि के हिसाव से तिथि होती है। क्योंकि मोटे हिसाव से चन्द्र ३० दिन मे १२ राशि घूमता है तो १ राशि मे २॥ दिन पडा। १ दिन मे १ तिथि होती है इस कारण १ राशि में २॥ तिथि होती है ।

यहाँ पर कुण्डली मे मीन का सूर्य है और चन्द्र कुम्भ का है। दोनो के वीच ११ राशि का अन्तर हुआ। ११५२॥=२७॥ तिथियाँ हुई। अमावस्या को ३० तिथि कहते है। (२७॥–१५)=शेप १२॥ तिथि। २७॥ में पूर्णिमा तक की १५ तिथि घटा दिया तो शेप १२॥ तिथि कृष्ण पक्ष की निकल आई। अर्थात् कृष्ण पक्ष की १३ तिथि का जन्म होगा ।

यदि चन्द्र और सूर्य के अशो का विचार किया जाय तो और भी ठीक तिथि निकल आती है। यहाँ सूर्य मीन के ५° मे है (११ रा–५°) और चन्द्र कुभ के ३° (१० रा–३°) पर है अर्थात् लगभग वरावर अश दोनो के है। जव सूर्य और चन्द्र के वीच १२° का अन्तर पडता है तो १ तिथि होती है। यहाँ दोनो का अन्तर निकला।

सूर्य ११ रा–५ अश=शेप १ रा–२ अश
—चन्द्र १०–३ = ३२ अंश ÷ १२ अश
शेष = १— २ = २॥ लगभग तिथि

हुई अर्थात् २॥ तिथि चन्द्र और चलता तो अमावस्या हो जाती। इस कारण अमावस होने को २॥ तिथि शेप है। पूरी १५ तिथि से २॥ घटाये तो १२॥ तिथि हुई। अर्थात् १२ तिथि पूरी हो चुकी है तेरहवी तिथि वर्तमान है तो जन्म कृष्ण पक्ष की १३ तिथि का हुआ ।

चन्द्र में से सूर्य घटाने से स्पष्ट तिथि ज्ञात होती है। यहाँ चन्द्र १०–रा०–३ अंश

चन्द्र १०–रा०–३ अंश में से सूर्य ११–रा०–५ अश घटाया तो शेष १०–रा०–२८ अंश रहे, इसके ३२४ अश हुए। १२ अश की एक तिथि होती है, इसमे १२ का भाग दिया तो २७$\frac{1}{3}$ तिथि हुई। इसमे से १५ घटाया तो कृष्ण पक्ष की १२$\frac{1}{3}$ तिथि हुई अर्थात् जन्म तिथि १३ हुई।

सूर्य ११–५
शेष १०–२८
१२) ३२८ अंश (२७ तिथि
२४
८८
८४
४

यदि सूर्य के आगे चन्द्र ७ घर के भीतर है तो समझना अमावस्या को पार कर चन्द्र आगे बढ़ रहा है और अमावस्या के आगे शुक्ल पक्ष की तिथि आरम्भ हो गई है। सूर्य के ठीक सन्मुख सातवें घर मे चन्द्र हो तो पूर्णिमा समझना। इसके आगे चन्द्र जाने पर कृष्ण पक्ष का आरम्भ होता है और चन्द्र जब सूर्य के पास आ जाता है तो अमावस्या होती है।

(७) कुण्डली से जन्म का वार जानना

कुण्डली से जो जन्म का मास जान पड़े चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से गिन कर डेढ गुना करो। गत पक्ष के दिन जोड़ कर ७ का भाग दो। जो शेष रहे उसे जन्म वर्ष के राजा से गिन कर जन्म का वार कहना। पहले बता चुके हैं कि चैत्र शुक्ल १ तिथि को जो वार होता है वही उस वर्ष का राजा कहलाता है। वर्ष के राजा का चक्र पहिले दे चुके है। जैसे जन्म चैत्र कृष्ण १३ का है जैसा ऊपर निकाल चुके है। चैत्र शुक्ल १ से फागुन कृष्ण ३० तक ११ महीने हुए। ११ × १॥=१६॥ दिन+फागुन शुक्ल पक्ष के १५ दिन+और चैत्र कृष्ण १३ तक गत दिन १२ हुए। १६॥+१५+१२=४३॥ – ७=शेष १॥ बचा। इस वर्ष का राजा सोमवार था तो सोमवार से १॥ गिना, मगलवार हुआ। जन्म दिन मंगलवार कहना।

(८) कुंडली से जन्म नक्षत्र जानना

कुण्डली मे जो जन्म मास निकले कार्तिक मे उस मास तक गिन कर दूना करो और गत पक्ष के दिन भी जोड़ कर एक और मिला दो। इसमें २७ का भाग दो, शेष जो बचे अश्विनी से गिन कर नक्षत्र जानना।

जैसे कुण्डली मे प्रगट हुआ चैत्र का जन्म है तो गत मास फागुन हुआ। कार्तिक को १ गिना। इस प्रकार कार्तिक से फागुन तक गिना ५ मास हुए। ५ × २=१०+ गत तिथि १३+१=१० + १४=२४, अश्विनी से गिना चौवीसवा नक्षत्र शतभिषक का जन्म हुआ।

(९) कुण्डली से जन्म का योग जानना

पुष्य नक्षत्र से सूर्य नक्षत्र तक गिनो और श्रवण नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनो। दोनो संख्या जोडकर २७ का भाग दो, जो शेष बचे उसी क्रम से गिन कर योग जानना।

सूर्य चन्द्र की राशि अंश पर से पहले बताये होडा चक्र मे दिये हुए अंशो पर से इनका नक्षत्र जान सकते हो जैसा सूर्य ११-रा०-५ अंश है अर्थात् मीन के ५ अश पर है। होडाचक्र मे ११-रा०-३ अंश-२० अश तक पूर्वा भाद्रपद का चौथा चरण दिया है। इष्ट सूर्य ११-रा०-५ अंश है इससे जाना गया कि सूर्य पूर्वा भाद्रपद का चौथा चरण पार करके उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में गया है। उत्तरा भाद्रपद का पहिला चरण ११-रा०-६ अंश ४० अंश तक होता है, इस कारण सूर्य जन्म समय उत्तरा भाद्र द नक्षत्र पर था।

पुष्य नक्षत्र से उत्तरा भाद्रपद (सूर्य नक्षत्र) तक गिना १९ हुए। जन्म नक्षत्र (चन्द्र नक्षत्र) शतभिषक है (ऊपर निकाल चुके है)। श्रवण से चन्द्र नक्षत्र शतभिषक तक गिना ३ हुए। १९+३=२२ वा योग=साध्य योग आया। यदि योग २७ से अधिक आवे तो २७ का भाग देने पर जो शेष रहता उसे लेते। यहाँ जन्म का योग साध्य निकला।

(१०) कुण्डली से जन्म का करण जानना

कुण्डली मे जो जन्म की तिथि मिले उस तिथि तक शुक्ल प्रतिपदा से गिनो और उस संख्या मे २ का गुणा कर १ घटा कर ७ का भाग दो जो शेष बचे वही करण परार्द्ध में जानना।

स्थिर करण। शुक्ल प्रतिपदा के पूर्वार्द्ध में किस्तुघ्न और परार्द्ध में वव, कृष्ण १४ को, परार्द्ध में शकुनि। अमावस्या के पूर्वार्द्ध में शकुनि। अमावस्या के पूर्वार्द्ध में चतुष्पद और परार्द्ध मे नाग सदा रहते है। यदि इनमे से कोई तिथि का जन्म हो तो इसी के अनुसार करण जानना। शेप का उपरोक्त रीति से जानना।

जैसे कृष्ण १३ का जन्म है। शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमा तक १५ दिन+कृष्ण पक्ष के १३ दिन। १५+१३=२८ × २ = ५६ — १=५५ ÷ ७=शेप ६। छठा करण वणिज हुआ। यह त्रयोदशी के परार्द्ध मे हुआ। इसके पूर्वार्द्ध मे इसके पहिले का अर्थात् पाचवा गर करण जानना।

इतनी खटपट न करके पहिले जो करण चक्र दे चुके है उससे इष्ट तिथि का ठीक करण जान सकते हो।

(११) दिन या रात का जन्म है कुण्डली देखकर जानना

कुण्डली में जहाँ सूर्य हो वहाँ से जन्म लग्न ६ घर के भीतर हो तो दिन का जन्म कहना और सातवें स्थान में हो तो संध्या का जन्म, ८ से १२ स्थान तक लग्न हो तो

रात्रि का जन्म कहना। लग्न में सूर्य हो तो प्रात.काल का जन्म, दशम में सूर्य हो तो दोपहर का जन्म और चतुर्थ में सूर्य हो तो अर्द्धरात्रि का जन्म कहना जैसा यहाँ सूर्य के समय चक्र में बताया गया है। लग्न कुण्डली देखा तो सूर्य दशम स्थान में है

सूर्य का समय चक्र
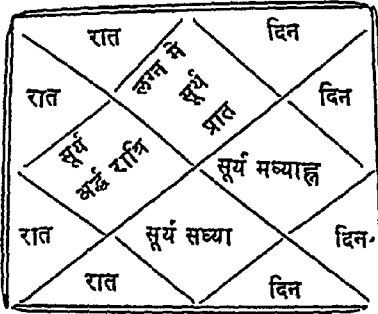
लग्नकुण्डली
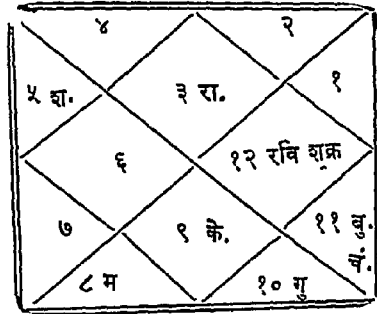
यहाँ मे ल न चौथे घर में है अर्थात् ६ घर के भीतर ही है, इस कारण दिन का जन्म कहना। सूर्य दशम स्थान में है जिससे प्रगट होता है कि मध्याह्नकाल का जन्म है।

(१२) कुण्डली से जन्म समय जानना

ऊपर जो सूर्य का समय चक्र दिया उसमें केन्द्र में सूर्य रहने से जो समय होता है बतला दिया गया है। अब उनके बीच के स्थान से भी समय जानना बतलाते हैं।

दिन रात की ६० घडी में सूर्य, कुंडली में १२ राशि (लग्न के अनुसार) घूम लेता है। १ राशि में ५ घडी या २ घण्टा पडा।

कुडली में सूर्य से लग्न जितने घर दूर हो उसका ५ गुना करो तो इष्ट काल की घडी निकल आयगी।

अपनी कुण्डली में सूर्य दशम भाव में है वहाँ से लग्न ३ घर अन्तर पर है। ३+५= १५ घडी अपना इष्ट हुआ। अर्थात् कुडली से प्रगट हुआ कि जातक का जन्म लगभग १५ घडी इष्ट पर हुआ होगा।

यहाँ ध्यान रहे कि १ राशि में ३०° होते हैं। ३० अंश में ५ घडी का अतर पडता है तो ६ अंश में १ घडी या १ अश में १० पल का अतर पडता है। सूर्य से लग्न जितने राशि अश आगे है देख कर इष्ट घडी का विचार कर लो। जैसे सूर्य ११ रा ५ अंश (मीन के ५ अश) पर और लग्न २ रा २२ अश (मिथुन के २२ अंश) पर है तो सूर्य को आगे २५ अंश और चलना पडेगा तब मीन राशि का अन्त होगा। इस कारण (२ रा २२ अंश) लग्न + (० रा २५ अंश)=३ रा १७ अश = यह सूर्य और

लग्न का अन्तर हुआ। ३ राशि = (३ × ५) = १५ घडी और १७ अंश = (१७×१०) = १७० पल = २ घ ५० प। सब मिल कर १७ घडी ५० पल के लगभग इष्ट हुआ। यह जन्म का इष्ट हुआ। परन्तु यह भी स्थूल मान है इसका ध्यान रहे।

कुंडली पर से जन्म समय आदि का ज्ञान कैसे किया जाता है यह बता चुके। इसपर से जान सकते हो कि यह कुडली चक्र कितने महत्व का है और इस कुडली चक्र से कितनी महत्वपूर्ण बातें जानी जा सकती है। जिसके पास कुण्डली है और वह शुद्ध बनाई गई है तो उससे जन्म समय के सम्बन्ध की बहुत-सी उपयोगी बातो का ज्ञान हो सकता है। इस कारण जितनी शुद्धता पूर्वक कुडली तैयार की जायगी उतना शुद्ध फल निकलेगा।

यहाँ केवल प्रारम्भिक ज्ञान कराने के निमित्त ही कुडली सम्बन्धी सम्पूर्ण बातें स्थूल रूप से बता दी गई है। इससे स्थूल रूप से कुडली बनाना आ जायगा और फल विचारने का अनुभव बढेगा।

सूक्ष्म रूप से गणित द्वारा कुडली आदि तैयार करना और तत्सम्बन्धी पूरा गणित गणित खण्ड में उदाहरण देकर समझाया गया है, जिससे इतना ज्ञान होने के उपरात आगे की सब बातें सरलता पूर्वक समझ मे आने लगेगी।

अध्याय ४०

ग्रहों का बल विचार

कुण्डली मे सब ग्रहो मे कौन बलवान है कौन बलहीन है यह जानने की आवश्यकता पडती है। इस कारण ग्रहो के बल का विचार करना संक्षेप मे बतलाते हैं।

ग्रहो का बल ६ प्रकार से विचारते है और उन सब को मिला कर प्रत्येक ग्रह के बल का विचार करते है। क्योकि बलवान ग्रह पूर्ण फल देता है। बलहीन ग्रह फल देने मे असमर्थ होता है। ग्रहो का बल ६ प्रकार का है।

(१) स्थान बल, (२) दिग्बल, (३) कालबल, (४) चेष्टा बल, (५) नैसर्गिक बल, (६) दृग् बल।

१ **स्थान बल**—५ प्रकार के बल के योग से यह बल बना है।

(१) उच्च बल, (२) सप्तवर्गी बल, (३) युग्मायुग्म बल, (४) द्रेष्काण बल, (५) केन्द्रादि बल।

(१) उच्च बल—जो ग्रह अपने उच्च में होता है वह पूर्ण बली होता है। जो अपने नीच मे होता है वह शून्य बली होता है। इस के बीच मे ग्रह हो तो अनुपात से बल निकालना पड़ता है।

(२) सप्तवर्गी वल ग्रहो के गृह, होरा, द्रेष्काण आदि सप्तवर्गीवल साधन करना गणित खण्ड में बताया है। जो ग्रह अपने मित्र के घर में अपने मूल त्रिकोण या स्वगृह में होता है वह वली होता है। शत्रु के स्थान में होता है उसका वल घट जाता है।

(३) युग्मायुग्म वल—सम राशि स्त्री सज्ञक होती है। चन्द्र व शुक्र ग्रह स्त्री गृह है। स्त्री राशि में स्त्री ग्रह हो तो वलवान होता है। विषम राशि पुरुष ग्रह है, उपर्युक्त ग्रहों को छोड कर शेषग्रह पुरुष है। इन मे नपुसक ग्रह भी पुरुष में शामिल हैं। पुरुष राशि में पुरुष ग्रह वलवान होते है। राशि स्त्री है या पुरुष राशि गुणधर्म चक्र मे दिया है। ग्रह का लिंग, ग्रह गुण धर्म चक्र मे दिया है।

(४) द्रेष्काण वल—एक राशि के ३ भाग करने से प्रत्येक भाग की द्रेष्काण संज्ञा होती है। पहिले द्रेष्काण मे पुरुष ग्रह वली होता है। अन्त के द्रेष्काण में स्त्रीग्रह और मध्य के द्रेष्काण में नपुसक ग्रह वली होता है।

(५) केन्द्रादि वल—केन्द्र में ग्रह पूर्ण वली होता है। पणफर में मध्यम अर्थात् आधावल, आपोक्लिम मे चौथाई वल होता है। केन्द्रादि भाव सज्ञा पहिले समझा चुके है।

इन सब के वल का योग करने से ग्रह के स्थान सम्वन्ध से वल का पता लगता है, इस कारण इसे स्थान वल कहते है।

२ दिग्वल—यह अकेला ही है। इसमें दिशा के अनुसार ग्रहो का वल निकालते है। जैसे लग्न (पूर्व) में वुध और गुरु वली होते है। सप्तमभाव (पश्चिम) में, शनि वली होता है। चतुर्थभाव (उत्तर) में शुक्र और चद्र वली, दशम भाव (दक्षिण) में सूर्य वलवान होता है। इनसे सातवें घर में ये ग्रह हीनवल होते है। जैसे सूर्य दशम भाव अर्थात सिर पर जव होता है तव वलवान होता है, पाताल (चतुर्थ भाव) मे वलहीन होता है। वीच का वल अनुपात से निकाला जाता है। भाव की दिशाएँ पहले समझा चुके हैं।

३ काल वल—४ प्रकार का वल मिलाकर काल वल वनता है।

(१) नतोन्नत वल, (२) पक्ष वल, (३) दिन रात्रि त्रिभाग वल (४) वर्षादि वल।

(१) नतोन्नत वल—चद्र मंगल शनि रात्रि में वली, अर्द्ध रात्रि में पूर्ण वली, सूर्य शुक्र गुरु दिन में वली, मध्याह्न में पूर्ण वली, और वुध सदा वली रहता है।

जो मध्याह्न में पूर्ण वली होते हैं वे अर्द्ध रात्रि में वलहीन हो जाते है और जो अर्द्ध रात्रि में वली होते हैं वे मध्याह्न में वलहीन हो जाते हैं, इस में भी वीच के समय का वल अनुपात से (गणित द्वारा) निकाला जाता है।

(२) पक्षबल — पापग्रह = सूर्य, मगल, शनि, कृष्णपक्ष में वली ।
शुभग्रह = चद्र, गुरु, शुक्र, बुध, शुक्ल पक्ष में वली ।

(३) दिन रात्रि त्रिभाग वल=दिन के और रात के पृथक २ तीन भाग करना ।

दिन के प्रथम भाग मे वुध, द्वितीय मे सूर्य-तृतीय में शनि वली ।
रात्रि के ,, चद्र ,, शुक्र, ,, मंगल ,, ।
गुरु (दिन और रात्रि मे) सदा वली होता है ।

इससे देखा जाता है कि दिन या रात्रि में जन्म हुआ है और दिन या रात्रि के कौन से भाग में जन्म हुआ है । जिस भाग मे जन्म हुआ है उस भाग का सूचक ग्रह वली होगा । शेप ग्रह वलहीन होगे ।

(४) वर्षादि वल—जिस होरा में किसी का जन्म हो उस होरा स्वामी का वल $\frac{3}{4}$ मिलेगा और जिस मास मे जन्म हो उस मासस्वामी का वल $\frac{1}{2}$ (आधा) और वर्ष के स्वामी का वल $\frac{1}{4}$ मिलता है । इन को छोड कर और दूसरे ग्रहो को वल नही मिलता ।

(४) चेष्टा वल — उत्तरायण (१०, ११, १२, १, २, ३ राशि के सूर्य मे) चद्र और सूर्य चेष्टा वल पाता है और भौमादि ग्रह चंद्र समागम होने से या वक्र होने से चेष्टा वली होते हैं । और यदि ग्रह युद्ध हुआ हो तो जो ग्रह जीतता है वह चेष्टा वली होता है।

(५) नैसर्गिक वल — रवि, चद्र, शुक्र, गुरु, बुध, मंगल और शनि ये ग्रह शनि से उलटे क्रम से एक दूसरे के बली होते है अर्थात् शनि सवसे कम वल पाता है, उससे वली मगल, मंगल से वुध वली, बुध से गुरु वली, गुरु से शुक्र वली, शुक्र से चंद्र वली, और चद्र से सूर्य वली होता है । सूर्य सबसे वली होता है और ऊपर वताये क्रम से ग्रह एक दूसरे से वल मे हीन होते है ।

(६) दृग् वल—जिस प्रकार ग्रहो की दृष्टि ग्रह या भाव पर पडती हो उसका दृष्टि चक्र वनाना पहले वता चुके हैं, उसी प्रकार अपनी कुण्डली देखकर ग्रहो की दृष्टि का चक्र वनाया जाता है, जिससे प्रगट होता है कि किस ग्रह पर किस किस ग्रह की दृष्टि है । फिर उसमे विचारते हैं कि उस ग्रह पर कितने पाप ग्रह की और कितने शुभ ग्रह की दृष्टि है । सर्व शुभ ग्रह की दृष्टि का योग कर उसका चतुर्थांश निकालते है और शुभ योग चतुर्थांश से पाप योग चतुर्थांश घटाने से जान पड़ता है पाप दृष्टि अधिक है या शुभ दृष्टि अधिक है । शुभ दृष्टि अधिक हो तो अच्छा और पाप दृष्टि अधिक हो तो बुरा समझा जाता है ।

ऊपर जो ग्रह का वल विचार करना वताया गया है वह वल गणित से निकाला जाता है फिर प्रत्येक ग्रहो के वल को जोड कर देखा जाता है कि कौन ग्रह कितना वलवान है। ग्रह जितना वली होगा उतना ही फल देगा। वलहीन ग्रह फल नही देता उलटे हानि करता है। इस कारण वल का विचार किया जाता है।

वल निकालने का पूरा गणित उदाहरण सहित गणित खड में दिया है। यहाँ केवल प्रारभिक ज्ञान के निमित्त ही वल का वर्णन किया गया है।

अध्याय ४१

नक्षत्र गुण धर्म

क्रम	नक्षत्र	वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाडी	वैर योनि	लोचन (नेत्र)	मुख	नाम
१	अश्वि.	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व	देव	आदि	भैंस	मद	तिर्यक	लघु
२	भरणी	,,	,,	गज	मनुष्य	मध्य	सिंह	मध्य	अधो	उग्र
३	कृत्तिका	क्ष १ वैश्य ३	,,	छाग	राक्षस	अत	वानर	सुलो.	अधो	मिश्र
४	रोहिणी	वैश्य	,,	सर्प	मनुष्य	अत	नकुल	अध	ऊर्ध्व	ध्रुव
५	मृग०	वैश्य २ शूद्र २	चतु० २ नर २	सर्प	देव	मध्य	नकुल	मंद	तिर्यक	मृदु
६	आर्द्रा	शूद्र	नर	श्वान	मनुष्य	आदि	हरिण	मध्य	ऊर्ध्व	तीक्ष्ण
७	पुन०	शूद्र ब्रा० १	नर ३ जल १	मार्जार	देव	आदि	उदुरु	सुलो०	तिर्यक	चर
८	पुष्य	ब्राह्मण	जलचर	छाग	देव	मध्य	वानर	अध	ऊर्ध्व	लघु
९	आश्ले	ब्राह्मण	जलचर	मार्जार	राक्षस	अत	उदुरु	मंद	अधो	तीक्ष्ण
१०	मघा	क्षत्रिय	चतुष्पद	मूषक	राक्षस	अत	मार्जार	मध्य	अधो	उग्र
११	पू० फा०	क्षत्रिय	चतुष्पद	मूषक	मनुष्य	मध्य	मार्जार	सुलो०	अधो	उग्र
१२	उ० फा०	क्ष० १ वैश्य ३	चतु० १ नर० ३	गौ	मनुष्य	आदि	व्याघ्र	अध	ऊर्ध्व	ध्रुव
१३	हस्त	वैश्य	नर	महिष	देव	आदि	अश्व	मद	तिर्यक	लघु
१४	चित्रा	वैश्य २	नर	व्याघ्र	राक्षस	मध्य	गाय	मध्य	तिर्यक	मृदु

		शूद्र २								
१५	स्वाती	शूद्र	नर	महिष	देव	अंत	अश्व	सुलो०	तिर्यक	चर
१६	विशाखा	शूद्र ३	नर ३	व्याघ्र	राक्षस	अंत	गाय	अंत	अधो	मिश्र
		ब्रा० १	कीट १							
१७	अनु०	ब्राह्मण	कीट	मृग	देव	मध्य	श्वान	मद	तिर्यक	मृदु
१८	ज्ये०	ब्राह्मण	कीट	मृग	राक्षस	आदि	श्वान	मध्य	तिर्यक	तीक्ष्ण
१९	मूल	क्षत्रिय	नर	श्वान	राक्षस	आदि	हरिण	सुलो०	अधो	तीक्ष्ण
२०	पू षा	क्षत्रिय	नर ॥	मर्कट	मनुष्य	मध्य	मेढा	अंध	अधो	उग्र
		चतु० ३॥								
२१	उ. षा.	क्ष० १	चतुष्पद	नकुल	मनुष्य	अंत	सर्प	मंद	ऊर्ध्व	ध्रुव
		वैश्य ३								
२२	अभि.	०	०	नकुल	मनु०	अन्त	सर्प	मध्य	०	लघु
२३	श्रवण	वैश्य	चतु.१॥	मर्कट	देव	अन्त	मेढा	सुलो.	ऊर्ध्व	चर
			जल. २॥							
२४	धनि.	वैश्य २	जल २	सिंह	राक्षस	मध्य	गज	अन्ध	ऊर्ध्व	चर
		शूद्र २	नर २							
२५	शत.	शूद्र	नर	अश्व	राक्षस	आदि	भैंस	मंद	ऊर्ध्व	चर
२६	पू. भा.	शूद्र ३	नर ३	सिंह	मनुष्य	आदि	गज	मध्य	अधो	उग्र
		ब्रा १	जल १							
२७	उ भा	ब्राह्मण	जलचर	गौ	मनुष्य	मध्य	व्याघ्र	सुलो.	ऊर्ध्व	ध्रुव
२८	रेवती	ब्राह्मण	जलचर	गज	देव	अन्त	सिंह	अन्ध	तिर्यक	मृदु

इन नक्षत्र गुण धर्म चक्र में दिये हुए वर्ण वश्य योनि गण और नाड़ी विवाह आदि मे विचार किया जाता है। सक्षिप्त जन्म पत्रिका (टिप्पणी) में ये सब लिखना पड़ता है। इस कारण यहाँ चक्र में दिया है।

वर्ण में कृत्तिका नक्षत्र मे क्षत्रिय १, वैश्य ३ दिया है। इसका अर्थ यह है कि नक्षत्र मे ४ चरण होते हैं, उनमे पहिला १ चरण मे क्षत्रिय और अंत के शेष ३ चरण मे वैश्य वर्ण होता है। आगे भी इसी प्रकार का विचारना। जिसमे १ ही वर्ण दिया है वहाँ चारो चरण में एक ही वर्ण समझना। इसी प्रकार वश्य मे भी समझना। जैसे मृगिशर में वश्य मे पहिले २ चरण में चतुष्पद और अंत के २ चरण में नर समझना।

वश्य में चतुष्पद = चौपाया, नर=द्विपद=मनुष्य। कीट=कीडे=रेंगने वाले विना पैर के (अपद)। जलचर=जल में चलने वाले जीव।

योनि—छाग=बकरा या मेढा। मार्जार=बिल्ली। महिप=भैस। श्वान=कुत्ता, मर्कट=वदर, वानर। उदुरु=चूहा, मूषक। गौ=गाय। नकुल=न्योला। व्याघ्र=वाघ, शेर। अश्व=घोडा। गज=हाथी।

लोचन—कोई वस्तु खोई हो उसके विचार में काम आता है। सु०=सुलोचन। मुख=तिर्यक=तिरछा। अधो=उलटा, औंधा। ऊर्ध्व=चित।

नक्षत्र नाम —इन नक्षत्रो के नाम के अनुसार कार्य करने मे शुभ होता है।

अध्याय ४२

किसी वालक का जन्म समय बतला कर सक्षिप्त जन्म-पत्रिका वनाने को कहा जावे तो कैसे वनाना यहाँ समझाते है।

मान लो वालक का जन्म नरसिंहपुर में तारीख २-१०-१९३८ ई० के १० वजे दिन हुआ है। इसकी जन्म-पत्री बनाना है।

उस सन् का पचाग देखा। कर्मवीर पचाग जवलपुर का सम्वत् १९९५ का मिला, उसे देखा। आश्विन शुक्ल ९ रविवार सम्वत् १९९५ शाका १८६०, तारीख के अनुसार मिला।

आश्विन शुक्ल पक्ष तिथि ९ रविवार ६० घ ० प., नक्षत्र पू० पा० २७-४५, शोभन योग ३-४६, उपरात अतिगंड योग, वालव करण २९-१, दिनमान २९ ३२, मिश्रमान ४५-५२ का मिश्रकालीन सूर्य ५ रा. १५ अश २९'-३९'' दिया है। चंद्र मकर का ४४-२१ उपरात होगा।

उपर्युक्त तिथि आदि जवलपुर की है। वहाँ से नरसिंहपुर का देशान्तर ४ मिनट पश्चिम=१० पल है। पश्चिम होने से उपर्युक्त मान से घटाना पडेगा। इसमे फल सस्कार भी करना पडता है, परन्तु नवीन विद्यार्थी की सुविधा के लिये ये सव सस्कार छोड देते है, क्योकि चर सस्कार आदि का ज्ञान अभी नही कराया गया है। इस कारण अभी कुछ कठिनाई मालूम पडेगी। यह विषय गणित खड में विस्तार पूर्वक उदाहरण देकर समझाया गया है। अभी काम चलाने को स्थूल रूप से ही टिप्पणी तैयार करते है।

इष्ट साधन

	घं०	मि०			घडी	पल
जन्म	१०	०	(दिन को)	३ घण्टा =	७	३०
सूर्योदय	६	६	(पंचाग के अनुसार)	५४ मि०=	२	१५
शेष=	३—५४	=९ घ० ४५ प. इष्ट।		योग=	९—४५ इष्ट हुआ	

रविवार को पूर्वाषाढा नक्षत्र २७-४५ है। पचाग मे देखो यह नक्षत्र इसके पहिले शनिवार को कितना था। शनिवार को मूल नक्षत्र २१ घ० ३३ प० दिया है।

	घ० पल		घ० प०
पूर्ण घटी	६०—०	शनिवार को पू० षा०	३८-२७
भुक्त मूलनक्षत्र	२१-३३ (शनिवार को)	+ रविवार को पू० षा०	२७-४५
शेष	=३८-२७ शनिवार को	योग	६६-१२
यह पूर्वाषाढा बचा		भभोग पूर्वाषाढा का	

शनिवार को पूर्वाषाढा ३८-२७ था पूर्ण पूर्वाषाढा=६६-१२

+ रविवार को इष्ट काल ९-४५ ∴ १ चरण =६६-१२/४ = घ० १६ पल ३३

भुक्त पूर्वाषाढा ४८-१२=भयात

शनिवार को मूल नक्षत्र २१-३३ भुक्त होने के बाद पूर्वाषाढा लगा। शनिवार को पूर्वाषाढा ३८-२७ रहा और रविवार को २७-४५ तक था। सब मिलकर पूर्वाषाढा नक्षत्र का भोगकाल ६६—१२ हो गया। इसे भभोग या सर्वर्क्ष कहते हैं। भभोग का चौथाई भाग करने पर १ चरण का भोग निकलता है। भभोग ६६—१२ में ४ का भाग देने से १ चरण का भोग १६—३३ आया। अब देखना है कि जन्मसमय अर्थात् इष्ट काल तक पूर्वाषाढा कितना भुक्त हुआ था। शनिवार के शेष पूर्वाषाढा में इष्ट काल जोडने से पूर्वाषाढा का भुक्त काल ४८—१२ निकला। इसे भयात या भुक्तर्क्ष कहते हैं।

अब देखना है पूर्वाषाढा के कौन चरण का जन्म है। भयात में १ चरण घटाया तो शेष ३१-३९ बचे। दूसरा चरण घटाया तो शेष १५—६ बचे, अब तीसरा चरण नही घटता तो तीसरे चरण का जन्म समझो।

	घ०	प०	
भयात	४८	१२	
१ चरण	१६	३३	घटाया
शेष	३१	३९	
दूसरा चरण	१६	३३	घटाया
शेष	१५	६	

तीसरा चरण १६ ३१ नही घटता, इससे तीसरे चरण का जन्म हुआ।

पूर्वाषाढा के तीसरे चरण में होडाचक्र के अनुसार नामाक्षर 'फा" निकला। धनु राशि हुई। फा अक्षर पर से फतेहसिंह नाम रखा।

अब नक्षत्र गुण धर्म चक्र देखा

पूर्वापाढा के तीसरे चरण में जन्म होने से = क्षत्रिय वर्ण, चतुष्पद वश्य, मर्कट योनि, मनुष्य गण, मध्य नाडी हुई। धन राशि है जिसका स्वामी गुरु हुआ।

अब लग्न कुडली बनाने के लिये पहिले लग्न निकालना है। लग्न निकालने को लग्नसारिणी देखा। सूर्य ५ रा १५ अश हैं अर्थात् कन्या के १५ अश पर है। सारिणी में कन्या के १५ अश के नीचे ३१-२५-१ दिया है। इसमे सारिणी अक ३१-२५-१ इष्ट ६-४५ जोडा तो योग ४१-१०-१ हुआ। इसे सारिणी + इष्ट ६-४५-० में खोजा ४१-६-१२ तक वृश्चिक के ७° होते है और योग ४१-१०-१ ४१-१७-३२ तक ८° होते हैं अपना इष्ट युक्त सारिणी अंक दोनो के बीच में है। सइ कारण लगभग ७॥° वृश्चिक लग्न के आते हैं। वृश्चिक लग्न निकली। अब वृश्चिक लग्न को बीच मे रख कर कुडली तैयार की। इस प्रकार कुडली चक्र बन कर तैयार हुआ।

अब इस मे ग्रह भरने के लिए पचाग देखा। पचाग में अष्टमी का मिश्रमान ४५-५४ का ग्रह इस प्रकार दिया है। जन्म नवमी का है। इस कारण उसके समीप की पक्ति (पचाग के ग्रह) यही है।
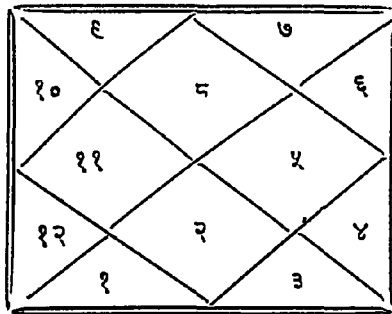
पक्ति	सूर्य	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
	५-१४°	४-२१°	५-८°	१०-५°	६-२३°	११-१४°	७-०°-२६'	१-०°-२६'

अब पचाग में देखो कि पक्ति से इष्ट काल तक कोई ग्रहो में परिवर्तन हुआ है क्या ? अष्टमी के आगे नवमी के इष्ट काल तक पंचाग में इन ग्रहो में कोई परिवर्तन नही दिया, इस कारण इसी के अनुसार अपनी कुडली मे ग्रह स्थापित करेंगे।

सूर्य ५-१४ अश है अर्थात् कन्या का है, मंगल=सिंह का, बुध=कन्या का, गुरु कुभ का, शुक्र तुला का शनि मीन का, राहु वृश्चिक का, केतु वृष का है। इसी प्रकार कुण्डली में जहाँ इन राशियो के अंक है वहाँ ये ग्रह स्थापित करेंगे।

लग्नकुण्डली

चन्द्रकुण्डली

राशि पहिले ही जान चुके है धन राशि है अर्थात् धन राशि का चंद्र हैं, इस कारण चन्द्र को धन राशि पर रखा। लग्न को बीच में लग्न स्थान पर रखा जो कुण्डली वनाई जाती है वह लग्न कुण्डली है और चन्द्र राशि को वीच में (लग्न स्थान पर) रख कर जो कुडली वनाई जाती है वह चन्द्र कुडली है।

अव इसी को लिखने की रीति आगे बताई गई है। पहिले मगलाचरण मे गणेश, ईश्वर आदि की वंदना लिखने के उपरान्त ये सब बातें क्रमानुसार लिख दी जाती है।

श्री गणेशाय नमः

स जयति सिन्धुरवदनो देवो, यत्पादपंकजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां, राशिं नाशयति विघ्नानाम्॥
ब्रह्मा करोतु दीर्घायुः, विष्णुः कुर्याच्च संपदाम्।
हरो रक्षतु गात्राणि, यस्यैषा जन्मपत्रिका॥

अथास्मिन् शुभे विक्रमार्क सम्वत् १९९५, शालिवाहन शाके १८६०, सायन दक्षिणायने गते, याम्यगोले शरदृतौ महामागल्यप्रद आश्विनमासे शुभे शुक्लपक्षे, तिथौ ९ घटयादिकम् ६०।० रविवासरे। पूर्वाषाढानक्षत्रे घटय २७।४५, शोभननाम योगे घटयादिकं ३।४६ तदुपरि अतिगंडनामयोगे। बालवकरणे घटय २९।१ एवं पंचागशुद्धि। तत्र दिनप्रमाणं घटयः २९।३२ रात्रिप्रमाणं घटय ३०।२८ श्रीसूर्योदयादिष्टघटयादिकं ९।४५ कन्यार्के गताश. १५। वृश्चिकलग्ने गताश ७। एवम् शुभग्रहावलोकिन कल्याणवतीवेलाया श्रीमतो नाथूरामसिंहस्य ठाकुरगृहे भार्या सौभाग्यवती अम्बाकुक्षेः पुत्ररत्नमजीजनत्॥ तस्याभिधानं शतपदचक्रानुसारेण पूर्वाषाढातृतीयचरणे "फ" काराक्षरे अकारस्वरे फतहसिंह इति नाम प्रतिष्ठितम्। अस्य राशिः धनु.। स्वामी गुरु। क्षत्रिय वर्ण। चतुष्पद वश्य, मर्कट योनि। मनुष्य गण। मध्य नाडी। इत्यादि विवाहादौ विचारणीयम्। अयं च कुलदेव्याः प्रसादात् दीर्घायुर्भूयात्।

लग्नकुण्डली

चन्द्रकुण्डली

दूसरा प्रकार टिप्पणी (जन्म पत्री) लिखने का।

श्रीगणेशाय नम

श्रीसरस्वत्यै नम.

स जयति सिंधुरवदनो देवो, यत्पादुपंकजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां, राशिं नाशयति विघ्नानाम्॥
आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे सनक्षत्राः सराशयः।
आयुः कुर्वंतु ते सर्वे यस्यैषा जन्मपत्रिका॥

अथास्मिन् श्रीमन्नृपतिविक्रमादित्यराज्योदयात् गताब्दा श्री सम्वत् १९९५ शाके १८६० ॥ श्री सूर्ये दक्षिणायने ॥ शरद् ऋतौ ॥ मासानामुत्तमे आश्विनमासे ॥ शुभे शुक्लपक्षे ॥ तिथौ नवम्या ॥ रविवासरे। घट्यादि ६०।० ॥ पूर्वाषाढानक्षत्रे घट्यादि २७।४५ ॥ शोभननामयोगे घट्यादि ३।४६ ।' तदनंतरम् अतिगडनाम-योगे ॥ वालवकरणे २६।१ ॥ एव पचागशुद्धावद्दिने श्रीसूर्योदयादिष्टघट्यादि ६।४५ ॥ तत्समये वृश्चिकलग्नोदये श्रीठाकुरनाथूरामसिंहजी तस्य गृहे सौभाग्यवत्या भार्याया कुक्षौ पुत्ररत्नमजीजनत् ॥ पूर्वाषाढानक्षत्रस्य भुक्तर्क्षघट्यादि ४८।१२ ॥ भोग्यर्क्षघट्यादि १८।०॥ सर्वर्क्षघट्यादि ६६।१२ ॥ अत पूर्वाषाढानक्षत्रस्य तृतीय-चरणे जातत्वात् अवकहडाचक्रानुसारेण चि० फतेहसिंह नाम प्रतिष्ठितम् ॥ सच देवद्विज-प्रसादाद् दीर्घायुर्भवतु ॥ धन-राशि ॥ क्षत्रिय-वर्ण ॥ चतुष्पद वश्य ॥ मर्कट-योनिः ॥

मनुष्य गणः ।। मध्य नाड़ी ।। एत द्विवाहादौ विचारणीयम् ।। वृश्चिकलग्नगतांश ७ ।। कन्यार्कगतांश १५ ।। इयं जन्मपत्रिका जवलपुरस्य कर्मवीरपंचांगानुसारेण निर्मिता ।। आंग्लमतानुसारेण जन्मसमय १० वादने दिने दिनाक २।१०।१९३८ ईसवी ।। शुभमस्तु ।।

अथ जन्मांकचक्रमिदम्

९ चं.
७ शु.
१०
८ रा
६ सू. वु.
११ गु
५ म
१२ श
२ के
४
१
३
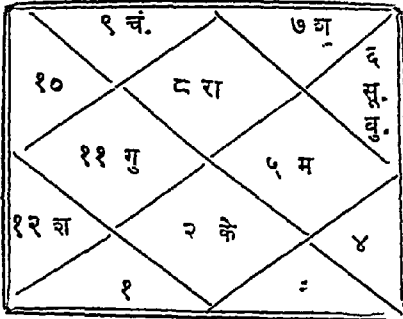
चन्द्रांकचक्रम्
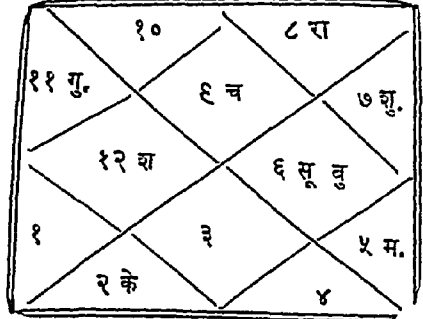
कुंडली के प्रकार

कुडली कई प्रकार की वनाई जाती है। उनके वनाने की भिन्न २ रीतिया आगे वताई जाती है।

भिन्न भिन्न प्रकार की कुण्डलियाँ।

कुण्डली क्रम (१)

कुंडली क्रम (२)

कुंडली क्रम (३)

९ च / १०	८ रा	७ शु / ६ सू बु
११ गु		५ मं
१२ श / १	२ के	३ / ४
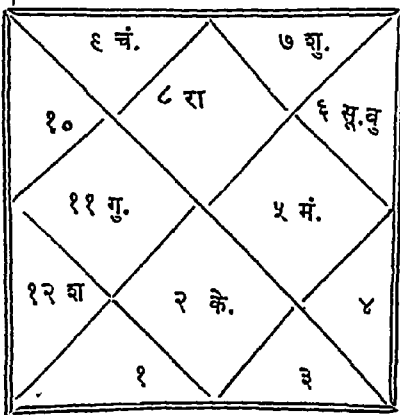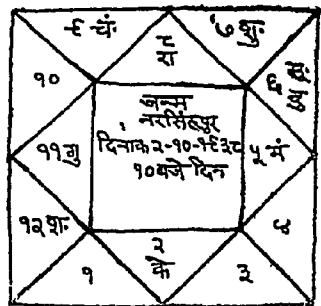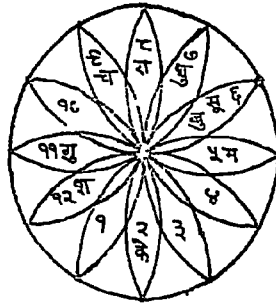
कुडली क्रम (४)

कुंडली क्रम (५)
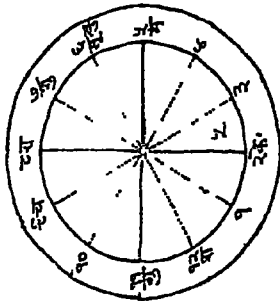
कुण्डली क्रम (६)
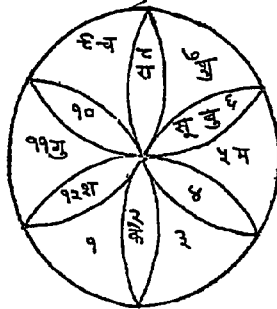
कुण्डली क्रम (७)

ये जितनी कुंडलिया वनाई गई हैं, सब एक ही प्रकार को हैं, परन्तु उनके आकार भिन्न २ प्रकार के वनाये गये हैं। ज्योतिषी लोग शोभा के लिये इसी प्रकार की अनेक रूप की सुन्दर कुंडलियां जन्मपत्री मे बनाते हैं। उनमे रग भी भर देते हैं।

इन सब कुण्डलियो मे क्रम एक ही प्रकार का है। अर्थात् ऊपर लग्न से आरंभ कर बाईं ओर से क्रमानुसार राशिया स्थापित की जाती हैं। परन्तु इस प्रकार की कुडली मे इनके भाव स्थिर हैं केवल राशिया चलायमान हैं। देखो लग्नकुण्डल क्रम १ से ७ तक।

परन्तु भारतवर्ष में इन कुण्डलियो के आकार के अतिरिक्त भिन्न-भिन्न प्रकार से कुण्डलिया कई स्थानो में बनाई जाती हैं और उनके बनाने की पद्धति भी भिन्न-भिन्न है। इस कारण उनका वर्णन कर देना यहाँ आवश्यक है जिससे इस प्रकार की कोई कुण्डली मिलने पर नवीन विद्यार्थी को समझने मे कोई अड़चन न हो।

राशि कुण्डली क्रम (८) ग्रह कुण्डली क्रम् (९) लग्न कुडली क्रम (१)
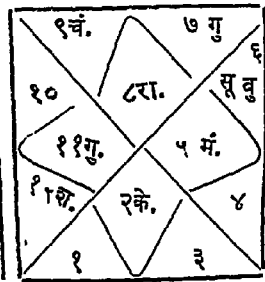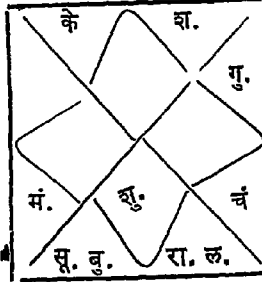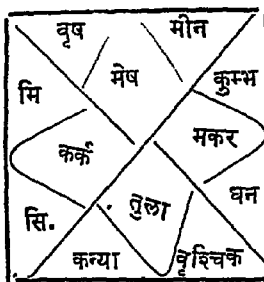
केशव देवज्ञ की जातकपद्धति (केशवी जातक) मे राशि को स्थिर मान कर कुंडली बनाई गई है और उसमें भाव चलित बताये गये है।

यहाँ जिस प्रकार राशि कुडली ८ बनाई गई हैं, उसी के अनुसार राशिया सदा स्थिर मानी गई हैं। जैसे दशम स्थान में सदा दशवी मकर राशि और लग्न में सदा पहिली मेष राशि रहती है, ऐसा मानकर कुण्डली बनाई जाती है। इसमे राशियो के अंक नही लिखे जाते केवल ग्रह जिस राशि में हो उस राशि के स्थान में लिख दिये जाते है, और जहाँ लग्न होती है लग्न लिख दी जाती है जैसे ग्रह कुण्डलो क्रम (९) में पूर्व लिखित लग्न कुण्डली क्रम (१) के अनुसार ग्रह भर दिये गये हैं। इसमे राशि के अंक लिखने की आवश्यकता नही रहती। लग्न कुंडली क्रम (१) और कुण्डली क्रम (९) से मिलान करो। उसमे कितना अतर दिखाई देता है और नवीन विद्यार्थी को कुण्डली क्रम (९) अटपटी जान पडेगी।

दक्षिण में कुंडली बनाने की भिन्न पद्धति है। उसमें राशि को स्थिर तो माना है परन्तु उसका क्रम उलटा है। जैसे उपर्युक्त कुण्डली में अंक ऊपर से लिखना आरम्भ

होकर वाईं ओर से क्रमानुसार लिखे गये हैं, परन्तु यहां विरुद्ध क्रम से अर्थात् दाहिनी ओर से क्रमानुसार राशि के अक स्थापित किये जाते हैं। इसमें राशिया स्थिर और भाव चलित माने गये हैं। और जहाँ लग्न हो वहाँ लग्न लिख दिया जाता है। यहाँ नीचे दी हुई कुडली देखने से सब समझ में आ जायगा।

स्थिर राशि कुण्डली क्रम (१०)

मीन	मेप	वृप	मि.
कुम्भ	राशि		कर्क
मकर	कुण्डली		सिंह
धन	वृश्चिक	तुला	कन्या

ग्रह कुण्डली क्रम (११)

१२ श.	१	२ के	३
११ गु	जन्म		४
१०	कुण्डली		५ म
९ च.	८ रा लग्न	७ शु	६ सू. वु

ग्रह कुण्डली क्रम (१२)

श		के	
गु.	जन्म		
	कुण्डलो		म
चं	रा लग्न	शु.	सू वु

इसमें जहाँ लग्न लिखा है उसके आगे भाव गिना जाता है। जैसे लग्न मे वृश्चिक का राहु है, धन भाव में धन राशि का चन्द्र है इत्यादि प्रकार से कुण्डली क्रम ११ में भाव समझना। परन्तु जो कुण्डली (११) में समझाने के लिये राशि के अक दिये हैं वे नहीं रहते। केवल कुडली क्रम (१२) के अनुसार लग्न-कुण्डली में ग्रह बता दिये जाते हैं।

पाश्चात्य पद्धति से कुडली इस प्रकार बनती है कि कुण्डली मे दशम भाव ऊपर रहता है, चतुर्थ भाव नीचे रहता है, वाईं ओर लग्न का स्थान (पूर्व) और दाहिनी ओर अस्त (पश्चिम) स्थान रहता है। इसमें भाव स्थिर और राशिया चलायमान बतलाते हैं।

पाश्चात्य पद्धति से कुण्डली क्रम (१३)

कुण्डली क्रम (१४)
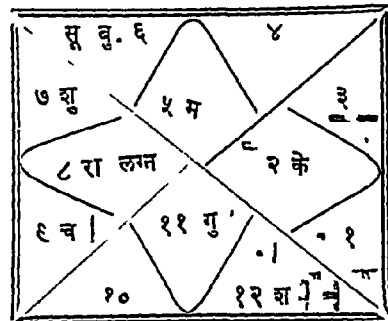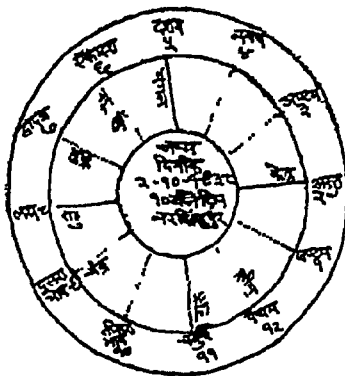
भाव स्थिर है इस कारण भाव मे जिन-जिन राशियो के जितने २ अंश होते है भाव स्थान मे लिख दिये जाते है और जो ग्रह जितने अश पर होता है उसके नीचे लिख दिया जाता है। बीच मे जन्म समय स्थान आदि लिखा रहता है। देखो कुण्डली क्रम १३।

इसी कुण्डली को कुडली क्रम (१) सरीखा भी बनाते है, जिसमें कि लग्न के स्थान मे दशम स्थान ऊपर रखते है जैसा कि कुण्डली क्रम १४ मे बताया गया है। देखो कुडली क्रम (१४)।

जन्म-पत्रिका

यहाँ विद्यार्थियो को केवल टिप्पणी (सक्षिप्त जन्मकुण्डली) बनाना बताया गया है। पूरी जन्मपत्रिका बनाने मे बहुत गणित करना पडता है।

जन्मपत्रिका बनाने के लिये जन्म के स्टेन्डर्ड टाइम (घडी के समय) को स्थानिक समय बना कर, काल समीकरण के अनुसार उस का सस्कार कर शुद्ध इष्ट काल बनाया जाता है। जिस पर से जन्म पत्रिका का सम्पूर्ण गणित होता है, इस पर से प्रत्येक ग्रहो की गति के अनुसार चालन बनाकर ग्रह स्पष्ट किया जाता है। फिर अपने स्थान का अक्षाश निकाल कर उस से पलभा बना कर चरखण्डा निकाल, लकोदय मे उस का सस्कार कर स्वोदय बनाया जाता है। अयनाश निकाल कर सूर्य स्पष्ट से सायन सूर्य बनाकर स्वोदय और इष्ट के आधार पर गणित से लग्न निकाली जाती है। फिर नत बना कर लंकोदय पर से दशम भाव निकाल कर, फिर सब भाव सधिया निकाल कर सम्पूर्ण भाव स्पष्ट किया जाता है। फिर भाव का रूपात्मक भाव बल विश्वाबल चय क्षय फल निकाला जाता है। फिर भावकुण्डली बनाई जाती है और तात्कालिक एवं नैसर्गिक मैत्री पर से पचधा मैत्री चक्र बनाया जाता है। होरा द्रेष्काण आदि कई प्रकार की वर्ग-कुण्डलियाँ बनाई जाती है। दशवर्ग चक्र बना कर उत्तम पारिजातक आदि सज्ञादर्शक चक्र बनाया जाता है। ग्रह पर ग्रहदृष्टि चक्र, भाव पर ग्रह-दृष्टि चक्र, शुभ अशुभ दृष्टि चक्र बनाया जाता है। ग्रह का और भाव का पृथक २ बल निकाल कर पडबल चक्र बनाया जाता है। इष्ट कष्ट, इष्ट बल, कष्ट बल, इष्ट दृष्टि, कष्ट दृष्टि, शुभ अशुभ चक्र, शुभ अशुभ पंक्ति आदि के कई चक्र बनाये जाते है। अष्टक वर्ग शुभ रेखा चक्र बना कर राशि पिंड ग्रह पिंड बना कर, अष्टक वर्ग आयु साधन, व उसकी दशा अतर्दशा साधन का साधन किया जाता है और अशायु, पिंडायु, जीवशर्मोक्त आयु, मिश्रायु, आदि आवश्यक आयु, निकाल कर उसकी दशा अन्तर्दशा आदि भी निकाली जाती है और विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, योगिनी आदि दशा निकाल कर उनकी अंतर्दशा

विदशा आदि निकाल कर उनका समय निकाला जाता है। इस प्रकार जन्मपत्रिका में अनेक चक्र बनाये जाते हैं।

इन सब विषय को पृथक रूप से गणितखंड मे प्रत्येक का उदाहरण देकर पूरी गणित क्रिया देकर पूर्ण रूप से समझाया गया है। जिसमें गणित करने की सम्पूर्ण रीतिया भी दी हैं और लग्नसारिणी, दशमसारिणी, दिनमानसारिणी आदि भिन्न सारिणिया भी बनाकर उनके बनाने को रीति समझाई गई है, जिसके द्वारा बिना किसी सहायता के विद्यार्थी स्वय जन्मपत्रिका बना सकेगा।

जब पंचाग न हो तो अहर्गण निकाल कर मध्यम ग्रह बना कर ग्रह स्पष्ट करने की सारिणिया और रीति भी उदाहरण सहित दे दी गई है, जिससे पत्रिका बनाने का कोई विषय नहीं रह जाता। पूरी जन्मपत्रिका बनाकर फिर उसका फल निकाला जाता है।

अध्याय ४३

फलित सम्बन्धी स्थूल विचार

ज्योतिष सम्बन्धी नियमो को समझाने के पश्चात् पचाग का ज्ञान, कुण्डली का निर्माण इत्यादि विषय समझाया जा चुका है। कुण्डलीनिर्माण के उपरान्त प्रत्येक विद्यार्थी को यह उत्सुकता हृदय में होनी है कि अब इसका फल जाने। गणित विषय जितना कठिन व सूक्ष्म है उतना ही कठिन व सूक्ष्म फलित विषय है।

फलित विषय को उत्तमता तथा पूर्ण रूप से जानने के लिये ज्योतिष सम्बन्धी सम्पूर्ण गणित, ग्रहो का समावेश, स्थित तथा देशकाल आदि सब ही बातो का जानना आवश्यक है। किन्तु जिस प्रकार इस ज्ञान खंड मे स्थूल मान से ज्योतिष के प्रारम्भिक ज्ञान का प्रदर्शन किया गया है उसी प्रकार मे स्थूल मान से फलादेश जानने के कुछ नियमों का उल्लेख आवश्यक समझ कर आगे बताया जायगा। साथ ही साथ गोचर ग्रह, अढैया शनि, साढे साती शनि, आयुर्दाय का स्थूल रूप मे विचार, मारकेश विचार, विंशोत्तरी दशा साधन आदि भी संक्षेप मे बताया जायगा, जिससे विद्यार्थी को इस ओर रुचि बढ़ कर उस का अभ्यास कर अनुभव प्राप्त करें।

इन सब का उदाहरण देकर समझाने से पुस्तक का आकार बहुत बढ जाता, इस कारण यह सब संक्षिप्त में ही दिया है, क्योंकि इन सब विषय का पृथक वर्णन फलित खंड में विस्तारपूर्वक होगा।

बहुत लोग शंका करते हैं कि सूर्य की गरमी का प्रभाव एक ही स्थान पर एक ही समय एक सा ही पडना चाहिये, परन्तु फलादेश में भिन्न रूप से कैसे कहा जाता है।

इसके समझाने को मध्याह्न के समय भिन्न २ प्रकार की धातुओ के वर्तन मे बरावर २ पानी भर कर किसी निश्चित स्थान में निश्चित समय तक रखो। उपरात देखने से प्रगट होगा कि किसी वर्तन के पानी में गरमी (टॅपरेचर) अधिक होगी, किसी मे कम। मान लो तावा, लोहा, कासा और पीतल ऐसे ४ प्रकार के भिन्न २ धातुओ के वर्तन में पानी रखा था। देखने से ज्ञात हुआ कि तावे के वर्तन का पानी अधिक उष्ण होगा, फिर लोहे का, पीतल का और सब मे अल्प उष्णता का प्रभाव कासे के वर्तन पर पडा। यह भिन्न-भिन्न प्रकार की धातुओ के कारण हुआ। जिसमे दाहक शक्ति अधिक होगी उसमें गरमी का प्रभाव शीघ्र पडेगा और जिसमे अल्प होगी उसमें अल्प प्रभाव पडेगा।

ठीक उसी प्रकार संसार के समस्त जड और चैतन्य पदार्थ मनुष्य आदि सब ही पर सब ग्रहो का प्रभाव भिन्न २ रूप से पडता रहता है। जिस वस्तु पर प्रभाव पड रहा है उसकी स्थिति पात्र के समान समझना चाहिए।

इस प्रकार जो जिस लग्न और ग्रह स्थिति मे और जिस स्थान में उत्पन्न हुआ हैं उसीके अनुसार उसकी प्रकृति वन जाती है और उसी प्रकृति के अनुसार भिन्न २ मनुष्यो पर भिन्न २ प्रभाव ग्रहो का पडता रहता हैं।

फलादेश कहते समय आगे वताई हुई बातो का विचार करना चाहिए और अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग कर भिन्न २ फलो को तौल कर और विचार कर फल कहना चाहिए। और उसका अभ्यास करते २ अनुभव बढाना चाहिये, क्योंकि अनुभव से ही ज्ञान बढता हैं।

फलित का स्थूल ज्ञान होने की सामग्री आगे दी है।

फलित का विचार इन रीतियां से किया जाता है :—

१ गोचर से—केवल जन्म राशि पर से पचाग मे दिये हुए ग्रहो की स्थिति पर से प्रत्येक मास या पक्ष आदि का फल जाना जाता है।

२ जन्म कुण्डली से –जन्म कुण्डली देख कर ग्रहो की स्थिति के अनुसार, ग्रह फल, भाव फल, दृष्टि फल, योग फल आदि का पूर्ण विचार कर फल कहा जाता है।

३ वर्षफल - जन्म कुण्डली पर से प्रत्येक वर्ष की, वर्ष कुण्डली बनाकर और उस के भीतर प्रत्येक मास की या यदि आवश्यकता हुई तो प्रत्येक दिन की भी कुण्डली बनाकर वर्ष, मास या प्रति दिन का फल जाना जा सकता है।

४ प्रश्नकुण्डली-—किसी भी समय जब कोई प्रश्नकर्ता कोई विषय पर प्रश्न करता है और उसका उत्तर चाहता है तो उस समय जो लग्न होगी, उस पर से प्रश्न कुण्डली बनाकर उस कुण्डली पर से उस विषय का पूरा निर्णय किया जाता है।

फल का समय—किसी विशेष फल का समय जानने को भिन्न २ प्रकार की दशाओं का साधन किया जाता है और उस ग्रह की दशा अतर्दशा या विदशा किस समय तक रहेगी गणित से निकाला जाता है। जिससे ठीक तिथि फल की जानी जा सकती है।

किसी ग्रह की दशा का जो समय है उसके विभाग करने से अन्तर्दशा का समय निकलता है और अतर्दशा के समय का विभाग करने से विदशा का समय निकलता है। इस प्रकार फल का सूक्ष्म समय निकाला जा सकता है।

फल कहने के लिये इन बातो का जानना आवश्यक है

(१) शुद्ध इष्ट काल परसे बनाई हुई कुण्डली।

(२) यह देखना कि कुडली में कौन ग्रह किस २ स्थान में है।

(३) भाव में जो राशि है उसका स्वामी कौन ग्रह है। अर्थात ग्रहो का स्वस्थान सब से पहिले जानना चाहिए।

(४) ग्रहो के उच्च नीच स्थान, मूल त्रिकोण स्थानो का विचार कर देखना कि कोई ग्रह इन अधिकारो में है क्या ?

(५) ग्रहो की नैसर्गिक तात्कालिक और पचधा मैत्री का विचार कर ग्रहो का परस्पर मैत्री सम्बन्ध देखना।

(६) ग्रहो की दृष्टि प्रत्येक ग्रह और भाव पर विचार कर उसका दृष्टि द्वारा सबध का विचार करना।

(७) ग्रह गुण धर्म, राशि गुण धर्म और नक्षत्र गुणधर्म पर विचार करना।

(८) ग्रहो के अस्त वक्री मार्गी पर विचार।

(९) भिन्न-भिन्न भाव के पृथक नाम और सामूहिकरूप से उनका नाम जो हो, उन में ग्रहो का विचार।

(१०) प्रत्येक भाव से क्या क्या विचार किया जा सकता है, इसको जान के विचारणीय विषय का भाव खोजना।

(११) विचारणीय भाव का स्वामी कौन ग्रह है और किस स्थान में है ? जहाँ भाव स्वामी है उसके भाव से मैत्री सम्बन्ध का विचार करना।

(१२) विचारणीय भाव पर भावेश या और किन ग्रहो की दृष्टि है। इन बातो के विचारने का प्रारभिक ज्ञान करा दिया गया है, परन्तु इस के अतिरिक्त फल विचारने के लिये और अनेक बातो को जानने की आवश्यकता है जिनको जानने पर फल कह सकते हैं।

(१) ग्रहो की भिन्न भिन्न प्रकार की अवस्थाएँ और उन का फल ।

(२) ग्रहो के भिन्न भिन्न राशियो में रहने का फल ।

(३) भाव मे भिन्न भिन्न राशियो के रहने का फल ।

(४) प्रत्येक भाव के अनुसार प्रत्येक ग्रह का फल ।

(५) भाव स्वामी के भिन्न भिन्न स्थानो मे रहने का फल ।

(६) ग्रहो की मैत्री के अनुसार फल ।

(७) ग्रहो की ग्रहो पर दृष्टि के अनुसार फल ।

(८) प्रत्येक भाव पर पृथक पृथक ग्रहो की दृष्टि का फल ।

(९) भाव मे एक से अधिक ग्रह रहने का पृथक पृथक फल ।

(१०) कारक ग्रह, मारक ग्रह, अरिष्ट योग, अरिष्ट भंग योग आदि का ज्ञान ।

(११) ग्रहो के विशेष योग—जैसे अल्पायु योग, दीर्घायु योग, मृत्यु योग, राज योग, राजभंग योग, राज दड योग, धन योग, दारिद्रय योग, अधा काना लगडा आदि होने के विशेष योग और नाभस आदि अनेक योगो का विचार कर देखना कि कुण्डली मे कौन कौन योग पडे है और उनका क्या फल होता है ।

(१२) ग्रह की विशेष परिस्थिति के अनुसार फल का विचार ।

(१३) जन्म समय का सम्वत, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिन आदि अनेक वातो के विचार से भिन्न-भिन्न फल ।

(१४) चद्र की राशि, नक्षत्र, चरण आदि के विचार से विशेष फल जानना ।

(१५) लग्न और लग्नेश के विचार से विशेष फल जानना ।

(१६) आयुर्दाय का ज्ञान ।

इत्यादि अनेक वातो का विचार कर ग्रह और भाव के वलावल और परिस्थिति विचार कर देश, काल, आयु, प्रथा आदि पर विचार करते हुए फल कहना पडता है। फिर उन की दशा निकाल कर वह फल होने का समय निश्चित किया जाता है ।

फल कहने के लिये विचार —

जिस सम्बन्ध का फल विचार करना है उसके लिये देखो वह फल किस भाव से सम्बन्ध रखता है । जैसे सन्तान का विचार करना है तो पचम भाव से उसका विचार होगा, क्योकि पचमे भाव का नाम सुत भाव है । सतान विचारने के लिए मुख्य भाव तो पचम है । परन्तु और भी भाव है जिनसे सतान का विचार होता है । इस प्रकार देखना कि उस भाव का विचार और कौन कौन भाव से सम्बन्ध रखता है ।

जिस भाव के सम्बन्ध से विचार करना है उस भाव के सम्बन्ध से इन वातो का विचार करना पडता है—

(१) भाव का कितना वल है ?

(२) भाव में कोई ग्रह है या नही ।

(३) भाव में शुभ या अशुभ ग्रह है ।

(४) भाव मे लग्नेश है क्या ?

(५) भाव मे कोई ग्रह हो तो उस भाव का वलावल उच्च-नीच आदि अधिकार का विचार ।

(६) भावस्थ ग्रह, त्रिकोण, केन्द्र, त्रिक आदि स्थानो के स्वामी होने का विचार ।

(७) भाव मे कौन २ ग्रहो की दृष्टि है और द्रष्टा ग्रह कैसा है ।

(८) भाव में अनेक ग्रहो का योग पर विचार ।

(९) भाव भावेश युक्त या दृष्ट है ?

(१०) भावस्थ ग्रह और भावेश के योग दृष्टि मैत्री आदि सम्वन्ध का विचार ।

(११) भाव, भावस्थ ग्रह और भावेश के सम्वन्ध से विशेप परिस्थिति और विशेप योगो पर विचार ।

(१२) भावेशो का परिवर्तन योग (भावेश का परस्पर एक दूसरे के स्थान में होना) ।

(१३) भाव के कारक ग्रह की स्थिति और योग दृष्टि मैत्री आदि से भाव से सम्वन्ध होने का विचार ।

(१४) आयुर्दाय का विचार कर मारकेश का विचार ।

इन सव के विचार करने के प्रथम भावस्थ ग्रह या भावेश की पूरी स्थिति इस प्रकार विचार कर लेना चाहिए ।

(१) भावेश पाप या शुभ या मिश्र ग्रह है ।

(२) भावेश वक्री मार्गी अस्त आदि विचार से क्या है ?

(३) भावेश के वलावल का विचार ।

(४) भावेश का उच्च, मूल त्रिकोण स्वगृही आदि अच्छे अधिकार पर विचार ।

(५) भावेश का नीच शत्रु गृही अस्त आदि वुरे अधिकार पर विचार ।

(६) भावेश की भिन्न-भिन्न अवस्थाओ पर विचार ।

(७) भावेश किसी ग्रह के साथ है या अकेला ।

(८) भावेश का शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट होने से अच्छी स्थिति पर विचार ।

(९) भावेश का अशुभ ग्रह युक्त या दृष्ट होने से वुरी स्थिति पर विचार ।

(१०) भावेश का मित्र ग्रह युक्त या दृष्ट होने से वल प्राप्त करने पर विचार ।

(११) भावेश का शत्रु ग्रह युक्त या दृष्ट होने से निर्वलता आने पर विचार ।

(१२) भावेश केन्द्र कोण आदि शुभ स्थानो में होने से अच्छी स्थिति पर विचार ।

(१३) भावेश त्रिक (६-८-१२) स्थानो में होने या इनके स्वामी होने आदि की बुरी स्थिति पर विचार।

(१४) भावेश का केन्द्र त्रिकोण स्वामियो के साथ रहने से अच्छी स्थिति पर विचार।

(१५) भावेश का त्रिकेश के साथ रहने से बुरी स्थिति पर विचार।

(१६) भावेश के वर्ग के अनुसार शुभ या अशुभ वर्ग मे होने का विचार।

(१७) भावेश का नवाश में उच्च-नीच आदि स्थिति मे होने पर विचार।

(१८) भावेश शुभ या अशुभ स्थान में है।

इत्यादि बातो का विचार कर ग्रहो की और भाव की पूरी स्थिति और सम्बन्ध आदि का विचार कर फल कहना पडता है।

अध्याय ४४

फलित विचार करने के लिये संक्षेप में कुछ साधारण नियम

(१) नीच का ग्रह अशुभ होता है जैसे मकर का गुरु।

(२) उच्च का ग्रह (जैसे मेष का सूर्य)=शुभ फल देता है, फल वृद्धि करता है।

(३) परमोच्च ग्रह (जैसे गुरु कर्क के ५° पर हो तो)=भाव फल उत्तम देता है।

(४) मूल त्रिकोण मे ग्रह (जैसे शुक्र १२° पर)=यह उच्च से अधिकार में कुछ कम है, परन्तु उच्च के सदृश ही शुभ फल देता है।

(५) स्वक्षेत्री ग्रह (जैसे मिथुन का बुध)=फल की वृद्धि करता है। शुभ सदृश फल देता है। इसका फल मूल त्रिकोण से कुछ हल्का है।

(६) मित्र क्षेत्री ग्रह (जैसे मेष का सूर्य)=फल वृद्धि करता है, अशुभ फल कम देता है।

(७) अतिमित्र गृही ग्रह=शुभ फल दायक होता है (पंचधा मैत्री के अनुसार अधि मित्र लेना)।

(८) उच्च या मित्र, या बलवान ग्रह से युक्त या दृष्ट ग्रह=शुभ होता है। जैसे मीन का शुक्र उच्च का होता है, यह बुध के साथ चतुर्थ भाव में हो तो बुध अच्छा फल देगा। या बुध चतुर्थ में हो उसपर दशम भाव से उसका मित्र शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो शुभ है।

(९) सम क्षेत्री ग्रह (जैसे शनि की राशि मकर में बैठा मंगल)=सम फल देता है।

(१०) शत्रु क्षेत्री ग्रह=(जैसे बुध चद्र के स्थान कर्क में हो)=अशुभ और हानि-कारक होता है।

(११) ग्रह नीच का होकर शत्रु क्षेत्री भी हो=तो उस भाव का फल नाश करता है। जैसे तुला का नीच सूर्य अपने शत्रु शनि की राशि ११ में बैठा हो।

(१२) मित्र राशि या उच्च राशि मे स्थित पाप ग्रह भी=शुभ हो जाता है। जैसे मकर का मगल जो उच्च का है या सिंह का मगल अपने मित्र सूर्य के घर का।

(१३) शुभ ग्रह यदि। नीच या शत्रु गृही या अस्त हो तो बुरा फल देता है। जैसे नीच मकर का गुरु या शत्रु स्थानी मिथुन का गुरु या अस्त सूर्य के साथ गुरु।

(१४) पाप ग्रह नीच का सव फल नाश करता है जैसे कर्क का मगल।

(१५) अस्त ग्रह (जो सूर्य के साथ रहने से अस्त हो)=अशुभ है बुरा फल देता है।

(१६) शुभ ग्रह उदय हो (अस्त न हो) और वक्री हो और निर्मल काति हो अर्थात् देखने में प्रकाशवान दिखे तो अच्छा फल देता है।

(१७) पाप ग्रह वक्री हो तो अशुभ है।

(१८) पाप ग्रह युक्त या भाव स्वामी के शत्रु से युक्त या दृष्ट ग्रह अनिष्ट फल देता है। जैसे चतुर्थ में वृश्चिक का बुध पाप ग्रह राहु से युक्त हो तो पाप युक्त होने से बुध बुरा हुआ। यदि दशम स्थान में वृष का राहु है जो चतुर्थेश मंगल का शत्रु है तो बुध पर राहु की दृष्टि पडने से बुरा फल देगा।

(१९) शुभ ग्रह जैसे शुभ या अशुभ स्थान मे हो उसके शुभ या अशुभ फल को वढाते हैं।

पाप ग्रह अच्छे और बुरे दोनो प्रकार के फलो को घटाते है। इसलिये शुभ ग्रह शुभ स्थान में अति शुभ और अशुभ ग्रह अशुभ स्थान में हो तो उसके अशुभ फल को कम करने के कारण अच्छे होते है और अशुभ ग्रह शुभ घर मे बैठ कर उसके शुभ प्रभाव को घटाने के कारण हानिकारक होते हैं।

(२०) शुभ स्थान=१,४,१०,५,९,११ भाव। सदा अशुभ स्थान=६,८,१२ भाव।

अशुभ स्थान=२ और ७ घर मारक स्थान है। इनमे अशुभ ग्रह हो तो ये अशुभ होते है। परन्तु इनमें शुभ ग्रह हो तो समान भाव हो जाता है।

सम स्थान=३ भाव (ये न शुभ है और न अशुभ है)।

(२१) ग्रह जिस स्थान को देखता है उसके वल को वढाता है। यदि भाव स्वामी होकर उस भाव को देखे तो अच्छा फल देता है। जैसे लाभ स्थान में मिथुन का गुरु पंचम भाव अपने स्वस्थान (धन राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखता है तो पंचम भाव का फल अच्छा होगा।

(२२) बुरे भी ग्रह हो परन्तु अच्छे घर मे हो जैसे त्रिकोण, केन्द्र या लाभ मे तो अच्छा फल देते हैं। जैसे सूर्य पाप ग्रह है परन्तु दशम (केन्द्र) स्थान में अच्छा होता है।

(२३) शुभ ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो तो अच्छा फल देते हैं।

(२४) ग्रह जो ३, ६, ११ या, - ७, ८ भाव के स्वामी न हो तो शुभ फल देते हैं।

(२५) ग्रह जो एक दूसरे से २–१२ भाव मे या ६–८ घर में हो तो बुरा प्रभाव करते हैं।

अर्थात् एक ग्रह दूसरे भाव मे हो और दूसरा उससे बारहवें भाव मे हो तो उसका सम्बन्ध बुरा है। या एक छठे दूसरा वहा से आठवें स्थान में हो तो उनका सम्बन्ध बुरा होता है। जैसे लग्न मे मगल है और छठे स्थान में शनि है तो ये एक दूसरे से ६–८ स्थान मे हुए। मगल पूर्ण दृष्टि से शनि को देखता है तो दृष्टि द्वारा सम्बन्ध हो गया यह बुरा है।

(२६) भाव मे पाप ग्रह हो या उन पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो उस भाव की वृद्धि होती है। जैसे पचम भाव मे शुक्र शुभ ग्रह हो या उसकी दृष्टि हो तो अच्छा है।

(२७) भाव में पाप ग्रह हो या उस पर पाप दृष्टि हो तो बुरा फल देता है। जैसे चतुर्थ मे शनि हो उसकी दृष्टि हो तो बुरा हो।

(२८) यदि भाव मे शुभ और अशुभ ग्रह दोनो हो तो मिश्रित फल होगा। या भाव पर शुभ और अशुभ दोनो की दृष्टि हो तो मिश्रित फल होता होगा।

(२९) जिस भाव मे नीच या शत्रुक्षेत्री ग्रह हो उस भाव की हानि करते है। यदि स्वक्षेत्री, मूलत्रिकोण, उच्च के या मित्रक्षेत्री ग्रह हो तो वह भाव शुभ फल देता है।

(३०) भाव, शुभ ग्रह या भावेश युक्त या दृष्ट हो और पापयुक्त या दृष्ट न हो तो शुभ फल होता है।

यदि पाप युक्त या दृष्ट होने से शुभ फल देने वाले भी बुरे हो जाते हैं। और शुभ युक्त या दृष्ट होने से अशुभ फल देने वाले भी अच्छे हो जाते हैं।

(३१) भाव में, भाव स्वामी के अतिरिक्त यदि शुभ ग्रह अस्त, नीच या शत्रु स्थानी हो तो अच्छा फल नही देता।

यदि पाप ग्रह अस्त, नीच या शत्रुस्थानी हो तो भाव फल को पूर्ण नाश कर देता है।

(३१) भाव में शुभ स्थान का स्वामी हो या उसकी दृष्टि हो और वह भाव दुष्ट ग्रह या दुष्ट भावेश के साथ न हो या इनकी दृष्टि न हो तो अच्छा फल देता है।

(३३) बुरे या भले भाव किसी ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो मध्यम फल देते हैं।

(३४) जिस भाव मे लग्नेश हो उस भाव की उन्नति होती है।

(३५) भावेश-मित्र गृही, स्वगृही, मूलत्रिकोण या उच्च का हो तो अच्छा फल देता है।

यदि अ'टम में या अस्त या शत्रु या नीच राशि में हो और शुभ ग्रह युक्त या दृ'ट न हो तो भाव फल नाश हो जाता है।

(३६) भावेश, पाप ग्रह भी हो परन्तु नीच, अस्त या शत्रुगृही न हो तो ऐसे भावेश युक्त या दृ'ट भाव बुरा नही होता।

(३७) भावेश अपनी राशि में उच्च का हो परन्तु नवाश मे नीच का हो तो अच्छा फल नही देता।

इसी प्रकार अपनी नीचराशि मे होकर अपने नवाश में उच्च राशि का हो जावे अच्छा फल देता है।

जैसे मीन का शुक्र राशि मे उच्च का है और अपने नवाश में कन्या राशि का अर्थात नीच का हो जावे तो अच्छा फल नही देगा। यदि राशि मे कन्या (नीच) राशि का शुक्र हो परन्तु नवाश मे मीन (उच्च) का हो जावे तो अच्छा फल देगा। (नवाश निकालना अन्त में बताया है)।

(३८) भावेश अस्तंगत या नीच का हो तो केन्द्र या त्रिकोण में रहने पर भी शुभ फल विशेष रूप से नही देता, अडचन और कष्ट के उपरान्त फल देता है।

(३९) किसी भाव का फल, पहिले भावेश से विचारना, क्योकि भावेश, उस भाव का स्वामी है और भावस्थित ग्रह उस भाव रूपी घर का किरायेदार ठहरा। भाव मे बैठा शुभ ग्रह उस भाव को बाहरी चमक-दमक अवश्य देता है, परन्तु भावेश के बुरे होने पर भाव से उत्पन्न फल की प्राप्ति मे अडचन होती है। इस कारण भावस्थ ग्रह से भावेश प्रबल है।

(४०) भावेश, लग्न से केन्द्र या त्रिकोण या लाभ मे हो तो वह भाव फल की वृद्धि करता है।

(४१) ३, ६, ८ या ११ भाव के स्वामी जिस भाव में हो, बुरे होते हैं। ५ और ९ भाव के स्वामी अच्छे होते है।

केन्द्र स्थानो के स्वामी यदि शुभ ग्रह हो तो बुरे फल देते हैं।

केन्द्र स्थानो के स्वामी यदि पाप ग्रह हो तो अच्छे फल देते हैं।

(४२) लग्नेश जिस भावेश के साथ हो उस भाव के फल की वृद्धि करता है, परन्तु लग्नेश यदि अष्टमेश के साथ हो तो उस भाव की हानि करता है। लग्नेश जिस भाव मे हो या जिस भाव स्वामी के साथ हो उस भाव का वह फल देगा, परन्तु भाव स्वामी बली हो तब अच्छा फल देगा, यदि बलहीन हो तो दु ख देगा।

(४३) लग्नेश यदि अष्टमेश भी हो जाय तो शुभ समझा जाता है।

(४४) लग्नेश ६, ८, १२ भाव के स्वामियो के साथ हो तो बुरा है। लग्नेश जहा है उस भाव का स्वामी ६, ८, १२, भाव मे हो तो बुरा है।

(४५) लग्नेश अष्टम में हो परन्तु शुभ दृष्टि हो तो बुरा फल नही देता।

(४६) लग्नेश जिस ग्रह से युक्त या दृष्ट है उस ग्रह का स्वस्थान क्या है मालूम करो, लग्नेश के प्रभाव से उसी स्थान के फल मे वृद्धि होगी, जैसे नवम स्थान मे लग्नेश बुध कुम्भ राशि का है वह चन्द्र से युक्त है, चन्द्र का स्वस्थान कर्क है, जो धन भाव में है तो बुध लग्नेश के प्रभाव से उस स्थान की वृद्धि होगी।

(४७) जिस भाव या भावेश या ग्रह के एक ओर पाप ग्रह हो और दूसरी ओर शुभ ग्रह हो तो मिश्रित फल देगा। यदि दोनो ओर शुभ ग्रह है तो शुभ फल देगा। यदि दोनो ओर पाप ग्रह है तो पाप ग्रहो से घिरा रहने के कारण बुरा फल देगा। जैसे तीसरा भाव लो, इसके एक ओर और दूसरे भाव में मगल हो और चौथे भाव मे शनि हो तो यह भाव दोनो ओर पाप ग्रहो से घिर जाने के कारण बुरा है। यदि दूसरे भाव में गुरु है और चौथे भाव मे शुक्र हो तो यह शुभ ग्रहो से घिरा होने के कारण अच्छा है। यदि दूसरे भाव में शनि और चौथे भाव मे गुरु हो तो एक ओर शुभ और दूसरी ओर अशुभ से घिरा होने के कारण मिश्रित फल देगा।

(४८) यदि कोई भाव स्वामी पाप-ग्रह हो और तीसरे घर में पड जाय तो अच्छा फल देगा। परन्तु शुभ ग्रह तीसरे घर में पड जाय तो मध्यम फल देता है।

(४९) त्रिषणाय (३, ६, ११ भाव) ये अशुभ स्थान कहलाते है, क्योकि इनके स्वामी शुभ ग्रह हो तो बुरे होते है और पाप ग्रह हो तो शुभ फल देते है।

(५०) त्रिक स्थान (६-८-१२ भाव)=दुष्ट स्थान है, शुभ ग्रह त्रिक मे उस भाव के फल की हानि करते है और पापग्रह उस भाव की वृद्धि को हानि करते है।

(५१) किसी भाव का स्वामी त्रिक मे हो या त्रिकेश जिस भाव मे हो उस भाव के फल का नाश होता है। परन्तु शुभ ग्रह उसे देखता हो तो शुभ हो जाता है। जिस भाव का स्वामी त्रिक मे हो वह उस भाव के अच्छे फल को बुरा और बुरे फल को अच्छा करता है।

(५२) कोई भाव स्वामी जिस राशि मे हो उस राशि का स्वामी यदि दुष्टस्थान मे हो तो उस भाव की सब बातो में बुरा फल देगा ।

(५३) कोई दुष्ट स्थान (त्रिक) का स्वामी अपने स्वस्थान मे हो और उसका यदि दूसरा भी स्वस्थान हो जो दुष्ट भाव में पडता हो तो वह दुष्ट स्थान का भी स्वामी कहलायगा, परन्तु उस दुष्ट स्थान का फल न देगा, अपने ही स्थान का जहाँ पर वह है, फल देगा । जैसे लाभ स्थान मे मेष का मगल स्वस्थानी है, इसका दूसरा स्वस्थान वृश्चिक छठे घर में पडने से यह मगल षष्टेश भी हुआ, परन्तु उसका हानि कारक फल न देगा, लाभ स्थान का ही फल देगा ।

(५४) किसी भाव का स्वामी केन्द्र या त्रिकोण मे हो तो अच्छा फल देगा ।

(५५) केन्द्र मे शुभ ग्रह हो यदि वे केन्द्र स्वामी न हो तो वहुत शुभ होते हैं । क्योंकि केन्द्र स्वामी शुभ ग्रह बुरा फल देता है और पाप ग्रह केन्द्रेश हो तो अच्छा फल देता है ।

(५६) यदि पाप ग्रह केन्द्रेश होकर त्रिषणाय पति भी हो तो पाप कारक होते हैं । यदि पाप ग्रह केन्द्रेश होकर त्रिकोणेश भी हो तो शुभ फल देने में बलवान होते हैं ।

(५७) चार शुभ ग्रहो में से केन्द्रेश होने पर कौन सब से बुरा है इसका विचार गुरु शुक्र में विशेष शुभता होने से विशेष बुरे हैं ।

बुध कभी पाप ग्रह के साथ रह जाने से पाप ग्रह हो जाता है, इस से गुरु शुक्र की अपेक्षा बुध मे अल्प दोष आता है ।

चद्रमा ये पूर्ण रहने से शुभ है, क्षीण होने से पाप हो जाता है, इससे बुध की अपेक्षा चन्द्र का दोष न्यून होता है । अर्थात् सब शुभ ग्रहो में चन्द्रमा मे बहुत कम बुरा फल होता है ।

(५८) त्रिकोण मे लग्न भी ली जाती है ।

पचम नवम भाव मे चाहे शुभ या अशुभ ग्रह हो शुभ फल देते है ।

(५९) उच्च का ग्रह त्रिकोण मे बहुत अच्छा होता है, परन्तु नीच का ग्रह त्रिकोण मे बुरा फल देता है ।

(६०) केन्द्रस्वामी का शुभ फल का परिणाम परिश्रम से होता है । परन्तु त्रिकोणेश का शुभ फल विना परिश्रम के होता है ।

(६१) केन्द्रेश या त्रिकोणेश यदि त्रिक स्थान में हो तो अपने सम्बध वाले भाव में अशुभ प्रभाव डालते है ।

(६२) कोई भावेश अपने भाव से केन्द्र या त्रिकोण मे पडे तो शुभ फल देता है । जैसे तृतीयेश बुध, तीसरे भाव से केन्द्र (सप्तम) मे पड़े अर्थात तीसरे भाव से सातवाँ, नवम भाव आया तो यदि नवम भाव में तृतीयेश बुध पडे तो शुभ फल देगा ।

(६३) यदि केन्द्रेश ये त्रिकोणेश के साथ हो तो अच्छा है। यदि दूसरे त्रिकोण के स्वामी से भी योग या दृष्टि द्वारा सम्बन्धित हो तो वहुत अच्छा फल देता है। जैसे वृष लग्न है, चतुर्थ मे सिंह का सूर्य और बुध है तो केन्द्रेश सूर्य है, त्रिकोणेश (पंचमेश) बुध का यहाँ साथ हो गया। तब दूसरा त्रिकोणेश (नवमेश) शनि है, यदि वह दशम स्थान में स्वस्थानी है, चतुर्थ के ग्रहो को देखता है तो अच्छा है।

(६४) द्विर्द्वादश भाव (२-१२ भाव) विचार।

धनेश और व्ययेश अपने स्वभाव अनुसार फल नही देते। ये जिस शुभ या अशुभ घर में रहते है या जिस शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते है या जिस स्थान के वे स्वामी है वहाँ जैसी शुभ या अशुभ राशि हो उसीके अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। अर्थात् २ और १२ भाव के स्वामियो का स्वत का कोई विशेष गुण दोष नही है, उनके गुण दोष विचारने को देखो कि इन भावेश की राशि का स्वामी किस भाव में है, ये किस ग्रह के साथ है और ये भावेश किस भाव में पडे है। इन तीनो रीति से इनका गुण दोष विचारना। अर्थात २-१२ भाव के स्वामी शुभस्थान में या शुभ युक्त हो तो शुभ है। यदि अशुभ स्थान (६-८-१२ भाव) में या अशुभ युक्त हो तो अशुभ है।

(६५) छठा भाव यह ऋण रोग शत्रु का मुख्य स्थान है, यदि पाप ग्रह इसमें हो तो उस भाव के बुरे फल को नष्ट करेगा अर्थात इनके नाश होने से वह सुखी होगा। यदि शुभ ग्रह हो तो इनको बढने नही देंगे, परन्तु अधिक लाभ नही कर सकते। यदि छठे भाव का स्वामी अपने घर षष्ठ में हो तो अच्छा समझा जाता है।

(६६) अष्टम भाव में सूर्य-चंद्रमा बलवान नही होते, परन्तु ये अष्टमेश हो तो अच्छे समझे जाते है। और अष्टमेश यदि लग्नेश भी हो तो वह अच्छा समझा जाता है।

अष्टमेश अशुभ है परन्तु यह त्रिकोणेश भी हो तो शुभ है। अष्टमेश त्रिषणाय का भी स्वामी हो तो अशुभ कारक है। अष्टम में शुभ ग्रह हो तो अशुभता कम हो जाती है और कुछ शुभ भी हो जाता है। जिस भाव में अष्टमेश हो उस भाव का नाश हो जाता है।

(६७) व्ययेश व्यय भाव में हो तो शुभ समझा जाता है।

(६८) पाप ग्रह १, ८, १२ भाव मे बुरा फल करते है। क्षीण चन्द्र १, ६, ८, १२ भाव मे अशुभ है। पाप ग्रह ३, ६, ११ भाव में अच्छे है। शुभ ग्रह सब स्थानो में अच्छा फल देते हैं। गुरु शुक्र सदा शुभ है चाहे वे नीच के हो या ऐसो के साथ हों। परन्तु बुरी परिस्थिति में रहने के कारण उनकी भलाई करने की शक्ति घट जाती है।

व्ययेश के विचार से स्थानों के स्वामियो की अच्छाई बुराई का विचार—

किसी भी भाव के व्ययेश से उस भाव के स्वामी की स्थिति पर विचार।

१ लग्नेश—यह धन भाव का व्ययेश हुआ, धन अपने तन की रक्षा के लिये व्यय कराने में, लग्नेश शुभ हुआ ।

२ द्वितीयेश—यह तृतीय भाव का व्ययेश हुआ । तृतीय भाव सहज पराक्रम और आयु का स्थान है । इस कारण इसके व्यय कारण होने से द्वितीयेश अशुभ और मारक कहलाता है ।

३ तृतीयेश—यह चतुर्थ का व्ययेश हुआ । चतुर्थ से सुख आदि का विचार होता है । इससे तृतीयेश यह सुख का व्ययकारक होने से अशुभ होता है ।

४ चतुर्थेश—यह पचम का व्ययेश हुआ । पचम विद्या का स्थान है यदि वह पापी होकर विद्या का नाश करता है तो उचित ही है । यदि शुभ होकर विद्या का नाश करता है तो अनुचित है । इस कारण चतुर्थेश शुभ हो तो अशुभ और पाप ग्रह हो तो शुभ कारक कहा जाता है ।

५ पचमेश—यह षष्ठ भाव का व्ययेश हुआ । षष्ठ रोग, शत्रु आदि का स्थान है, उसका नाशक पंचमेश हुआ । इससे पचमेश अच्छा कहा जाता है ।

६ षष्ठेश—यह सप्तम स्थान का व्ययेश हुआ । इस कारण सप्तम स्त्री का नाशक षष्ठेश अशुभ हुआ ।

७ सप्तमेश—अष्टम का व्ययेश हुआ । अष्टम आयु का स्थान है जिसका नाशक सप्तमेश हुआ, जिससे सप्तमेश मारक कहलाया ।

८ अष्टमेश—यह नवम का व्ययेश हुआ । नवम भाग्य का स्थान है, जिसका व्यय-कारक होने से अष्टमेश अशुभ हुआ ।

९—नवमेश—यह दशम भाव का व्ययेश है । दशम कर्मस्थान अर्थात् संसार का बन्धन है । इस कारण सासारिक बन्धन अर्थात् कर्म का व्यय करने वाला होने के कारण नवमेश शुभ हुआ ।

१० दशमेश—यह लाभ स्थान का व्ययेश है । लाभ का व्यय अर्थात् हानिकारक होने से यह अशुभ कहलाता है ।

दशमेश पाप ग्रह होकर अशुभत्व के फल का नाशक होने से शुभ समझा जाता है और शुभ ग्रह अशुभ बढाने के कारण बुरा समझा जाता है ।

११ लाभेश—यह व्यय का व्ययेश हुआ । व्यय का नाश करता है । खर्च नही होने देने के कारण बुरा है, क्यो कि पैसा रहने पर भी व्यय नही करने दे तो आवश्यक सामग्री अन्न वस्त्र आदि प्राप्त करना कठिन हो जायगा । इससे लाभेश अशुभ कहा गया है ।

१२ व्ययेश—यह लग्न का व्ययेश है । लग्न शरीर है उसका व्ययकारक होने से यह अशुभ हुआ ।

इससे प्रगट हुआ कि—

त्रिषणाय—(३-६-११) भाव के स्वामी पापकारक होते है।

त्रिकोण—(५-९) भाव के स्वामी शुभ कारक होते हैं।

केन्द्र के स्वामी— शुभ हो तो अशुभकारक होते है। और पाप हो तो शुभकारक होते हैं।

२-८-१२ भाव के स्वामी— अपने साथी और स्थान आदि के अनुसार फल देते है। २ और ७ भाव— मारक स्थान है—इनके स्वामी मारकेश कहलाते हैं।

अध्याय ४५

गोचर विचार

गो का अर्थ हैं तारा (नक्षत्र या ग्रह) और चर अर्थात् चलना। सूर्यादि नवग्रह प्रतिदिन दैनिक गति के प्रमाण से भ्रमण करते हैं, जिस की साप्ताहिक या दैनिक स्थिति पंचांग मे दी रहती हैं।

इन्ही ग्रहो की गति के अनुसार भिन्न-भिन्न समय में भिन्न राशियों पर ग्रह सदा चलते रहते है और उस भ्रमण से जो प्रभाव भिन्न राशियो पर पडता है उसे गोचर फल कहते हैं।

गोचर के अनुसार ग्रह का फल जानने की यह रीति है कि जन्म समय के चन्द्र की जो अपनी राशि हो, उसको प्रथम स्थान मान कर उसपर से प्रत्येक स्थान के फल का क्रमानुसार विचार होता हैं। उसी जन्म राशि को प्रथम स्थान मान कर उसपर से प्रत्येक ग्रह का स्थान गिन कर जानना चाहिए। जैसे किसी की कुभ राशि है तो जब कभी गोचर फल देखना हो तो पचाग में जो कुण्डली ग्रहस्थिति के अनुमार दी रहती हैं उस कुण्डली में जहाँ कुम्भ राशि दी हो उसे पहिला स्थान माने और उसके आगे के स्थानो की क्रमानुसार गणना करो। तन धन आदि द्वादश स्थान लग्न-कुण्डली में जैसे गिनते है उसी प्रकार यहाँ भी पहिले स्थान को तन स्थान समझ कर स्थानो की गणना करना।

उदाहरण के लिये सम्वत् २००२ आषाढ कृष्ण अमावस्या को कुडली पंचाग से ली। जन्म राशि कुम्भ का विचार करना है।

जन्म समय चन्द्र कुंभ राशि का था, इस कारण राशि कुंभ कहलाई। पचाग की कुण्डली को घुमा कर इस प्रकार रखो कि अपनी राशि लग्न स्थान पर आ जावे।

पचाग मे दी हुई कुण्डली
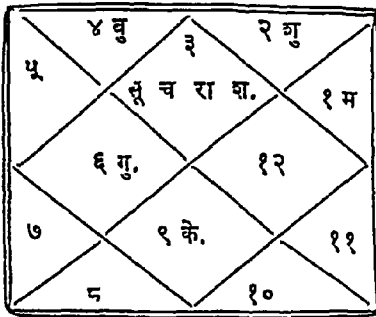
अपनी गोचर कुण्डली
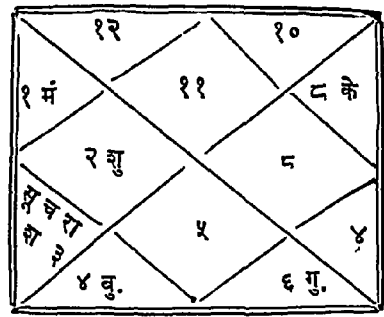
कुम्भ राशि को लग्न स्थान मे लिख कर शेष राशिया क्रमानुसार बाईं ओर से लिख कर उसमें वे ही ग्रह स्थापित कर दो जो पचाग की कुडली में दिये है, तो अपनी गोचर कुडली वन जायगी, जैसा यहा बताया है। जिस राशि पर जो ग्रह पचाग की कुडली में दिये रहते है उसी के अनुसार गोचर कुडली में रहते हैं, केवल अन्तर यही रहता है कि पचाग में सूर्य जिस राशि पर रहता है वह लग्न के स्थान मे सबसे ऊपर दिया रहता है, अपनी गोचर कुडली मे लग्न स्थान पर अपनी राशि रहती है। अपनी इसी गोचर कुण्डली पर से फल का विचार करना पडता है।

अपनी कुण्डली में मेष का मगल तीसरे स्थान मे है और वृष का शुक्र चौथे स्थान मे है। पचम मे मिथुन का सूर्य चन्द्र शनि और राहु है। षष्ठ मे कर्क का बुध, अष्टम मे कन्या का गुरु और लाभ स्थान में धन का केतु है। बस, इसी के अनुसार फल का विचार करना पडेगा।

गोचर फल विचारने का चक्र प्रत्येक पचाग मे दिया रहता है उससे देख लेना। इसका पूरा फल विचारना पृथक फलित खण्ड में दिया जायगा।

जन्म राशि और जन्म लग्न में क्या अन्तर है ध्यान में रखना चाहिए। जन्म समय जो राशि पूर्व में उदय हो रही है वह जन्म लग्न है और जन्म समय चन्द्रमा जिस राशि मे रहता है वह राशि जन्मराशि कहलाती है। यहाँ गोचर फल जन्मराशि से विचार किया जाता है।

अध्याय ४६

शनि का विशेष विचार

साढ़ेसाती शनि

शनि का प्रभाव इतर ग्रहो को अपेक्षा विशेष देखने मे आता है, क्योकि शनि अधिकतर दु ख प्रगट करता है। यह एक राशि मे लगभग २॥ वर्ष रहता है। शनि का

इस काल में नाना प्रकार के कष्ट और भिन्न २ मनुष्यों को जन्म कुण्डली के अनुसार शनि के प्रभाव से भिन्न २ प्रकार की आपत्तियाँ आती हैं। इस में किसी की मृत्यु होती है, किसी के माता पिता का मरण होता है, किसी की स्त्री की मृत्यु होती है, किसी का घर जलता है, किसीकी जीविका जाती है इत्यादि अनेक प्रकार के सकटमय प्रसग आते है। परन्तु विशेप परिस्थिति मे यह कभी २ शुभ फल भी देता है। जब शनि की अशुभ साढेसाती हो तो लोहे की अगूठी पहिरना, शनि की उपासना करना, जप दान आदि करना चाहिए।

किसीको साढेसाती आने पर फिर ३० वर्प मे साढेसाती आती है। एक मनुष्य को ३ वार से अधिक साढेसाती नही आती। चौथी साढेसाथी लाखो मे विरला मनुष्य भोगता है।

शनि की साढेसाती का शुभाशुभ जो फल मिलता है नीचे चक्र में वताया है कि किस राशि वाले को किस प्रकार पीडा आदि देता है।

राशि	समय और प्रभाव	राशि	समय और प्रभाव
१ मेप	वीच के २॥ वर्प अनिष्ट	७ तुला	अत के २॥ वर्प अनिष्ट
२ वृप	आरभ के २॥ वर्प अनिष्ट	८ वृश्चिक	पहिले २॥ वर्प अच्छे शेप अनिष्ट
३ मिथुन	अन्तके ,, ,,	९ धन	अत के २॥ वर्प अच्छे शेप अनिष्ट
४ कर्क	पहिले २॥ वर्प अच्छे शेप अनिष्ट	१० मकर	पहिले २॥ वर्ण किंचित अनिष्ट
५ सिंह	अन्त के २॥ श्रेष्ठ शेप अनिष्ट	११ कुभ	सव अच्छा
६ कन्या	पहिले २॥ वर्ण अनिष्ट	१२ मीन	अंत के २॥ वर्ण अनिष्ट

मतान्तर—कोई कहते हैं धन के पूर्ण ७॥ वर्प अनिष्ट, मकर के पहिले ५ वर्प और कुंभ के पहिले २॥ वर्प अनिष्ट कारक होते हैं।

विशेप अनुभव से यह सिद्ध हुआ है कि साढे साती का शुभाशुभ फल जातक के जन्म शनि के ऊपर निर्भर है।

जब शनि जन्म राशि से

१२ वें स्थान में आता है तो=शरीर कष्ट, अधिक खर्च, व्यापार में अडचन, धन की हानि और शिर व नेत्र मे पीडा करता है।

जन्म स्थान में आता है तो—उदर विकार, जमीन-सम्पत्ति तथा पशु-वाहन की हानि, अधिकारियो से मनमुटाव और अपयश करता है।

दूसरे स्थान में आता है तो=निरर्थक यात्रा, कुटुम्व तथा शत्रु विरोध, कुटुम्व वियोग, राजमार्ग में झझट उपस्थित हो।

शनि का स्वस्थान मकर और कुम्भ है। जब शनि अपने स्वस्थान या उच्च स्थान पर आता है तो जन्मकुण्डली की स्थिति के अनुसार वह जातक को लाभ भी करता है।

अढैया शनि विचार—

जब शनि जन्मराशि से चतुर्थ या अष्टम स्थान मे होता है तो उसे अढैया शनि कहते हैं। इसमे भी शनि कष्ट देता है, जिस का फल इस प्रकार होता है —

चतुर्थ मे—शरीर तथा माता पिता को कष्ट, राज मार्ग से चिंता, सम्पत्ति सम्बन्धि झंझटें, धन खर्च।

अष्टम मे शरीर व शत्रु भय, मानसिक चिन्ता और धन का अपव्यय।

शनि का चरण विचार—

शनि जब एक राशि छोड कर दूसरी राशि मे जावे उस समय देखो शनि अपनी जन्म राशि से कितने स्थान मे है, उसके अनुसार निम्नलिखित फल का विचार करना।

१–६–११ स्थान में हो तो=सुवर्णपाद=फल=सौख्य फल।
२–५–९ ,, ,, =रजत पाद=फल=सर्व काम फलप्रद।
३–७–१० ,, ,, =ताम्र पाद=फल=मध्यम फल प्रद।
४–८–१२ ,, ,, लोह पाद =फल=दु ख दारिद्रय दायक।

अध्याय ४७

आयुर्दाय

आयु के ३ भेद हैं। (१) अल्पायु, (२) मध्यायु, (३) दीर्घायु।

साधारण प्रकार से आयु का विचार लग्नेश और अष्टमेश से होता है।

	दीर्घायु			मध्यमायु			अल्पायु		
आयु	(८० से १२० वर्ष तक)			(४० से ८० वर्ष तक)			(३० से ४० वर्ष तक)		
लग्नेश	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव
अष्टमेश	चर	द्विस्व०	स्थिर	स्थिर	चर	द्विस्व०	द्विस्व०	स्थिर	चर

स्पष्टीकरण

(१) दीर्घायु—लग्नेश अष्टमेश दोनो चर राशि मे हो या एक स्थिर दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो।

(२) मध्यमायु—लग्नेश अष्टमेश मे से एक चर दूसरा स्थिर मे या दोनो द्विस्वभाव मे हो।

(३) अल्पायु—लग्नेश अष्टमेश में से एक चर दूसरा द्विस्वभाव में हो या दोनो स्थिर राशि में हो।

१ इस प्रकार राशि जिसमें लग्नेश (लग्न स्वामी) और अष्टमेश (अष्टम स्थान का स्वामी) हो, विचारना कि वह राशि चर स्थिर या द्विस्वभाव है। उसपर से ऊपर बताये चक्र के अनुसार आयु का विचार करना यह पहली रीति हुई।

२ इसी प्रकार दूसरी रीति यह है कि लग्न या सप्तम भाव मे चन्द्र हो तो लग्न और चन्द्र से विचार करना। यदि वहां चन्द्र न हो तो शनि और चन्द्र से ऊपर बताये अनुसार आयु का विचार करना।

३ तीसरा प्रकार यह है कि लग्नेश और अष्टमेश की तरह लग्न और होरा लग्न मे भी ऊपर बताये अनुसार विचार करना अर्थात् चर आदि उस राशि की सज्ञा का विचार कर आयु का विचार करना।

इस प्रकार तीनो बताई हुई रीति से या २ प्रकार की रीति से जो आयु प्राप्त हो नीचे चक्र के अनुसार आयु का विचार करना।

आयु	दीर्घायु			मध्यमायु			अल्पायु		
आयु वर्ष	१२०	१०८	९६	८०	७२	६४	४०	३६	३८
कितने प्रकार मे आई हुई आयु	३	२	१	३	२	१	१	२	३

जैसे दीर्घायु ३ प्रकार से आने पर १२० वर्ष, २ प्रकार से १०८ वर्ष, केवल एक प्रकार से ९६ वर्ष। इसी प्रकार ऊपर चक्र के अनुसार आयु का विचार करना।

इसके आगे और भी गणित द्वारा आयु स्पष्ट की जाती है। यहाँ केवल प्रारंभिक ज्ञान के लिये दिया है। पूरी आयु निकालना व लग्न और होरा लग्न गणित द्वारा निकालना गणित खण्ड मे दिया है। सूक्ष्म रूप से आयुर्दाय गणित करने से ही निकलता है। आरंभ में विद्यार्थी को सबसे ऊपर बताये हुए स्थूल प्रकार से आयु निकाल कर सतोष कर लेना चाहिए। जैसे

(१) यह महात्मा गाधी जी की कुडली है।

(१) यहाँ लग्नेश शुक्र लग्न मे तुला राशि का है तुला चर लग्न है (२) और अष्टमेश भी शुक्र होने से चर लग्न मे हुआ, दोनो चर आने पर दीर्घायु हुई।

(१) दीर्घायु योग

(२) मे लग्नेश चन्द्र वृष राशि में है जो स्थिर राशि है। अष्टमेश शनि मेप चर राशि मे है। एक चर दूसरा स्थिर होने से मध्यमायु हुई।

(२) मध्यमायु योग

(३) अल्पायु योग

(·) लग्न मेष है लग्नेश मंगल हुआ। मह मंगल सिंह राशि मे है जो स्थिर राशि है। अप्टम भाव मे वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल अष्टमेश हुआ। यह मगल स्थिर राशि सिंह मे है। दोनो स्थिर राशि मे होने से अल्पायु हुई।

अध्याय ४८

मारक स्थान और मारकेश विचार

जन्म कुण्डली मे विशेष स्थान जिस से मृत्यु होने का विचार होता है उसे मारक स्थान कहते है। मारक स्थान का स्वामी मारकेश कहलाता है।

ज्योतिप मे मृत्यु शब्द का अर्थ विस्तीर्ण है।

यहाँ मृत्यु शब्द मे=यथा, दुःख, भय, लज्जा, रोग, शोक, मरण तथा अपमान भी सम्मिलित है।

मारक स्थान।

(१) लग्न से अष्टम स्थान और अष्टम से अष्टम स्थान अर्थात् तीसरा स्थान।
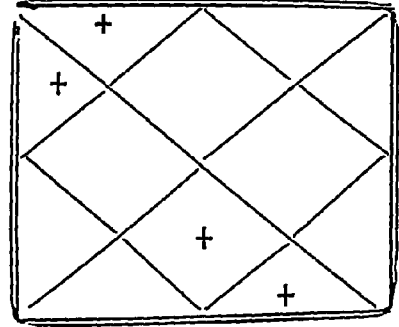
इन दोनो का व्यय स्थान (बारहवाँ स्थान अर्थात् अष्टम, का व्यय स्थान सप्तम हुआ और तीसरे का व्यय स्थान दूसरा भाव हुआ। अर्थात् दूसरा तीसरा सप्तम और अष्टम स्थान, कुंडली में जहाँ + चिह्न हैं, मारक स्थान कहलाते है। इन चारो में द्वितीय और सप्तम मुख्य और बलवान मारक स्थान हैं। इन मारक स्थान के स्वामी मारकेश कहलाते हैं।

मारकेश विचार (संक्षिप्त में)

कुण्डली में अल्प, मध्य, पूर्ण आयु के विचार के उपरात मारकेश का विचार करना चाहिए।

(१) शनि और केतु को महामारक संज्ञा है। ये मारकेश होते है तो अति अनिष्ट प्रभाव पहुँचाते है।

(२) सूर्य और चन्द्र को छोड कर शेप सब ग्रह, राहु केतु भी मारक स्थान के स्वामी होने पर मारकेश होते हैं।

(३) चन्द्र जब बुरे स्थान में हो तो उसकी अंतर्दशा मे भी मृत्यु हो जाती हैं।

(४) शनि जब पाप ग्रह के साथ हो तो मारकेश होने पर सब ग्रहो को दबा कर मृत्यू कारक होता है।

(५) मारकेश की मुख्य दशा व मारक स्थान में स्थित क्रूर ग्रह की अतर्दशा में या पाप ग्रह की महादशा में जब पाप ग्रह का अन्तर (अन्तर्दशा) हो तो मृत्यु होती है।

(६) बलवान ग्रह की दशा मे जब वह मारकेश होता है तो मृत्युतुल्य कष्ट, रोग, भय, शोक, अग्नि भय, चोर भय, आदि दुःखद प्रभाव उत्पन्न करता है।

अध्याय ४६

दशासाधन

ग्रहो का जो फल होता है उस फल की प्राप्ति का समय जानने को दशा साधन करना पड़ता है।

दशा कई प्रकार की हैं परन्तु उनमे साधारण प्रकार से मुख्य ३ दशाएँ उपयोग मे आती हैं। इतर दशाओ के साधन मे कुछ गणित करना पडता है और कही कही अधिक गणित करना पड़ता है, इस कारण उनको यहाँ छोड देते है। गणित खड में उनका वर्णन होगा।

३ प्रकार की दशा।

(१) विंशोत्तरी दशा (२) अष्टोत्तरी दशा (३) योगिनी दशा।

जन्म पत्रिका मे प्राय. विंशोत्तरी या अष्टोत्तरी दशा निकाली जाती है। विंशोत्तरी दशा मे परम आयु १२० वर्ष की और अष्टोत्तरी दशा मे १०८ वर्ष की मान कर दशा साधन की जाती है।

इन दशाओ का फल जानने के लिये जैसा ग्रह का फल होगा वैसा फल उसकी दशा मे होगा। उन ग्रहो के विषय में गुण दोप अच्छी तरह जान लेना चाहिये।

विंशोत्तरी या अष्टोत्तरी दशा में से एक कोई दशा साधन करना चाहिए। यदि शुक्ल पक्ष मे रात्रि समय जन्म हो तो विंशोत्तरी दशा और कृष्णपक्ष में दिन का जन्म हो तो अष्टोत्तरी दशा लेना चाहिए।

शुक्ल पक्ष में दिन के समय या कृष्ण पक्ष में रात्रि के समय जन्म हो तो योगिनी दशा साधन करना चाहिए। परन्तु बहुधा ज्योतिषी लोग विंशोत्तरी और योगिनीदशा दोनो साधन करते है। अष्टोत्तरी दशा अधिकतर दक्षिण तथा गुजरात में प्रचलित है। मुख्य दशा होने के कारण यहाँ केवल विंशोत्तरी दशा निकालना वतलाते हैं।

विंशोत्तरी दशा साधन

विंशोत्तरी दशा मे परम आयु १२० वर्प की मानी गई है। जिस नक्षत्र मे अपना जन्म हुआ हो उस नक्षत्र के विचार से ग्रह की आरभ दशा निकाली जाती है।

इस दशा में ग्रहो की दशा का क्रम और वर्प एवम् उनके नक्षत्र नीचे चक्र मे वताये गये हैं। कृत्तिका को आदि नक्षत्र मान कर एक एक नक्षत्र मे एक एक ग्रह भोगता हैं। इस प्रकार ६ ग्रह २७ नक्षत्र भोगने से प्रत्येक ग्रह को ३-३ नक्षत्र मिलते हैं।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

क्रम	१	२	३	४	५	६	७	८	९
ग्रह ०	आदित्य (सूर्य)	चंद्र	कुज (मगल)	राहु	जीव (गुरु)	शनि	वुध	केतु	शुक्र
सकेत अक्षर	आ०	च०	कु०	रा०	जी०	श०	वु०	के०	शु०
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
चंद्र नक्षत्र	कृत्तिका	रोहिणी	मृग	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.
	उ फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा	अनु	ज्ये	मूल	पू.पा.
	उ. पा.	श्रवण	घनि	शत.	पू भा	उ भा	रेवती	अश्वि.	भरणी.

ग्रहो का क्रम ऊपर दिये सकेताक्षर से पडित लोग स्मरण रखते है।

ग्रह की दशा निकालना—

कृत्तिका नक्षत्र से अपने जन्म नक्षत्र तक गिनने मे जो संख्या आवे उसमे ९ का भाग दो। जो शेप वचे आ० च० कु० रा० जी० श० वु० के० शु० इस प्रकार क्रम पूर्वक गिनो जो ग्रह आवे उस ग्रह की महादशा में जन्म हुआ ऐसा जानना।

जैसे आर्द्रा नक्षत्र में जन्म हुआ है तो कृत्तिका से आर्द्रा तक गिना ४ सख्या हुई। यह सख्या ९ से अधिक होती तो ९ का भाग देते, शेप ४ ही रहा। आ० १ चं० २ कु० ३ रा० ४ गिनने से चौथी राहु की महादशा आई।

ऊपर चक्र दिया है, उसमें गिनने की आवश्यकता नही है। जन्म नक्षत्र आर्द्रा के ऊपर क्रम का ४ दिया है, नीचे राहु लिखा है और नीचे १८ वर्ष लिखे है। इससे प्रगट हुआ कि राहु की महादशा मे जन्म हुआ है और यह महादशा १८ वर्ष रहती है।

आर्द्रा नक्षत्र कुछ भुक्त हो चुका होगा उसी अनुपात से राहु के वर्ष भी भुक्त हो गये होगे। जन्म नक्षत्र कितना भुक्त हो चुका है और कितना भोगने को शेप है और पूरा नक्षत्र कितने घडी पल का है जान कर उसी अनुपात से दशा के भुक्त वर्ष निकाले जाते है।

(भयात ५ महादशा वर्ष) ÷ भभोग=भुक्त वर्ष मास दिन आदि।

(महादशा वर्ष—भुक्त वर्ष) = भोग्य वर्ष महादशा के (गणित आगे दिया है)

अंतर्दशा

महादशा का समय वहुत वडा रहता है। उससे सूक्ष्म समय निकालने को अतर्दशा निकालना पडता है। अतर्दशा से भी सूक्ष्म समय प्रत्यतर दशा मे और उससे भी सूक्ष्म समय विदशा साधन करने से निकलता है। यह सव गणित खंड में दिया है। यहा केवल अतर्दशा निकालना वतलाते है।

जिस ग्रह् की महादशा में अंतर्दशा निकालना हो तो पहिले उस ग्रह् की अतर्दशा होगी जिसकी महादशा है। उसके उपरान्त उसके आगे क्रमानुसार जो ग्रह् चक्र में दिये हैं उनकी अतर्दशा होगी।

अंतर्दशा के ग्रहो के वर्ष निकालने के लिये अंतर्दशा में जो ग्रह् पड़ा है उस के वर्ष और महादशा के वर्ष को संख्या गुणा कर=$\frac{१२०}{१२}$=१० का भाग दो तो अंतर्दशा के मास दिन आदि की संख्या निकल आयेगी। १२ मास से अधिक हो तो १२ का भाग देकर वर्ष बना लो। १० का भाग देने से जो बच रहे उस मे ३ का गुणा कर देने से दिन की सख्या आ जायेगी। जैसे सूर्य वर्ष ६ है। सूर्य की महादशा मे पहिले सूर्य ही की अर्तदशा होगी।

अंर्तदशा सूर्य वर्ष ६ + महादशा सूर्य वर्ष ६ = ६ + ६ = ३६ ÷ १०=३ मास १८ दिन। ३६ मे १० का भाग दिया तो लब्धि ३ के ३ मास हुए, शेप ६+३=१८ दिन हुए। इसी प्रकार सब ग्रहो की अर्न्तदशा निकाली जाती है। यहां पहिले सूर्य मे सूर्य की अर्न्तदशा हुई। इसके आगे चन्द्र, फिर मंगल की इत्यादि क्रमानुसार अर्न्तदशा होगी। सब अन्तर्दशाओ के वर्ष का योग, महादशा की वर्ष संख्या के बराबर होता है। आगे प्रत्येक ग्रहो के अर्न्तदशा का चक्र और उसका वर्ष आदि दिया है।

विंशोत्तरी अन्तर्दशा चक्र—

सूर्य की अन्तर्दशा				चन्द्र की अन्तर्दशा				मंगल की अन्तर्दशा				राहु की अन्तर्दशा				गुरु की अन्तर्दशा			
ग्रह	वर्ष	मा	दि	ग्रह	वर्ष	मा.	दि	ग्रह	व	मा	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.
सूर्य	०	३	१८	चन्द्र	०	१०	०	मंगल	०	४	२७	राहु	२	८	१२	गुरु	२	१	१८
चन्द्र	०	६	०	मंगल	०	७	०	राहु	१	०	१८	गुरु	२	४	२४	शनि	२	६	१२
मगल	०	४	६	राहु	१	६	०	गुरु	०	११	६	शनि	२	१०	६	बुध	२	३	६
राहु	०	१०	२४	गुरु	१	४	०	शनि	१	१	९	बुध	२	६	१८	केतु	०	११	६
गुरु	०	९	१८	शनि	१	७	०	बुध	०	११	२७	केतु	१	०	१८	शुक्र	२	८	०
शनि	०	११	१२	बुध	१	५	०	केतु	०	४	२७	शुक्र	३	०	०	सूर्य	०	९	१८
बुध	०	१०	६	केतु	०	७	०	शुक्र	१	२	०	सूर्य	०	१०	२४	चन्द्र	१	४	०
केतु	०	४	६	शुक्र	१	८	०	सूर्य	०	४	६	चन्द्र	१	६	०	मगल	०	११	६
शुक्र	१	०	०	सूर्य	०	६	०	चन्द्र	०	७	०	मंगल	१	०	१८	राहु	२	४	२४
योग	६	०	०	योग	१०	०	०	योग	७	०	०	योग	१८	०	०	योग	१६	०	०

शनि की अन्तर्दशा				बुध की अन्तर्दशा				केतु की अन्तर्दशा				शुक्र की अन्तर्दशा			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
शनि	३	०	३	बुध	२	४	२७	केतु	०	४	२७	शुक्र	३	४	०
बुध	२	८	९	केतु	०	११	२७	शुक्र	१	२	०	सूर्य	१	०	०
केतु	१	१	९	शुक्र	२	१०	०	सूर्य	०	४	६	चन्द्र	१	८	०
शुक्र	३	२	०	सूर्य	०	१०	६	चन्द्र	०	७	०	मंगल	१	२	०
सूर्य	०	११	१२	चन्द्र	१	५	०	मंगल	०	४	२७	राहु	३	०	०
चन्द्र	१	७	०	मगल	०	११	२७	राहु	१	०	१८	गुरु	२	८	०
मग.	१	१	९	राहु	२	६	१८	गुरु	०	११	६	शनि	३	२	०
राहु	२	१०	६	गुरु	२	३	६	शनि	१	१	९	बुध	२	१०	०
गुरु	२	६	१२	शनि	२	८	९	बुध	०	११	२७	केतु	१	२	०
योग	१९	०	०	योग	१७	०	०	योग	७	०	०	योग	२०	०	०

दशा साधन और दशा का समय निकालने का उदाहरण

जिसके जन्म कुण्डली में विंशोत्तरी दशा निकालना है उसके लिये जन्म नक्षत्र का भयात और भभोग निकालना चाहिए।

(देखो कुण्डली बनाने का गणित)

मान लो सम्वत् १९९५ इष्ट कालीन सूर्य कन्या के गतांश १५ (५ रा १५°) (यहाँ सूर्य स्पष्ट ठीक नही मालुम है केवल राशि अंश मालुम है। इस कारण कला विकला को छोड कर सूर्य के केवल राशि अंश लिया है)।

जन्म नक्षत्र पूर्वाषाढा भयात (भुक्त घडी) ४८ घ. १२ प , भभोग (पूर्ण नक्षत्र) ६६ घ. १२ प. है। इसका विंशोत्तरी मत से दशा साधन करना है।

विंशोत्तरी दशा चक्र में पू. षा. जन्म नक्षत्र से शुक्र की महादशा होती है। इसके पूर्ण वर्ष २० हैं तो शुक्र की महादशा में जन्म हुआ है ऐसा कहेंगे। शुक्र के २० वर्ष में कितने वर्ष भुक्त हो चुके हैं और कितने वर्ष भोगने को रहे हैं गणित से निकालते हैं।

$$\frac{\text{(भयात × महादशा वर्ष)}}{\text{भभोग}} = \frac{\text{४८ घ. १२ प.×२० वर्ष}}{\text{६६–१२}} = \frac{\text{२८९२ प × २० वर्ष}}{\text{३९७२ पल}} = \frac{\text{५७८४०}}{\text{३९७२}}$$

= १४ वर्ष ६ मा. २२ दिन भुक्त वर्ष।

घडी के पल बनाये

४८ घ. १२ प.	६६ घ. १२ प
×६०	×६०
२८८०	३९६०
+१२	+१२
२८९२ पल	३९७२ पल
भयात	भभोग

शुक्र वर्ष-मास-दिन

पूर्ण वर्ष–२० ० ०
भुक्त वर्ष–१४ ६ २२
शेष ५ ५ ८ भोग्य वर्ष

शुक्र की महादशा शुक्र के वर्ष. म. दि. और भोगने को रही।
५ ५ ८

३९७२)५७८४०(१४ वर्ष
३९७२
१८१२०
१५८८८
२२३२
×१२ मास
३९७२)२६७८४(६ मास
२३८३२
२९५२
×३० दिन
३९७२)८८५६०(२२ दिन
७९४४
९१२०
७९४४
११७६

विंशोत्तरी दशा चक्र

ग्रह	वर्ष	मास	दिन
शुक्र	५	५	८
सूर्य	६	०	०
चंद्र	१०	०	०
मंगल	७	०	०
राहु	१८	०	०
गुरु	१६	०	०
शनि	१९	०	०
बुध	१७	०	०
केतु	७	०	०

अंतर्दशा साधन

शुक्र की महादशा केवल ५ व० ५ मा० ८ दि० भोगने को शेष रही है। अब इसमें देखना है, शुक्र के अन्तर्गत कौन ग्रह की अन्तर्दशा भोगने को रही है। शुक्र महादशा की अन्तर्दशा के वर्ष उलटे क्रम से घटाते जाना चाहिए। अर्थात् अन्त की अन्तर्दशा के वर्ष घटने पर और शेष रहे तो उसके पहिले जो ग्रह हो उस की दशा घटाना, इसी प्रकार जब तक घटते जावे उलटे क्रम से घटाते जाना चाहिए। जो शेष रहे वहाँ से अन्तर्दशा का समय गिनना चाहिए। शुक्र की अन्तर्दशा में इस प्रकार वर्ष हैं।

देखो अन्तर्दशा चक्र—

ग्रह	वर्ष	मास
१ शुक्र	३	४
२ सूर्य	१	०
३ चंद्र	१	८
४ मंगल	१	२
५ राहु	३	०
६ गुरु	२	८
७ शनि	३	२
८ बुध	२	१०
९ केतु	१	२
योग	२०	०

	व०	मा०	दि०	
शुक्र भोग्य वर्ष	५	५	८	
– ९ अंत का केतु	१	२	०	घटाया
शेष	४	३	८	
– ८ बुध	२	१०	०	घटाया
शेष	१	५	८	
– ७ शनि	३	२	०	नही घटा

यहाँ उलटे क्रम से अन्तर्दशा के वर्ष घटाना आरभ किया। केतु और बुध के वर्ष घट गये, शनि के वर्ष नही घटे। इससे प्रगट हुआ कि शनि की अन्तर्दशा मे जन्म हुआ था और शनि की अन्तर्दशा १ व० ५ मा० ८ दि० भोगने को शेष रह गई है।

इसी के अनुसार अन्तर्दशा चक्र बनाया।

शुक्र महादशा की अन्तर्दशा

ग्रह	वर्ष	मास	दिन
शनि	१	५	८
बुध	२	१०	०
केतु	१	२	०
योग	५	५	८

इसके आगे सूर्य की महादशा आरंभ होगी। उसके अन्तर्दशा वर्ष, चक्र के अनुसार ही उद्धृत कर देना और आगे महादशाओ की अन्तर्दशा भी चक्र के अनुसार स्थापित करना।

महादशा और अन्तर्दशा का समय निकालना

जन्म सम्वत और जन्मसमय का सूर्य स्पष्ट लो और इसमें ग्रह की महादशा या अन्तर्दशा के वर्ष मास दिन आदि इसमें जोडते जाना तो दशा का समय (जब तक वह दशा रहेगी) निकल आयगा। जोडने के लिये सम्वत में वर्ष, सूर्य की राशि में मास, अंश में दिन, कला में घड़ी और सूर्य की विकला में दशा के पल जोडना।

सम्वत्=वर्ष
सूर्यराशि=मास

सूर्य अंश=दिन
सूर्य कला=घडी
सूर्य विकला=पल

इसका उदाहरण देकर नीचे समझाया है।

महादशा चक्र बनाकर उसमें जन्म का सम्वत और जन्म समय का सूर्य स्पष्ट राशि अंश कला विकला जोडना पडता है।

उदाहरण मे यहाँ सूर्य स्पष्ट नही निकाला। सूर्य की केवल राशि अंश ज्ञात है, इससे केवल राशि अंश लिया है। कला विकला ज्ञात न होने से छोड़ दिया है।

	सम्वत्	सूर्यराशि	अंश
जन्म समय	१९९५	५	१५
शुक्र महादशा वर्ष	५	५	८
=तक शुक्र=	२०००	१०	२३
+ सूर्य महा० के	६	०	०
तक सूर्य =	२००६	१०	२३
+ चन्द्र महा० के	१०	०	०
तक चन्द्र =	२०१६	१०	२३

	२०१६	१०	२३
+ मंगल महा के	७	०	०
तक मंगल =	२०२३	१०	२३
+ राहु महा० के	१८	०	०
तक राहु =	२०४१	१०	२३
+ गुरु म० के	१६	०	०
तक गुरु =	२०५७	१०	२३
+ शनि म० के	१९	०	०
तक शनि	२०७६	१०	२३
+ बुध० के	१७	०	०
तक बुध =	२०९३	१०	२३
+ केतु के	७	०	०
तक केतु	२१००	१०	२३

अन्तर्दशा चक्र

जन्म समय	सम्वत सूर्य राशि, अंश
	१९९५—५—१५
+शनि की अंतर्दशा	१—५— ८
तक शनि=	१९९६—१०—२३
+बुध की	२ —१०—०
तक बुध=	१९९९—८—२३
+केतु	१—२— ०
तक केतु=	२०००—१०—२३

इस प्रकार शुक्र की महादशा में अंतर्दशा वर्ष हुए।

अंश जोडते समय ३० अंश से अधिक होने पर राशि में एक बढा दो और राशि जोडते समय १२ से अधिक हो तो वर्ष में एक बढ़ा देना।

इस प्रकार जोड कर महादशा या अंतर्दशा का समय निकाल लेना। अव इन सब को इस प्रकार चक्र वना कर लिखेंगे।

सावन किया हुआ महादशा चक्र

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	सम्वत	सूर्य की रा.	सूर्य की अश	
				१९९५	५	१५	जन्म
शुक्र	५	५	८	२०००	१०	२३	तक
सूर्य	६	०	०	२००६	१०	२३	,,
चन्द्र	१०	०	०	२०१६	१०	२३	,,
मं०	७	०	०	२०२३	१०	२३	,,
राहु	१८	०	०	२०४१	१०	२३	,,
गुरु	१६	०	०	२०५७	१०	२३	,,
शनि	१९	०	०	२०७६	१०	२३	,,
वुध	१७	०	०	२०९३	१०	२३	,,
केतु	७	०	०	२१००	१०	२३	,,

शुक्र की अन्तर्दशा का चक्र

ग्रह	वर्ष	मास	दि.	सम्वत	सूर्य की रा	सूर्य की अंश	
				१९९५	५	११	जन्म
शनि	१	५	८	१९९६	१०	२३	तक
बुध	२	१०	०	१९९९	८	२३	,,
केतु	१	२	०	२०००	१०	२३	,,

इसके आगे सूर्य की अन्तर्दशा के वर्ष इसमें जोडते जाओ तो सूर्य की अन्तर्दशा का चक्र वन जायगा। आगे चन्द्र, मगल, राहु, आदि की अन्तर्दशा इसी प्रकार निकाल लो। चक्र से प्रगट होगा कि इतने सम्वत में जव सूर्य उतने राशि अश पर आयेगा तव तक वह दशा रहेगी। जैसे शुक्र महादशा सम्वत २००० में सूर्य जव १० राशि २३ अंश पर आयगा उस समय तक रहेगी। इसी प्रकार और भी ग्रहो की दशा या अन्तर्दशा के विषय में समझना।

सूर्य की कौन राशि किस चान्द्र मास मे पडती है पहिले वता चुके है, उसके अनुसार उस सम्वत का मास जान सकते हो। मोटे हिसाव से सूर्य १ दिन में १ अश चलता है। इस हिसाब से जितने अश हो उतने दिन जान लो। यदि पचाग पास हो तो पंचांग देख कर उस समय की तारीख निकाल लो, जिससे प्रगट हो कि किस तारीख से किस तारीख तक कौन ग्रह की दशा रहेगी। जैसे कन्या राशि का सूर्य है तो कुआँर में कन्या राशि आती है। इसी प्रकार समय का अनुमान कर लेना।

अध्याय ५०

कार्य सिद्ध योग

जब यह जानना है कि कोई विशेष कार्य सिद्ध होगा या नही, तो उस समय घडी देखकर लग्न निकाल कर उस समय के ग्रह पंचाग से देखकर कुडली बना लो। यही प्रश्न कुंडली हुई। इसी पर से किसी प्रश्न का विचार करना पडता है। जिस प्रश्न का विचार करना हो वह प्रश्न किस भाव से सम्बन्ध रखता है, खोजो। जैसे किसी ने स्त्री सम्बन्ध का प्रश्न किया तो यह सप्तम भाव से सम्बध रखता है, इस कारण सप्तम भाव कार्य स्थान कहलाया। कार्य भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है। मान लो सप्तम स्थान में वृष राशि है तो वृष का स्वामी शुक्र होता है। इस कारण कार्येश यहाँ शुक्र हुआ। फिर लग्नेश कार्येश और उनकी दृष्टि आदि सम्बन्ध से निम्न रीति से प्रश्न का विचार करो।

(१) लग्नेश, कार्येश लग्न में हो।

(२) लग्नेश कार्येश दोनो कार्य स्थान में हो।

(३) लग्नेश कार्य स्थान मे हो और कार्येश लग्न स्थान मे हो।

(४) किसी स्थान में लग्नेश, कार्येश साथ हो।

(५) लग्नेश लग्न में कार्येश कार्य स्थान में हो।

(६) लग्नेश कार्येश कही हो परन्तु उनकी दृष्टि हो।

(७) लग्नेश कार्येश अपने अपने उच्च या स्वगृह के हो।

इनमें से किसी योग के होने पर कार्य सिद्ध होगा और इनमें से कोई योग न हो तो कार्य सिद्ध नही होगा।

कार्य सिद्ध समय

(१) चन्द्र की दृष्टि और योग से जो समय आवे उस समय में या जब लग्नेश या कार्येश का मिलाप हो पंचाग देख कर समय का विचार करना।

(२) प्रश्न काल में जो लग्न हो और वर्तमान में जो लग्न का उदित नवांश हो और उसका जो ग्रह नवाश स्वामी हो उनके अनुसार समय की अवधि जानना।

ग्रह	रवि	चन्द्र	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
अवधि	अयन (६ मास)	क्षण	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष

कार्य सिद्ध कितने मास अयन क्षण या कितने दिन मे होगा जानने को लग्न के उदित अंश देखना, जितने अंश पर हो, उतनी ही संख्या कहना!

अध्याय ५१

नवांश ज्ञान

किसी राशि के ९ सम विभाग करो तो एक विभाग को नवाश कहते है। $\frac{30°}{9}$= ३°-२०=का १ नवाश हुआ। किसी राशि के आरम्भ होने से अन्त होने तक, इस प्रकार ९ नवाश पूरे हो जाते है।

अब यह जानने को कि किस राशि मे पहिले कौन नवाश उदय होता है, राशियो की दिशाओ पर ध्यान दो। जिस राशि की जो दिशा है उसका जो भाव है स्मरण रखो तो राशि के आरभ नवाश का पता लग जायगा।

(१) यहां लग्न की दिशा पूर्व है जिसकी राशियां १, ५, ९ हैं तो लग्नभाव १ होने से इन राशियो का नवाश मेष से आरभ होगा।

(२) उसके बाद दशम की दिशा दक्षिण है जिसकी राशियां २, ६, १० है, तो ये राशियां दशम भाव १० की होने से, इनमें १० राशि का नवाश पहिले उदय होगा।

(३) इसके बाद सप्तम की पश्चिम दिशा की राशियां ३, ७, ११ है तो ये राशियां सप्तम भाव ७ की होने से ७ राशि से इनका नवाश आरभ होगा।

(४) उपरान्त चतुर्थ की उत्तर दिशा होने से इनकी राशियो ४, ८, १२ का
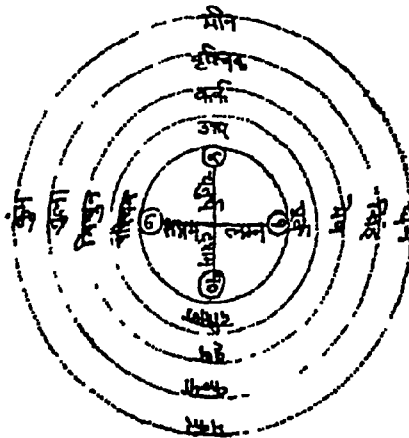
चि०—८८

दिशाओ की राशियां और भाव

नवाश ४ राशि से आरंभ होगा, क्योकि ये चतुर्थभाव उत्तर की राशियाँ हैं। (देखो चित्र संख्या ८८)

' आरंभ को उदित नवाश (आरंभ का नवाश) की राशियाँ उपर बता चुके है। इनके आगे क्रमश: आगे की राशियों का उदय होगा। यहाँ नवाश चक्र देते है जिससे नवाश समझ लेना।

(राशियो की दिशाएं राशि गुण धर्म चक्र में दे चुके है)

संमतियाँ

प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रं चंद्राकौं यत्र साक्षिणौ

वैदिक काल से भारत वर्ष में ज्योतिष शास्त्र का प्रचार है। केवल भारत मे ही नही ससार के अनेक भागो में लोगो का विश्वास ज्योतिष शास्त्र में बढ रहा है। कोई धर्म कोई देश का क्यो न हो, भविष्य फल सत्य उतरते ही ज्योतिष शास्त्र पर विश्वास करना ही पडता है। इस कारण सर्व शास्त्रो में ज्योतिष शास्त्र प्रथम माना गया है।

हिन्दुओ के प्रत्येक पर्व-तिथि आदि के निर्णय के लिये पंचाग देखना ही पड़ता है। कृपक लोग वर्पा कैसी होगी, बोने का शुभ समय कब होगा, कौन सूर्य नक्षत्र चल रहा है आदि बातें जानने के इच्छुक रहते है। सतान होने पर सम्पूर्ण विवाह आदि सस्कार के निमित्त ज्योतिपियो की शरण लेना पडता है। संतान की कुण्डली बनवाते है और शुभा-शुभ फल जानने के इच्छुक रहते हैं। कई तो स्वयम् अपना वर्प-फल ज्योतिपियो से बनवाते हैं। इस कारण प्रत्येक को यह इच्छा होती है कि स्वयम् को ये सब बातें जानना आ जावे।

आजकल ज्योतिप शास्त्र का अधिक प्रचार हो रहा हैं और पाश्चात्य लोगो में भी फलित ज्योतिप पर विश्वाम बढने लगा है। इस कारण पढे लिखे नव युवको के हृदय में इस शास्त्र के अध्ययन करने की इच्छा होती है। अंग्रेजी पढे लिखे तो कुछ अग्रेजी पुस्तकों का सहारा लेते हैं, परन्तु वे पुस्तकें बहुधा अधिक मूल्य की होने के कारण सर्व साधारण को सुलभ नही है। इस विपय पर संस्कृत में अधिकतर पुस्तके हैं, परन्तु उनकी भापा टीका होने पर भी नवीन विद्यार्थी को विना गुरु के इस विपय को समझने में कठिनाई प्रतीत होती है। राष्ट्रभापा हिन्दी में ऐसी एक पुस्तक की बडी आवश्यकता थी जिस के सहारे कोई विद्यार्थी इस शास्त्र को स्वय अध्ययन कर सके। इसकी पूर्ति करने में बी. एल. ठाकुर साहब का प्रयत्न सराहनीय है। ज्योतिप के नवीन विद्यार्थी को इस शास्त्र में प्रवेश पाने के लिये जो प्रारंभिक ज्ञान होना आवश्यक है वे सब बातें ज्योतिष शिक्षा प्रारभिक ज्ञान खंड में दे दी गई हैं। अग्रेजी जानने वालो के लिये एक सुविधा जनक बात यह भी है कि स्थान २ पर आवश्यक अग्रेजी नाम भी दे दिये गये हैं और अग्रेजी पंचाग (ऐफेमरी आदि) भी देखने के लिये नाक्षत्र काल आदि तत्सम्बन्धी आवश्यक बातो का ज्ञान कराया गया है।

इस पुस्तक के अध्ययन कर लेने से पंचाग अच्छी प्रकार से देखना और समझ लेना एवं कुंडली और टिप्पणी बनाना आ जायगा। केवल कुण्डली से जन्म आयु समय आदि जान लेना और विना पंचाग के तिथि नक्षत्र आदि भी जान लेना आ जायगा।

कुण्डली देखने के लिये जितनी आवश्यक बातें चाहिए वे सब इसमे अच्छी प्रकार से समझाई गई है और कुडली का कैसे विचार करना है यह भी बताया गया है।

इसके अध्ययन कर लेने पर प्रारम्भिक ज्ञान के सम्बंध मे और कोई विषय जानना शेष नही रह जाता। इतना सब विषयो का संग्रह किसी भी ग्रंथ मे नही है। विशेष कर हिन्दी मे ऐसी पुस्तक का होना गौरव की बात है। ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन के इच्छुक इसको अध्ययन करके ग्रंथकर्ता के परिश्रम को सफल बनायेंगे यह आशा है।

विदुषामनुचर
पं. नर्मदाप्रसाद शास्त्री
आ. विशारद प्रधान अध्यापक मुक्तानंद संस्कृत पाठशाला
(नरसिह पुर) १८-७-४५

वर्तमान युग में जिस प्रकार से ज्यौतिष शास्त्र की आवश्यकता थी वह पुस्तक ज्योतिष शिक्षा प्रथम भाग हमने आद्योपान्त देखा और उसके देखने पर यह प्रसन्नता हुई कि ज्यौतिष शास्त्र पर श्रद्धा रखने वालो को यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। इसमें सभी विषय हिन्दी में सुचारु रूप से चित्र सहित समझाये गये है। वैसे तो आज तक हिन्दी लेखको ने कई हिन्दी ज्यौतिष की पुस्तको को लिखा है। परन्तु इस प्रकार की पुस्तक आज तक देखने मे नही आई। इस पुस्तक का प्रयोग हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत आदि सभी भाषाओ के जानने वाले कर सकते है। और सरलता से ही ज्यौतिष का ज्ञान प्राप्त कर सकते है। इस पुस्तक में जो लेखक (श्री बी. एल. ठाकुर पेन्शनर जी) ने अपना अमूल्य समय खर्च किया है उसके लिये हार्दिक बधाई है।

आधुनिक ज्योतिष कार्यालय की ओर से
पं० बाबूलाल चतुर्वेदी ज्योतिषाचार्य
रचयिता भुवनविजय पंचाग
जबलपुर १६-८-५३

ॐ

Prof. G. R. Mahadik
L. Ag. F. R. H. S. (LONDON)
Astro-Palmist सामुद्रिकरत्न

Mahadik Astrological
Bureau.
Jabalpur

श्रीमान बाबूलाल जी ठाकुर ने ज्योतिष विषय पर २ खंडो मे एक अपूर्व पुस्तक की रचना की है। उसमे प्रथम खंड को मैंने सूक्ष्म रूप से अवलोकन किया। देखने पर

अत्यन्त हर्ष हुआ यह पुस्तक विद्यार्थियो के लिये जो इस विषय का अध्ययन करना चाहते हैं अत्यन्त ही मूल्यवान होगी और इससे पूर्णज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

आशा है आपको इसके प्रकाशन मे पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। इस कार्य के लिये श्री ठाकुर सा० का प्रयत्न सराहनीय है।

प्रो० महाडिक
२१-८-५३

श्री गणेशाय नमः

पण्डित रामव्यास पाण्डेय
ज्योतिष विभागाध्यक्ष
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
अस्सी, बनारस ५

P. Ramvyas Pandeya
Head of the Department of Jyotish
Banaras Hindu University
Assi, Banaras
Dated 20-6-1954

ससार के प्राणियो की कल्याण कामना से आप्लावित होकर वेद पुराणादि के द्वारा त्रिस्कन्ध ज्योतिष का ज्ञान भारत से ही ससार मे व्याप्त हुआ है। यह अक गणना प्रणाली से निर्विवाद सिद्ध है, वर्तमान समय मे इस अनुपम ज्ञान को सर्व-साधारण मे पहुँचाने के लिये राष्ट्रभाषा हिन्दी में ऐसे ग्रथ की आवश्यकता थी, जिसकी पूर्ति नरसिंह सदन निवासी श्री बी. एल ठाकुर जी ने "ज्योतिष शिक्षा" ग्रन्थ के द्वारा की है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी जगत के लिये अनुपम देन होने के कारण दिनोदिन इसकी अभिवृद्धि होती जायगी।

श्रीराम व्यास ज्योतिषी

मेरे पूर्व परिचित मित्र बाबूलाल ठाकुर को ज्योतिष से बहुत प्रेम है और इसके लिये मैंने ज्योतिष शास्त्र की ऐसी पुस्तक लिखने के लिये उन्हें बहुत उत्साहित किया था। मुझे इस पुस्तक को देखकर बहुत सतोष हुआ कि उन्होने मेरी बात को मान कर अपने सचित ज्ञान को लोक हितार्थ इस पुस्तक रूप में प्रकाशित किया है। ज्योतिष शास्त्र से मुझे अमित काल से बहुत रुचि है और इस विषय को मैंने कई एक पुस्तकें हिन्दी, अग्रेजी वा संस्कृत में देखी हैं, परन्तु पूर्ण ज्ञान का समावेश किसी भी एक पुस्तक मे नही हैं। इस न्यूनता की पूर्ति के लिये यह पुस्तक अपने ढग की एक नवीन ही कृति है। इसमें सरलता से हर एक बात जहाँ आवश्यकता हुई वहाँ उदाहरण वा चित्र देकर समझाई गई है, जिससे की ज्योतिष सीखने वाले विद्यार्थियो को बिना किसी

सहायता के इस विषय को सीखने में सुविधा हो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ज्योतिष शास्त्र के प्रेमी इससे अवश्य लाभ उठायेंगे।

अम्बिकाचरण दुबे

१४-७-४५ बी. ए एल-एल. बी वकील, जबलपुर

पं. श्री उमाकान्तझा विद्याभूषण गवर्नमेंट प्रमुख परीक्षोत्तीर्ण ज्योतिष शास्त्री, ज्योतिषाचार्य लोकविजय पंचाग के रचयिता जबलपुर की सम्मति।

ज्यौतिष शिक्षा प्रथम भाग मैंने देखा। ज्योतिष सीखने वालो को प्रारम्भ में जो जो ज्ञान होना आवश्यक है वे सब बातें इस पुस्तक में दी गयी है। जो इस विषय को बिल्कुल नही जानते उनके लिये यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। इसमें सब बातें सरलता से समझायी गयी है और जहाँ आवश्यक समझा गया है चित्र भी दे दिया गया है। हिन्दी में ऐसी पुस्तक की आवश्यकता थी।

उमाकान्त झा, ज्यो० आ०
ता० १७-[illegible]-४५ ई०

श्री बी० एल० ठाकुर द्वारा रचित "ज्योतिष शिक्षा" (प्रथम भाग) इस विषय का उत्तम ग्रंथ है। विद्वान् लेखक द्वारा इस भाग में आकाशीय ज्योतिष का वैज्ञानिक पद्धति पर मार्मिक विवेचन किया गया है। चित्रो एवं उदाहरणो की बहुलता से यह कठिन विषय सर्वथा सुगम बना दिया गया है। फलित ज्योतिष का महान् प्रासाद जिस आधार पर खडा है उसकी प्रचुर और सुबोध सामग्री अन्य किसी भी देशीय प्रकाशन में अब तक देखने मे नही आई। मेरी सम्मति में ज्योतिष के प्रारम्भिक अध्येताओं के लिये यह ग्रंथ अत्यन्त हितकर ही नही, अनिवार्य है। श्रीयुत ठाकुर को इस सुकृति के लिये हार्दिक बधाई।

जबलपुर एस० एस० लाल
गंगा दशहरा सं० २००८ वि० एम० ए० बी० टी०